

सन्मति साहित्य रत्नमाला का १-३ \*  
पुस्तक : ~~गुलजारे-शाहरी~~

संयोजक :

सुरेश मुनि, शास्त्री

प्रथम प्रकाशन :

जनवरी, १९६८

प्रकाशक

सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा-२

मूल्य .

प्लास्टिक कवर सहित ३.५०

बिना कवर ३.००

मुद्रक .

श्री विष्णु प्रिन्टिङ्ग प्रेस,

राजा की मण्डी आगरा-२

पेशे-नजर—

मेरे सर के ताज,

गुरुदेव

उपाध्याय,

श्री अमरचन्द्रजी

महाराज ।

“जो न मुरझाएँ कभी, वह इस चमन के फूल है ।  
आपकी पेशे-नजर, बागे-सखुन के फूल है ।।”

—सुरेश

मनीषीजगत् की यह प्रायः सर्वमान्य मान्यता है कि—कविता का जन्म वेदना से हुआ। समष्टि के सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, प्यार और पीडा को घनीभूत अनुभूतियों को आत्म-सवेदन के रस में डुबोकर उन्हें सरस-स्निग्ध बनानेवाला कलाकार कवि होता है। कवि कर्म का यह वैशिष्ट्य विश्व की प्रत्येक भाषा के काव्य में छलकता हुआ मिलेगा।

उर्दू-शादरी का आत्म-सवेदन, अनुभूति की तीव्रता और अभिव्यक्ति की मार्मिकता, शब्दों की चुस्ती और शानदार गठन उसकी अपनी विशेषता है। उसकी प्रकृति में कुछ विद्वान 'अरविस्तानी रूह' देखते हैं, किन्तु, जहाँ तक हमारी धारणा है—उसमें संस्कृत, हिन्दी, बँगला, गुजराती, अवधी और राजस्थानी की वही भक्ति और प्रेम की रसधारा प्रवाहित हो रही है जिसने हिन्दुस्तान के वातावरण में उर्दू को भाषा और कविता के रूप में ढाला है।

साहित्य की विभिन्न विधाओं की मौलिक ज्ञानराशि को जनचेतना के समक्ष प्रस्तुत करने की हमारी विशुद्ध साहित्यिक परम्परा के अनुसार, 'उर्दू-शादरी' का महत्त्वपूर्ण सकलन अपने पाठकों के हाथों में 'गुलजारे-शादरी' के रूप में भेंट करते हुए हम अतीव प्रसन्नता अनुभव करते हैं। इसका संयोजन उर्दू-शादरी के ममज्ञ रसिक श्री सुरेश मुनि, गान्धी ने किया है।

श्री सुरेश मुनि जी, उपाध्याय कविरत्न श्री अमर मुनि जी के सुयोग्य शिष्य हैं। वे कवि हृदय भी हैं, लेखक भी हैं और ओजस्वी प्रवक्ता भी। उनके द्वारा संयोजित शादरी के माध्यम से जनचेतना को जागृति और नवजीवन का सन्देश प्राप्त होगा। पाठक, वक्ता और लेखक आदि को रमास्वाद के साथ ही आत्मिक बाल्हाद भी मिलेगा इसी शुभाशा के साथ 'गुलजारे शादरी' प्रिय पाठकों को मेवा में अर्पित है। पुस्तक को शीघ्रता के साथ मुद्रित करने में श्री विष्णु प्रेम के मालिक श्री रामनारायण जी मेडतवाल तथा अन्य सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

—मश्री

श्री सन्मति ज्ञानपीठ

# भूमिका

## भाषा का महत्व

भाषा मनुष्य के विचारों का वाहन है। मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने वाली कड़ी भाषा ही तो है। यदि भाषा न होती, तो न आप मेरे लिए होते और न मैं आपके लिए होता। भाषा के माध्यम से ही मनुष्य अपनी सुख-दुःखात्मक अनुभूतियों तथा सवेदनाओं को बाहर अभिव्यक्त करता है। और जब व्यक्ति अपने सुख-दुःख की अनुभूति तथा अभाव-अभियोग की स्थिति को भाषा का रूप देता है, स्पष्टतः पकट करता है, तभी तो एक-दूसरे के अन्तःहृदय में सौजन्य-सौहार्द और सहयोग सद्भाव, करुणा-प्रेम तथा एक-दूसरे के सगी-साथी, बनने की भावना उपजती है। फलतः व्यक्ति, व्यक्ति से मिलता है। और जीवन के सारे वृत्ति-व्यवहार चरते हैं।

और भी स्पष्ट भाषा में कह दूँ, तो यदि भाषा न होती, तो हम सब पशुओं की भाँति गूँगे बनकर घरती पर इधर-उधर डोलते। भाषा के बिना मनुष्य भी पशुवत् कटा-कटा, फटा-फटा, अलग-थलग पड़ा रहता है, क्योंकि परस्पर में न कोई किसी से बोलता, न अपने जीवन के सुख दुःखात्मक रहस्यों को एक-दूसरे के आगे खोलता और न व्यक्ति व्यक्ति से जुड़ पाता। परिणामतः, परिवार, समाज तथा राष्ट्र का रूप सामने ही न आ पाता।

और, भाषा के अभाव में किसी भी समाज अथवा राष्ट्र का कोई भी साहित्य अस्तित्व में ही न आ पाता। मनुष्य के उत्थान पतन का इतिहास ही उपलब्ध नहीं हो पाता। किसी भी तीर्थंकर, अवतार, महापुरुष, ऋषि-महर्षि तथा धर्माचार्य की वाणी का प्रकाश हम तक कदापि पहुँच ही न पाता। किसी भी ग्रन्थ अथवा धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक, राष्ट्रीय एवं सामाजिक परम्परा का रूप स्वरूप हमें देखने को भी न मिल पाता। क्योंकि तीर्थंकर तथा धर्माचार्य भी तो अपने अन्तर् के भावों को भाषा के माध्यम से ही बाह्य जगती के मंच पर अभिव्यक्त एवं प्रस्तुत करते हैं। उनके ज्ञान-मूलक



भाव सवेदन भी तो उभर कर भाषा के द्वारा ही व्यक्ति अथवा समाज तक पहुँच पाते हैं। भाषा के वाहन पर आरुढ़ होकर ही तो उन महापुरुषों के आचार-पूत विचार जन-जन के मन-मन को छू पाते हैं। भाषा के प्रबल माध्यम के बल पर ही तो महापुरुष अपनी विचार-परम्परा चलाते हैं। आज के युग में, हमें जो आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक साहित्य की अमूल्य थाती उपलब्ध है, भाषा के अभाव में वह हमें कहाँ मिल पाती ? और तीर्थङ्करो तथा धर्माचार्यों की ज्ञानमयी विचार-परम्परा के प्रकाश के अभाव में आज के इस गये बीते तथा अन्धकार पूर्ण युग में हमारी क्या स्थिति-परिस्थिति तथा गति-मति होती—उसकी भयावह कल्पना से ही तन-मन सिहर उठते हैं। भाषा मानव-जीवन का एक दिव्य वरदान है।

## भाषा तो केवल भाषा है !

तो, यह एक निर्विवाद तथ्य है कि भाषा केवल मनुष्य के विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है, साधन-मात्र है, इसके अतिरिक्त वह कुछ नहीं। भाषा में पवित्रता, श्रेष्ठता, उच्चता आरोपित करना—यह मानव की कोरी मति-कल्पना है, मनुष्य के मन का एक विशुद्ध भ्रम है, एक व्यर्थ का वितण्डावाद है। यह मिथ्याकल्पना तथा भ्रम ही भाषा-भाषा के बीच प्रतियोगिता, प्रतिद्वन्द्विता एवं मेरे-तेरे के अह-भाव को जन्म देते हैं। फलतः समाज तथा राष्ट्र के मंच पर अखाड़ेबाजी और विवाद अपना सीना तानकर खड़े हो जाते हैं और समाज तथा राष्ट्र का समूचा वातावरण दूषित एवं विषाक्त हो जाता है।

मनुष्य की दृष्टि जब सकुचित एवं सकीर्ण होती है, तो वह अपने सोचने की सीमा को भी सीमित कर लेता है और अपनी इस सकुचित मनोवृत्ति और तंगदिली के मुलम्मे को वह भाषा, ग्रन्थ तथा धर्म पर भी चढ़ाने का प्रयत्न करता है, तो वहाँ भी समता के नाम पर विषमता, अमृत के स्थान पर विष ही पनपता है। ये धर्म, ग्रन्थ, पन्थ, भाषा एवं वर्गवाद के भेद-प्रभेद व्यक्ति की सकीर्ण मनोवृत्ति और तंगदिली के ही तो प्रतीक हैं। बड़े-बड़े धर्माचार्य, बड़े-बड़े विचारक जब इस सकुचित मनोवृत्ति के शिकार हो जाते हैं तो वे भी घेराबन्दी और बाढ़ाबन्दी की क्षुद्र बातें ही सोचा और बोला करते हैं। बात

तो वे प्रकृति, ईश्वर, आत्मा, परमात्मा, जीव, ब्रह्म, स्वर्ग और मोक्ष की किया करते हैं। किन्तु आचार-व्यवहार उनका कुछ और ही बोला करता है। वाणी से वे ज्ञान की ऊँची-ऊँची बातें वधारते हैं, पर व्यवहार में भाषा, जाति-संस्कृति के नाम पर वे अपनी सकुचित मनोवृत्ति एवं क्षुद्रभावना का विष ही जन-मन को बाँटते और परोसते फिरा करते हैं, परिणामतः अखण्ड मानव-समाज पन्थ, सम्प्रदाय, भाषा और जाति के छोटे-छोटे घेरो में बँट जाता है, बन्द हो जाता है। उसकी दृष्टि अपने घेरे और दायरे तक ही सीमित हो जाती है। अपने घेरे और घरो से बाहर सच्चाई-सच्चाई को वह देख-समझ ही नहीं पाता है। आज भारत में भाषा के नाम पर इसी क्षुद्र मनोवृत्ति का नगा नाच हो रहा है। फलतः, मानव-समाज टूट रहा है, राष्ट्र बिखर रहा है। छिन्न-भिन्न हो रहा है। मानव के लिए भाषा की इस झूठी पवित्रता, उच्चता तथा श्रेष्ठता के चक्कर से मुक्ति पाना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है।

तो, भाषा हमें जोड़ती है, तोड़ती नहीं। भाषा, प्रेम एवं सद्भाव सिखाती है, द्वेष और घृणा नहीं। घृणा में हम विश्वास नहीं करते। वैसे घृणा सर्वत्र बुरी है। परन्तु भाषा की घृणा तो प्रत्यक्षतः प्रकाश से घृणा है, अच्छाई और सच्चाई से घृणा है। भाषा का तत्त्वदर्शन तो ब्रह्मकर्म है, जिसके सम्बन्ध में कहा गया है :—

“सर्वेषामविरोधेन, ब्रह्मकर्म समारभे”

यह तो ब्रह्मकर्म है, जो किसी के विरोध में नहीं—सभी के सहयोग में प्रारम्भ हुआ है। इस तत्त्व-दर्शन में सभी भाषाएँ बहिर्न हैं, न कोई छोटी, न कोई बड़ी।

कीजे न ‘जमील’ उर्दू का सिंगार, अब ईरानी तलमीहो से।  
पहनेगी विदेशी गहने क्यों यह बेटी भारत माता की ?  
आसान लिख लिखके यह क्या तमाशा कर दिया ?  
‘हजरते बिस्मिल’ ने तो उर्दू को भाषा कर दिया ॥

अब यही तत्त्वदर्शन देण में चलेगा। तभी तो राष्ट्र फूलेगा फलेगा। यही प्रेम और मोहब्बत के गुलाब का बगीचा अब सारे मुल्क में महकेगा, घृणा की

चिनगारियाँ नहीं। इसलिए तो उर्दू का शाइर अपने शाइराना तरन्नुम में बोल रहा है, बोल क्या रहा है, अपनी जवान में मिसरी घोल रहा है—

‘हफीज’ अपनी बोली, मुहब्बत की बोली।

न हिन्दी न उर्दू न हिन्दोस्तानी ॥

—‘हफीज’ जालन्धरी

इसी प्रेम-भावना तथा भारतीयता से अनुप्राणित उर्दू शाइरो ने क्लिष्ट एवं अभारतीय शब्दों के मिश्रण को भी पसन्द नहीं किया।

हाँ, यह सही है कि प्रत्येक भाषा का अपना युग होता है, प्रत्येक युग की अपनी कोई भाषा होती है, जो युग का प्रतिनिधित्व करती है। एक युग था जब उर्दू का बोलवाला था। ‘अँग्रेजों के जमाने में’ अँग्रेजी खूब फूली फली और चली। और उर्दू का ज़माना लड़ गया। अँग्रेजी भी अब रह नहीं सकती। उसका चमन भी उजड़ रहा है। इसीलिए तो उसकी डाल पर बैठे पछियों की यह चिल्ल-पो मची हुई है —

“आशियाँ जल गया, गुलिस्ता लुट गया।

हम कफ़स से निकल, किधर जायेगे ?”

भाषा सीचती है, लादती नहीं। सीचने वाली भाषा हमारे संस्कारों की भाषा है और लादने वाली भाषा पराये संस्कारों की भाषा है। वह हमें विकसित नहीं करती, वजन लाद-लादकर बोझिल ही बनाती है। भारत में आज २% की अँग्रेजी भाषा को ९८% पर लादने का ही तो दुश्चक्र चल रहा है। पर, अँग्रेजों के युग में अँग्रेजी जन-भाषा नहीं बन सकी तो यह आज जन-भाषा बन सकेगी—यह दुराशा मात्र ही है।

किन्तु, इस सत्य को भी हमें आँखों से ओझल नहीं होने देना है कि प्रत्येक भाषा की अपनी कुछ विशेषताओं, गुणों और अच्छाइयों का हमें आदर करना है, अपनी भाषा को समृद्ध बनाने के लिए उन्हें आत्मसात् करना है।

**उर्दू भी एक भाषा है**

भारत की विभिन्न भाषाओं की लम्बी परम्परा के इतिहास में उर्दू भी एक भाषा है, बोली है। प्रत्येक भाषा का अपना कोई इतिहास होता है। तुर्की भाषा में ‘उर्दू’ लश्कर (छावनी) को कहते हैं। प्रारम्भ में मुगल और

तुर्क बादशाह छावनी में रहा करते थे । उनका दरबार व रणवास सब लश्करो में वही रहता था । इस विशेषता के कारण यहाँ की मिली जुली भाषा लश्करी या उर्दू जवान कहलाने लगी । फौज में प्रत्येक प्रान्त, प्रत्येक धर्म और प्रत्येक जाति के लोग रहते थे । सब अपनी-अपनी बोली में बोलते थे और दूसरो की बोली सुनते थे । भाषा के नाम पर कुछ देते थे, कुछ लेते थे । भाषा के इस पारस्परिक आदान-प्रदान के कारण दूसरी भाषा के शब्द एक दूसरे की भाषा की शब्दावली बनायास ही एक दूसरे की जवान पर चढ़ जाती थी । और इस मिली जुली लश्करी भाषा का नाम ही 'उर्दू' पड़ गया ।

यह तो एक असन्दिग्ध तथ्य है कि शाही दरबार की कालीनो पर उर्दू का लालन-पालन ऐसी नजाकत से हुआ कि, वह अद्भुत मिठास और लालित्य से भर गयी । उर्दू भाषा में जो माधुर्य, प्रवाह, लालित्य, सरसता और लोच है, वह उर्दू की अपनी मौलिक विशेषता है । इस भाषा में इतनी लचक, इतना रस है कि दूसरी भाषा उसका सामना नहीं कर सकती । यह कहना भी कोई अत्युक्ति नहीं है कि उर्दू में सीधी चोट करने की जैसी शक्ति और क्षमता है, वैसी शक्ति और क्षमता भारत की किसी और भाषा में नहीं है, यद्यपि इसी कारण उर्दू में वह गाम्भीर्य नहीं आ पाया, जो भारत की अन्य अनेक भाषाओं की विशेषता है ।

एक ज़माना था, जब भारत में उर्दू का दौर-दौरा था, उसकी अपनी धूम थी । बड़े-बड़े मुशायरे—कवि सम्मेलन होते थे, शायरी की उस मस्ती में महफिल झूम-झूम उठती थी । और उर्दू शायर छाती फुलाकर जन-मंच पर खुले आम यह उद्घोषणा किया करते थे —

“उर्दू है जिसका नाम, हमी जानते हैं 'दाग' ।

हिन्दीस्ता में धूम हमारी ज़बा की है ॥” —दाग

**उर्दू शाइरी का तत्त्व-दर्शन : आरोप और समाधान**

“उर्दू-शायरी तो इस्किया शायरी है । सिवाय हुस्नो-इश्क और साकी-ओ-शराब के उसमें और क्या रखा है” ? इस प्रकार जो उर्दू-शायरी को उपेक्षा

भरी दृष्टि से देखते हैं और हिन्दी-कविता के बारे में यूँ ही झूठा-सच्चा ज्ञान वधारा करते हैं, उनके बाल-मुलभ ज्ञान एवं अहंकार पर मेरे मन में हँसी भी आती है और करुणा भी उपजती है । दृष्टि के छिछलेपन और ओछेपन से किसी भी वस्तु-तत्त्व के मर्म को नहीं जाना जा सकता । समुद्र के किनारे पर छिछले पानी में रत्न और मोती ढूँढने वालों के भाग्य में सिवाय सीप, शख और घोघों के और हो ही क्या सकता है ? क्या पानी की सतह पर तैरने वाले तिनके दरिया की गहराई और हकीकत का पता बता सकते हैं ?

उर्दू-शायरी के तत्त्व दर्शन के लिए भी, हमें उसे उसकी ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि तथा उसके उद्भव के सदर्भ में देखने की आवश्यकता है और इसके साथ-साथ उर्दू-शायरी के पूर्ववर्ती शाइरो से जरा आगे बढ़कर मध्ययुगीन और आधुनिक शाइरो की शाइरी पर एक गहरी और निष्पक्ष दृष्टि डालने की जरूरत है, तभी हम उर्दू-शाइरी की तह में पहुँचकर उसका यथार्थ दर्शन कर सकेंगे — यह एक नग्न सत्य है ।

उर्दू-शायरी का जन्म विलासिता में डूबे मुगल बादशाहों और नवाबों के महलों में उस समय हुआ, जबकि उसकी बहनें—अरबी और फारसी हुस्नो-इस्क से आंखमिचौनी खेल रही थी । उस वातावरण में उर्दू शाइरी ने भी अपनी बहनों का रंग अपनाया और विलासी शासकों तथा रंगीन-मिजाज शाइरों के प्रयत्नों के फल-स्वरूप उर्दू शाइरी भी विलासिता के रस-रंग से अच्छती न रह सकी ।

इसके अतिरिक्त, उर्दू शाइरी का उद्भव भी गज़लगोई से हुआ । मुगल बादशाहों और नवाबों के दरबारों में शाइर लोग विलासी शासकों का दिल बहलाव गज़लगोई से किया करते थे और अपनी आजीविका—रोजी रोटी का घन्घा चलाया करते थे । गज़ल का तो अर्थ ही है इश्कियाशाइरी, इस्क- (प्रेम) का वर्णन,—स्त्रियों का उल्लेख । अतः गज़ल में विलासिता एवं मादकता का वर्णन एक स्वाभाविक-सी बात है ।

मनुष्य के मन का यह एक रहस्य है कि वह प्रेम, काम, श्रृंगार तथा विलास-सम्बन्धी कविताओं की ओर बलात् आकर्षित होता है । वह सबसे अधिक

ऐसी ही गोपनीय कृतियों को पढ़ना और सुनना चाहता है। सस्कृत के महाकाव्यों तथा हिन्दीसाहित्य के स्वर्णकाल—रीतिकाल के हिन्दी-काव्यों में नारी का नखशिख वर्णन, काम एवं प्रेम का नग्न प्रदर्शन तथा रति का वीभत्स वर्णन और क्या अर्थ रखता है ? महाकवि कालिदास के महाकाव्य कुमार-संभव में पार्वती का नखशिख-वर्णन, 'नैषध' में दमयन्ती का नग्न शृंगार तथा सोन्दर्य-प्रसाधन का सन्दर्भ इस तथ्य के जीवन्त रूप हैं। हिन्दी साहित्य में रीति-कालीन कवियों ने तो राधा-कृष्ण के माध्यम से जो रास-रग बरसाया है, मादक लीला-विलास का जो नग्न प्रदर्शन किया है, महाकवि जायसी ने 'पद्मावत' को माध्यम बनाकर शृंगार की जो रसधार बहायी है—क्या यह इक्षिया-शायरी और प्रेम-काव्य नहीं है ? सस्कृत के महाकवियों, अलकार, शास्त्रियों तथा हिन्दी-काव्य के प्रणेताओं ने शृंगार-रस को 'रसराय' की उपाधि प्रदान कर क्या मानवमन की इस कामुकता, प्रेम-भावना और इक्षिया रुझान का ही पोषण, सवर्धन एवं समर्थन नहीं किया है ? काम-शास्त्र और कोक-शास्त्र के प्रणेता क्या उर्दू शाहर थे ? कौन भाषा ऐसी है, जहाँ ये प्रेम-रस की धाराएँ अजस्त रूप में प्रवाहित नहीं हुई हैं ? इक्षिया शाहरी और यह कामसम्बन्धी काव्य-विलास कभी मर नहीं सकते। यह तो मानव मन की एक सहज-रसात्मक वृत्ति है।

और फिर, यह तो अपनी-अपनी नज़र है, अपना-अपना दृष्टिकोण है, देखने का, पीने का ढग आ जाए, तो जहर भी क्या अमृत नहीं बन जाता ?

जो जहर हलाहल है, अमृत भी वही, लेकिन !

मालूम नहीं तुम्हको अन्दाज ही पीने के !!

—फिराक़ गोरखपुरी

इन्सान के पास और है भी क्या ? ले-देके इक नज़र ही तो है, उसके पास ! वह भी साफ न हो, तो बस मिट्टी का ढेर ही तो है।

और, दुनियाँ में सारा नज़र का ही तो खेल है ! जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि ! एक चोर पूरी रात कोशिश करने पर भी किसी मकान में घुस सकने में असफल रहा ! आखिर थककर वह सड़क पर एक वृक्ष के नीचे सो गया !

एक और चोर उधर से निकला । देखकर बोला—‘यह तो मेरी ही तरह कोई भाई-बन्धु है ! बेचारा कामयाब न होने पर थककर सो गया है ।’

इसके बाद एक शराबी वहाँ से होकर निकला । बोला—‘उफ ! इतनी पी गया कि तन-बदन का भी होश नहीं है ।’

फिर, एक सन्यासी उधर से गुजरा । सोते हुए चोर को देखकर बोला—‘अवश्य ही यह कोई पहुँचा हुआ महात्मा है ! धन्य है यह ।’

उर्दू-शाइरी में विलासिता, अश्लीलता आदि दोष देखने वालों पर भी यह बात कैसी सटीक बैठती है ?

## शाइरी क्यों और किसलिए ?

शाइर शौकिया या दिल-बहलाव के लिए शाइरी नहीं करता । और, न वह शाइरी के लिए ही शाइरी करता है । शाइर का दिल जब कुछ कहने के लिए तड़प उठता है, तो दिल की उस तड़प को मिटाने के लिए ही वह अपने हाथ में कलम उठाता है । अपनी मनोगत वेदना को वह कागज़ पर उँडेल देता है । दीन-दुखी, अत्याचार-पीड़ितों तथा गोपितों की दयनीय स्थिति को शाइर जब अपनी आँखों से देखता है, तो उसके तन-मन विह्वल हो उठते हैं और वह असह्य स्थिति उस घटना को ‘नज़्म’ करने के लिए शाइर के मन को कचोटने लगती है । और फिर, वह मन की उस कचोट को, दिल की उस तड़प को हृदयस्पर्शी शब्दों का परिधान पहना देता है :—

खूँ-भरे जाम<sup>१</sup> उँडेलता हूँ मैं, टीस और दर्द भेलता हूँ मैं ।  
तुम समझते हो ग़ेर कहता हूँ, अपने जख़मों से खेलता हूँ मैं ॥

—‘अख़तर’ अंसारी

दर्द को ढालते हैं नग़्मों में, सोज़<sup>२</sup> को साज<sup>३</sup> में बदलते हैं ।  
दाद दे हमको ऐ ग़मे-दुनियाँ । ज़ख़म खाकर भी फूल उगलते हैं ॥

—नरेशकुमार ‘शाद’

शाइर बाह्य जगत् को देखता-निहारता है और अपने दिल के समन्दर में गहरी डुबकी लगाता है और फिर विचारों के ऐसे चमकते-दमकते और अमूल्य

मोती लाता और लुटाता है कि इस दुःख-भरी दुनियाँ को भी खुशहाल बना देता है—

उभरते हैं जमाले-जिन्दगी<sup>१</sup> बनकर मेरे फ़न<sup>२</sup> में ।

जमाने के वोह नशतर, जो जिगर में डूब जाते हैं ॥

—‘सागर’ नजामी

जिन्दगी की मजिल पर आगे बढ़ता हुआ शाइर जो भी कड़वे-मीठे और खरे-खोटे अनुभव बटोरता है, उन्हीं को वह कलम की नोक पर उतार देता है । शाइर अपने व्यक्तिगत दुःख को अपना नहीं समझता । वह तो जन-जन को, विश्व के दुःख को ही अपना दुःख अनुभव करता है । विश्व की वेदना के साथ वह एक रूप तथा एकाकार हो जाता है, विश्वात्मा बन जाता है । पर दुःख कातर होकर शाइर की अन्तरात्मा तडप उठती है ।

‘किसी का ज़ख़म हो, मेरा ही वह नासूर ।

किसी का चाक हो, मेरा ही चाक कहलाये ॥

—मुनव्वर, लखनवी

खजर चले किसीपे, तडपते हैं हम ‘अमीर’ ।

सारे जहाँ का ददं हमारे जिगर में है ॥ —अमीर

शाइर कोरी कल्पना के वाकाश में नहीं उड़ता । वह तो इसी धरती तल पर विचरने वाले जन-जन के जीवनभरोखों में भाँक कर देखता है । उनकी व्यथा-वेदना महसूस करता है । उनकी समस्याओं को सुलझाने के लिए विचारों का दिव्य प्रकाश देता है । वह मर्दानावार शोषको तथा उत्पीड़को के गढों पर प्रहार करता है —

उठो, और उठके करो सुबहे-नौका<sup>३</sup> इस्तकबाल<sup>४</sup> ।

हम आफ़ताब<sup>५</sup> है, दुनिया को रोशनी देगे ॥

—हरमदुलकराम

मेरे गीतों में मुस्तकबिल<sup>६</sup> के सपने सुस्कराते हैं ।

मेरी गुफ़तार<sup>७</sup> सुनकर अहले-दौलत काँप जाते हैं ॥ —मजाज

१ जीवन-सौन्दर्य २ कला में ३ नव-प्रभात का ४ स्वागत, ५ सूरज  
६ भविष्य के ७ वाणी, बात ।



आस्मां ले करवटें, वोह इन्कलाबी राग हूँ ।

जिसने लका को जला डाला था मैं वह आग हूँ ॥

—जोश, मलीहाबादी

## उर्दू शाइरी ने नया मोड़ बदला

यह ठीक है कि, पहले-पहल उर्दू-शाइरो का ध्यान आम जनता की ओर नहीं गया । उन्होंने गरीबों और मजदूरों के बारे में कुछ नहीं लिखा ! सामाजिक सघटन में उर्दू-शाइरी ने कोई सहायता नहीं दी ! जन-जीवन के विकास एवं उत्थान के लिए कोई विशेष सन्देश नहीं दिया । एक तरह से वे कर्तव्यशीलता से जी चुराते रहे और इश्किया-शाइरी का ही दरिया बहाते रहे । मोर, दर्द, शोदा, कायम, तबाँ, यकीन, मुसहफी, आतिश, नासिख, ज़ौक, मोमिन, गुलिव, दाग, तस्लीम, जलाल, अमीर मोनाई, शेफ़्ता आदि उर्दू के पुराने और जाने-माने शाइर अपने दरियाए-कलाम से हुश्नो-इश्क के समुद्र को ही परिपूर्ण करते रहे ।

किन्तु, जमाना करवट बदलता है ! उर्दू के शाइरो के दिमागों और विचारों ने भी अगड़ाई ली ! उन्हें भी विलासितापूर्ण शाइरी का यह पुराना रंग जैचा नहीं । और, उसके विरोध में साफ-साफ उद्घोषणा की उन्होंने—

यह हुश्नो-इश्क की रगीनियाँ नहीं दरकार !

शबे-फ़िराक<sup>१</sup> की बेचैनियाँ नहीं दरकार ॥

शराबे-इश्क की मस्ती का अहतियाज<sup>२</sup> नहीं !

किसी का कुर्ब<sup>३</sup> मेरे शौक का इलाज नहीं ॥

—श्रीमती गायत्री देवी

वर्तमान युग की आवश्यकताओं और युग-चेतना के स्वर को जिन उर्दू-शाइरो ने अनुभव किया, जाना-पहचाना और पुरानी ढंग पर चलना नापसन्द किया, उनमें आजाद, हाली, अकबर, इक़बाल और चकबस्त प्रमुख हैं । रोषभरे स्वर में इक़बाल गर्ज उठा—

अगर अब भी न समझोगे तो मिट जाओगे दुनिया से ।

तुम्हारी दास्ताँ<sup>१</sup> तक भी न होगी दास्तानों मे ॥

तो उनके साथी 'चकबस्त' ने झल्लाकर शोर मचाया कि अगर अब भी न तो—

मिटेगा दीन भी और आबरू भी जाएगी ।

तुम्हारे नाम से दुनिया को शर्म आएगी ॥

अब शाहरी का लक्ष्य दिल-बहलाव या कला के लिए नहीं रहा । अब उसका प्रवाह मानव-जीवन की ओर मुड़ चला । मानव-जीवन का निर्माण, राष्ट्रीय चेतना का जागरण, सामाजिक स्थिति का बनाव-सुधार ही शाहरी का लक्ष्य-बिन्दु बन गया । शाहरी जब एक उत्तम कला है, तो उसका उपयोग भी किसी उच्च ध्येय के लिए—इन्सान को बेहतर बनाने के लिए होना चाहिए—यह आदर्श शाहर की आँखों और दिमाग के कमरे के सामने झूमने लगा । और इस नयी लहर के कारण, उर्दू का शाहर अब जीवन का नव-शिल्पी, जीवन का सच्चा कलाकार, युग का प्रतिनिधि, मानव-जीवन का निर्माता बन गया । शाहर की दृष्टि ही बदल गयी । और, दृष्टि बदलते ही वस्तुतः सृष्टि ही बदल गई । बोल उठी शाहर की अन्तरात्मा—

इलाही दुनिया मे और कुछ दिन, अभी कयामत न आने पाये ।

तेरे बनाये हुए बशर को, अभी मैं इन्साँ बना रहा हूँ ॥

—बिस्मिल सईदी

नया आदम तराशूँगा, नयी हव्वा बनाऊँगा ।

नया माबूद ढालूँगा, नया बन्दा बनाऊँगा ॥

—सागर नजामी

एक मेरा क्या ऐ फनकारो<sup>२</sup>, वक्त का भी पैगाम यही है ।

जीवन को हम जीवन दे दें, आज हमारा काम यही है ॥

आज खुले बन्दो<sup>३</sup> यह दुनिया, दो तबको<sup>४</sup> के बीच बटी है ।

चाँदी-सोने के आँधियारे मे जीवन की जोत घटी है ॥

एक तरफ है अमृत सागर, एक तरफ है धारे विसके ।  
पूछ रही है दुनिया हमसे, बोलो अब तुम साथ हो किसके ?  
क्या जनता, क्या जीवन का, ऐसे मे अपमान करे हम ?  
आओ खुले बन्दो । हम जानिबदारी का ऐलान करे हम ॥

हम साथी है मजलूमों<sup>१</sup> के, हम साथी है मजदूरों के ।

हम साथी है दहकानों<sup>२</sup> के, हम साथी है मजदूरों के ॥

—जानिसार अख्तर

शाइर मानव का नव-निर्माण करके धरती पर ही स्वर्ग उतारने की बात सोचता है—

अभी तो सोई हुई कौम को जगाना है ।

वतन को जन्नते-अरज़ी - बनाना है ॥

—श्रीमती गायत्री देवी

क्या खूब शाइरी है ?

आज का उर्दू शाइर पुगने उर्दू-शाइरो की तरह जुल्फो-गेसू, ग़लो-बुलबुल, आरिज़ो-ख़ख़सार, हिज़रो-बिमाल जैसे सारहीन तथा अश्लील विचारों का पुतला-मात्र नहीं है । उसकी शाइरी में जिन्दगी के जिन्दा रहने तथा सामाजिक भावनाओं का उद्दाम प्रवाह है । वह कर्तव्यशीलता का पाठ पढ़ाता है, जन-जीवनकी दुखती हुई रंगो पर हाथ रखता है, अध्यात्म-जीवन के लिए ज्ञान का सच्चा प्रकाश लुटाता है । 'नजीर अकबरावादी' ने अपने चारों ओर बिखरी स्थितियों-परिस्थितियों, सामाजिक रीति-रिवाजों और आवश्यकताओं पर अपनी सरल-सुबोध भाषा में खूब जी खोलकर जो लिखा, क्या वह उर्दू-शाइरों की अपनी अलग और महत्त्वपूर्ण थाती नहीं है ।

संक्षेप में, उर्दू शाइरो ने रूहानियत के बारे में लिखा, इन्सानियत के बारे में लिखा, सुख के बारे में लिखा, दुख के बारे में लिखा, नैतिकता के बारे में बहुत-कुछ लिखा, भक्ति-ज्ञान और आचार-विचार के सम्बन्ध में भी अपनी

कलम खूब चलाई । राष्ट्रीयता एव जन-जागरण के बारे में खूब जी खोलकर लिखा । उस सब का उद्देश्य यह बताना रहा है कि जीवन बहुत बड़ी चीज है, जिससे हमें कुछ करना चाहिए । जीवन स्वयं जीने और दूसरों को जिलाने के लिए, अपना और दूसरों का बोझ उठाने के लिए है :—

दूसरों को जिसने दुनिया में बनाया कामयाब । —

जिन्दगी उसकी है 'दानिश', उसका जीना है सफल ॥—दानिश  
अध्यात्म-वाद के सम्बन्ध में उद्दू-शाहरो ने जो गहरी डुबकियाँ लगायी, वह उद्दू-शाहरी की अपनी बेजोड़ मिसाल है । जो व्यक्ति ईश्वर-परमात्मा को ही सर्व-सर्वा, कर्ता-धर्ता और अपना भाग्य-विधाता समझकर अपने आपको दीन-हीन मानते हैं, उनके मन को जगाते हुए, "व्यक्ति स्वयं ही अपना जीवन-निर्माता तथा भाग्यविधाता हैं, यह दर्शाते हुए 'इकबाल' उनकी अन्तरात्मा को यो झकझोरता है ।—

आह किसकी जुस्तजू<sup>१</sup> आवारा रखती है तुझे ।

राह तू, रहरो<sup>२</sup> तू, रहवर<sup>३</sup> भी तू, मंजिल भी तू ॥

कांपता है दिल तेरा अन्देश-ए-तूफा<sup>४</sup> से क्या ?—

नाखुदा<sup>५</sup> तू, बहर<sup>६</sup> तू, किस्ती भी तू, साहिल भी तू ॥—

ढूँढता फिरता है अय 'इकबाल' अपने-आपको ।

आप ही खोया मुसाफिर, आप ही मजिल है तू ॥—इकबाल

उद्दू-शाहरो ने रहानियत के जो चश्मे बहाये, उनके कुछ और भी नमूने देखिए :—

अपने मन में डूबकर पाजा सुरागे-जिन्दगी<sup>७</sup> ।

तू अगर मेरा नहीं बनता, न बन, अपना तो बन ॥—इकबाल

वोह कब देख सकता है उसकी तजल्ली<sup>८</sup> ।

जिस इन्सान ने अपना जलवा न देखा ॥

—फिराक गोरखपुरी

१ तलाश २ यात्री ३. मार्गदर्शक ४ तूफान के डर से ५. मल्लाह

६ समुद्र ७. जीवनरहस्य ८ प्रकाश ।

दूसरो से बहुत आसान है मिलना साकी ।

अपनी हस्ती से मुलाकात बड़ी मुश्किल है ॥ —अदम

इन्सान की बदबख्ती अन्दाज से बाहर है ।

कम्बख्त खूदा होकर बन्दा नजर आता है ॥ —आजाद

आज के मूले-भटके आदमी को शाइर मानव-धर्म में दीक्षित करता है ।  
मानवता ही दीन है, ईमान है, मानव-जीवन का सार है । 'मानवता' से श्रेष्ठ  
और उच्च कुछ भी नहीं है इस जगती तल पर, इस तथ्य-सत्य की घोषणा  
उद्घोषणा करता हुआ कहता है .—

फिर रहा है आदमी भूला हुआ भटका हुआ ।

इक न इक लेबिल हर इक माथे पे है लटका हुआ ॥

और कुछ हाजत नहीं है दोस्ती के वास्ते ।

आदमी होता है काफ़ी आदमी के वास्ते ॥

आओ वह सूरत निकालें जिसके अन्दर जान हो ।

आदमीयत दीन हो, इन्सानियत ईमान हो ॥

मजहब कोई लौटा ले और उसकी जगह दे दे ।

तहजीब सलीके की इन्सान करीने के ॥

—फिराक गोरखपुरी

साहित्य पर देश की परस्थिति और समय का सीधा प्रभाव पड़ता है ।  
अतः युगान्तरकारी स्थिति से उर्दू-शाइरी भी कैसे अछूती रहती । राष्ट्रीय-  
आन्दोलन के समय उर्दू-शाइरी ने भी करबट ली और राष्ट्र-नेताओं के नाम  
पर नज़्मे लिखी । पराधीनता, स्वतन्त्रता, हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य, विदेशी का  
वहिष्कार आदि विषयों पर उस समय शाइरी ने जी खोलकर कलम चलायी ।  
आजादी के लिए उन्होंने मर मिटने का भी स्वागत करते हुए कहा:—

कुछ न हो शम, कुछ न हो परवाहे-बर्बादी मुझे ।

खाकमें मिलकर भी गर मिल जाए आज़ादी मुझे ॥

भ्रातृ-वेश में विश्वासघाती चीन ने जब सन् ६२ में साम्राज्य-लिप्सा की  
दुर्भावना से भारत पर बर्बर आक्रमण किया, तो भारतीय संस्कृति के रंग-  
रस में रगापगा शाइर बा-आवाज-बुलन्द बोल उठा—

“हम एक हैं

एक है अपनी जमी, एक है अपना गगन ।

एक है अपना जहां, एक है अपना वतन ॥

आवाज दो, आवाज दो, हम एक हैं, हम एक हैं ॥”

—जां-निसार ‘अस्तर’

साहिर लुधियानवी की अन्तरात्मा तड़प कर यूँ बोल उठी—

“वतन की आबरू खतरे मे है, हुगियार हो जाओ ।

हमारे इम्तहाँ का वक्त है, तैयार हो जाओ ॥

न हम इस वक्त हिन्दू है, न मुस्लिम है, न ईसाई ।

अगर कुछ है, तो है इस देश, इस धरती के शैदाई ॥

इसी को जिन्दगी देगे, इमी से जिन्दगी पाई ।

लहू के रंग से लिक्खा हुआ इकरार बन जाओ ॥

आज भारत की राजनीति का आदर्श है—समाजवाद । समाजवाद की यह दिव्यभावना अपने प्रखर रूप में उर्दू-शाहरी के सिवाय और कहीं सुनने को मिलेगी ?

मेरे दिल की वसीअ दुनिया में,

दर्द अपना भी है, पराया भी ।

‘मैं’ को जब ‘हम’ बना दिया मैंने,

खुद को खोया भी खुद को पाया भी ॥

## अपने दिल की बात

आज, भारत की राष्ट्रभाषा अथवा राजभाषा हिन्दी है और रहेगी । इस तथ्य को झुठलाया नहीं जा सकता । अतः प्रत्येक भारतीय का यह कर्तव्य हो जाता है कि, वह अपनी राष्ट्रभाषा का सम्मान करे, उसे समृद्ध एवं सम्पन्न बनाने का प्रयास करे, राष्ट्र-भारती के भण्डार को भरने का भरसक प्रयत्न करे । भारत की विभिन्न भाषाओं के साहित्य की सच्चाई-अच्छाई तथा उपयोगी तत्त्वों के मिश्रण से ही तो ‘भारत-भारती’ समृद्ध, विकसित एवं

पूर्ण हो सकती है। हमारा यह लघु प्रयास इसी दिशा की ओर सकेत करता है।

उर्दू-शाहरी के पढ़ने और सुनने का शौक मुझे बचपन से ही रहा है। इस घरती पर अगर कोई जादू है, तो वह शाहरी है। शाहरी को मैं जीवन की अन्तरंग अनुभूतियों तथा सवेदनाओं की अभिव्यंजना मानता हूँ, व्यक्ति अथवा जन-मानस की सुख-दुःखात्मक अनुभूतियों का प्रकाशन लोक-मानस को बलात् आन्दोलित-उत्तलित एवं परिवर्तित कर ही देता है।

उर्दू-शाहरी ने जीवन के प्रत्येक अंग और जिन्दगी के हर पहलू को छूकर विचारों के अनमोल मोती लुटाए हैं, जिन्दगी की अन्धछाई-सन्ध्या के दिलकश नग्ने गाए हैं, आत्मा, परमात्मा, दार्शनिकता, नैतिकता, मानवता, सुख-दुःख, अनासक्ति, सहिष्णुता आदि मानव-जीवन के उपयोगी तत्त्वों के सम्बन्ध में उर्दू-शाहरी ने खूब जी खोलकर लिखा है, शाहरी के उसी खिलते-महकते चमन में से कुछ रंगीले चटकीले और महकते फूलों के जो हार गूथे हैं, उन्हीं को यहाँ सकलित एवं वर्गीकृत रूप में प्रस्तुत किया गया है। और इन महकते फूलों को चुनने के लिए चमन-चमन घूमा हूँ, बाग-बाग की सैर को निकला हूँ, गुलशन-गुलसिता की बहार देखता फिरा हूँ। गुलजारे-शाहरी के इन रंगीन गुलदस्तों को सजाने-सवारने के लिए कितने ब्यावानों की खाक छानी है, इसकी भी एक लम्बी कहानी है, जिसे कुछ हेर-फेर के साथ नरेश कुमार (शादा) की जवानी दुहराना ही उपयुक्त जंचता है—

“गुलजारे-शाहरीका यह मजमूआ, उस मुसाफिर की इक कहानी है। जिसने फूलों की आर्जू लेकर, हर ब्याबा की खाक छानी है॥”

उर्दू-शाहरी के तत्त्व एवं मर्म को समझना आसान बात नहीं, विशेषतः मेरे जैसे अल्पज्ञ के लिए। केवल दिली शौक के बूते पर ही यह प्रयत्न कर बैठा हूँ। इस प्रयत्न के पीछे, उन लेखकों, सम्पादकों, तथा समीक्षकों की बरबस याद हो आती है, जिन्होंने उर्दू-शाहरी तथा उसके इतिहास पर अपनी कलम चलायी है। पर्वतों की रानी मसूरी की ‘तिलक मेमोरियल लायब्रेरी’ के कर्मचारी मिस्टर अलेग्जण्डर और श्री प्रेमसिंह का उदार सहयोग भी

मेरे स्मृति-पटल पर तैर रहा है जिन्होंने हमारे दो मास के मसूरी-निवास-काल में उक्त लायब्रेरी की नयी-पुरानी शाहरी की पुस्तको का उन्मुक्त उपयोग करने का हमें खुला मौका दिया, इन सब का कृतज्ञता-पूर्वक स्मरण करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ ।

अस्तु, एक भँवर की भाँति, जहाँ से जो कुछ भी लिया—खूब लिया और सब कुछ पाठको को परोस दिया । जो कुछ बन पड़ा, वह प्रस्तुत है । क्या है, कैसा है, यह निर्णय तो प्रबुद्ध पाठकों के हाथों में है । यो ऐसा श्रम-साध्य प्रयास करने वालों की भाग्य लिपि में यही लिखा है :—

“खुलता किसीपे क्यों मेरे दिल का मुआमला ।

शेरोँ के इन्तखाब ने रूसवा किया मुझे ॥” —तालिब

जैन-समा  
गोविन्दगढ़ (पंजाब) }  
१-१२-६७

—सुरेश मुनि



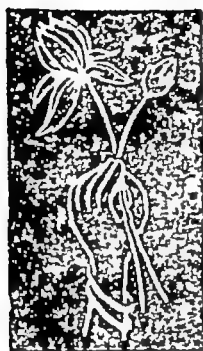
## अनुक्रमशिका

१. रहानियत का अगं से आगे मुकाम है ।	३
२. अपनी खुदो ही पर्दा है दीदार के लिए	८७
३. हम मिट गए तो मूरते-हमती नेजर पढी	६२
४. जिन के बार्ने में है तम्बोरे-मार ।	६७
५. नाक दिन हो तो जल्बागर हो यार ।	१०१
६. पदमे-चीना चाहिए, तो जल्बागर है हर तरफ ।	१०६
७. दुनियाँ में है, दुनियाँ का सनबगार नही है ।	११२
८. एक आत्म है नजर में, एक दुनियाँ दिल में है ।	११८
९. महिला का सनब बही जानने है ।	१२२
१०. दग्गान का फारिदों में नुदा बदा दिया	१३३
११. इम्मानियत का दर में मिलना मुहान है ।	१४३
१२. मर है मरजीब, आरमी में हो गया ।	१४५
१३. चीना जिन काम का, जो मंत्रिज न मिले ।	१६७
१४. जिन्दगी जिन्दगी का नाम है ।	१८१
१५. जवानों की जवानों का है जवानों मुद बरानों है ।	२०१
१६. जल बरानों में बरानों ।	२११
१७. जल जल इम्मानियत-इम्मानियत-मुद-बराय ।	२१८
१८. जल जल के जल जल जल ।	२२८
१९. जल जल जल जल जल जल ।	२३८

२०. अपनी करनी पार उतरनी	२४१
२१. रहा एक-सा कब किसी का जमाना ?	२४५
२२. हर हाल में खुश रहना ?	२५६
२३. यह कहाँ की दोस्ती है ?	२५६
२४. अपने ऐबो पर नजर कर ।	२६४
२५. जो रखता है कावू मे दानिश जवाँ को !	२६६
२६. खरे छोटे की कसौटी है, मुसीबत क्या है ?	२६८
२७. तदबीर के हाथो से गोया तकदीर का पर्दा उठता है	२७१
२८. मौत क्या है जिन्दगी की दूसरी तस्वीर है ।	२७४
२९. नगमे से जब फूल खिलेंगे ।	२७७







## गुलज़ारे-शाइरी

चुन लिये हैं बाग़ो-इन्सानी से अरमानो के फूल ।  
जो सहकते ही रहेगे, सैने गूँथे हैं वो हार ॥

—सरदार जाफरी



## रूहानियत का अर्श से आगे मुकाम है !



- १ रूहानियत<sup>१</sup> का अर्श<sup>२</sup> से आगे मुकाम है ।  
 रूहानियत कमाले-हकीकत<sup>३</sup> का नाम है ॥  
 रूहानियत गरावे-मुहब्बत<sup>४</sup> का जाम<sup>५</sup> है ।  
 रूहानियत मे अमन-ओ-सुकू<sup>६</sup> का पयाम<sup>७</sup> है ॥  
 रूहानियत वोह एक ही जामे-सुरुर<sup>८</sup> है ।  
 वहदत<sup>९</sup> का आईना<sup>१०</sup> है, मसरत<sup>११</sup> का नूर<sup>१२</sup> है ॥  
 इसकी तजल्लियो<sup>१३</sup> मे झलकती है जिन्दगी ।  
 इसकी लताफतो<sup>१४</sup> से महकती है जिन्दगी ॥
- २ तेरी तसवीर से खाली नहीं है कोई महफिल भी ।  
 मगर पहचानने वालो से पहचानी नहीं जाती ॥
- ३ इन्सान की वदवस्ती<sup>१५</sup> अन्दाज<sup>१६</sup> से बाहर<sup>१७</sup> है ।  
 कम्बख्त खुदा होकर वन्दा नजर आता है ॥
- ४ दूमरो से बहुत आसान है मिलना साकी ।  
 अपनी हस्ती<sup>१८</sup> से मुलाकात<sup>१९</sup> बड़ी मुश्किल है ॥

—‘हसरत’

—आजाद

—अदम

---

१ आ-व्यात्मिकता का २ आकाश, भौतिकता मे ३ पूर्ण वास्तविकता  
 पूर्ण सत्य का ४ प्रेम-मदिरा ५ प्याला ६ सुख शान्ति का ७ सन्देश  
 ८ खुमारी (मस्ती) का प्याला ९ ईश्वरत्व का १० दर्पण ११. खुशी  
 आनन्द का १२ प्रकाश १३ प्रकाश मे १४ महक से १५ दुर्भाग्य  
 १६ अनुमान से १७ परे १८ अस्तित्व, अपने-आप से १९ मिलना  
 साक्षात् करना ।

- ५ मेरे हक मे हुआ अच्छा मेरा हद से गुजर जाना ।  
खुदाई हाथ आई, तर्क<sup>१</sup> जब करदी खुदी मैंने ॥  
—मुनव्वर
६. जब न देख सकते थे तो दरिया भी कतरा<sup>२</sup> था ।  
जब आँख खुली, कतरा भी दरिया नज़र आया ॥  
—अदम
- ७ जब से तेरी नज़र पड़ी है भलक ।  
तब से लगती नहीं पलक-से-पलक ॥  
—हातिम
- ८ व-शक्ले<sup>३</sup> वन्दा तो रहता है उम्र-भर ऐ 'जोश' ।  
उठ, और चन्द<sup>४</sup> नफस<sup>५</sup> के लिए खुदा होजा ॥  
—जोश
- ९ अपने मन मे डूब कर पा जा सुरागे-ज़िन्दगी<sup>६</sup> ।  
तू अगर मेरा नहीं बनता, न बन, अपना तो बन ॥  
—इक़बाल
- १० मैं आईना हूँ तेरा, तू आईना है मेरा ।  
तुझ मे ज़हूर<sup>७</sup> मेरा, मुझ मे ज़हूर तेरा ॥  
—अमीर
- ११ हूँ डता फिरता हूँ ऐ 'इक़बाल' अपने - आपको ।  
आप ही गोया मुसाफिर, आप ही मजिल हूँ मैं ॥  
—इक़बाल
- १२ अपने ही हुस्न<sup>८</sup> का दीवाना बना फिरता हूँ ।  
मेरे आगोश<sup>९</sup> मे अब हसरते-आगोश<sup>१०</sup> नहीं ॥  
—जिगर

१ त्यागना, छोड़ना २ बिन्दु ३ मूरत मे, रूप मे ४ कुछ ५ पलो, क्षणो के ६ जीवन का पता, रहस्य ७ प्रकाश ८ सौन्दर्य का ९ गोद १० गोद की इच्छा ।

१३ तेरे जल्वो<sup>१</sup> की हृद<sup>२</sup> मिली कब ?  
हो गई जब नजर भी ला-महदूद<sup>३</sup> ॥

—जज्वी

१४ चाहे तो तुमको चाहे, देखे तो तुमको देखे ।  
स्वाहिश<sup>४</sup> दिलो की तुम हो, आँखो की आरजू<sup>५</sup> तुम ॥

—इक़बाल

१५ मरना-जीना एक है, जिनको जरा भी ज्ञान है ।  
वोह उधर का मर्तबा<sup>६</sup> है, यह डधर की शान है ॥

—जोश

१६ खुदा का नाम गो अक्सर जबानो पर तो आ जाता ।  
मगर काम इससे जब चलता कि यह दिल मे समा जाता ॥

—अकबर

१७ सरापा<sup>७</sup> राज<sup>८</sup> हूँ, मैं क्या बताऊँ, कौन हूँ, क्या हूँ ?  
समझता हूँ, मगर दुनियाँ को समझाना नहीं आता ॥

—यगाना

१८ वोह कब देख सकता है उसकी तजल्ली<sup>९</sup> ।  
जिस इन्सान ने अपना जलवा<sup>१०</sup> न देखा ॥

—फिराक़

१९ हुस्न के जल्वो को अपने दिल मे देख ।  
लनतरानी<sup>११</sup> दूर की आवाज है ॥

—नूर नारकी

२० अगर है जीके तमाशा<sup>१२</sup>, तो बन्द कर आँखें ।  
जहा निगाह<sup>१३</sup> नहीं है, वहाँ हिजाब<sup>१४</sup> नहीं ॥

—सीमाब

---

१ प्रकाश की २ सीमा ३ असीम ४ अभिलाषा ५ इच्छा ६ गौरव  
७ सिर से पाँव तक ८ रहस्य ९ रोगनी १० प्रकाश ११ शेखी, डींग  
१२ दर्शनाभिलाषी १३ दृष्टि १४ पर्दा ।



२१ खुदा के वन्दे<sup>१</sup> तो हैं हज़ारों, वनों में फिरते हैं मारे-मारे ।  
मैं उसका वन्दा वनूँगा, जिसको—खुदा के वन्दों से प्यार होगा ।

—इकबाल

२२ मिटा दो खुद को इतना कि रहे न कुछ निर्गा<sup>२</sup> वाकी ।  
अगर पाना सनम<sup>३</sup> को है, खुदी से हाथ धो बैठो ॥

२३ फिज़ूल पाँव घिसाने से फायदा क्या ?  
अगर शौके-बयावाँ<sup>४</sup> है, तो घर में पैदा कर ॥

—मुनव्वर

२४ जब से मेरी आँखों में तेरी जलवागरी<sup>५</sup> है ।  
दुनिया मेरे नजदीक तबस्सुम<sup>६</sup> से भरी है ॥

—जिगर

२५ फिर कोई कैद न तेरे लिए वाकी रहती ,  
तू अगर्चे दाम<sup>७</sup> से अपनी रिहा<sup>८</sup> हो जाता ।  
अपनी अजमत<sup>९</sup> का नहीं खुद तुझे गाफिल । एहमाम<sup>१०</sup> ,  
वन्दगी अपनी जो करता तो खुदा हो जाता ॥

—मुनव्वर

२६ शेखो-विग्रहमन दैरो-हरम<sup>११</sup> में ढूँढते हो क्या ला-हासिल<sup>१२</sup> ।  
मूँद के आँखें देखो तो हैं सारी खुदाई सीने में ॥

—इकबाल

२७ तुझको तलब<sup>१३</sup> है जिसकी, दोनों हैं उससे खाली ।  
दग्गवाजा खोल दिल का, दैरो-हरम में क्या है ?

—जिगर

१ उपासक, भक्त २ चिन्ह ३ प्रिय, इष्ट, प्रभु को ४. एकान्त का  
चाव ५ प्रकाश ६ मुस्कान में ७ जाल से ८ मुक्त ९ गौरव का  
१० ज्ञान, अनुभूति ११ मन्दिर-मस्जिद में १२ व्यर्थ १३ इच्छा,  
कामना ।

- २८ अपने ऊपर कर भरोसा, जज्वे-दिल<sup>१</sup> से काम ले ।  
यूँ न साकी<sup>२</sup> आएगा, उठ, बढके मीना<sup>३</sup> थाम ले ॥  
—अफसर
- २९ दाने तो वेशुमार<sup>४</sup> है तसबीह<sup>५</sup> मे, मगर—  
जिसमे लगन हो यार की, वो दाना<sup>६</sup> एक है ।  
—अदम
- ३० कह रहा है शोरे-दरिया<sup>७</sup> से समन्दर का सकूत<sup>८</sup> ।  
जिमका जितना जफ<sup>९</sup> है, उतना ही वह खामोश है<sup>१०</sup> ॥  
—नातिक
- ३१ और तो हमने कुछ भी न जाना, लेकिन इतना जान गए ।  
दुनिया मे नादान आए, नादान रहे, नादान गए ॥  
—नूह
३२. जो मौका मिल गया तो खिज्र<sup>११</sup> से यह बात पूछेंगे ।  
जिसे हो जुस्तजू<sup>१२</sup> अपनी, वोह बेचारा किधर जाए ?  
—बोश
३३. शकले इन्सा मे खुदा था—मुझे मालूम न था ।  
चाँद बादल मे छिपा था—मुझे मालूम न था ॥  
—एक सूफी
- ३४ नहीं तेरा नशेमन<sup>१३</sup> कसरे सुलतानी<sup>१४</sup> के गुम्बद<sup>१५</sup> पर ।  
तू शाही<sup>१६</sup> है, बसेरा कर पहाडो की चटानो पर ॥  
—इक्बाल
३५. वोह सिजदा<sup>१७</sup> क्या, रहे एहसास<sup>१८</sup> जिसमे सर उठाने का ।  
इबादत<sup>१९</sup> और व-कैदे-होग<sup>२०</sup>, तीहीने इबादत<sup>२१</sup> है ॥  
—सीमाब

१ मानसिक उत्साह से २ पिलाने वाला ३ प्याला ४ अनगिनत,  
असंख्य ५ माला ६ अवलमन्द ७ नदी के कोलाहल मे ८ खामोशी, शान्ति  
९ पात्र १० चुप ११ मार्ग-दर्शक १२ तलाश १३ घोंसला १४ शाही  
महल के १५ गुम्बज, गोल छत पर १६ वाज पछी १७ नमन १८ अनुभूति  
१९ वन्दगी, भक्ति २० होश की, कैद के साथ २१ भक्ति का अपमान ।

- ३६ मुझे गुलशन<sup>१</sup> से ऐ जोगे-जनू<sup>२</sup> सहरा<sup>३</sup> को अब ले चल ।  
यहाँ इसके सिवा क्या है—खिजाँ<sup>४</sup> आई, बहार<sup>५</sup> आई ॥  
—नूह
- ३७ खुदी<sup>६</sup> वो बहर<sup>७</sup> है, जिसका कोई किनारा नहीं ।  
तू आवजू<sup>८</sup> उसे समझा अगर तो चारा नहीं ॥  
—इकबाल
- ३८ खुला यह राज<sup>९</sup> वज्मे-नाज<sup>१०</sup> का पर्दा उठाने पर ।  
कि जिस पर तेरा धोखा था, वो इक तसवीर थी मेरी ॥  
—आसी
- ३९ वाद मुद्दत के ऐ 'दाग' समझ मे आया ।  
वही दाना<sup>११</sup> है, कहा जिसने न माना दिल का ॥  
—दाग
- ४० आफाक<sup>१२</sup> मे हँस-हँसकर जीना ही तो मुश्किल है ।  
आसान है रो-रोकर हस्ती<sup>१३</sup> को फना<sup>१४</sup> करना ॥  
—जोश
४१. जग जीतने से बढ कर है नफ्स<sup>१५</sup> जीत लेना ।  
बडी मुश्किल से काबू मे दिले दीवाना<sup>१६</sup> आता है ॥
- ४२ इन उजडी हुई वस्तियों मे जी नहीं लगता ।  
है जी मे, वही जा वसे, वीराना<sup>१७</sup> जहाँ हो ॥  
—मीर
- ४३ आँखे अगर्चे वन्द है तो दिन भी रात है ।  
इसमे कसूर क्या है भला आफताब<sup>१८</sup> का ॥  
—इकबाल

---

१ वगीचे से २ पागलपन का जोश ३ जगल ४ पतझड़ ५ वसन्त ऋतु ६ अहभाव ७ समुद्र ८ नदी, नहर ९ भेद, रहस्य १० प्रेमी के सहवाम ११ समझदार, बुद्धिमान १२ मसारा १३ अस्तित्व, जीवन १४. नष्ट १५ वामना, विकार १६ पागल मन १७ जगल १८ सूर्य ।

४४ हो सदाकत<sup>१</sup> के लिए जिस दिल में मरने की तडप ।  
पहले अपने पैकरे-खाकी<sup>२</sup> में जा<sup>३</sup> पैदा करे ॥

—इकबाल

४५, अन्वल तो इस कूचे<sup>४</sup> में कोई आ नहीं सकता ।  
और आ भी जाए तो फिर कभी जा नहीं सकता ॥

४६. खिजरे-रहे-मकसूद<sup>५</sup> अगर दिल नहीं होता ।  
मंजिल का पता सैकड़ों मंजिल नहीं होता ॥

—अमीर

४७. नहीं जानते कुछ कि जाना कहाँ है ?  
चले जा रहे हैं मगर जाने वाले ॥

—जिगर

४८ हम मिट गए तो सूरते-हस्ती<sup>६</sup> नजर पड़ी ,  
वीरा<sup>७</sup> जब हो गए बस्ती नजर पड़ी ।  
देखा तो खाकसार<sup>८</sup> आली-मुकाम<sup>९</sup> है ,  
ज्यू-ज्यू<sup>१०</sup> बुलन्द<sup>१०</sup> हम हुए पस्ती<sup>११</sup> नजर पड़ी ॥

—इकबाल

४९ जमाना<sup>१२</sup> हम में बसता है, बसे है हम जमाने में ।  
दो आलम<sup>१३</sup> साफ उडते हैं, ज़रा आपा मिटाने में ॥

५० जो देखी हिस्टरी,<sup>१४</sup> इस बात पर कामिल<sup>१५</sup> यकी<sup>१६</sup> आया ।  
उसे जीना नहीं आया जिसे मरना नहीं आया ॥

—अकबर

---

१ सत्य २ मिट्टी के शरीर ३ शक्ति, प्राण ४ गली ५ गन्तव्य  
पथ का दर्शक ६ जोदन के स्वरूप की भाँकी ७ बर्बाद ८ मनुष्य ९ सर्वोच्च  
स्थान १० उच्च ११ नीचाई १२ समार १३ ससार १४ इतिहास  
१५ पूर्ण १६ विश्वास ।

५१ रात-दिन जेरे-जमी<sup>१</sup> लोग चले जाते हैं ।  
यह न मालूम तहे-खाक<sup>२</sup> तमाशा क्या है ॥

—दाग

५२ थी दुई<sup>३</sup> जब तक नजर आती थी लाखो सूरते ।  
सब मे जब देखा उसी को तफरका<sup>४</sup> जाता रहा ॥

—नासिख

५३ किसको चाहे किस तरह, किसको देखे किस तरह ।  
एक आलम<sup>५</sup> है नजर मे, एक दुनिया दिल मे है ॥

—साइल देहलवी

५४ दीदारे-यार<sup>६</sup> का न उठेगा<sup>७</sup> मजा<sup>८</sup> 'अमीर' ।  
जब तक दुई<sup>९</sup> का पर्दा न उठाया जायगा ॥

—मीर

५५ जबों<sup>१०</sup> चलती है गोया आज कुछ जिक्रे-खुदा<sup>११</sup> करले ।  
अजल<sup>१२</sup> आएगी फिर हर्गिज न देगी बात की फुर्सत<sup>१३</sup> ॥

—हाली

५६ वोह आँखे दिल के अन्दर जो है उनको खोल ऐ गाफिल<sup>१४</sup> ।  
इन आँखो से कही तू जल्बए-हक<sup>१५</sup> देख सकता है ॥

—कलामी

५७ निगाहे<sup>१६</sup> कामिलो<sup>१७</sup> पर पड ही जाती है जमाने<sup>१८</sup> की ।  
कही छुपता है 'अकबर' फूल पत्तो मे निहाँ<sup>१९</sup> होकर ॥

—अकबर

५८ 'गालिब' बुरा न मान, जो दुश्मन<sup>२०</sup> बुरा कहे ।  
ऐसा भी कोई है कि सब अच्छा कहे जिसको ॥

—गालिब

---

१ पृथ्वी के नीचे २ मिट्टी के नीचे ३ द्वैत ४ भेद-भाव ५ ससार  
६ प्रभु-दर्शन ७ आया ८ आनन्द ९ द्वैत १० जिह्वा ११ प्रभु-चर्चा  
१२ मीत १३ अवकाश १४ पगले १५ सत्य का प्रकाश १६ नजर  
१७ पूर्ण, सज्जन १८ दुनिया १९ गुप्त २० शत्रु ।

५६ अपनी नजर<sup>१</sup> मे हेच<sup>२</sup> है सारे जहाँ की सैर ।  
दिल खुश न हो तो किसका तमाशा, कहाँ की सैर ?

—दाग

६० सफाईयाँ हो रही है जितनी, दिल उतने ही हो रहे है मैले ।  
अधेरा छा जायगा जहाँ मे, अगर यही रोगनी रहेगी ॥

—हाली

६१ 'अमीर' इस बाग मे रहकर करे क्या, दिल उलझता है ।  
न नखवत<sup>३</sup> छोडते है गुल, न काटे खू<sup>४</sup> बदलते है ॥

—अमीर

६२ वह भी आलम<sup>५</sup> था कि तू ही तू था और कोई न था ।  
अब यह कैफियत<sup>६</sup> है, मै ही मैका है सौदा<sup>७</sup> मुझे ॥

—साहिर

६३ खुदी<sup>८</sup> से बे खुदी<sup>९</sup> मे आ, जो जौके-हकपरस्ती<sup>१०</sup> है ।  
जिसे तू नेस्ती<sup>११</sup> समझा है, ऐ गाफिल, <sup>१२</sup> वोह हस्ती<sup>१३</sup> है ॥

—अमीर

६४ सुकूने-कल्बकी<sup>१४</sup> दौलत कहाँ दुनिया-ए-फानी<sup>१५</sup> मे ।  
बस इक गफलत-सी<sup>१६</sup> आ जाती है, और वह भी जवानी मे ॥

६५ वोह<sup>१७</sup> अगर पर्दा उठाकर सामने आ जाएगा ।  
फिर भी क्या इन देखने वालो से देखा जायगा ॥

६६ दिल मुझ से पूछता है कि जाएँगे अब कहाँ ।  
मै दिल से पूछता हूँ कि आए कहाँ से हम ?

—महरूम

---

१ दृष्टि २ बेकार, बेमानी ३ अभिमान ४ आदत, स्वभाव  
५ अवस्था ६ हाल ७ पागलपन ८ अहभाव ९ निरहकार १० ईश-  
भक्ति की लगन ११ नास्तित्व १२ प्रमादी १३ अस्तित्व १४ मन की  
शान्ति १५ अण भगुर ससार मे १६ प्रमाद, बेहोशी १७ प्रिय, प्रभु, ईश्वर ।

६७ अक्ल के भटके हुओ की राह दिखलाते हुए ।  
हमने काटी जिन्दगी दीवाना कहलाते हुए ॥

—मुल्ला

६८ पहले खुदा का छोड़ सहारा ।  
दर्से-अमल<sup>१</sup> आसान नहीं है ॥

—फिराक

६९ छानते हो खाक क्यों दुनिया के कामो के लिए ।  
मिट रहे हो रात-दिन क्यों भूठे दामो के लिए ॥  
कुछ वहाँ<sup>२</sup> के भी लिए या सब यही के वासते ?  
दामे-दुनिया<sup>३</sup> में फसे हो भूठे दामो के लिए ॥

७० खुद अपनी कैद के बन्द<sup>४</sup> आदमी तोड़े तो हम जाने ।  
पराई वैद से आजाद हो जाना तो आसा<sup>५</sup> है ॥

—बोव

७१ जो लोग जान-बूझ कर नादान बन गए ।  
मेरा खयाल है कि वोह इन्सान बन गए ॥

—अबम

७२ हमको मिटा सके यह जमाने में दम<sup>६</sup> नहीं ।  
हम से जमाना खुद है, जमाने से हम नहीं ॥

—जिगर

७३ दामन<sup>७</sup> भटक कर चल दिए वोह और यह कहते हुए ।  
वैठू<sup>८</sup> कहाँ तेरे तो घर में नैर हैं बैठे हुए ॥

—इकबाल

१ चरित्र-पाठ, अमल की जिन्दगी २. परलोक ३ ससार के जाल में  
४ बन्धन ५ मरल ६ शक्ति ७ पल्ला ।

७४ हूँढने वाला सितारो<sup>१</sup> की गुजरगाहो का<sup>२</sup> ,  
 अपने अफकार<sup>३</sup> की दुनियाँ में सफर कर न सका ।  
 जिसने सूरज की शुआओ<sup>४</sup> को गिरफ्तार<sup>५</sup> किया,  
 जिन्दगी की शबे-तारीक<sup>६</sup> सहर<sup>७</sup> कर न सका ॥

—इकबाल

७५ कोई शादमा<sup>८</sup> कोई अन्दोहगी<sup>९</sup> है,  
 सुकू<sup>१०</sup> की अभी कोई सूरत<sup>११</sup> नहीं है ।  
 दिमाग आसमा पर जमी पर जबी<sup>१२</sup> है,  
 इबादत यह कोई इबादत नहीं है ॥

—अमन लखनवी

७६ नशा पिला के गिराना तो सबको आता है ।  
 मजा तो जब है, गिरतो को थाम ले साकी ॥

—इकबाल

७७ जिन्दगी की नाव को मस्ती से खेना चाहिए ।  
 दुनियाँ के हर ऐशो-गम<sup>१३</sup> का साथ देना चाहिए ॥

—मजहर

७८ जिसको खबर नहीं, उसे जोशो-खरोश<sup>१४</sup> है ।  
 जो पा गया है राज<sup>१५</sup> वोह गुम है<sup>१६</sup> खमोश<sup>१७</sup> है ॥

—इन्शा

७९ आदम<sup>१८</sup> को खुदा मत कहो, आदम खुदा नहीं ।  
 लेकिन खुदा के रूँर से आदम जुदा नहीं ॥

—अकबर

---

१ नक्षत्रो २ मार्गो ३ चिन्तन ४ किरणो को ५ नियन्त्रण ६ अंधेरी  
 रात ७ सुबह, रौशन ८ प्रसन्न ९ शोकाकुल, दुखी १० शान्ति  
 ११ स्थिति १२ मस्तक १३ सुख दुख १४ आवेश और आवेग १५ रहस्य  
 १६ गायब, लापता १७ मौन १८ आदमी ।



८० तालिवाने ऐश<sup>१</sup> से कह दूँ तो उड जाएँ हवास<sup>२</sup> ।  
किस कदर<sup>३</sup> रोया हूँ मैं इक मुस्कराने के लिए ॥

—जोश

८१ बातिन<sup>४</sup> मे वेखवर<sup>५</sup> है, जो जाहिर-परस्त<sup>६</sup> है ।  
'सरशार' वह हमारी नजर नजर नहीं ॥

—सरशार

८२ कर गीर<sup>७</sup> रगो-वूके<sup>८</sup> एहसाम<sup>९</sup> से गुजर<sup>१०</sup> के ।  
यह फूल और कलियाँ धोके हैं सब नजर के ।

८३ जहाँ देखते हैं, जिधर देखते हैं ।  
तेरा हुस्न<sup>११</sup> पेये-नजर<sup>१२</sup> देखते हैं ॥

८४ मैं ही अपना हिजाब<sup>१३</sup> हूँ वरना ।  
तेरे मुँह पर कोई नकाब<sup>१४</sup> नहीं ॥

—फानी

८५ तू, तू को जाने तो खुदा-ही-खुदा है ।  
तू, तू को न जाने तो जुदा-ही-जुदा है ॥

८६ दीवाने को तहकीर<sup>१५</sup> से क्यों देख रहा है ।  
दीवाना मुहब्बत की खुदाई<sup>१६</sup> का खुदा है ॥

—सीमाव

८७ मक्के गया, मदीने गया, करवला गया ।  
जैसा गया था, वैसा ही चल फिरके आ गया ॥

—मीर

१. सुख के अभिलाषियों से २. होश ३. तरह ४. अन्तरंग से  
५. अनभिज्ञ, अनजान ६. बहिरंग (भौतिकता) का उपासक ७. ध्यान ८. रूप  
रंग और गन्ध के ९. अनुमति से १०. पार करके ११. सौन्दर्य १२. दृष्टि के  
समक्ष १३. पर्दा १४. आवरण १५. तिरस्कार से १६. सृष्टि का ।

८८ ऐ रूह<sup>१</sup> । क्या वदन<sup>२</sup> में पड़ी है, वदन को छोड़ ।  
मैला बहुत हुआ है, अब इस पैरहन<sup>३</sup> को छोड़ ॥

—अमीर मोनाई

८९ सुनता हूँ कि हर हाल में वोह<sup>४</sup> दिल के करी<sup>५</sup> है ।  
जिस हाल में हूँ अब मुझे अफसोस नहीं है ॥

—जिगर

९० जहाँ दिल है, वहाँ वो<sup>६</sup> है, जहाँ वो है, वहाँ सब-कुछ ।  
मगर पहले मुकामे-दिल<sup>७</sup> समझने की जरूरत है ॥

—सीमाब

९१ हजूम<sup>८</sup> बुलबुल हुआ चमन<sup>९</sup> में, किया जो गुल<sup>१०</sup> ने जमाल<sup>११</sup> पैदा ।  
कमी नहीं कद्रदों<sup>१२</sup> की 'अकबर' करे तो कोई कमाल पैदा ॥

—अकबर

९२ सब नकश<sup>१३</sup> खयाली<sup>१४</sup> है, काबा हो या बुतखाना ।  
तू मुझ में है, मैं तुझ में हूँ ऐ जल्वए-जानाना<sup>१५</sup> ॥

९३ जुस्तजू-ए-यार<sup>१६</sup> में गुम<sup>१७</sup> खुद मेरा दिल हो गया ।  
यह मुसाफिर चलते-चलने आप मजिल<sup>१८</sup> हो गया ॥

९४ माँ, बाप, यार दोस्ते-जिगर<sup>१९</sup> सब से हो निरास ।  
हरदम उसी करीम<sup>२०</sup> की रख दिल में अपने आस ॥

—नज़ीर

९५ डूबी हुई इतनी तो हकीकत<sup>२१</sup> में नजर हो ।  
इन्सान को तसवीर खुदा की नजर आये ॥

१. आत्मा २ शरीर ३. वस्त्र, परिधान ४ भगवान, प्रभु ५ करीब,  
निकट ६ प्रिय, प्रभु ७ दिल की जगह ८ भीड़ ९ वगीचे में १० फूल  
११ सुन्दरता १२ गुण-ग्राहक १३ चित्र १४ काल्पनिक १५ प्रिय की शोभा  
१६ प्यारे की खोज में १७ विलुप्त, डूब गया १८ गन्तव्य स्थान, लक्ष्य-विन्दु  
१९ जिगरी दोस्त २० दीनदयाल २१. वास्तविकता, असलियत, सच्चाई ।

६६ दुनिया की बेवफाई<sup>१</sup> का जव से खुला है राज<sup>२</sup> ।

हर वक्त एक दूसरी दुनिया नजर में है ॥

६७ जीना भी आ गया मुझे मरना भी आ गया ।

पहचानने लगा हूँ तुम्हारी नजर को मैं ॥

—असगर

६८ चमक-दमक पर मिटा हुआ है, यह वागवा<sup>३</sup> तुझको क्या हुआ है ?  
फरेवे-शवनम<sup>४</sup> में मुक्तिला<sup>५</sup> है, चमन की अब तक खबर नहीं है ॥

—असगर

६९ मैं यह कहता हूँ फना<sup>६</sup> को भी अता<sup>७</sup> कर जिन्दगी ।

तू कमाले-जिन्दगी<sup>८</sup> कहता है मर जाने में है ॥

—असगर

१०० जो जहर हलाहल है, अमृत भी वही लेकिन ।

मालूम नहीं तुझको अन्दाज<sup>९</sup> ही पीने के ॥

—फिराक़

१०१ तेरे आजाद बन्दो<sup>१०</sup> की न यह दुनिया न वह दुनिया ।

यहाँ मरने की पावन्दी<sup>११</sup> वहाँ जीने की पावन्दी ॥

—इक़बाल

१०२ तालीम<sup>१२</sup> का गोर<sup>१३</sup> इतना, तहजीब<sup>१४</sup> का गुल<sup>१५</sup> इतना ।

वरकत<sup>१६</sup> जो नहीं होती, नीयत<sup>१७</sup> की खराबी है ॥

—अकबर

१०३ मस्जिद तो बना दी शव-भर में ईमा की हरारत<sup>१८</sup> वालों ने ।

मन वो ही पुराना पापी रहा, बरसों में नमाजी<sup>१९</sup> बन न सका ॥

१ वेमुरब्बती २ भेद, रहस्य ३ माली ४ ओस का धोखा ५ सलग्न  
६ क्षण-भंगुरता, विनाश ७ प्रदान ८ जीवन की प्रकर्षता ९ ढग, तरीक़े  
१० मेवको ११ बन्धन, प्रतिबन्ध १२ शिक्षा १३ कोलाहल १४ सम्यता  
१५ हल्ला-गुल्ला १६ विकास, प्रगति, उन्नति १७. भावना १८ गर्मी  
१९ पुजारी, उपामक ।

इकबाल बड़ा उपदेशक है, मन बातों में मोह लेता है ।  
गुप्तार<sup>१</sup> का यह गाजी<sup>२</sup> तो बना, किरदार<sup>३</sup> का गाजी बन न सका ॥

—इकबाल

१०४ फँस गया दिल, पर यह दुनिया इश्क<sup>४</sup> के काबिल न थी ।  
जा-ए-इवरत<sup>५</sup> थी, यह इशरत<sup>६</sup> के लिए महफिल<sup>७</sup> न थी ॥

१०५ यह ऐश-नाह<sup>८</sup> नहीं है, या रग और कुछ है ।  
हर गुल है इस चमन में सागर<sup>९</sup> भरा लहूका ॥

—मीर

१०६. इस बज्मे-जहाँ<sup>१०</sup> में है दिल-तोड<sup>११</sup> कोई किसका ?  
हँसती रही सब महफिल, जलता रहा परवाना ॥

१०७ जब मैं कहता हूँ कि या अल्लाह मेरा हाल देख ।  
हुक्म होता है कि अपना नामा-ए-ऐमाल<sup>१२</sup> देख ॥

—अकबर

१०८ किया रफ़अत<sup>१३</sup> की लज्जत<sup>१४</sup> से न दिल को आश्ना<sup>१५</sup> तूने ।  
गुजारी उम्र पस्ती<sup>१६</sup> में मिसाले नक्शे-पा<sup>१७</sup> तूने ॥  
फिदा<sup>१८</sup> करता रहा दिल को हसीनो<sup>१९</sup> की अदाओं<sup>२०</sup> पर ।  
मगर देखी न इस आईने में कुछ अपनी अदा तूने ॥

—इकबाल

१ वक्तुत्व, कथन २ धर्मवीर, शूरवीर ३ कर्तृत्व, आचरण ४ प्रेम  
५ बोधपाठ लेने की जगह ६ ऐश्वर्य-भोग ७ ससार रूपी सभा ८ सुख-भोग  
की जगह ९ पात्र, प्याला १० ससार रूपी सभा में ११ हमदर्द, सहानुभूति  
रखने वाला १२ करतूतों की लिस्ट, कुकर्मों की सूची या नामावली १३  
उच्चता १४ मजे से १५ अभिज्ञ, परिचित १६ पतनावस्था में १७ पैर  
के निशान की तरह १८ आसक्त, कुरवान १९ सुन्दरियों की २० हाव-  
भावों पर ।

१०६ समाया हैं जब से तू आँखों में मेरी ।  
जिघर देखता हूँ, उधर तू-ही-तू है ॥

— पादशाह

११० मेरा तजस्वा<sup>१</sup> है कि इस जिन्दगी में ।  
परेशानियाँ-ही-परेशानियाँ<sup>२</sup> हैं ॥

— हफीज़

१११ तू अपने को ढूँढ रहा है दुनिया के मामूल्<sup>३</sup> में ।  
यह बेगाना देग है ऐ दिल ! इसमें सब बेगाने हैं ॥

— अदीब

११२ निगह<sup>४</sup> में अजामे-जुस्तजू<sup>५</sup> है, कदम भी आगे बढ़ा रहा हूँ ।  
नज़र मुकद्दर ही पर नहीं है, खुदा को भी आजमा रहा हूँ ॥

— दर्द

११३ यह फकत आँसू नहीं ऐ चश्मे-जाहिरबीन<sup>६</sup> दोस्त ।  
अपनी पलकों पे लिये बैठे हैं डक अफसाना हम ॥

— जगन्नाथ आज़ाद

११४ कबूल<sup>७</sup> करते न हम अजल<sup>८</sup> में किसी तरह यह लिवासे-इन्सा ।  
खबर जो होती कि पस्त<sup>९</sup> इस दर्जह<sup>१०</sup> फितरते-आदमी<sup>११</sup> मिलेगी ।

— आरिफ

११५ मिटने वालों की वफा का—यह सबक याद रहे ।  
वेड़ियाँ पाँवों में हो और दिल आज़ाद रहे ॥

११६. खुदा की याद में महवीयते-दिल<sup>१२</sup> वादगाही है ।  
मगर आसाँ नहीं है सारी दुनिया को भुला देना ॥

— अकबर

१ अनुभव २ दुख ही दुख है ३ वस्ती में ४ दृष्टि ५ खोज का परिणाम ६ बाह्य दृष्टि में देखने वाले ७ स्वीकार ८ कयामत या हश्र में ९ नीचा १० इस तरह ११ मानवस्वभाव १२ हृदय की तल्लीनता ।

११७ जब तक यह दिल भगवान से वासिल<sup>१</sup> नहीं होता ।  
फना के बाद भी लुत्फ-बका<sup>२</sup> हासिल नहीं होता ॥

—हाली

११८ अगर हृद्दे-खुदी-ओ-बेखुदी से भावरा<sup>३</sup> होता ।  
तो यह इन्सान फिर इन्सान क्यों होता, खुदा होता ॥

—सीमाब

११९ दिमाग-ओ-रूह एकसा चाहिए इन्साने-कामिल<sup>४</sup> में ।  
यह क्या तकसीमे-नाकिस<sup>५</sup> है, खुदी सर में खुदा दिल में ॥

—सीमाब

१२० 'साइल' सवाल करके न खोना तुम आबरू<sup>६</sup> ।  
दुनिया में एक चीज है, वस आदमी की बात ॥

— साइल देहलवी

१२१ गमे-हयात<sup>७</sup> को दुनिया पै आशकार<sup>८</sup> न कर ।  
यह इक राज है, जिक्र इसका बार बार न कर ॥  
अमल की राह में होती है मुश्किले पैदा ।  
किसी को अपने डरादे<sup>९</sup> का राजदार<sup>१०</sup> न कर ॥

—रोनक

१२२ हाथ से कासा<sup>११</sup> गदाई<sup>१२</sup> का न छूटा एक दिन ।  
और मुँह से ताजे-शाही<sup>१३</sup> के हैं दावेदार हम ॥

—जोश मलसियानी

१२३ गुनाहो<sup>१४</sup> पर वही इन्सान को मजबूर करती है ।  
जो इक बेनाम-सी, फानी-सी<sup>१५</sup> लज्जत<sup>१६</sup> है गुनाहो में ॥

—सीमाब

---

१ मिलने वाला, साक्षात्कर्त्ता २ अखण्ड-स्थायी आनन्द ३ उच्च, निर्लिप्त ४ पूर्ण पुरुष ५ तुच्छ, नगण्य विभाग ६ इज्जत ७ जीवन का दुख ८ प्रकट, जाहिर ९ सकल्प १० भेदी ११ पात्र, प्याला १२ फकीरी का, मगतेपन का १३ राज-मुकुट के १४ पापों १५ क्षणिक १६ मजा ।

१२४ वोह अपनी जिन्दगी मे वन्दगी क्यों लाजिमी<sup>१</sup> समझे ?  
जो अपनी जिन्दगी को इक मुसलसल<sup>२</sup> वन्दगी समझे ॥

—सीमाबा

१२५ निशानी चाहिए कुछ आने वाले जाने वाले की ।  
यह माना है वशर<sup>३</sup> फानी इधर आना उधर जाना ॥

१२६ खान-ए-तन<sup>४</sup> की खराबी का मैं करता फिक्र क्या ?  
गौहरे-जाँ<sup>५</sup> पर फकत<sup>६</sup> डक खाक<sup>७</sup> का अवार्<sup>८</sup> था ॥

१२७ इक मुअम्मा<sup>९</sup> है समझने का न समझाने का ।  
जिन्दगी क्या है फकत ख्वाव है दीवाने का ॥

—अस्तर

१२८ मेरे दिल को अल्लाह आवाद रखे ।  
मेरा दिल ही मस्जिद है, दिल ही शिवाला ।

—बूह

१२९ कमाले-वन्दगी<sup>१०</sup> यह है कि महवे-वन्दगी<sup>११</sup> हो जा ।  
यह आलम<sup>१२</sup> हो न जब तक वन्दगी मानी नहीं जाती ॥

—बिस्मिल

१३० हैं दैरो-हरम<sup>१३</sup> मे क्या रक्खा ? जिस सिम्त<sup>१४</sup> गया टकराके फिरा,  
किस पर्दे के पीछे है शौला,<sup>१५</sup> अन्धा परवाना क्या जाने ?  
सिजदो<sup>१६</sup>-से पडा पत्थर मे गढा, लेकिन न मिटा माथे का लिखा,  
करने को गरीब ने क्या न किया, तकदीर बनाना क्या जाने ?

—आरजू

---

१ जहरी २ लगातार, निरन्तर ३ मनुष्य, ४ शरीर रूपी घर की  
५ आत्मा रूपी रत्न ६. केवल ७. मिट्टी ८. ढेर ९. गुत्थी १०. पूर्ण  
उपासना ११. उपासना मे लीन १२. अवस्था, दशा १३. मन्दिर-मस्जिद मे  
१४. दिशा, ओर १५ स्फुलिंग, चिनगारी १६. नमाजो मे नतमस्तक होने से ।

१३१ ऐ दिल तू कही ले चल, यह दैरो-हरम छूटे ।  
इन दोनों मकानों में आता है नज़र भगड़ा ॥

—रामतीर्थ

१३२ ये तो है चन्द जलवे जो भलक आए है ।  
रग है और मेरे दिल के गुलिस्ताँ<sup>१</sup> में अभी ॥

—सरदार जाफरी

१३३ सबका तो मुदावा<sup>२</sup> कर डाला, अपना ही मुदावा कर न सके ।  
सबके तो गिरेवाँ<sup>३</sup> सी डाले, अपना ही गिरेबाँ भूल गए ॥

—मज्जाज

१३४. जहाद<sup>४</sup> उसको नहीं कहते कि होवे खून इन्सा का ।  
करे जो कत्ल अपने नफ्से-काफिर<sup>५</sup> को वह गाजी<sup>६</sup> है ॥

—अख्तर

१३५ आए भी लोग, बैठे भी, उठ भी खड़े हुए ।  
मैं जाँ ही ढूँढता तेरी महफिल में रह गया ॥

—आतिश

१३६. कुछ नहीं तो कम-से-कम ख्वाबे-सहर<sup>७</sup> देखा तो है ।  
जिस तरफ देखा न था अब उस तरफ देखा तो है ॥

—मज्जाज

१३७ ऐ 'जीक' गर है होश तो दुनिया से दूर भाग ।  
इस मैकदे में<sup>८</sup> काम नहीं होशियार का ॥

—जौक

१३८ मुसीबत हो कि राहत<sup>९</sup> हो, नहीं लाजिम<sup>१०</sup> गिला करना ।  
बशर का फज<sup>११</sup> है हर हाल में शुक्ने-खुदा<sup>१२</sup> करना ॥

—ताहर

---

१ उद्यान, वाटिका में २ इलाज ३ कपड़े, दामन ४ सघर्ष ५ दुष्ट  
वासना, दुर्वासना ६ धर्मवीर, धर्मयोद्धा ७ स्थान, जगह ८ मुवह का सपना  
९ मदिरालय में १० मुख, आगम ११ आवश्यक १२ कर्तव्य १३  
परमात्मा का धन्यवाद ।



१३६ सदा राहत उसी को है, वही मुकसूद बन्दा<sup>१</sup> है ।  
जो हर हालत में 'अन्न' अपने खुदा का शुक्र करता है ॥

—अन्न

१४० मैं क्या हूँ, कौन हूँ ? न हुआ उम्र-भर यह इल्म<sup>२</sup> ।  
खुद अपनी माफ़ी<sup>३</sup> से रहा इश्तवाह<sup>४</sup> मैं ॥

—खिद

१४१ अपनी खुदी मिटाएँ तो पाएँ रहे-विसाल<sup>५</sup> ।  
खोये जो आपको वह तेरी जुस्तजू करे ॥

१४२ तुझे देखा तो अब कुछ देखने को जी नहीं चाहता ।  
किये हैं वन्द आँखें तेरी सूरत देखने वाले ॥

—हनीफ

१४३ ऐ 'अमीर' ढ़वल तो वह आश्ना<sup>६</sup> मिलता नहीं ।  
मिल गया जिसको कही, उसका पता मिलता नहीं ॥

—अमीर

१४४ सब सनअते<sup>७</sup> जहाँ की, 'आजाद' हम को आई ।  
पर जिससे यार मिलता, ऐसा हुनर<sup>८</sup> न आया ॥

—आजाद

१४५ तू दिल में तो आता है, समझ में नहीं आता ।  
बस जान गया मैं तेरी पहचान यही है ॥

—अकबर

१४६ दरे-मुहब्बत<sup>९</sup> का डक गदा<sup>१०</sup> हूँ, परी का तालिब<sup>११</sup> न दूर का हूँ ।  
तुझी को तुझसे मैं चाहता हूँ— वस और मेरा सवाल क्या है ?

—जलील

---

१ सच्चासेवक २ ज्ञान ३ तरफ से ४ लापरवाह, गुमराह, अपरिचित  
५ मिलन-मार्ग ६. यात्रा, प्रभु ७. शिल्प कलाएँ ८ विद्या, कला ९ प्रेम  
का द्वार १० फकीर ११ इच्छुक ।

- १४७ हकीकत<sup>१</sup> मे जगहे-दुनिया नही है दिल लगाने की ।  
वफा करती नही यह वेवफा सारे जमाने की ॥

—जलील

- १४८ इस ऐगे-जाहिरी<sup>२</sup> को छोड ऐ .खुदा के बन्दे ।  
रग-रग मे चुभ रहे है जब लाख-लाख काँटे ॥

- १४९ नाखुदा<sup>३</sup> को छोडकर जिनकी खुदा पर है निगाह<sup>४</sup> ।  
हर तरह महफूज<sup>५</sup> किस्ती उनकी तूफानो मे है ॥

- १५० छोड सब की दोस्ती, कर दोस्तदारी<sup>६</sup> एक की ।  
एक हो गर यार, निभ जाएगी यारी एक की ॥

—जफर

- १५१ नादान से नही कहते, कहते है दाना<sup>७</sup> से ।  
दाना है वो जो दिल अपना फेरे है दुनिया से ॥

—जफर

- १५२ आसाँ<sup>८</sup> नही है दाम<sup>९</sup> से दुनिया के छूटना ।  
यह इक बडे हकीम का बाँधा तिलस्म<sup>१०</sup> है ॥

—अमीर

- १५३ कोई कावे को जाता है, कोई बुतखाने को ।  
राह उस यार के मिलने की मगर और ही है ॥

—जफर

- १५४ घर मे तो अँधेरा और लेके मस्जिदो मे ।  
हमने जलाए घी के जाकर दिये तो फिर क्या ?

—जाकिर

---

१ वास्तव मे २ बाह्य या भौतिक सुख ३ मट्लाह ४ दृष्टि  
५ सुरक्षित ६ मित्रता ७ बुद्धिमान् ८ सरल ९ जाल, १० जादू ।

१५५. दिल सियाह<sup>१</sup> है, वाल सब अपने है पीरी<sup>२</sup> में सफ़ेद ।  
घर के अन्दर है अँधेरा और बाहर रौशनी ॥

— क़लामी

१५६. पर्दे को अँधेरे के दरे-दिल<sup>३</sup> से हटा दे ।  
खुलता है अभी पल में तिलस्मात<sup>४</sup> जहाँ का ?

— सीदा

१५७ न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता ।  
डुबोया मुझको हाने ने, न होता मैं तो क्या होता ?

— ग़ालिब

१५८ 'नज़र' तेरे मुस्तकविल<sup>५</sup> की तामीर<sup>६</sup> है तेरे हाथों में ।  
क्यों गोशए-राहत<sup>७</sup> में छुपकर कुदरत का ग़िकवा करता है ?

— नज़र

१५९ घर के अन्दर बैठकर अब तक किसी ने क्या लिया ?  
जिसने कोई जुस्तजू की, उसने मकसद<sup>८</sup> पा लिया ॥

१६० जिन्दगी की लज्जतो<sup>९</sup> में जिस कदर आगे बढ़े ।  
दिलकशी<sup>१०</sup> के साथ रस्ता पुरखतर<sup>११</sup> होता गया ॥

१६१ जिन्दगी इक तीर है जाने न पाये रायगाँ<sup>१२</sup> ।  
देखलो पहले निगाना<sup>१३</sup>, बाद में खीचो कमाँ<sup>१४</sup> ॥

१६२ इलाही करके तय किन रफ़अतो<sup>१५</sup> को मैं कहाँ पहुँचा ?  
कि यकसाँ<sup>१६</sup> पड़ रही है अब निगाहे दोस्त दुश्मन पर ॥

— अहमद सद्दीकी

१ काला २ वृद्धावस्था में ३ हृदय-द्वार में ४ जादू ५ भविष्य की  
६ निर्माण, रचना ७ सुख के कोने में ८ लक्ष्य, अर्थ ९ खुशियों में १०  
आकर्षण के ११ भयकर १२ व्यर्थ १३ लक्ष्य १४ कमान, धनुष १५  
ऊँचाइयों को १६ बराबर ।

१६३ बड़ी मुश्किल से आता है मयस्मर जिन्दगी भर मे ।  
वोह इक लमहा<sup>१</sup> जिसे इन्सा गुजारे शादमा<sup>२</sup> होकर ॥

—शफक

१६४ जो सच पूछो तो दुनिया मे फकत रोना-ही-रोना है ।  
जिसे हम जिन्दगी कहते है, काँटो का बिछौना है ।

—अख्तर शीरानी

१६५ मजिल मे मुहब्बत की हस्ती<sup>३</sup> ही रुकावट है ।  
कल बज्म<sup>४</sup> मे कहता था, जलता हुआ परवाना ॥

—माहिर

१६६ हर्गिज फरेवे-रगे-ममरत<sup>५</sup> न खाइए ।  
यह गम का नाम है, यह हकीकी खुशी<sup>६</sup> नहीं ॥

—शौकत थानवी

१६७ हर हाल मे खुश रहना, खुश रहके अलम<sup>७</sup> सहना ।  
इक चीज जमाने मे फरहत<sup>८</sup> की भी हस्ती<sup>९</sup> है ॥

—फरहत कानपुरी

१६८ उफ रे । यह जौके-इबादत<sup>१०</sup> की अजाइबकारियाँ<sup>११</sup> ।  
दिल कही है, मैं कही, सजदा<sup>१२</sup> कही है, सर कही ।

अफसर मेरठी

१६९ बढा दी इतना कहकर शमा<sup>१३</sup> ने परवानो की हिम्मत ।  
“है जलना काम उनका, जो हैं दिलवाले जिगरवाले ॥

—अलम मुजफ्फरनगरी

१७० जरा दरिया की तह तक पहुँच जाने की हिम्मत कर ।  
तो फिर ऐ डूबने वाले किनारा ही किनारा है ॥

—माहिर

---

१ पल, क्षण २ प्रसन्न ३ जीवन ४. महफिज ५. खुशी के रग का  
घोखा ६ सच्चा आनन्द ७ दुख ८ कवि का उपनाम और खुशी ९  
अस्तित्व १० उपासना की रुचि, लगन ११ विचित्रताएँ, आश्चर्यजनक बातें  
१२ नमन, मस्तक झुकाना १३ मोमबत्ती, दीपक ने ।

- १७१ कुछ अपना मर्तवा<sup>१</sup> जानो, कुछ अपनी कद्र पहचानो ।  
जमी पर वसने वालो । शिकवये-हफत-आसूमा<sup>२</sup> कब तक ?  
—अमन
- १७२ है कामयाब वही इस जहाने-फानी<sup>३</sup> मे ।  
जो बेनियाजे-तमन्ना<sup>४</sup> है जिन्दगानी मे ॥
१७३. मेरी परवाज<sup>५</sup> क्या आए नजर तुमको चमन वालो ।  
तमब्वुर<sup>६</sup> मे जो उडता हो, वोह महद्दे-नजर<sup>७</sup> क्यों हो ?  
—अलम मुजफ्फरनगरी
- १७४ कही विजली, कही गुलची,<sup>८</sup> कही सैयाद<sup>९</sup> का खतरा ।  
फले-फूलेंगी इस गुलशन मे साखे-आशियाँ<sup>१०</sup> क्यों कर ?  
—अलम ”
- १७५ मजिले-अर्शपै<sup>११</sup> दम लेने को ठहरो तो, मगर—  
दम भी लेने दे मुझे लज्जते-परवाज<sup>१२</sup> कही ?  
—अलम ”
- १७६ देख ऐ सुवइम<sup>१३</sup> यही था मुझ मे-तुझ मे इम्तियाज<sup>१४</sup> ॥  
तेरा कब्जा<sup>१५</sup> था जहाँ पर, मेरा कब्जा दिल पै था ॥  
—अलम ”
- १७७ तलाश-ओ-जुस्तजू<sup>१६</sup> की सरहदें<sup>१७</sup> अब खत्म होती हैं ।  
खुदा मुझको नजर आने लगा इन्साने-कामिल<sup>१८</sup> मे ॥  
—अलम ”
- १७८ है फर्ज तुझपै बन्दए-खुदा<sup>१९</sup> की तलाश ।  
खुदा की फिर न कर, वोह मिला, मिला, न मिला ॥  
—अलम ”

१ दर्जा, गोरव २ मातर्वे आसमान की शिकायत ३ क्षणभंगुर मसार मे  
४ कामना से अनभिज्ञ, अपरिचित ५ उडान ६ विचार, चिन्तन, खयाल  
७ सकीर्ण दृष्टि ८ माली ९ शिकारी १० घोंसले की टहनी ११ आकाश  
की मजिल पर १२ उडान का आनन्द १३ घनिक १४ अन्तर, भेद १५  
अधिकार १६ खोज और तलाश १७ सीमाएँ १८ पूर्ण पुरुष मे  
१९ ईश्वर-भक्त ।

१८६ खाकसारी<sup>१</sup> का है गाफिल । बहुत ऊँचा मर्तवा ।  
यह जमी वह है कि जिस पर आसमाँ कोई नहीं ॥

—अलम ”

१८७ कोई सोता हो जैसे डूबती किस्ती के तख्ते पर ।  
अगर कुछ है तो बस इतनी है इस दुनिया की राहत<sup>२</sup> भी ॥

—मुल्ला

१८८ यह दुनिया है ऐ ‘शाद’, नाहक न उलझो ।  
हर इक तो कुछ अपनी-सी आखिर कहेगा ॥

—शाद

१८९ पढ़के दो कलमे अगर कोई मुसलमा हो जाए ।  
फिर तो हैवान<sup>३</sup> भी दो रोज में इन्सा<sup>४</sup> हो जाए ॥

—यगाना

१९० गुलो<sup>५</sup> पर क्या है, काँटो तक का मैं दिल से दुआ-गो<sup>६</sup> हूँ ।  
खुदाबन्दा<sup>७</sup> । न टूटे दिल किसी दुश्मन से दुश्मन का ॥

—शाद

१९१ फँस गई वाली में सुफेदी चौक जरा करवट तो बदल ।  
गाम से गाफिल मोने वाले । देख तो कितनी रात हुई ?

—आरज़ू लखनवी

१९२ गवनम<sup>८</sup> के आँसुओ पर क्या हँस रहे है गुचे<sup>९</sup> ?  
उनसे तो कोई पूछे, कब तक हँसा करेंगे ?

—आरज़ू

१९३ गुलो ने खारो के छेड़ने पर सिवा खमोशी<sup>१०</sup> के दम न मारा ।  
शरीफ<sup>११</sup> उलझे अगर किसी से तो फिर शराफत<sup>१२</sup> कहाँ रहेगी ?

—शाद

---

१ नम्रता २ सुख-चैन ३ पशु ४ मनुष्य ५ फूलो ६ दुआ माँगने वाला ७ हे ईश्वर, हे प्रभो ८ ओस के ९ कलियाँ १० चुप्पी ११ सज्जन १२ सज्जनता ।

१८७ दुनिया की तरक्की है, इस राज से वावस्ता<sup>१</sup> ।  
इन्सान के कब्जे में सब कुछ है, अगर दिल है ॥

—सफी लखनवी

१८८ वो काम कर बुलन्द<sup>२</sup> हो जिससे मजाके-जीस्त<sup>३</sup> ।  
दिन जिन्दगी के गिनते नहीं माहो-साल से ॥

—असर लखनवी

१८९ कौन कहता है कि मौत अजाम<sup>४</sup> होना चाहिए ।  
जिन्दगी का जिन्दगी पैगाम<sup>५</sup> होना चाहिए ॥

—असर ,,

१९० ख़दा ऐसे वन्दो से क्यों फिर न जाए ?  
जो बैठा हुआ माँगता जानता है ॥

—यगाना चंगेजी

१९१ अपना अदा शनाश<sup>६</sup> बन, अपना जमाल<sup>७</sup> भी तो देख ।  
तुझ में कमी है कौन-सी, तुझ में कमी कोई नहीं ॥

—अबीब

१९२ बन्दा वह, जो दम न मारे ।  
प्यासा खड़ा हो दरिया किनारे ॥

— यगाना

१९३ हमे खुदा के सिवा कुछ नजर नहीं आता ।  
निकल गए हैं बहुत दूर जुस्तजू से हम ॥

१९४ पैदा वोह बात कर कि तुझे रोये दूसरे ।  
रोना खुद अपने हाल पै यह ज़ार-जार क्या ?

—अज़ीज़

१ आवद्ध, नत्थी २ उच्च ३ जीवन का लक्ष्य ४ परिणाम, नतीजा  
५ सन्देश ६ आत्म-पारखी ७ सौन्दर्य, रूप, छवि, खूबी ।

१६५ था मुल्क जिनके जेरे-नगी,<sup>१</sup> साफ मिट गये ।  
तुम इस खयाल में हो कि नामो-निशा रहे ॥

—मीर

१६६. दुनिया से इक अफसाना<sup>२</sup> कहने को थे, मगर सोचा ।  
दुनिया है खुद अफसाना, अफसाने से क्या कहिए ॥

—अवधूतानन्द

१६७ राही कही है, राह कही, राहवर<sup>३</sup> कही ।  
ऐसे भी कामयाब हुआ है सफर कही ॥

—भोलानाथ

१६८ तेरी गली में आकर खोये गए हैं दोनों ।  
दिल मुझको ढूँढता है, मैं दिल को ढूँढता हूँ ॥

१६९ जाहिर में गो बैठा लोगो के दरमियाँ<sup>४</sup> हूँ ।  
पर यह खबर नहीं है—मैं कौन हूँ, कहाँ हूँ ?

—विद्यासागर

२०० और पर क्यों जान दे, क्यों और पर कुरबान<sup>५</sup> हो ।  
जिस पै आशिक हो गए, हम उस पै आशिक हो गए ॥

—विद्यासागर

२०१ तेरे सीने में<sup>६</sup> तो नादाँ<sup>७</sup> बहरे-बेपाया<sup>८</sup> रहे ।  
और तू कतरे<sup>९</sup> के पीछे गाकी-व-नालाँ<sup>१०</sup> रहे ॥

—भोलानाथ

२०२ इक नजर का है बदलना और इस जा कुछ नहीं ।  
दरमियाने-मौजो-कतरा<sup>११</sup> गैरे-दरिया<sup>१२</sup> कुछ नहीं ॥

—नाथ

---

१ शासनाधीन, मातहत २ कहानी, किस्सा ३ मार्ग-दर्शक ४ बीच में  
५ न्योछावर, ६ अन्तःकरण में ७ गाफिल, मूर्ख ८ अक्षय क्षीरसागर  
९ विन्दु के १० सदिग्ध, और रोता हुआ ११ बूँद और लहर के बीच में  
१२ नदी के अतिरिक्त ।



- २०३ क्या शै<sup>१</sup> है कि जिसमे तेरी गान<sup>२</sup> नही है ।  
पर हक<sup>३</sup> तो यह है कि वन्दे को पहचान नही है ।  
२०४ वोह चश्म<sup>४</sup> कर<sup>५</sup> है कि नही जिसमे तेरा नूर ।  
तारीक<sup>६</sup> दिल है, जिसमे तेरी रोगनी नही ॥

—शौक

- २०५ आलमे-फानी<sup>७</sup> की यारो । चाल देखी है अजब<sup>८</sup> ।  
इस जहाँ से जो गया, वैसा न आया फिर कोई ॥

—जेम्स कार्कर

- २०६ हमने राहे-उल्फत<sup>९</sup> मे क्या कहे कि क्या पाया ?  
आपको भुला घंटे, जब तेरा पता पाया ॥

—फना

- २०७ रह शीक से जहाँ मे, मगर यह खयाल रख ।  
इस घर मे कोई तुभसे भी पहले जरूर था ॥

—फना

- २०८ हैफ<sup>१०</sup> जो दिल मे था उसको ही न देखा हमने ।  
दूर दरिया से रहे साहिले-दरिया<sup>११</sup> होकर ॥

—फना

- २०९ महबे-तलाशे-राहत<sup>१२</sup> । तू यह भी जानता है ।  
कहते हैं जिसको राहत, वोह गम की इन्तहा<sup>१३</sup> है ॥

—अफ़्मर

- २१० तेरी हुरती<sup>१४</sup> से मुनकिर<sup>१५</sup> होते जाते हैं जहाँ वाले<sup>१६</sup> ।  
संभाल अपनी खुदाई को अरे ओ आसमाँ वाले ॥

—मुल्ला

---

१ वस्तु २ जत्वा, प्रकाश ३ नच ४ जाँग ५ अन्धी ६ अन्धकार  
७ पूर्ण ८ धणभंगुर गंगा की ९ निगानी १० प्रेम-मार्ग ११ अफ़्मोन,  
आदम १२ नदी नट पर १३ गुग-चैन की खोज में तल्लीन १४ अति  
१५ अस्तित्व १६ स्नान करने वाले १७ दुनिया के लोग ।

२११. तमन्नाएँ<sup>१</sup> वर आई<sup>२</sup> अपनी तर्क-मुद्दा<sup>३</sup> होकर ।  
हुआ दिल वेतमन्ना<sup>४</sup> अब, रहा मतलब से क्या मतलब ?  
—अमरनाथ साहिर
- २१२ परदा पडा हुआ था गफलत का चश्मे-दिल<sup>५</sup> पर ।  
आँखे खुली तो देखा आलम<sup>६</sup> में तू-ही-तू है ॥
- २१३ हम जग करेंगे फितरत<sup>७</sup> से फितरत पर काबू पाएँगे ।  
और फितरत पर काबू पाकर, इक रोज अमर हो जाएँगे ॥  
—रुह्तशायहूसैन
- २१४ चाह<sup>८</sup> ने अन्धा कर रखा है और नहीं तो देखने में ।  
आँखे-आँखे सब हे बराबर, कौन निराली आँखे है ॥  
—आरजू लखनवी
- २१५ हमे दुनिया के भ्रमेलो का कोई एहसास<sup>९</sup> नहीं ।  
एक कोने में अलग सबसे जुदा बैठे हैं ॥  
—दिस्मिल
- २१६ तमाशा इसको समझे, खेल समझे, दिव्लगी समझे ।  
वस उसकी जिन्दगी है, मौत को जो जिन्दगी समझे ॥  
—विस्मिल
- २१७ खुदी<sup>१०</sup> को कर बुलन्द<sup>११</sup> इतना कि हर तकदीर से पहले ।  
खुदा बन्दे<sup>१२</sup> से खुद पूछे, बता तेरी रजा<sup>१३</sup> क्या है ॥  
—इक्वाल
- २१८ महुवे-तसबीह<sup>१४</sup> तो सब है—मगर इदराक<sup>१५</sup> कहाँ ?  
जिन्दगी खुद ही इवादत<sup>१६</sup> है, मगर होश नहीं ॥  
—नातिक्र

१ इच्छाएँ २ पूर्ण हुई ३ निरिच्छ, निरीह ४ निष्काम, ५ मन की  
आँख ६ ससार में ७ प्रकृति, आदत, स्वभाव पर ८ तृष्णा, इच्छा ९  
अनुभूति, पता, ज्ञान १० यहभाव, अपनत्व को ११ ऊँचा १२ उपामक से  
१३ इच्छा, मर्जी १४ माला जपने में लीन १५ ज्ञान, समझ १६ उपासना ।

- २१६ वशर<sup>१</sup> ने खाक पाया, लाल पाया या गुहर<sup>२</sup> पाया ।  
मिजाज<sup>३</sup> अच्छा अगर पाया तो सब कुछ उसने भर पाया ॥  
—दार
- २२० उन्ही को हम जहाँ<sup>४</sup> मे रहरवे-कामिल<sup>५</sup> समझते हैं ।  
जो हस्ती<sup>६</sup> को सफर<sup>७</sup> और कब्र को मजिल<sup>८</sup> समझते हैं ॥  
—वक
- २२१ खिरदमन्दो<sup>९</sup> से क्या पूछूँ कि मेरी इत्तिदा<sup>१०</sup> क्या है ?  
कि मैं इस फिक्र मे रहता हूँ मेरी इन्तहा<sup>११</sup> क्या है ?  
—इक़बाल
- २२२ इश्के-सादिक<sup>१२</sup> जिसको कहते हैं, वोह परवाने मे है ।  
जिन्दगी का लुत्फ<sup>१३</sup> जिसको जल के मर जाने मे है ॥
- २२३ देख परवाना कभी राहे-गलत<sup>१४</sup> चलता नही ।  
छोड़कर दीपक को वह आग मे जलता नही ॥
- २२४ तेरे जलवो ने मुझे घेर लिया है ऐ दोस्त ।  
अब तो तनहाई<sup>१५</sup> के लमहे<sup>१६</sup> भी हसी<sup>१७</sup> होते है ॥  
—सीमाव
- २२५ यकी<sup>१८</sup> पैदा कर ऐ नादा । यकी से हाथ आती है ।  
वोह दरवेगी<sup>१९</sup> कि जिमके सामने भुकती है फगफूरी<sup>२०</sup> ॥  
—इक़बाल
२२६. जमाने मे चर्चे<sup>२१</sup> हैं दौर-हरम<sup>२२</sup> के ।  
बडी रौनको पर है दोनो दुकाने ॥  
—हफीज़

---

१ आदमी ने २ मोती, ३ स्वभाव ४ दुनियाँ मे ५. पूर्ण पथिक  
६. जिन्दगी को ७ यात्रा ८ गन्तव्य स्थान, पडाव ९ ज्ञानियो १० आरम्भ,  
आदि ११ अन्त १२ सच्चा प्रेम १३ मजा, आनन्द १४ गलत मार्ग पर  
१५ एकान्त १६ क्षण १७ सुन्दर १८. विश्वास १९ फकीरी २०. वाद-  
शाहत २१ ज़ि़क़ २२ मन्दिर और मस्जिद ।

- २२७ आबू<sup>१</sup> क्या है, तमन्नाए-वफा<sup>२</sup> मे मरना ।  
दीन<sup>३</sup> क्या है, किसी कामिल<sup>४</sup> की परस्तिश<sup>५</sup> करना ॥  
—चकबस्त
- २२८ आराम<sup>६</sup> अगर चाहे तो आ राम<sup>७</sup> की तरफ ।  
फन्दे<sup>८</sup> मे फसा चाहे तो जा दाम<sup>९</sup> की तरफ ॥
- २२९ नियाजे-इश्क<sup>१०</sup> को समझा है क्या ऐ वाइजे-नादा<sup>११</sup> ।  
हजारो बन गए काबे<sup>१२</sup> जबी<sup>१३</sup> मैंने जहाँ रख दी ॥  
—असगर
- २३० आईना<sup>१४</sup> उठा करके यूँ अक्स<sup>१५</sup> से कहता है—  
“क्यूँ बात नहीं करता, जो तू है वही मैं हूँ ॥”
- २३१ जब अपने तसव्वुर<sup>१६</sup> को मादूम<sup>१७</sup> किया मैंने ।  
हर आईने मे तेरी तसवीर नजर आई ॥
- २३२ आह किसकी जुस्तजू<sup>१८</sup> आवारा<sup>१९</sup> रखती है तुझे ।  
राह<sup>२०</sup> तू, रहरी भी<sup>२१</sup> तू, रहबर<sup>२२</sup> भी तू, मजिल भी तू ॥
- २३३ कापता है दिल तेरा अन्देश-ए-तूफा<sup>२३</sup> से क्या ?  
नाखुदा<sup>२४</sup> तू, बहर<sup>२५</sup> तू, किस्ती<sup>२६</sup> भी तू, साहिल भी तू ॥
- २३४ वाये-नादानी<sup>२७</sup> कि तू मोहताजे-साकी<sup>२८</sup> हो गया ।  
मय<sup>२९</sup> भी तू, मीना<sup>३०</sup> भी तू, साकी<sup>३१</sup> भी तू, महफिल भी तू ॥  
—इक़बाल

१ प्रतिष्ठा, इज्जत २ प्रेम की अभिलाषा मे ३ धर्म ४ पूर्ण, सिद्ध, ज्ञानी ५ पूजा ६ मुख-शान्ति, ७ परमात्मा, अध्यात्म, ८ बन्धन, जाल ९ कचन, माया १० प्रेमाभिलाषा, ११ मूर्ख उपदेशक १२ मुस्लिम तीर्थ-स्थान १३ मस्तक १४ दर्पण १५ प्रतिबिम्ब १६ ध्यान को १७ नष्ट, दूर १८ तलाश १९ व्यर्थ ही इधर-उधर घूमने वाला, २० पथ २१ पथिक २२ पथप्रदर्शक २३ तूफान का डर २४ मल्लाह २५ समुद्र २६ नौका २७ अज्ञानता के कारण २८ पिलाने वाले का मोहताज २९ मदिरा ३० प्याला ३१ पिलाने वाला ।

- २३५ आरजू, फिर आरजू के बाद खूने-आरजू<sup>१</sup> ।  
चार हफ्तों<sup>२</sup> में है सारी दास्ताने-जिन्दगी<sup>३</sup> ॥
- २३६ बहुत मुश्किल निभाना है मुहब्बत अपने दिलबरसे<sup>४</sup> ।  
उधर सूरत अमीराना, इधर हालत फकीराना ॥

—अवधूतानन्द

- २३७ वाये-नादानी कि वक्ते-मर्ग<sup>५</sup> यह साबित<sup>६</sup> हुआ ।  
ख्वाब<sup>७</sup> था जो-कुछ कि देखा, जो सुना अफसाना<sup>८</sup> था ॥
- २३८ हम है खुद खुदा, न वोह हमसे जुदा ।  
जो जाने जुदा, सो न पावे खुदा ॥
- २३९ दुई का पर्दा फाड़ कर करदे गाफिल तार-तार ।  
और अपने आसुओं का ले गले में डाल हार ॥

—भोलानाथ

- २४० दमे-आखिर<sup>९</sup> हम अपनी जिन्दगी का राज क्या समझे ?  
यह कह कर चल दिए दुनिया से, दुनिया से खुदा समझे ॥

—बिस्मिल

- २४१ अगर है मजूर सरबलन्दी,<sup>१०</sup> तो दूर नजरो से कर बलन्दी ।  
कि ओज<sup>११</sup> शम्सो-कमर<sup>१२</sup> ने पाया है सर को अपने भुका-भुकाकर ॥

—त्रिलोकचन्द

- २४२ आके तमाशागाहे-जहाँ<sup>१३</sup> में दादे-तमाशा क्या चाहें ?  
याँ हर जर्रा<sup>१४</sup> कहता है, मैं जर्रा नहीं इक दुनिया हूँ ॥

—फानी

---

१ इच्छा का खून २ शब्दों में ३ जीवन की कहानी ४ प्रिय  
५ मृत्यु-वेला में ६ प्रमाणित ७ सपना ८ किस्सा-कहानी ९ अन्तिम  
नांस में १० उच्चता को पाना ११ ऊँचाई १२ चाँद-सूरज १३ मसार का  
ब्रीडा-गृह १४ परमाणु ।

- २४३ नेकने तो नेक जाना, बद ने जाना बद<sup>१</sup> मुझे ।  
हर किसी ने अपने ही रूतवे<sup>२</sup> मे पहचाना मुझे ॥  
—इकबाल
- २४४ गमके टहोके<sup>३</sup> कुछ हो बला से आके जगा तो जाते है ।  
हम हैं मगर वोह नीद के माते<sup>४</sup> जागते ही सो जाते हैं ॥  
—फानी
- २४५ मजिले-इष्क पै तनहा<sup>५</sup> पहुँचे, कोई तमन्ना साथ न थी ।  
थक-थक कर इस राह मे आखिर इक-इक साथी छूट गया ॥  
—फानी
- २४६ मेरी नाकामयाबी<sup>६</sup> की कोई हद<sup>७</sup> हो नही सकती ।  
सदाकत<sup>८</sup> चल नही सकती, खुशामद हो नही सकती ॥  
—अकबर
- २४७ दिल जो था खास घर उसका न बनाया अफसोस ।  
मन्जिदो-दैर<sup>९</sup> बनाया करो, क्या होता है ?  
—आसी
- २४८ रहता है इबादत<sup>१०</sup> मे मुझे मौत का खटका<sup>११</sup> ।  
मैं यादे-खुदा करता हूँ, करले न खुदा याद ॥  
—दाग
- २४९ 'नमीम' अपने ही ऐमालो<sup>१२</sup> से गर्दिश<sup>१३</sup> है ज़माने की ।  
रवा<sup>१४</sup> किस्ती पे<sup>१५</sup> आता है नजर हर नखल<sup>१६</sup> साहिल<sup>१७</sup> का ॥  
—नसीम
- २५० हम फकीर अपनी फकीरी मे शबो-रोज<sup>१८</sup> है मस्त ।  
तुम्हको ऐ शाह<sup>१९</sup> मुबारक रहे शाही<sup>२०</sup> तेरी ॥  
—अमीर

---

१ बुरा २ ढग ३ भोके, थपेड़े, घक्के ४ मतवाले ५ अकेले ६ असफलता ७ सीमा ८ सच्चाई ९ मन्दिर १० उपासना मे ११ डर १२ कर्मों १३ चक्कर १४ चलता हुआ १५ नाव १६ वृक्ष, १७ किनारे १८ रात-दिन १९. बादशाह २० बादशाहत ।

२५१ ऐ 'बली' रहने को दुनिया मे मुकामे-आशिक<sup>१</sup> ।  
कूचए-यार<sup>२</sup> है या गोशए-तनहाई<sup>३</sup> है ॥

—बली

२५२ आलम<sup>४</sup> के लोगो का है तसवीर का-सा आलम<sup>५</sup> ।  
जाहिर खुली है आँखे लेकिन है वेखवर<sup>६</sup> सव ॥

—मीर

२५३ ऐ हुव्वे-जाह<sup>७</sup> वालो । जो आज ताजवर<sup>८</sup> है ।  
कल उसको देखियो तुम, न ताज है न सर है ॥

—मीर

२५४ न कोई पर्दा है उसके दर पर, न रूए-रीशन<sup>९</sup> नकाव मे है ।  
तू आप अपनी खुदी से ऐ दिल । हिजाब मे है, हिजाब<sup>१०</sup> मे है ॥

२५५ सब्ज<sup>११</sup> होती ही नही यह सरजमी<sup>१२</sup> ।  
तुलमे-ख्वाहिश<sup>१३</sup> इसमे तू बोता है क्या ?

२५६ कोई किस दिल से मिलता है, कोई किस दिल से मिलता है ।  
मगर हाँ आशिके-सादिक<sup>१४</sup> बडी मुश्किल से मिलता है ॥

—बिस्मिल

२५७. न दरवेगो<sup>१५</sup> का खिरका<sup>१६</sup> चाहिए न ताजे-सुलताना<sup>१७</sup> ।  
मुझे तो होश दे इतना, रहूँ मै तुझ पै दीवाना ॥

—जफर

२५८ आए थे उसी की तजस्सुस<sup>१८</sup> मे, जाते है उसी को ढूँढेगे ।  
इस आरजी<sup>१९</sup> आने-जाने को फिर मरना-जीना क्या कहिए ?

—अलम

१ प्रेमी का स्थान २ यार की गली ३ एकान्त कोना ४ ससार  
५ हालत, दशा ६ वेसुध, वेहोश ७ शानो-शौकत ८ सम्राट् ९ प्रकाशमान,  
चेहरा १० पर्दा ११ हरी-भरी १२ भूमि १३ इच्छा का बीज १४ सच्चा  
प्रेमी १५ फकीरो का १६ लिवास १७ राज-मुकुट १८ तलाश, खोज मे  
१९ कृत्रिम ।

२५६ दर पै शाहो के नही जाते फकीर अल्लाह के ।  
सर जहाँ रखते है सब, हम वा कदम रखते नही ॥

—नसीम

२६० दिल इवादत से चुराना और जन्नत<sup>१</sup> की तलब<sup>२</sup> ।  
कामबोर<sup>३</sup> ! इस काम पर किस मुँह से उजरत<sup>३</sup> की तलब ?

—जौक

२६१ हजरते-दिल का देखना आलम<sup>४</sup>, हाथ उठाए दुनिया से ।  
पाँव पसारे बैठे है और सर पै सफर के भगडे है ॥

—जौक

२६२. आँख जो-कुछ देखती है लब पै आ सकता नही ।  
महवे-हैरत<sup>५</sup> हूँ यह दुनिया, क्या से क्या हो जायगी ॥

—सीमाब

२६३ सबक इवरत<sup>६</sup> का ले नादान । बालो की सुफेदी से ।  
कफन ओढा है जीते जी निगारे-जिन्दगानी<sup>७</sup> ने ॥  
नजर<sup>८</sup> कर भुरियो से गेब<sup>९</sup> के सिमटे हुए रुख पर ।  
यह वह विस्तर है दम तोडा है जिस पर जिन्दगानी ने ॥

—जोश

२६४ हम क्या कहे अहबाब<sup>१०</sup> क्या कारे-नुमायाँ<sup>११</sup> कर गए ।  
वी० ए० किया, नौकर हुए, पेन्शन मिली और मर गए ॥

—अकबर

२६५ शौके-नज्जारा<sup>१२</sup> था जब तक, आँख थी सूरत-परस्त<sup>१३</sup> ।  
बन्द हूँ जब रहने लगी, पाए हकीकत<sup>१४</sup> के मजे ॥

—शाकिर मेरठी

---

१ स्वर्ग की २ आकाक्षा ३. पारिश्रमिक, मजदूरी की ४ स्थिति, हालत  
५. विस्मय-विमुग्ध ६ शिक्षा का पाठ ७ जीवन-मौन्दर्य ने ८ दृष्टि डाल  
९. मुँह १० मित्र ११ कारनामे १२ देखने का चाव १३ रूप-पुजारिन्,  
ऊपरी टीप-टाप देखने वाली १४ वास्तविकता, सच्चाई ।



२६६. गिरे जाते हैं हम खुद अपनी नजरो से सितम<sup>१</sup> यह है ।  
बदल जाते तो कुछ रहते, मिटे जाते हैं गम यह है ॥

—अकबर

२६७ लोग कहते हैं कि है आप निहायत काबिल<sup>२</sup> ।  
मैं इसी सोच में रहता हूँ कि किस काबिल हूँ ?

—अकबर

२६८ वन्दगी में तो है वोह लुत्फ जो शाही में नहीं ।  
दिल से कोई मगर अल्लाह का बन्दा भी तो हो ॥

—अकबर

२६९. डल्मी तरक्कियो से जवाँ तो चमक गई ।  
लेकिन अमल<sup>३</sup> वही है फरेबो-दगा<sup>४</sup> [के साथ ॥

—अकबर

२७० अगर्चे आशिक बुतो का हूँ मैं, नजर खुदा से फिरी नहीं है ।  
जो आँख रखते हैं जानते हैं कि आगिकी काफिरी<sup>५</sup> नहीं है ॥

२७१ हकीकत<sup>६</sup> की तरफ अपना कदम जितना बड़ाता हूँ ।  
जिसे नजदीक समझा था, उसी को दूर पाता हूँ ॥

२७२ दुनिया की महफिलो से घबरा गया हूँ यारव ।  
क्या लुत्फ अंजुमन<sup>७</sup> का, जब दिल ही बुझ गया हो ?

—इक़्वाल

२७३ अलग रहता हूँ मैं वज्मे-निशातो-ऐजे-दुनिया<sup>८</sup> से ?  
निगाहे-यास<sup>९</sup> हूँ, दर्दे-दिले-अफसुर्दगा<sup>१०</sup> मैं हूँ ॥

—नाशाद

---

१ गजब २ अत्यन्त योग्य ३ आचरण, कर्म ४ छल-कपट के  
५ नास्तिकता ६ सच्चाई ७ सभा-सोमायती ८ ससार के भोग-विलास की  
प्रसन्नता की सभा से ९ निराशा की दृष्टि १०. उदास, मुरझाये हुए दिल का  
दुःख ।

२७४. खुदा की हस्ती<sup>१</sup> को याद रखना और अपनी हस्तीको भूल जाना ।  
नजर उसी पर है और बातों को मैंने फिजूल<sup>२</sup> जाना ॥

—अकबर

२७५ रकबा<sup>३</sup> तुम्हारे गांव का मीलो हुआ तो क्या ?  
रकबा तुम्हारे दिल का तो दो इंच भी नहीं ॥

—अकबर

२७६ दुनिया की क्या हकीकत और हम से क्या तआल्लुक<sup>४</sup> ?  
वो क्या है, इक भलक है, हम क्या है इक नजर हैं ॥

—अकबर

२७७ यही बहसे<sup>५</sup> रही सब मे, वोह कैसे है, वोह कैसे थे ?  
यही सुनते हुए गुजरी वोह ऐसे है, वोह ऐसे थे ॥  
अमल<sup>६</sup> औरों के ही देखा किये, ये नेक ये बद है ।  
तरक्की खुद न की कुछ, रह गए वैसे कि जैसे थे ॥

२७८ गर्चे<sup>७</sup> हैं गुमराह, मजिल<sup>८</sup> पर पहुँच जाऊँगा मैं ।  
रहरवो<sup>९</sup> के पाँव के चलते निशाँ<sup>१०</sup> को देखकर ॥

—नाशाद

२७९ हजारो जीते, हजारो हारे, अजीब<sup>११</sup> दुनिया की कशमकश<sup>१२</sup> है ।  
जो देखा 'नाशाद' वक्त बाकी, न जीत बाकी न हार बाकी ।

—नाशाद

२८०. हैं महवे-जात<sup>१३</sup> इतना कि बेखुद हैं, मस्त हैं ।  
अब मैं खुदापरस्त<sup>१४</sup> नहीं, खुदपरस्त<sup>१५</sup> हूँ ॥

—हमीदुल्ला

---

१. अस्तित्व २ बेकार ३ क्षेत्र ४ सम्बन्ध ५ वाद-विवाद  
६ आचरण, व्यवहार ७ यद्यपि ८ लक्ष्य पर, ९ यात्रियों के १० चिन्ह,  
निशान ११. निराला १२ मघर्ष १३ अपने आप में लीन १४ प्रभु-  
पुजारी १५ आत्मोपासक ।

२८१ हजार साइन्स<sup>१</sup> रग लाए, हजार वाते हम बनाएँ ।  
खुदा की कुदरत<sup>२</sup> यही रहेगी, हमारी हैरत<sup>३</sup> यही रहेगी ॥

—अकबर

२८२ आसमा के ओज<sup>४</sup> से अफकार<sup>५</sup> को वापस बुला ।  
यह जमी सब-कुछ है नाँदा । आसमा कुछ भी नहीं ॥

—कमाल

२८३ जमी से दूर तारो पर निगाहे<sup>६</sup> डालने वाले ।  
खबर<sup>७</sup> भी है कि यह खाकी कुराँ<sup>८</sup> भी इक सितारा है ?

—कमाल

२८४. जवाँ खोली है महफिल मे वाह-वाह<sup>९</sup> के लिए ।  
कभी तो वन्द कर आँखे खुदा के लिए ॥

—अकबर

२८५ मैं जिसे समझा हूँ 'मै' वह नफ्स<sup>१०</sup> की है ख्वाहिर्गें<sup>११</sup> ।  
'मै' हकीकत मे है जो, मुभसे निहायत<sup>१२</sup> दूर है ॥

—अकबर

२८६. मै तो कहता था यही और कहूँगा यही ।  
वात वो खूब<sup>१३</sup> है, जो अल्लाह से नजदीक<sup>१४</sup> करे ॥

—अकबर

२८७ दिल के जो दुश्मन<sup>१५</sup> हैं, उनके गौक मे रहती है आँख ।  
जान का मालिक जो है, उससे नजर मिलती नहीं ॥

—अकबर

२८८ मजा भी आता है दुनिया से दिल लगाने का ।  
सजा<sup>१६</sup> भी मिलती है, दुनियाँ से दिल लगाने की ॥

—मजर

१ विज्ञान २ लीला ३ आश्चर्य ४. ऊँचाई ५ चिन्तन, खयाल  
६ दृष्टि ७ पता ८ जमीन का टुकड़ा ९ आवाशी के लिए १०. वासना  
की ११ इच्छाएँ १२ वृत्त १३ ठीक, सही, श्रेष्ठ १४ समीप १५ शत्रु  
१६ दण्ड ।

- २८९ यह बुलन्दो<sup>१</sup> और पस्ती<sup>२</sup> चार दिन का खेल है ।  
यह बड़े-छोटे की हस्ती, चार दिन का खेल है ॥
२९०. बस इतना फर्क<sup>३</sup> है, इन्सान में और उसकी तुर्वत<sup>४</sup> में ।  
वोह है इक ढेर मिट्टी का, यह है तसवीर मिट्टी की ॥

—मज़र

- २९१ हो दीलतो-जर से जिसको रगवत<sup>५</sup> ।  
क्यो कर हो उसे खुदा से उलफत<sup>६</sup> ॥
- २९२ आसमा पर पहुँचे कब उसका खयाल ?  
जिसको घर का भी नहीं मालूम हाल ॥
- २९३ कदमे-शौक वढे इनकी तरफ क्या 'अकबर' ।  
दिल से मिलते नहीं, यह हाथ मिलाने वाले ॥

—अकबर

- २९४ काफिर<sup>७</sup> की यह पहचान है कि आफाक<sup>८</sup> में गुम<sup>९</sup> है ।  
मोमिन<sup>१०</sup> की यह पहचान कि गुम उसमें है आफाक ॥

—इक़बाल

- २९५ नक्शे-बातिल<sup>११</sup> मैं नहीं, जिसको मिटाये आसमा ।  
मैं नहीं मिटने का जब तक, है बिनाए-आसमा<sup>१२</sup> ॥

—बर्क

- २९६ सोज<sup>१३</sup> बनकर दिल में आया साज<sup>१४</sup> बनकर दिल में आ ।  
तेरी मजिल है, किसी सूरत<sup>१५</sup> से इस मजिल में आ ॥

—नश्तर

---

१ ऊँचाई २ नीचाई ३ अन्तर ४ कब्र ५. आसक्ति ६ प्रेम  
७ नास्तिक ८ दुनिया में ९ डूबा हुआ, विलुप्त १० आस्तिक ११ झूठा  
चिन्ह, विनाशी तत्त्व १२ आकाश का अस्तित्व, आममान की दुनियाद  
१३ जलन, दुःख-दर्द १४ सुख, चैन १५ तरह ।

२६७. हसरते-हासिल<sup>१</sup> मे जो लज्जत है, कव हासिल<sup>२</sup> मे है ?  
 लुत्फ मजिल दर हकीकत<sup>३</sup>, दूरये-मजिल<sup>४</sup> मे है ॥

—कोकब

२६८ तमन्ना दर्दे-दिल की हो तो कर खिदमत फकीरो की ।  
 नही मिलता यह गौहर<sup>५</sup> वादशाहो के खजीनो<sup>६</sup> मे ॥

—जिगर

२६९ तेरी जुदा पसन्द है, मेरी जुदा पसन्द ।  
 तुझको खुदी पसन्द है, मुझको खुदा पसन्द ॥

३०० मंजिरे-तसवीर<sup>७</sup> दर्दे-दिल<sup>८</sup> मिटा सकता नही ।  
 आईना पानी तो रखता है, पिला सकता नही ॥

३०१ तर्क<sup>९</sup> कर अपनी खुदी, तुझको खुदा मिल जाएगा ।  
 कौन कहता है कि दूँढे से खुदा मिलता नही ॥

—हुनर

३०२ तामीरे<sup>१०</sup> है, खैराते<sup>११</sup> हैं और तीरथ-हज भी होते है ।  
 यो खून के धब्बे दामन से यह दौलत वाले धोते है ॥

३०३ खुदा के साथ नही हो तो कुछ नही हो तुम ।  
 खुदा के साथ अगर हो तो फिर खुदा ही हो ॥

—अकबर

३०४ इन्ही फिक्रो<sup>१२</sup> मे अपनी ज़िन्दगी के दिन गुजरते हैं ।  
 यह करना है, वह करना है, यह होना है, वह होना है ॥

—बिस्मिल

१. प्राप्ति की कामना मे २. प्राप्ति मे ३. वास्तव मे ४ गन्तव्य की दूरी मे ५ मोती ६ खजाना ७ तसवीर का नजारा ८ मन की व्यथा ९ छोड़ १० निर्माण ११ दान १२ चिन्ताओं ।

३०५ दिलका तेरा शिवाला, सब मन्दिरों से आला ।  
देखा करूँ मैं इसमें हरदम जमाल<sup>१</sup> तेरा ॥

—विस्मिल

३०६. दिल के सिवा न कावे<sup>२</sup> मे है, वह न दैर<sup>३</sup> मे ।  
गर है तो बस यही है, नही तो कही नही ॥

—दाग

३०७ हर एक को यह दावा है कि हम भी है कोई चीज ।  
और हमको है यह नाज<sup>४</sup> कि हम कुछ भी नहीं हैं ॥

—अकबर

३०८ दौलत हो अगर सब-ओ-कनाअत<sup>५</sup> की मुयस्सर<sup>६</sup> ।  
फिर दौलते-दुनिया<sup>७</sup> की जरूरत नही होती ॥

३०९. अगर न हो अमल<sup>८</sup> तो इल्म<sup>९</sup> के होने से क्या हासिल ?  
किताबें लादकर यूँ तो बहुत खच्चर निकलते हैं ॥

—बसरहमान

३१० उस परिन्दे<sup>१०</sup> की तरह दुनियाँ में रहना चाहिए,  
चहचहाता है खुशी से जो कि नाजुक<sup>११</sup> शाख<sup>१२</sup> पर ।  
भूलती है शाख लेकिन कुछ खतर<sup>१३</sup> उसको नही,  
गिर नही सकता कि हैं मौजूद उड़ जाने को पर<sup>१४</sup> ॥

—अकबर

३११ नुक्ते<sup>१५</sup> के हेर-फेर से हमसे जुदा हुआ ।  
नुक्ता पलट दिया तो आप ही खुदा हुआ ॥

१ प्रकाश, चमत्कार २. मुस्लिम तीर्थस्थान ३ मन्दिर ४ गर्व  
५ सन्तोष ६ प्राप्त, नसीब ७ ससार का घन ८ आचरण ९ ज्ञान, विद्या  
१० पछी ११ कमजोर १२ टहनी १३ डर १४ पख १५ बिन्दु ।

३१२ जिन्दगी बैठी थी अपने हुस्न<sup>१</sup> पर भूली हुई ।  
मौत ने आते ही सारा रंग फीका कर दिया ॥

—अख्तर

३१३ गिवाले की जानिव<sup>२</sup> कदम क्यो बढाऊँ ?  
नजर किसलिए सूए-मस्जिद<sup>३</sup> करूँ मैं ?  
मेरे दिल को अल्लाह आवाद रखे,  
मेरा दिल ही मस्जिद है, दिल ही गिवाला ॥

—बृहनारवी

३१४ ऐसी भी इक नजर किए जा रहा हूँ मैं,  
जरोँ<sup>४</sup> को महर-ओ-माह<sup>५</sup> किए जा रहा हूँ मैं ।  
गुलगन-परस्त<sup>६</sup> हूँ मुझे गुल ही नहीं पसन्द,  
काँटो से भी निबाह<sup>७</sup> किए जा रहा हूँ मैं ॥

—जिगर

३१५. जमा की दौलते-दुनिया अगर दुनिया मे, क्या की ?  
जो जाए साथ उकवा मे<sup>८</sup> तू वोह सामान पैदा कर ॥  
३१६ क्या जरूरत हे कि जाएँ सरे-दुनिया<sup>९</sup> के लिए ?  
सारे आलम<sup>१०</sup> का तमाशा खुद हमारे दिल मे है ।  
ऐ मुसाफिर ! ठोकरे क्यो खा रहा मजिल मे है ?  
ढूँढता फिरता है जिसको, वोह तो तेरे दिल मे है ॥  
३१७ महर<sup>११</sup> वो है, खाक<sup>१२</sup> के जरेँ<sup>१३</sup> जो कर दे जर-निगार<sup>१४</sup> ।  
उँची-ऊँची चोटियो पर नूर<sup>१५</sup> वरसाने से क्या ?

—फैफ़ी

---

१ मोन्दर २ तरफ ३ मस्जिद की ओर ४ परमाणुओ ५ चाँद  
ओर नूरज ६ उद्यान का पुजारी ७ निर्वाह ८ परलोक ९ दुनियाँ की  
मैर १० नगर ११ त्रय १२ मिट्टी के १३ परमाणु को १४. प्रकाशमान  
१५. प्रकाश ।

३१८ न हो जिसमे अदब<sup>१</sup> और हो किताबो से लदा ।  
'जफर' उस आदमी को हम तसव्वुर<sup>२</sup> बैल करते है ॥

—जफर

३१९ सुनते है खुशी भी है, जमाने मे कोई चीज ।  
हम ढूँढते फिरते है, किधर है, वोह कहाँ है ?

—दास

३२० मसल मशहूर है यह ही जहाँ मे आज तक ऐ 'दास' ।  
दुबारा फिर गिनो गर गिनते-गिनते भूल जाओ तुम ॥

—दास

३२१ क्या उछलता फिर रहा तू, किस नशे मे चूर है ?  
कुछ खबर तुझको नही, तू खुद खुदा का तूर है ॥

३२२ पाके दौलत है बशर को रहना लाजिम किस तरह ।  
जिस तरह भुककर रहे, वोह शाख आए जिसमे फल ॥

—जौक

३२३ मजाजी-इश्क<sup>३</sup> के बदले हकोकी-इश्क<sup>४</sup> हो जाता ।  
न रहतो नाव चक्कर मे तो वेडा पार हो जाता ॥

३२४ दारे-फानी मे हो गाफिल मौत से इक पल नही ।  
क्या भरोसा जिन्दगी का, आज है और कल नही ॥

—जौक

३२५ तुम्हे कहना है मुर्दा कौन, तुम जिन्दो के जिन्दा हो ।  
तुम्हारी खूबियाँ बाकी, तुम्हारी नेकिया बाकी ॥

—जौक



३२६ ऐ 'जौक' किमको नजरे-हिकारत<sup>१</sup> से देखिए ?  
सब तो हम से है जियादह, कोई हम से कम नहीं ॥

—जौक

३२७ सियहकारी<sup>२</sup> पै आता है, जब इन्साँ का दिले-गाफिल<sup>३</sup> ।  
यह बिल्कुल भूल जाता है कि कोई देखता भी है ॥

—हाली

३२८. हूँढने वाले को 'विस्मिल', जुस्तजू<sup>४</sup> की शर्त है ।  
उस का मिल जाना बहुत मुश्किल भी है आसान भी ॥

—विस्मिल

३२९ हयात<sup>५</sup>-ओ-मौत<sup>६</sup> दो कड़ियाँ है इक जजीर की 'अफसर'<sup>७</sup> ।  
कोई क्या इन्तिदा<sup>८</sup> समझे, कोई क्या इन्तहा<sup>९</sup> समझे ॥

—अफसर

३३० 'बर्क' उसकी जिन्दगी है, दर हकीकत जिन्दगी ।  
जिसको दुनिया मे सुकूने-कल्ब<sup>१०</sup> हासिल<sup>११</sup> हो गया ॥

—बर्क

३३१. तवाज्जू<sup>१२</sup> का चलन ऐ मुनडमो<sup>१३</sup> सीखो सुराही से ।  
कि जारी फैज<sup>१४</sup> भी है और भुकी जाती है गर्दन भी ॥

—हाली

३३२ खडे हुए हैं नदी-किनारे, है दम ब-लब<sup>१५</sup> तिश्नगी<sup>१६</sup> के मारे ।  
नहीं मिला एक बूँद पानी, हमारी किस्मत का हाल यह है ॥

३३३. कोई यहाँ ठहरा न अब तक, कोई न यहाँ ठहरेगा कभी ।  
दुनियाँ मे हमे दो दिन के लिए, क्या हँसना है क्या रोना है ?

१ घृणा की दृष्टि २ पाप-कर्म ३. पागल मन ४ तुलाश ५ जीवन  
६ मरण ७ आदि ८ अन्त ९ मन की शान्ति १०. प्राप्त ११. सेवा  
१२ धनिको १३ उदारता १४ ओठों पर १५ प्यास ।

३३४ मिटा दो खुदी को इतना कि रहे न निशाँ बाकी ।

अगर पाना सनम को है, खुदी से हाथ धो बैठो ॥

३३५ इक अपनी बुराई तो नज़र नहीं आती ।

हर चीज मगर इसके सिवा' देख रहे हैं ॥

—अदीब

३३६. हसरतो<sup>३</sup> का सिलसिला,<sup>३</sup> कब खत्म होता है 'जलील' ।

खिल गए जब गुल तो पैदा और कलियाँ हो गयी ॥

—जलील

३३७ मेरी तमन्ना<sup>४</sup> वो दायरा<sup>४</sup> है, न जिसका अव्वल न जिसका आखिर ।

कि जिन हदो<sup>५</sup> से गुजर चुका था, उन्ही हदो मे फिर आ रहा हूँ ॥

—दिल शाहजहाँपुरी

३३८. दिल को रिया<sup>६</sup> से पाक रख, काम दिखावे का न कर ।

जी मे अगर खुदा नहीं, मुँह से खुदा खुदा न कर ॥

—दिल

३३९ हुई खिदमते खल्क<sup>७</sup> जिन-जिन का मजहब ।

खुदा के वही बन्दे मकबूल<sup>८</sup> निकले ॥

—असर लखनवी

३४० जज़ब<sup>९</sup> करले जो तजल्ली<sup>१०</sup> को वो दिल पैदा कर ।

सहल<sup>११</sup> है सोने को दागो से चिरागाँ<sup>१२</sup> करना ॥

—असर

३४१ गुजारी उम्र सारी राजे-हस्ती<sup>१३</sup> के समझने मे ।

परस्तिश<sup>१४</sup> तेरी करता, इतनी फुर्सत थी कहाँ मुझको ॥

—असर

१. अतिरिक्त २ अरमानो, इच्छाओ ३ ताँता ४ इच्छा ५ क्षेत्र  
६ सीमाओ ७ ईर्ष्या, द्वेष ८ ससार की सेवा ९ असली, पूरे १०. हजम,  
सोख ११ ज्योति, प्रकाश १२ आसान, मरल १३ रौशन, दीवाली  
१४ जीवन-रहस्य १५ पूजा, उपासना ।

३४२. बहुत-कुछ पाँव फैलाकर भी देखा 'शाद' दुनिया मे ।  
मगर, आखिर जगह हमने न दो गज के सिवा पाई ॥

— शाद

३४३ कतरा<sup>१</sup> दरिया है, अगर अपनी हकीकत<sup>२</sup> जाने ।  
खोये जाते है जो हम, आपको पा जाते है ॥

— अमरनाथ साहिर

३४४ पर्दा पडा हुआ था, गफलत<sup>३</sup> का चश्मे-दिल पर ।  
आँखे खुली तो देखा, आलम मे तू-ही-तू है ॥

— साहिर

३४५. आप से बाहर चले हो ढूँढने ।  
आह ! पहला ही कदम भूटा<sup>४</sup> पडा ॥

— यगाना चगेजी

३४६ कलमा पढूँ तो क्यों पढूँ, सब की नज़र पे क्यों चढूँ ?  
यादे-खुदा तो दिल से है, दिल से ज़वा तक आए क्यों ?

— यगाना

३४७. क्या दर्दे-हिज़्र<sup>५</sup> और क्या लज्जते-विसाल<sup>६</sup> ।  
उससे भी कुछ बुलन्द<sup>७</sup> मिली है नजर<sup>८</sup> मुझे ॥

— असगर

३४८. मिलने की यही राह और न मिलने की यही राह ।  
दुनिया जिसे कहते हैं, अजब राहुग़र<sup>९</sup> है ॥

— आसी

३४९. मुबारक जिन्दगी के वास्ते दुनिया को मर मिटना ।  
हमे तो मौत मे भी जिन्दगी मालूम देती है ॥

— रज़्म

१ विन्दु २ असलियत ३ अज्ञानता का ४ गलत ५ वियोग का शोक  
६ संयोग का हर्ष ७ उच्च ८ दृष्टि ९ पथ, रास्ता ।

३५०. हजारो नग्मए-दिलकश<sup>१</sup>, मुझे आते हैं ऐ बलबुल ।  
मगर दुनिया की हालत देखकर चुप हो गया हूँ मैं ॥
३५१. मुझे एहसान<sup>२</sup> कम था, वर्ना दौरे-जिन्दगानी<sup>३</sup> मे ।  
मेरी हर साँस के हमराह<sup>४</sup>, मुझमे इत्कलाब<sup>५</sup> आया ॥
३५२. हुआ एहसास<sup>६</sup> पैदा मेरे दिल मे तर्क-दुनिया<sup>७</sup> का ।  
मगर, कब ? जब कि दुनिया को जरूरत ही न थी मेरी ॥
३५३. यह राज<sup>८</sup> है ऐ हरीसे-दुनिया<sup>९</sup>। तुझे कुछ इसकी खबर नहीं है ।  
उसी का घर है तमाम दुनिया, कि जिसका दुनिया मे घर नहीं है ॥
- आसी
३५४. हम इश्क के बन्दे है, मजहब से नहीं वाकिफ<sup>१०</sup> ।  
गर काबा हुआ तो क्या, बुतखाना<sup>११</sup> हुआ तो क्या ?
३५५. नहीं कुजे-खिलवत<sup>१२</sup> की उसको जरूरत ।  
जो महफिल को खिल्वत-सरा<sup>१३</sup> जानता है ॥
- चकबस्त
३५६. दुश्मन से बढ के कोई नहीं आदमी का दोस्त ।  
मजूर अपने हाल की इसलाह<sup>१४</sup> हो अगर ॥
- हाली
३५७. भँवर के डर से जो कापा वोह ना खुदा<sup>१५</sup> कैसा ।  
इसी हयात के नुकते को बार-बार समझ ॥
३५८. यूँ मुसीबत मे रहो तब बात है ।  
तुम पै गोया<sup>१६</sup> कुछ मुसीबत ही नहीं ॥
- नश्तर

---

१ आकर्षक राग २. ज्ञान, अनुभूति, चेतना ३ जीवन-काल मे ४. साथ  
५ परिवर्तन ६ विचार अनुभूति ७. संसार-त्याग ८ भेद ९ ससार-लोलुप  
१० अभिज्ञ, परिचित ११ मन्दिर, मूर्ति १२ एकान्त कोने की १३ बिल्कुल  
एकान्त १४ शुद्धि, सशोधन, सुधार १५. कर्णधार, मल्लाह १६ माने ।

- ३५६ एक दिल लाखो तमन्ना, इस पै और ज्यादा हविस<sup>१</sup> ।  
फिर ठिकाना है कहाँ, इसको ठिकाने के लिये ?
- ३६० नगेमन<sup>२</sup> कर संभलकर तायराने-गुलिस्ता<sup>३</sup> अपना ।  
कि छुप-छुपकर पत्ते-पत्ते में यहाँ सैयाद<sup>४</sup> बैठे हैं ॥
- ३६१ सरापा<sup>५</sup> आरजू<sup>६</sup> होने ने बन्दा<sup>७</sup> कर दिया हमको ।  
वगर्ना हम खुदा थे, गर दिले-वेमुद्दा<sup>८</sup> होते ॥

—मीर

३६२. ए शमग्र<sup>१</sup> ! तेरी उम्मे-तवई<sup>२</sup> है एक रात ।  
रोकर गुजार या इसे हंसकर गुज़ार दे ॥

—झोंक

३६३. खबरदार<sup>१०</sup> ऐ मुसाफिर ! खौफ<sup>११</sup> की जा राहे-हस्ती<sup>१२</sup> है ।  
ठगो का बैठका है, जावजा<sup>१३</sup> चोरो की बस्ती है ॥  
'अमीर' इस रास्ते से जो गुजरते हैं वो लुटते हैं ।  
मुहल्ला है हसीनो का कि कज्जाको<sup>१४</sup> की बस्ती है ॥

—अमीर

- ३६४ इस सरा में मुसाफिर नहीं रहते आया ।  
रह गया थकके अगर आज तो कल अपना है ॥

—अमीर

- ३६५ हकीम और वैद यकसाँ हैं, अगर तशखीस<sup>१५</sup> अच्छी है ।  
हमें सेहत से मतलब है, वनफशा हो या तुलसी हो ॥

—अकबर

१ तृष्णा २ घोमला ३ उद्यान के पड़ियो । ४ गिकारी ५ सिर से  
पैर तक, आपाद-मस्तक ६ अभिलाषी ७. मेवक, पुजारी ८ कामना-रहित  
हृदय ९ जीवन-काल १०. सावधान ११ भय का स्थान १२ जीवन का  
मार्ग १३ जगह-जगह १४ लुटेरो की १५. निदान ।

३६६. धर्म के नाम पर जो हँसकर अपनी जान खोते हैं ।  
हजारों में कहीं एक या कि दो इन्सान होते हैं ॥
३६७. खिदमत<sup>१</sup> करूँ मैं सबकी, खिदमतगुजार<sup>२</sup> बन कर ।  
दुश्मन के भी न खटकूँ, आँखों में खार<sup>३</sup> बन कर ॥
३६८. खामोशी<sup>४</sup> में अमन<sup>५</sup> है, शान्ति है और सफाई है ।  
यह वह दारू<sup>६</sup> है जो कितने ही मर्जों<sup>७</sup> की दवाई है ॥
३६९. भागती फिरती थी दुनिया जब तलव<sup>८</sup> करते थे हम ।  
अब जो नफरत<sup>९</sup> हमने की, वह बेकरार<sup>१०</sup> आने को है ॥

—सफर

३७०. गुस्से से बढके कौन है इन्सान का दुश्मन ।  
है शान का, रुतबे का यह ईमान का दुश्मन ॥
३७१. वह इसका राज समझा, वह इसका पेश समझा ।  
दुनिया में रहके जिसने दुनिया को हेच<sup>११</sup> समझा ॥

—बिस्मिल

३७२. जमाने ने मेरे आगे भी दुनिया पेश कर दी थी ।  
मगर मैंने तो अपना फायदा इन्कार में देखा ॥

—अकबर

३७३. मुल्के-खुदा पै कब्जा वह क्या कर सकेगे जो ।  
काबू में ला सके न दिले-बेकरार<sup>१२</sup> को ॥

—कैफ़ी

३७४. जितनी जिदें हैं ऐ दिल ! तू शौक से किए जा ।  
मुझको भी ता-कयामत<sup>१३</sup> तेरा कहा न करना ॥

—जिगर

---

१ सेवा २ सेवक ३ काँटा ४ मीन में ५ चैन ६. दवा  
७ रोगों की ८ चाह, इच्छा ९ घृणा १० बेचैन ११ हेय, असार  
१२. अगान्त मन १३ प्रलय तक ।

३७५ मौत का जब ध्यान आ जाता है मुझको हमनशी<sup>१</sup> !  
जिन्दगी-भर के फसाने याद कर लेता हूँ मैं ॥

३७६ सर वह सर नहीं है, जिसमें न हो सौदा तेरा ।  
दिल वह दिल नहीं, जिस दिल मे तेरी याद नहीं ॥

३७७ जीस्त<sup>२</sup> को सब जानते है चलती-फिरती धूप छाव ।  
फिर भी दुनिया की नजर पड़ती है ललचाई हुई ॥

—बिस्मिल

३७८ जवा चलती है गोया आज कुछ जिक्रे-खुदा कर ले ।  
अजल<sup>३</sup> आएगी फिर हर्गिज न देगी बात की फुर्सत ॥

—हाली

३७९ दिल दे तो इस मिजाज का परवर्दिगार दे ।  
जो रज की घड़ी भी खुशी मे गुजार दे ॥

—दाग

३८०. क्या वह दुनिया, जिस मे कोशिश हो न दी<sup>४</sup> के वास्ते ।  
वास्ते वाँ के भी कुछ या सब यही के वास्ते ?

—जोकर

३८१ हमनशी कहता है, कुछ परवाह नहीं ईमा गया ।  
मैं यह कहता हूँ कि भाई ! वह गया तो सब गया ॥

—अकबर

३८२ कभी भूल कर न करना किसी से सलूक<sup>५</sup> ऐसा ।  
कि जो तुमसे कोई करता, तुम्हें नागवार<sup>६</sup> होता ॥

—इक़बाल

१ पढौसी, २ जीवन ३ मृत्यु ४. धर्म के लिए ५. व्यवहार, वर्तवि  
६ वेमजा, नापसन्द ।

३८३. दिया हमने जो अपनी खुदी को मिटा,  
वह जो पर्दा था बीच में अब न रहा ।  
रहा पर्दे में अब न वह पर्दे-नशी<sup>१</sup>  
कोई दूसरा उसके सिवा न रहा ॥

—हाली

३८४. ज़फ़<sup>२</sup> नापाक<sup>३</sup> है तो, हर शै<sup>४</sup> है उसमें ना पाक ।  
दिल नहीं साफ तो क्या खाक इबादत<sup>५</sup> होगी ?  
३८५. मज़े<sup>६</sup> दुनिया के भी तुम चाहते हो, दौलते-दी<sup>७</sup> भी ।  
तुम्हें तो चाहिये ऐ 'शोख' मीठा भी सलोना<sup>८</sup> भी ॥

—शोख

३८६. खान-ए-दिल<sup>९</sup> है सियाह<sup>१०</sup>, इसकी सियाही<sup>११</sup> साफ कर ।  
क्या सुफेदी से महल करता है तू अपना सफेद ॥

—दाग

३८७. घर बैठे हमें हाथ लगी मजिले-मकसूद<sup>१२</sup> ।  
जब तोड़ के हम बैठ रहे पाँव तलब<sup>१३</sup> के ॥

—अमीर

३८८. जहाँ की जीनते<sup>१४</sup> राहत-रसाँ<sup>१५</sup> हैं चश्मे-नाफिल<sup>१६</sup> में ।  
मगर हक़ू<sup>१७</sup> के मुज्तर<sup>१८</sup> दिल को साकिन<sup>१९</sup> कर नहीं सकती ।

—सोज़

३८९. जब तलक आँखें खुली हैं, दुख-पै-दुख देखेंगे यार ।  
मुँद गयी जब आँखडियाँ, तब 'सोज' सब आनन्द है ॥

—सोज़

१. पर्दे में रहने वाला २ पात्र ३ अपवित्र, गन्दा ४ वस्तु ५ उपासना  
६ सुख, स्वाद ७ धर्म का धन, ८. नमकीन ९. मन-मन्दिर १० काला  
११ कलुषता, १२ लक्ष्य-विन्दु १३ इच्छा के १४. रंगरेलियाँ १५ सुखप्रद  
१६ अज्ञानी की दृष्टि में १७ सत्य-गवेषी के १८. वेचैन, १९. स्थिर,  
शान्त ।



- ३६० मिली वह दर्द मे लज्जत<sup>१</sup>, कि जख्मे-दिल<sup>२</sup> पै गर कोई ।  
छिड़कता है नमक तो हम उसे मरहम समझते हैं ॥
- ३६१ खुशी के साथ आँखो मे छलक आते हैं आँसू भी ।  
कि हर राहत<sup>३</sup> के साथ इक माजरा-ए-गम<sup>४</sup> भी शामिल है ॥
- ३६२ हकीकत मे उन्हीं को जिन्दगी का लुत्फ हासिल है ।  
जो अपनी जिन्दगी मे जिन्दा रहने के लिए मर लें ॥

— वज्र

३६३. वोह चाल चल कि उम्र खुशी से कटे तेरी ।  
वोह काम कर कि याद तुझे सब किया करे ॥
- ३६४ न कोई दोस्त है मेरा, न कोई दुश्मन है ।  
अगर यही दिल है, मगर दोस्त है या दुश्मन है ॥

— जोश

३६५. दिलवाले हैं हरचन्द जिगर वाले हैं,  
यह सच है कि आँखो मे असर वाले हैं ।  
जो देखने की चीज थी देखी न गई,  
यूँ कहने को हम लोग नजर वाले हैं ॥
३६६. रगे-इशरत<sup>५</sup> वागे आलम मे नजर आता नहीं ।  
गुल<sup>६</sup> को गुलची<sup>७</sup> का खतर<sup>८</sup>, बुलबुल को गम सैयाद<sup>९</sup> का ॥

— नासिख

- ३६७ कभी खौफे-खिजाँ<sup>१०</sup> है और कभी सैयाद का खटका<sup>११</sup> ।  
बनाऊँ क्या समझकर आशियाना इस गुलिस्ताँ मे ॥

— रिन्द

---

१ मजा, आनन्द २ मन का घाव ३. सुख ४ दुख की कहानी  
५ यद्यपि, अगरचे ६ सुख का रंग ७. फूल को ८, माली का ९ डर  
१०. जिदारी का ११. पतझड़ का डर १२, डर ।

३९८. अपने वेगानों<sup>१</sup> की खुलती है हकीकत<sup>२</sup> इससे ।  
खरे-खोटे की कसौटी है मुसीबत क्या है ?
३९९. जवाले-मालो-दौलत<sup>३</sup> में बस इतनी बात अच्छी है ।  
कि दुनिया को बखूबी<sup>४</sup> आदमी पहचान जाता है ॥  
—अकबर
४००. लिवासे-खिज्र<sup>५</sup> में याँ सैकड़ो रहजन<sup>६</sup> भी फिरते हैं ।  
अगर रहना है दुनिया में तो कुछ पहचान पैदा कर ॥
४०१. डक नया एहसास<sup>७</sup> इस सीने में<sup>८</sup> अब पाता हूँ मैं,  
दुश्मनी करते हैं दुश्मन और शर्मता हूँ मैं ।  
बेकसो-मजबूर इन्साँ को दुआ देता हूँ मैं,  
वार<sup>९</sup> करता है कोई तो मुस्करा देता हूँ मैं ॥  
—जोश
४०२. अमीरी मालो-दौलत में समझना कम-निगाही<sup>१०</sup> है,  
जहाँ मिलकर रहे दो दिल वही पर बादशाही है ।  
अमीरो के महल से बढके टूटे घर का कोना है,  
खुशी की शै मूहवत है, न चादी है न सोना है ॥
४०३. जो पार उतारे औरो को, उसकी भी नाव उतरती है ।  
जो गक<sup>११</sup> करे फिर उसकी भी याँ डुबको-डुबको करती है ॥  
—नज़र
४०४. खुदा से लौ<sup>१२</sup> लगा हर्गिज न फँस दुनिया की उलझन में ।  
लिवास<sup>१३</sup> उजले से क्या हासिल, सफाई चाहिये दिल में ॥
४०५. चार दिन की जिन्दगी में आपको है अख्तियार ।  
दोस्ती कर लीजिये या दुश्मनी कर लीजिये ॥  
—बिस्मिल

---

१ अपने-पराये की २ वास्तविकता ३ धन-सम्पत्ति के विनाश में  
४ भलीभाँति ५ पथ-प्रदर्शक के वेप में ६ लुटेरे ७ चेतना का विकास  
८ मन में ९ आक्रमण १० छिछोड़पन, मकीर्णता, क्षुब्धता ११ डुबोए  
१२ लगन १३ परिधान, पहनावा ।

४०६. मिटा दरमियाँ<sup>१</sup> से खुदी का जो पर्दा ।

हम उनके हुये वह हमारे हुए हैं ॥

४०७ लज्जते-दुनिया जो सच पूछो उसी को मिल गयी;  
जिसने यह समझा कि दुनिया का मजा कुछ भी नहीं ।  
मरते मरते कह गया लुकमान-सा दाना हकीम,  
दरहकीकत<sup>२</sup> मौत की यारो । दवा कुछ भी नहीं ॥

४०८ जो अपनी जिन्दगी को फूँकत इक इम्तिहाँ<sup>३</sup> समझा ।  
उसी ने राहतो-तकलीफ<sup>४</sup> का राजे-निहाँ<sup>५</sup> समझा ।

— अफ़वर

४०९. तुझको जो खुदा से उलफ़त है, उसके बन्दो से उलफ़त कर ।  
क्या रक्खा मन्दिर-मस्जिद में, कल्वे-इन्साँ<sup>६</sup> की जियारत<sup>७</sup> कर ॥

— विस्मिल

४१० अपने मज्जे की खातिर गुल छोड़ ही दिये जब ।  
रूए-जमी<sup>८</sup> के गुलशन मेरे ही बन गए सब ॥

— रागतीर्थ

४११ सौ बार यहाँ हम आए भी, यह बात न लेकिन जान सके ।  
यह आना-जाना कैसा है, क्यों आते-जाते रहते हैं ?

४१२ चन्द रोज<sup>९</sup> है जमाने में वहारे-जिन्दगी,<sup>१०</sup>  
फिर तो वागे-जिन्दगी है ख़ारजारे-जिन्दगी<sup>११</sup> ।  
मौत आने पर न आये मौत, ऐसा काम कर,  
छोड़ जा दुनिया में कोई यादगारे-जिन्दगी<sup>१२</sup> ।

४१३ वह दिल क्या कि दिलवर की सूरत न पकड़े ।  
वह मजनु<sup>१३</sup> नहीं है, जो लैला नहीं है ॥

— आसी

१ बीच में २ सचमुच, वस्तुतः ३ परीक्षा ४ दुःख-सुख का ५ गुप्त रहस्य ६ मानव-मन ७ तीर्थ यात्रा ८ पृथ्वी तल के ९ कुछ दिनों की १०, जीवन का वसन्त ११ जीवन का पतझड़ १२ जीवन की स्मृति

४१४. खुशी में भूल न जाना 'जिगर' यह राजे-हस्ती<sup>१</sup> ।  
कि जो खुशी है यहाँ, इक अमानते-गम<sup>२</sup> है ॥  
—जिगर
४१५. न भूले से कोई दम भी, इधर कुछ ध्यान फरमाया ।  
कि मैं हूँ कौन, जाता हूँ किधर, किस सिम्त<sup>३</sup> से आया ?  
—बेदिल
- ४१६ कहने को तो कहता हूँ कोई गँर<sup>४</sup> नहीं है ।  
पर दिल से मेरे अपना पराया नहीं जाता ॥  
—बेताब
- ४१७ बच जाये जो दुनिया में जवानी की हवा से ।  
होता है फरिश्ता<sup>५</sup> कोई इन्साँ नहीं होता ॥
४१८. जहालत<sup>६</sup> है इफा<sup>७</sup> पै छाई हुई ।  
तो दुनिया है चक्कर में आई हुई ॥
- ४१९ तलाशे-यार में जो ठोकरे खाया नहीं करते ।  
वो अपनी मजिले-मकसूद<sup>८</sup> को पाया नहीं करते ॥
- ४२० ढूँढा सब जहान में, पाया पता तेरा नहीं ।  
जब पता तेरा मिला तो अब पता मेरा नहीं ॥
४२१. फिरते इधर-उधर हो, किसकी तलाश में तुम ?  
गुम<sup>९</sup> है तुम्ही में यारो ! बागे-इरम<sup>१०</sup> तुम्हारा ॥
४२२. शराफत<sup>११</sup> इसमें नहीं है इन्साँ की, उसने दुनिया में क्या कमाया ?  
वले<sup>१२</sup> बुजुर्गी<sup>१३</sup> छुपी है इसमें कि उसने अपनेको क्या बनाया ?
- ४२३ बहारे-जिन्दगी इक ख्वाबे-गफलत<sup>१४</sup> का जमाना है ।  
खयाली<sup>१५</sup> चहचहे हैं और हवा-ए-आशियाना<sup>१६</sup> है ॥

१ जीवन-रहस्य २ दुख की घरोहर ३ दिशा ४ दूसरा ५ देवता  
६ अज्ञान ७ ज्ञान ८ लक्ष्य-विन्दु ९ छुपा, गुप्त १० आत्म-शान्ति  
११ बढप्पन १२ मगर १३ गौरव, महत्ता १४. अज्ञान भरा स्वप्न  
१५. काल्पनिक १६ घोसले की हवा ।

- ४२४ मकसूद<sup>१</sup> जिन्दगीका वेदारिये-खुदी<sup>२</sup> है ।  
 ऐ बेखवर ! वगर्ना वेसूद<sup>३</sup> जिन्दगी है ॥
४२५. साकी<sup>४</sup> के तसव्वुर<sup>५</sup> मे दिल साफ हुआ ऐसा ।  
 जब सर को झुकाता हूँ, शीशा नजर आता है ॥
४२६. कुछ देर फिर<sup>६</sup> आलमे-वाला<sup>७</sup> की छोड़ दे ।  
 इस अंजुमन<sup>८</sup> का राज इसी अंजुमन मे है ।

—असर

- ४२७ जो है पर्दे मे पिनहा<sup>९</sup> चम्मे-बीना<sup>१०</sup> देख लेती है ।  
 जमाने की तबीअत का तकाज़ा देख लेती है ।

—इक़बाल

४२८. क्या हंसी आती है मुझको, हजरते-इन्सान पर ।  
 फेल<sup>११</sup> वद<sup>१२</sup> तो खुद करे लानत<sup>१३</sup> करे शैतान पर ॥

—इन्शा

- ४२९ आई सदा<sup>१४</sup> कि तू अभी मंज़िल से दूर है ।  
 पहुँचा जहाँ-जहाँ भी मुझे दिल लिये हुए ॥

—दिल

४३०. ऐ गुलामे-जिन्दगी<sup>१५</sup> इस जिन्दगी से फायदा ?  
 यह तो है बेचारगी,<sup>१६</sup> बेचारगी से फायदा ?

—सबा

४३१. उस मौज<sup>१७</sup> के मातम<sup>१८</sup> मे रोती है भँवर की आख ।  
 दरिया से उठी, लेकिन साहिल<sup>१९</sup> से न टकराई ॥

—इक़बाल

---

१. उद्देश्य २. आत्म-जागृति ३. व्यर्थ, बेकार ४. पिलाने वाला  
 ५. ध्यान ६. चिन्ता ७. परलोक, स्वर्ग की ८. सभा का ९. गुप्त १०. नज़र  
 वाली आँखें, दिव्य दृष्टि ११. कर्म १२. बुरा १३. धिक्कार १४. आवाज  
 १५. जीवन-लोलुप १६. लाचारी १७. लहर के १८. शोक मे १९. किनारे से ।

४३२. यारब<sup>१</sup> । यह भेद क्या कि राहत<sup>२</sup> की फिक्र<sup>३</sup> में ।  
इन्सान को और गम<sup>४</sup> में गिरफ्तार<sup>५</sup> कर दिया ॥

— जोश

४३३. दुनिया ने हर फसाना,<sup>६</sup> हकीकत<sup>७</sup> बना दिया ।  
हमने हकीकतों को भी अफसाना कर दिया ॥

—जोश

४३४. है हसूले-आरजू<sup>८</sup> का राज तर्क-आरजू<sup>९</sup> ।  
मैंने दुनियाँ छोड़ दी तो मिल गई दुनियाँ मुझे ॥

— सीमाब

४३५. हो चुकी हर बार गो<sup>१०</sup> ऐ शमअ । परवानों की खाक ।  
ज़र्रे-ज़र्रे में है पिनहाँ<sup>११</sup> इक जहाने-जिन्दगी<sup>१२</sup> ॥

—बिल

४३६. पैकरे-खाक<sup>१३</sup> है तो चख<sup>१४</sup> पै छा मिस्ले-गुबार<sup>१५</sup> ।  
तुझको मिट्टी में मिलाया है जबी-साई<sup>१६</sup> ने ॥

—कैफी

४३७. यूँ सबको भुला दे कि तुझे कोई न भूले ।  
दुनिया ही में रहना है तो दुनिया से गुजर जा ॥

—फानी

४३८. अरे राज़े-जहाँ<sup>१७</sup> बताने वाले ।  
इक और जहाने-राज<sup>१८</sup> भी है ॥

—फिराक़

१. या खुदा २. सुख ३. चिन्ता ४. दुःख ५. बन्धन-युक्त ६. कहानी  
७. वास्तविकता ८. इच्छा-पूर्ति ९. इच्छा का त्याग १०. यद्यपि ११.  
छिपा हुआ, गुप्त १२. जीवन-ससार १३. धूलि-मुल्य १४. आकाश पर  
१५. धूल की तरह १६. मत्था रगड़ने १७. ससार का रहस्य १८. रहस्य  
का ससार ।

- ४३६ तिनको से खेलते ही रहे आशियाँ मे हम ।  
आया भी और गया भी जमाना बहार<sup>१</sup> का ॥
४४०. लंगर का आसरा<sup>२</sup> है न ताईदे-ना.खुदा<sup>३</sup> ।  
मेरे सुपुर्द है मेरी-किस्ती .खुदा के बाद ॥
- ४४१ जिन्दगी खुद क्या है 'फानी' यह तो क्या कहिए, मगर—  
मौत कहते है जिसे वह जिन्दगी का होश है ।  
—फानी
- ४४२ आह, इन मस्त निगाहो<sup>४</sup> के इशारे<sup>५</sup> भी 'फिराक' ।  
हम समझने को बहुत समझे मगर क्या समझे ?  
—फिराक
- ४४३ मौत वह अच्छी कि जिसके बाद मिल जाए हयात<sup>६</sup> ।  
जो सबव<sup>७</sup> हो मौत का वह जिन्दगी बेकार है ॥  
—साक्रिब
४४४. हाय ! अंजामे-तजस्सुस<sup>८</sup> की अजायबकारियाँ<sup>९</sup> ।  
तुम मिले और ढूँढने वाले तुम्हारे खो गए ॥  
—अफसर
४४५. तू कहाँ है कि तेरी राह मे यह काबा व दौर ।  
नक्शे<sup>१०</sup> बन जाते है, मजिल<sup>११</sup> नहीं होने पाते ॥
- ४४६ हर राह से गुजर कर दिल की तरफ चला हूँ ।  
क्या हो जो उनके घर की यह राह भी न निकले ॥
- ४४७ आया परवाना, गिरा शमअ पै, जल-जल के मरा ।  
तुम अभी सोच रहे हो कि मुहब्बत क्या है ?  
—फानी

---

१. वसन्त ऋतु २ सहारा ३ मल्लाह का समर्थन ४ दृष्टि ५ सकेत  
६. जिन्दगी ७. कारण ८. खोज का परिणाम ९ विचित्रताएँ १०. चित्र  
११. पड़ाव, गन्तव्य स्थान ।

४४८. न समझा जब हकीकत<sup>१</sup> को किसी ने ।  
खुदा पैदा किया हर आदमी ने ॥
४४९. खाली है मिरा सागर<sup>२</sup> तो रहे, साकी को इशारा कौन करे ?  
खुदारी-ए-साइल<sup>३</sup> भी तो है कुछ, हर बार तकाजा<sup>४</sup> कौन करे ?  
—मुल्ला
४५०. बसने दो नशेमन<sup>५</sup> को अग्ने, फिर हम भी करेंगे सरे-चमन<sup>६</sup> ।  
जब तक कि नशेमन उजडा है, फूलों का नजारा<sup>७</sup> कौन करे ?
४५१. जमाना<sup>८</sup> खाकसारी<sup>९</sup> का नहीं खुदार<sup>१०</sup> बनकर उठ ।  
मिटा वह राह-मंजिल<sup>११</sup> में जो बैठा नक्शे-पा<sup>१२</sup> होकर ॥  
—महम्मद
४५२. अब तो घबरा के यह कहते हैं, 'कि मर जाएँगे ।'  
मरके भी चैन न पाया तो किधर जाएँगे ?  
—जौक
४५३. दो आलम<sup>१३</sup> से गुजर के भी दिले-आशिक<sup>१४</sup> है आवारा ।<sup>१५</sup>  
अभी तक यह मुसाफिर अपनी मजिल पर नहीं आया ॥
४५४. मुश्किल राह-अदम<sup>१६</sup> को हम आसों<sup>१७</sup> न कर सके ।  
जल्दी में चल दिए, कोई तामाँ<sup>१८</sup> न कर सके ।  
—नातिक
४५५. कैस<sup>१९</sup> के नजदीक लैला पर्दये-महमिल<sup>२०</sup> में है ।  
कौन दीवाने को समझाए कि तेरे दिल में है ॥  
—असर

---

१. वास्तविकता, सच्चाई को २ प्याला ३ माँगने वाले का स्वाभिमान  
४. माँग ५. घोंसला ६ बाग की सँर ७ दर्शन ८ काल, समय ९. दीनता-  
हीनता का १० स्वात्माभिमान ११ गन्तव्य-मार्ग १२ चरण-चिन्ह  
१३ ससार १४. प्रेमी का मन १५. मटकने वाला १६ परलोक के मार्ग को  
१७ सरल, सुगम १८ तैयारी, सामान १९ मजदूर २० अम्बारी का पर्दा ।



४५६ जो मिजाजे-दिल<sup>१</sup> न बदल सका, तो निजामे-दहरका<sup>२</sup> क्या गिला<sup>३</sup> ?  
वही तलखिया<sup>४</sup> है सवाव<sup>५</sup> मे, वही लज्जतें<sup>६</sup> है गुनाह<sup>७</sup> मे ॥

—असगर

४५७ शोरे-हस्ती<sup>८</sup> अभी जरा ठहरे ।  
सुन रहा हूँ जमोर<sup>९</sup> को आवाज ॥

—सीभाव

४५८. यह मुद्दत<sup>१०</sup> हस्ती<sup>११</sup> की आखिर,<sup>१२</sup> यूँ भी तो गुजर ही जाएगी ।  
दो दिनके लिए मैं किससे कहूँ 'आसान'<sup>१३</sup> मिरी<sup>१४</sup> मुश्किल करदे ॥

—नातिक

४५९. कही जेर-दस्तो<sup>१५</sup> को राहत<sup>१६</sup> नहीं है ।  
न जेरे-फलक<sup>१७</sup> है न जेरे-जमी<sup>१८</sup> है ॥

—हफीज

४६०. फितरतने<sup>१९</sup> मुहव्वत की इस तरह विना<sup>२०</sup> डाली ।  
जो कंद<sup>२१</sup> नजर आई इक बार उठा डाली ॥

४६१ मौतो-हयात<sup>२२</sup> मे है सिर्फ<sup>२३</sup> एक कदम का फासला<sup>२४</sup> ।  
अपने को जिन्दगी बना, जल्दये-जिन्दगी<sup>२५</sup> न देख ॥

—जिगर

४६२. तजाहिल<sup>२६</sup> से मेरे नामो-निशा<sup>२७</sup> को पूछने वाले ।  
वही रहता हूँ मैं, हूँडा नहीं अब तक जहाँ तूने ॥

—आसी

---

१ मन का स्वभाव २ ससार का विधान ३ शिकायत ४ कड़वाहट  
५ पुण्य ६ मजे, स्वाद, रस ७ पाप ८ जीवन का कोलाहल ९ अन्तरात्मा  
१० समय, काल ११ जीवन १२ अन्तत १३ सुगम १४ मेरी  
१५ याचको १६ शान्ति, चैन १७ आकाश के नीचे १८ घरती के नीचे  
१९ स्वभाव, प्रकृति ने २० नीव, बुनियाद २१ बन्वन २२ जीवन-मरण मे  
२३ केवल २४ दूरी २५ जीवन-प्रकाश २६ मूर्खता से २७ नाम और  
चिह्न को ।

४६३. दरिया<sup>१</sup> की जिन्दगी पर सदके<sup>२</sup> हजार जानें ॥  
मुझको नहीं श्वारा<sup>३</sup> साहिल<sup>४</sup> की मौत मरना ॥

—जिगर

४६४ ये सब ना-आशनाए-लज्जाते-परवाज<sup>५</sup> हैं शायद ।  
अमीरो<sup>६</sup> मे अभी तक शिकवए-संयाद<sup>७</sup> होता है ॥

—असगर

४६५ वहारो मे यह होश<sup>८</sup> ही कब रहा था ?  
कि जलती है क्या शै<sup>९</sup>, कहाँ आशियाँ था ?

—मदहोश

४६६ सौ बार तेरा दामन<sup>१०</sup> हाथो मे मेरे आया ।  
जब आँख खुली देखा अपना ही गरेबाँ<sup>११</sup> है ॥

४६७ बहुत लतीफ<sup>१२</sup> इशारे थे चश्मे-साकी<sup>१३</sup> के ।  
न मैं हुआ कभी बेखुद<sup>१४</sup> न होशियार<sup>१५</sup> हुआ ॥

३६८. बारे-अलम<sup>१६</sup> उठाया, ग़ो-निशात<sup>१७</sup> देखा ।  
आए नहीं हैं यूँ ही अन्दाज<sup>१८</sup> बेहिसी<sup>१९</sup> के ॥

—असगर

४६९ सौदागरी<sup>२०</sup> नहीं यह इबादत खुदा को है ।  
ऐ बेख़बर ! जजा<sup>२१</sup> की तमन्ना भी छोड़ दे ॥

—इक़बाल

४७० आजाय अपनी ज़िद पर कोई दीवाना ।  
खुद गिर्द<sup>२२</sup> फिरे आकर, काबा हो कि वुतख़ाना<sup>२३</sup> ॥

—जिगर

---

१. नदी की २ कुरवान ३ सह्य, पसन्द ४ किनारे की ५ उडान  
के आनन्द से अपरिचित ६ वन्दियो, कंदियो ७ शिकारी की शिकायत  
८ भाव ९ वस्तु १० आँचल, पल्ला ११ कुरते या कमीज के गले पर का  
भान १२ सूक्ष्म, सुन्दर १३ पिलाने वाले की आँख के १४ बेहोश, मस्त  
१५ सचेत १६ दुखो का भार १७ सुख का रंग १८ ढब, ढग १९ विषया-  
तीत अवस्था के २०. व्यापार २१ तृप्ति की २२ चारो ओर २३ मन्दिर ।

४७१. इशरते-कतरा<sup>१</sup> है दरिया मे फना<sup>२</sup> हो जाना ।  
दर्द का हृद से गुजरना है दवा हो जाना ॥
४७२. इस गुलशने-हस्ती मे अजब सैर है, लेकिन ।  
जब आंख खुली गुल की तो मौसम है खिजा का ।
४७३. 'अमीर' इतनी कहाँ किस्मत कि पहुँचूँ उडके फूलो तक ?  
कभी चाके-रफस<sup>३</sup> से भाँक लेता हूँ गुलिस्ता को ॥
४७४. चिरागे-सुबह<sup>४</sup> यह कहता है आफताब<sup>५</sup> को देख ।  
यह बज़म<sup>६</sup> तुमको मुबारक हो, हमतो चलते है ॥  
— नज़ीर
४७५. मौत जब तक नजर नही आती ।  
जिन्दगी राह पर नही आती ॥  
— ख़िगार
४७६. मौत को देखा तो दुनिया से तबीयत फिर गई ।  
उठ गया दिल दहर<sup>७</sup> से, दौलत नज़र से गिर गई ॥  
— अकबर
४७७. दुनिया मे हूँ, दुनिया का तलवगार<sup>८</sup> नही हूँ ।  
वाजार से गुजरा हूँ, खरीदार<sup>९</sup> नही हूँ ॥  
— गालिब
४७८. जिसको हस्ती<sup>१०</sup> कहे हैं अहले-जर्हा<sup>११</sup> ।  
हम तो उसको अदम<sup>१२</sup> समझते है ॥  
— हात्तिम

---

१ बिन्दु का मुख २ विलीन ३ पिंजरे के छेद से ४ प्रात कालीन दीपक ५ मर्य ६ महफिल, सभा ७ दुनिया से ८ इच्छुक, अभिलाषी ९ क्रेता, खरीदने वाला १० जीवन ११ दुनिया वाले १२ मृत्यु ।

४७६ इस आलमे-असबाब<sup>१</sup> के जाहिर<sup>२</sup> पै न जाना ।  
आसारे-अयाँ<sup>३</sup> और है, असरारे-निहा<sup>४</sup> और ॥

—अ० स०

४८० अगर्चे बन्दा-नवाजी<sup>५</sup> की तुझ मे खू<sup>६</sup> हो जाय ।  
कसम खुदा की खुदाई मे तू-ही-तू हो जाय ॥

४८१ दावे की जरूरत है न कोई रोक सकता है ।  
किसी मे फितरती जौहर<sup>७</sup> जो हो वह खूद चमकता है ॥

—अमीर

४८२ बशर<sup>८</sup> नहीं वह फरिश्ता<sup>९</sup> है हजरते-‘बिस्मिल’ ।  
जो दोस्ती करे दुनिया मे दुश्मनो के साथ ॥

—बिस्मिल

४८३ दिन गुजरते ही चले जाते है, लोग मरते ही चले जाते हैं ।  
जानते है कि हैं यह काम बुरे, फिर भी करते ही चले जाते हैं ॥

४८४ हँस के दुनिया मे मरा कोई, कोई रोके मरा ।  
जिन्दगी पाई मगर उसने जो कुछ होके मरा ॥

—अकबर

४८५ जो दिल के साफ है, बादे-फना<sup>१०</sup> भी साफ रहते हैं ।  
कभी ज़ोरे-जमी<sup>११</sup> उनका कफन मिला नहीं होता ॥

—बिस्मिल

४८६ रहा जब मुद्दतो दैरो-हरम<sup>१२</sup> मे ।  
समझ मे आई बहकाया गया हैं ॥

—शौक

---

१ परिग्रही दुनिया २ प्रकट रूप पर ३ प्रकट लक्षण ४ गुप्त  
भेद ५ दीनदयालुता की ६ स्वभाव ७ स्वाभाविक गुण ८ आदमी  
९ देवता १० मरने के बाद ११ जमीन के नीचे १२ मन्दिर-  
मस्जिद मे ।

४८७. सुनी हिकायते-हस्ती<sup>१</sup> तो दरमियाँ<sup>२</sup> से सुनी ।  
न इन्तिदा<sup>३</sup> का पता, न इन्तिहा<sup>४</sup> मालूम ॥

—शाव

४८८. फूल बनने की खुशी में मुस्कराती थी कली ।  
क्या खबर थी यह तगय्युर<sup>५</sup> मौत का पैगाम<sup>६</sup> है ॥

—सीराज

४८९. फितरते-आदम<sup>७</sup> में थी अल्लाह<sup>८</sup> । क्या नश्वोनुमा<sup>९</sup> ।  
एक मुट्ठी खाक यो फैली कि दुनिया हो गई ॥

—साकिब

४९०. भर-उम्र गदाई<sup>१०</sup> में भी करते रहे शाही<sup>११</sup> ।  
दुनिया में जो ठानी थी, मियाँ हमने निवाही ॥

—अमीन

४९१. जुस्तजू<sup>१२</sup> दुनिया की मत कर ऐ 'गिरफ्तार' इस कदर<sup>१३</sup> ।  
क्या भरोसा है जहा में उम्मे-वेवुनियाद<sup>१४</sup> का ॥

—गिरफ्तार

४९२. करे हम किसी की पूजा और चढाएँ किसे चन्दन ।  
सनम<sup>१५</sup> हम, ढेर<sup>१६</sup> हम, वुतखाना<sup>१७</sup> हम, वुत<sup>१८</sup> हम, वरहमन<sup>१९</sup> हम ।

—फैज

४९३. दिल वह क्या दिल है, जिस दिल में यार नहीं ।  
यार क्या यार है, जो यार कि दिलदार नहीं ॥

—रंगी

४९४. वुलन्द<sup>२०</sup> आवाज़ से घडियाल कहता है कि ऐ गाफिल !  
कटी यह भी घड़ी तुझ उम्र से और तू नहीं चेता ॥

—नासिख

१ जीवन की कहानी २ बीच में से ३. प्रारम्भिक ४. अन्त, चरम सीमा ५. परिवर्तन ६ सन्देश ७ मानव-स्वभाव में ८ उत्पन्न होकर बढ़ना ९ फकीरी १० वादशाहत ११ तलाश १२. उत्तनी १३ निराधार जीवनका १४ प्रिय १५ मन्दिर १६ नमनखाना १७. मूर्ति १८ ब्राह्मण १९ ऊँची ।

४६५ सफा कर दिल के आईने<sup>१</sup> को 'हातिम' ।  
किया चाहे अगर उसका नजारा<sup>२</sup> ॥

—हातिम

४६६ ख्वाब<sup>३</sup> मे जब तलक, था दिल मे दुनिया का खयाल ।  
खुल गई आँखे तो देखा हमने सब अफसाना<sup>४</sup> था ॥

४६७ 'हातिम' किसी मे गर्मिये-सुहवत<sup>५</sup> नही रही ।  
दिल देख-देख सर्द हुआ है जहाँ का रग ॥

—हातिम

४६८ ज़िन्दगी जामे-ऐश<sup>६</sup> है लेकिन ।  
फायदा क्या, अगर मुदाम<sup>७</sup> नही ॥

—बली

४६९ पाए-जमी<sup>८</sup> से दोगे-फलक<sup>९</sup> तक नशा-ही-नशा मस्ती-ही-मस्ती ।  
बस-बस साकी और न भरना, लग गए, लग गए होश ठिकाने ॥

—अहसान दानिश

५०० खुद जानता हूँ मजिले मकसूद<sup>१०</sup> का पता ।  
हँसता हूँ छेड़-छाड़के हर राहवर<sup>११</sup> को मैं ॥

—महरूम

५०१ रियाज़त<sup>१२</sup> चीज तो अच्छी है, लेकिन हज़रते-ज़ाहिद<sup>१३</sup> ।  
यह वे-मौसम-सी शै<sup>१४</sup> मालूम देती है जवानी मे ॥

—अदम

५०२ इधर भी तुम, उधर भी तुम, यहाँ भी तुम वहाँ भी तुम ।  
यह तुमने क्या कयामत<sup>१५</sup> की, निगाहो से निहा<sup>१६</sup> होकर ?

—तालिब वासपती

१ दर्पण को २ दर्शन ३ स्वप्न मे ४ कहानी ५ सत्सग का रग  
६ ऐश्वर्य का प्याला ७ स्थायी, अविनश्वर ८ पृथ्वी के पाँव, नीव से  
९ आसमान का कन्धा १० लक्ष्य-बिन्दु का ११ पथ-प्रदर्शक १२ तपस्या  
१३ सयमा महोदय । १४ चीज़ १५ प्रलय १६ गुप्त, छिपा हुआ ।

५०३. खुद आप चमकने की, जिसमे कुदरत<sup>१</sup> हो ।  
वह जर्रा<sup>२</sup> मुन्तज़िरे-फेजे-आफताव<sup>३</sup> नहीं ॥
- ५०४ जमाने की मुहब्बत पर न हो ऐ हमनगी<sup>४</sup> नाजाँ<sup>५</sup> ।  
मुनाएँगे तुझे फुर्सत मे किस्से आशनाई<sup>६</sup> के ॥
५०५. यह डक्के-मज़ाजी<sup>७</sup> भी हकीकत<sup>८</sup> का है जीना<sup>९</sup> ।  
रख पाव ज़रा ऐ दिले-दीवाना । संभलकर ॥
५०६. तू वन्दगी पै न आयद<sup>१०</sup> कर इतने सख्त कयूद<sup>११</sup> ।  
कि कोई कह दे, मुझे वन्दगी पसन्द नहीं ॥

—अदम

- ५०७ अपने-अपने रग मे हैं अपने-अपने हाल मे ।  
कोई हैराने-खिजाँ<sup>१२</sup> कोई परेगाने-बहार<sup>१३</sup> ॥
- ५०८ दारे-फानी<sup>१४</sup> मे यह क्या ढूँढ रहा है 'फानी' ।  
जिन्दगी भी कही मिलती है फना<sup>१५</sup> से पहले ?
- ५०९ मरके टूटा है कही सिलसिलये-क़दे-हयात<sup>१६</sup> ।  
हाँ, मगर इतना है—ज जीर बदल जाती है ॥

—फानी

५१०. अभी तकमीले-उल्फत<sup>१७</sup> पर न दिल मगरूर<sup>१८</sup> हो जाए ।  
यह मजिल वह है, जितनी तै हो, उतनी दूर हो जाए ॥

—महर

५११. कोई नामालूम<sup>१९</sup> मजिल है खुदा जाने कहाँ ?  
जिन्दगी जिसकी तरफ इक मुस्तकिल परवाज<sup>२०</sup> है ॥

—जयाल

---

१ स्वभाव २ कण ३ मूर्य के उपकार की प्रतीक्षा मे ४ साथी  
५ गर्विला ६ प्रेम के ७ लौकिक प्रेम ८ नृत्य का ९ सोपान १० लागू  
११ दग्धन, कैदें, नियम १२ पतनउ से दुखी १३ वसन्त ऋतु से व्याकुल  
१४ नश्वर समार मे १५ मृत्यु मे १६ जीवन वन्दन का क्रम १७ प्रेम  
की पूर्णता १८ अहवारी १९ अज्ञात २० स्थायी उद्यान ।

५१२. होश और फिर होश की पाबन्दियों<sup>१</sup> का अहतराम<sup>२</sup> ।  
रश्क<sup>३</sup> करता हूँ मैं दीवाने की दुनिया देखकर ॥

—यूसुफ़ रामपुरी

५१३ इस जगह लाई है अब तेरी तमन्ना<sup>४</sup> मुझको ।  
देख सकता हूँ मैं दुनिया, न दुनिया मुझको ॥

—फ़तील

५१४. मैं तो आया था 'बका' बाग़ में सुन जोशे-बहार<sup>५</sup> ।  
पर यह हगामे-खिज़ाँ<sup>६</sup> था, मुझे मालूम न था ॥

—बका

५१५ यकीन<sup>७</sup> रख कि यहाँ हर यकीन में है फरेब<sup>८</sup> ।  
बका<sup>९</sup> तो क्या है, फना<sup>१०</sup> का भी एतबार न कर ॥

—आसी

५१६ जर्रे-जर्रे<sup>११</sup> में है 'अहसाँ' उसके जलवे<sup>१२</sup> आशकार<sup>१३</sup> ।  
देखिए और देखकर तकमीले-ईमाँ<sup>१४</sup> कीजिए ॥

५१७. भटका हूँ अपनी मंजिले-मकसूद से बारहा<sup>१५</sup> ।  
आसान जानकर कभी, दुश्वार देखकर ॥

—अहसान दानिश

५१८. दिल की आबादी है 'अख्तर' दिल की वरबादी का नाम ।  
इक तआल्लुक<sup>१६</sup> है मेरी हस्ती<sup>१७</sup> को वीरानी<sup>१८</sup> के साथ ॥

—अख्तर

५१९ जितनी है क़रीब मजिले-यार ।  
ऐ दिल ! उतनी ही दूर भी है ॥

१. बन्धनो २. आदर, मान्यता ३. ईर्ष्या, स्पर्धा ४. कामना ५. वसन्त का जोश ६. पतभङ की घूम ७. विश्वास ८. धोखा ९. अमरता १०. मौत ११. अगु, परमागु १२. शोभा १३. स्पष्ट, प्रकाशित १४. विश्वास की पूर्ति १५. बार-बार १६. सम्बन्ध १७. जीवन १८. वरबादी ।



- ५२० जिन्दगी है अपने कब्जे में, न अपने वस में मौत ।  
आदमी मजबूर है और किस कदर मजबूर है ?
५२१. अरे, सूदो-ज़िया<sup>१</sup> देखा नहीं जाता मुहब्बत में ।  
यह सौदा और सौदा है, यह दुनिया और दुनिया है ॥

— उम्मेद

- ५२२ 'वे.खुद' ने मुहब्बत को बदनाम किया आखिर ।  
यह जाम जो पीना था होठों को सिया होता ॥
- ५२३ कुछ ऐसी बात मुझमें मुँह बनाकर गुल ने कह दी है ।  
मज़ा आता नहीं बुलबुल की अब नग्मा-सराई<sup>२</sup> का ॥

— बेखुद

५२४. मैं क्या चाहता हूँ, बताऊँ तुम्हें क्या ?  
मैं खुद सोचता हूँ मैं क्या चाहता हूँ ?

— तजवर

- ५२५ 'जलील' अच्छा नहीं आवाद करना घर मुहब्बत का ।  
यह उनका काम है जो जिन्दगी बरवाद करते हैं ॥

— जलील

- ५२६ यह माना दोनों ही धोके हैं रिन्दी<sup>३</sup> हो कि दरवेगी<sup>४</sup> ।  
मगर यह देखना है, कौन-सा रंगीन धोका है ?

— जोश

५२७. पहुँच सके न जहाँ स्वाहिगात<sup>५</sup> की परवाज<sup>६</sup> ।  
न वन नका किसी ऐसी फिजा<sup>७</sup> में काशाना<sup>८</sup> ॥

— रविश

५२८. दुनिया है ग़ाव<sup>९</sup>, हामिले-दुनिया<sup>१०</sup> खयाल है ।  
ज्मान ग़ाव देग रहा है खयाल में ॥

— भीमाव

१. माम-जानि २. नाने का ३. मन्नी, मगधीपन ४. फ़तीगी  
५. इन्तार्थ ६. उद्दान ७. बानावस्था ८. घर, कुटी, भोपड़ा ९. 'वपन'  
१०. संगीत गुप्त पों प्राप्ति ।

५२९. तर्क<sup>१</sup> मुहब्बत करने वालो ! कौन बड़ा जग जीत लिया ?  
इश्क़ से पहले के दिन सोचो, कौन ऐसा सुख होता था ॥  
—फिराक़
५३०. सफर करते हुए मजिल-ब-मंजिल जा रहे हैं हम ।  
मुझे यह सारी दुनिया कारवाँ मालूम होती है ॥  
—भौलाना
५३१. यह नाहमवार<sup>२</sup> ही हमवार<sup>३</sup> हो जाए तो क्या कम है ?  
जमी<sup>४</sup> से जब नहीं फुरसत तो फिकरे-आसमाँ<sup>५</sup> क्यों हो ?  
'यगाना' फिकरे-हासिल<sup>६</sup> क्या ? तुम अपना हक<sup>७</sup> अदा करदो ।  
बला से तल्ल<sup>८</sup> गुजरे जिन्दगानी रायगा<sup>९</sup> क्यों हो ?  
—यगाना
- ५३२ दीदार<sup>१०</sup> की तलब<sup>११</sup> के तरीको<sup>१२</sup> से बेखबर<sup>१३</sup> ।  
दीदार की तलब है तो पहले निगाह<sup>१४</sup> माँग ॥  
—आज़ाद
५३३. दिखावे के हैं सब यह दुनिया के मेले ।  
भरी वज्म<sup>१५</sup> में हम रहे हैं अकेले ॥
- ५३४ मज़ाहब<sup>१६</sup> क्या है ? राहे<sup>१७</sup> मुख्तलिफ<sup>१८</sup> हैं एक मजिल<sup>१९</sup> की ।  
है मजिल क्या ? जहाँ सब कुछ है, पर राहे नहीं होती ॥
- ५३५ दुनिया में इक सक्कनका<sup>२०</sup> जरिया<sup>२१</sup> हो जब यही ।  
इन्सान तुझ से ली<sup>२२</sup> न लगाए तो क्या करे ?  
—अफसर
५३६. हर कदम पर गिर गिरकर आदमी संभलता है ।  
यानी खिज़्र भी कोई साथ-साथ चलता है ॥

१ त्याग २ ऊबड़खाबड़, विषम ३ समतल, सम ४ इहलोक  
५ परलोक की चिन्ता ६ फल की चिन्ता ७ कर्तव्य ८ कड़वी ९ व्यर्थ  
१० दर्शन ११ इच्छा १२ उपाय, ढंग १३ अनजान १४ दृष्टि १५ सभा  
१६ पन्थ, धर्म १७ रास्ते १८ विभिन्न, अलग-अलग १९ गन्तव्य स्थान की  
२०. शान्ति का २१ साधन २२, लगन ।

५३७. इन्सान को लाजिम<sup>१</sup> है रहे दूर रिया<sup>२</sup> से ।  
यह चीज जुदा करती है बन्दे को .खुदा से ॥  
—जिगर
- ५३८ खुदा की बन्दगी का 'सोज' है दावा तो खलकत<sup>३</sup> को ।  
वले<sup>४</sup> देखा जिसे बन्दा<sup>५</sup> है अपनी खुदनुमाई<sup>६</sup> का ॥  
—सोज
- ५३९ अपनी हर लगजिश<sup>७</sup> से लेता हूँ मैं इक ताजा सबक<sup>८</sup> ।  
मेरा हर अंजाम<sup>९</sup> मेरे वास्ते आगाज<sup>१०</sup> है ॥  
—अनवर
- ५४० आशियाने<sup>११</sup> का पता क्या दें बता खानाबदोश<sup>१२</sup> ।  
चार तिनके रख दिए जिस शाख पै घर हो गया ॥  
—कमाल
- ५४१ .खुदा की .खुदाई मे क्या-क्या नही है ।  
हमी को मगर चश्मे-बीना<sup>१३</sup> नही है ॥  
—मिजाज
- ५४२ कोनैन<sup>१४</sup> की उन भूल-भुलैयो से गुज़र जा ।  
अपनी ही तरफ देख, इधर जा न उधर जा ॥  
—जिगर
- ५४३ हुस्ने-सूरत<sup>१५</sup> के लिए, खूबिए-सीरत<sup>१६</sup> है जरूर ।  
गुल वही जिसमे कि खुशबू भी हो रगत के सिवा ॥  
—आसी
- ५४४ दुनिया यह उसी की है, आलम<sup>१७</sup> यह उसी का है ।  
जो आप ही मजनुँ है, जो आप ही लैला है ॥

१ जरूरी २. मायाचार, कपट ३ दुनियाँ, सृष्टि ४ मगर ५ सेवक  
६ अहंकार, अहंमन्यता ७ पतन, अष्टता ८ नया बोध-पाठ ९ परिणाम  
१० प्रारम्भ ११ घोंसला १२ वेधरवार १३ देखने वाली आँख १४ लोक-  
परलोक की १५ रूप-सौन्दर्य के १६. स्वभाव की विशेषता १७ ससार ।

५४५. जाहिदा<sup>१</sup> । तसबीह-मुसल्ला<sup>२</sup> और है ।  
इश्क<sup>३</sup> के दरिया में गिरकर डूब जाना और है ॥

५४६. इतने ही मुझसे वोह करीब<sup>४</sup> हुए ।  
मैंने जितनी ही आरजू<sup>५</sup> कम की ॥

—जिगर

५४७. अहसासे-खुदी<sup>६</sup> वेदार<sup>७</sup> है अब,  
दर-दर<sup>८</sup> की सलामी कौन करे ?  
खालिक<sup>९</sup> ही का सिजदा<sup>१०</sup> मुश्किल है,  
बन्दो<sup>११</sup> की गुलामी कौन करे ?

५४८. तू दिल में तो आता है, समझ में नहीं आता ।  
मालूम हुआ बस तिरि पहचान यही है ।

—अकबर

५४९. 'जिगर' अब भी नहीं खाली है दुनिया बा-कमालो से<sup>१२</sup> ।  
कोई पैदा तो करले देखने वाली नजर पहले ॥

—जिगर बरेलबी

५५०. दिल ही ने राहे-इश्क<sup>१३</sup> में धोके दिए मुझे ।  
दिल ही को खिज्म-राह<sup>१४</sup> किए जा रहा हूँ मैं ॥

—हिना

५५१. वह न था हमसे जुदा<sup>१५</sup>, हम भी जुदा उससे न थे ।  
न हुई फिर जो मुलाकात<sup>१६</sup> तो क्योकर न हुई ?  
५५२. मुझे हर तरह की खुदबीनियो<sup>१७</sup> से कर दे बेगाना<sup>१८</sup> ।  
जो आईना<sup>१९</sup> भी मैं देखूँ, नुमायाँ<sup>२०</sup> तेरी सूरत हो ॥

—आसी

---

१ उपासक २ माला और आसन ३ प्रेम ४ निकट ५ इच्छा  
स्वत्वाभिमान की अनुमति ७ जाग्रत ८ द्वार-द्वार की ९ परमात्मा  
१०. नमन-नमस्कार ११ सेवको की १२ गुणवानो से १३ प्रेम-मार्ग में  
१४ पथ-प्रदर्शक १५. पृथक १६ साक्षात्कार, भेट १७ स्वयं का देखना  
१८. अपरिचित १९ दर्पण २०. प्रकट ।

- ५५३ हम फकीरो से खप्पा होके कोई क्या लेगा ?  
 एक घर वन्द हुआ, दूसरा घर देख लिया ॥
- ५५४ तेरा गुलशन<sup>१</sup> ही न बन जाए कफ़स<sup>२</sup> ऐ बुलबुल !  
 देख महदूद<sup>३</sup> न कर वसअते-दुनियाए-बहार<sup>४</sup> ॥
- ५५५ समझाए कौन ? बुलबुले-ग़फ़लत-शरार<sup>५</sup> को ?  
 महदूद कर लिया है चमन की बहार को ॥

—जिगर

- ५५६ क्या गरज लाख खुदाई<sup>६</sup> मे है दौलत वाले ।  
 उनका वन्दा हूँ, जो वन्दे है मुहव्वत वाले ॥

—झोका

- ५५७ पजमुर्दगी गुल<sup>७</sup> पै हँसी जब कोई कली ।  
 आवाज दी खिजाँ ने कि तू भी नजर मे है ॥

—क़मर जलालावादी

- ५५८ उम्मीद जिसे हम कहते हैं, वो भीक का इक कासा<sup>८</sup> निकला ।  
 फिर जब देखो तब खाली है, सो उसको हमने छोड़ दिया ॥
- ५५९ दरिया-ए-मुहव्वत ही मे हूँ, कैफ़ियत<sup>९</sup> व मस्ती है दिल मे ।  
 कुछ फ़िक्र नहीं है साहिल की, इस दरिया का साहिल ही नहीं ॥

—जिगर

५६०. मिल्लतें<sup>१०</sup> रस्तो के हैं सब हेर-फेर ।  
 सब जहाजो का है लगर एक घाट ॥

—हाली

५६१. तमन्नाओ मे उलझाया गया हूँ ।  
 खिलौने देके बहलाया गया हूँ ॥

—शाब

---

१ वागीचा २ पिंजरा ३ सीमित ४ बहार की दुनिया की विशालता  
 ५. प्रमादी बुलबुल ६. सृष्टि ७. फूल की मुरभाई हालत ८. पात्र ९ नशे  
 की हालत १०. पन्थ ।

५६२ कूचए-दिल<sup>१</sup> मे तलाशे-यार करना चाहिए ।  
फिर रहा है दश्न<sup>२</sup> मे मजनूँ भी डक दीवाना है ॥

—उस्मान

५६३. छोडा नही खुदी<sup>३</sup> को, दौडे खुदा के पीछे ।  
आसाँ<sup>४</sup> को छोड बन्दे, मुश्किल<sup>५</sup> को ढूँढते है ॥

—नाशाब

५६४. जी उठा मरने से जिसकी खुदा पर थी नजर ।  
जिसने दुनिया ही को पाया, था वह सब खोके मरा ॥

५६५ उस मै<sup>६</sup> से नही मतलब, दिल जिससे हो बेगाना<sup>७</sup> ।  
मकसूद<sup>८</sup> है उस मै से, दिल ही में जो खिचती है ॥

५६६ हकीकत<sup>९</sup> की खबर क्या चश्मे-जाहिर-बी<sup>१०</sup> को ऐ जाहिद<sup>११</sup> ।  
नज़र आता है जो मुभको, तेरी आँखो से पिनहाँ<sup>१२</sup> है ॥

५६७ नसीहत की नही हाजत मुझे ऐ नासहे-नादाँ<sup>१३</sup> ।  
मेरे दिल की सदा<sup>१४</sup> मेरे लिए पन्दे-कदीबाँ<sup>१५</sup> है ॥

५६८ पुरसकूँ<sup>१६</sup> तह<sup>१७</sup> मे खज़ाना मोतियो का है निहाँ<sup>१८</sup> ।  
सतह-दरिया<sup>१९</sup> पर हुवाबे-मौज<sup>२०</sup> का आलम<sup>२१</sup> न देख ॥

—असर

५६९ समा जाए जो नजरो मे उसे तसवीर कहते है ।  
कलेजे मे जो चुभ जाए, उसी को तीर कहते है ॥

५७० इश्क<sup>२२</sup> है किस कतार<sup>२३</sup> मे, हुरन है किस शुमार<sup>२४</sup> मे ।  
उम्र तमाम हो चुकी, अपने ही इन्तजार मे ॥

१ दिन की गली मे २ जगल मे ३ अहकार को ४ सरल को  
५ दुर्गम, अगम्य को ६ मदिरा ७ पागल, अपरिचित ८ अभिप्रेत, उद्देश्य  
९ असलियत १० प्रकट-प्रत्यक्ष (स्थूल) को देखने वाली आँख, ११ उपासक  
१२ छिपा हुआ १३ मूर्ख उपदेशक १४ अन्तरात्मा की आवाज १५ ज्ञानियो  
की शिक्षा १६ शान्त १७. तल मे १८ गुप्त, छुपा हुआ १९ समुद्र की सतह  
पर २० बुदबुद और लहर का २१. दशा २२ प्रेम २३. पक्ति मे २४. गिनतीमे

५७१ खबर नहीं मुझे मैं क्या हूँ, आरजू क्या है ?  
किसी ने जब से यह समझा दिया कि 'तू क्या है' ?

—जिगर

५७२ कितने कावे मिले रस्ते में, कई तूर<sup>१</sup> मिले ।  
इन मुकामात<sup>२</sup> से हमको वोह कही दूर मिले ॥

—रियाज

५७३ कही बे-दहन<sup>३</sup> है तेरा लकव<sup>४</sup>, कही कमसख<sup>५</sup> का खिताब<sup>६</sup> है ।  
गरज असल बात यह खुल गई, कि सकूत<sup>७</sup> ही में कलाम<sup>८</sup> है ॥

—शाद

५७४, यह हस्ती-ओ-अदम<sup>९</sup> बहरे-फना के<sup>१०</sup> दो किनारे हैं ।  
जो इस साहिल से डूवेगा वह उस साहिल से निकलेगा ॥

५७५ कोई मुझ-सा भी न होगा राजे-दिल<sup>११</sup> से बेखबर<sup>१२</sup> ।  
जो मेरे दिल में है उससे कह रहा हूँ दिल में आ ॥

—नश्तर

५७६ हजार सजदे करे रात-रात भर जाहिद<sup>१३</sup> ।  
जो दिल ही साफ न हो, क्या जबी<sup>१४</sup> में तूर<sup>१५</sup> आए ?

—जिगर

५७७ हकीकत में वही इस बहरे-हस्ती<sup>१६</sup> का शिनावर<sup>१७</sup> है ।  
जो मौजो का सहारा लेके फिर मौजो से बाहर है ॥

—बली

५७८. लडकपन जिद<sup>१८</sup> में रोता था, जवानी दिल को रोती है ।  
न तब आराम था साकी, न अब आराम है साकी ॥

१ तूर पर्वत २. स्थानो ३ निर्मुख ४. उपनाम ५ अल्पभाषी की  
६. पदवी ७ शान्ति, मोन ८ वक्तृत्व ९ जीवन और मृत्यु १० विनाश-  
समुद्र ११ मन का रहस्य १२ अनभिज्ञ, प्रमत्त १३ उपासक १४ मस्तक  
१५ प्रकाश १६ जीवन-समुद्र का १७ जानकार १८ हठ, अड मे ।

- ५७६ कि यह दुनिया सरासर<sup>१</sup> खाब<sup>२</sup> और खाबे-परीशाँ<sup>३</sup> है ।  
खुशी आती नहीं सीने में जब तक साँस चलती है ॥  
—जोश
- ५८० दिमाग आस्माँ पर जमी पर जबी<sup>४</sup> है ।  
इबादत यह कोई इबादत नहीं है ॥
- ५८१ किसी को दहर<sup>५</sup> में अजाम-बी<sup>६</sup> नज़र न मिले ।  
इसी में खैर है आखिर की कुछ खबर न मिले ॥  
—अमन लखनवी
- ५८२ मरना-जीना एक है जिनको जरा भी ज्ञान है ।  
वह उधर का मर्तबा है, यह इधर की शान है ॥
- ५८३ जिन्दगी है रूह को<sup>७</sup> महदूद<sup>८</sup> कर लेने का नाम ।  
मौत है इन्साँ के ला-महदूद<sup>९</sup> हो जाने का नाम ॥
- ५८४ जिन्दगी धुँधला-सा इक जल्वा है, और कुछ भी नहीं ।  
मौत इक वारीक-सा पर्दा है, और कुछ भी नहीं ॥
- ५८५ गौर कर दिल में कि हो जाये हकीकत<sup>१०</sup> बे-नकाब<sup>११</sup> ।  
टूटते देखे तो होंगे बार-हा<sup>१२</sup> तूने हुवाब<sup>१३</sup> ॥
- ५८६ मरके भी दरिया के सीने से कही जाते नहीं ।  
रहते हैं दरिया ही में, लेकिन नगर आते नहीं ॥
- ५८७ यूँ ही तेरी शमए-सोजा<sup>१४</sup> भी तेरी महफिल में है ।  
मरने वाला आँख से ओझल है, लेकिन दिल में है ॥
- ५८८ कहते हैं फानी<sup>१५</sup> जिन्हें हम वह फना<sup>१६</sup> होते नहीं ।  
मरने वाले अस्ल में<sup>१७</sup> हमसे जुदा<sup>१८</sup> होते नहीं ॥

१. सर्वथा २ स्वप्न ३ दुस्वप्न, चिन्ताओं से भरा स्वप्न ४ मस्तक  
५ दुनियाँ में ६ परिणामदर्शी ७ आत्मा को ८ सकुचित, सीमित ९ विस्तृत,  
सीमातीत १० वास्तविकता ११ अनावृत, उद्घाटित १२ बार-बार,  
वृहत्वार १३ पानी के बुलबुले १४ प्रकाशमान दीपक १५ नश्वर १६ नष्ट  
१७ वस्तुतः १८ पृथक् ।



- ६०६ किसने लिखा है यह दीवारों पे जिन्दा की<sup>१</sup> 'शहीद' ।  
 "जान देना जिसने सीखा, उसको जीना आ गया ।  
 —शहीद वदायूनी
६०७. बे खुदी<sup>२</sup> देती है जव दिल को पयामे विलवत<sup>३</sup> ।  
 तू खुदा जाने उस आलम<sup>४</sup> मे कहाँ होता है ?
- ६०८ कह दो अभी न करवटे बदले निजामे-दहर<sup>५</sup> ।  
 मेरी जबीने-शौक<sup>६</sup> है, और पाए-यार<sup>७</sup> है ॥  
 —सरशार सिद्दाकी
- ६०९ हमे पतवार अपने हाथ मे लेनी पड़े शायद ।  
 यह कैसे ना खुदा<sup>८</sup> हैं, जो भँवर तक जा नहीं सकते ॥
६१०. तकदीर का शिकवा बेमानी<sup>९</sup>, जीना ही तुम्हे मजूर नहीं ।  
 आप अपना मुकद्दर वन न सके इतना तो कोई मजबूर<sup>१०</sup> नहीं ॥  
 —कतील
- ६११ वे बड़े खुशनसीब<sup>११</sup> इन्साँ थे ।  
 जिनकी किस्ती को नाखुदा<sup>१२</sup> न मिला ॥
६१२. ऐ काग<sup>१३</sup> । टूट जाये किसी इत्तिफाक<sup>१४</sup> से ।  
 वे हाथ जो हद्दे-दुआ के<sup>१५</sup> करीब हैं ॥
- ६१३ इम्दाद<sup>१६</sup> को मैं अपनी तौहीन<sup>१७</sup> समझता हूँ ।  
 ऐ अहले-करम<sup>१८</sup> । मेरी इम्दाद न फरमाओ ॥
६१४. कुछ नहीं फिर भी मुतमईन<sup>१९</sup> है दिल ।  
 हाथ अपनी अमीर नादारी<sup>२०</sup> ॥

— अदम

---

१ कारागार की २ बेसुधपन, सजाहीनता, मस्ती ३, एकान्त का सन्देश  
 ४. स्थिति मे ५ विष्व-व्यवस्था ६ रुचि, मस्तक की लगन ७ प्रिय-चरण  
 ८ कर्णधार, मल्लाह ९ व्यर्थ १०. विवश ११ भाग्यशाली ११ कर्णधार  
 १३ क्या ही अच्छा हो १४ सयोग-वश, दैवयोग से १५. दुआ माँगने के  
 लिए उठे हुए हाथ १६ सहायता १७ अपमान, बेइज्जती १८ कृपालुओं ।  
 १९ सन्तुष्ट २० दरिद्रता ।

- ६१५ तलवा<sup>१</sup> हो जिन्दगी की तो सकूँ-नाआशना<sup>२</sup> हो जा ।  
कि लफ्जो मे<sup>३</sup> नही होती है इन बातो की तफसीरे<sup>४</sup> ॥  
—आजाद
- ६१६ महसूस<sup>५</sup> हो रहा है कि गुम<sup>६</sup> हो रहा हूँ मैं ।  
किस सिस्त<sup>७</sup> आ गया, तुझे मैं ढूँढता हुआ ॥  
—राज, रामपुरी
६१७. गमे-हयातको<sup>८</sup> दुनिया पे आशकार<sup>९</sup> न कर ।  
यह एक राज<sup>१०</sup> है, जिक्र इसका बार-बार न कर ॥  
—रौनक बक्शी
६१८. खुदी का राजदाँ<sup>११</sup> होकर खुदी की दास्ताँ<sup>१२</sup> होजा ।  
जहाँ से<sup>१३</sup> क्या गरज<sup>१४</sup> तुझको तू आप अपना जहाँ होजा ॥
- ६१९ किसको दुनियाँ मे हुई राहत<sup>१५</sup> नसीब<sup>१६</sup> ?  
कौन दुनिया मे असीरे-गम<sup>१७</sup> नही ?  
—अंश मलसियानी
- ६२० अगर हो आस्ताँ से इस्ते-दिल<sup>१८</sup>, तब बात बनती है ।  
फकत रक्ते-जबीनो-आस्ताँ<sup>१९</sup> कुछ नही होता ॥
६२१. मुकामे-वाज<sup>२०</sup> कहाँ और मुकामे-राज<sup>२१</sup> कहाँ ?  
मुकामे-वाज है मेम्बर मुकामे-राज<sup>२२</sup> है दार ॥

१. इच्छा, चाह २ सुख-चैन से वेपर्वाह ३ शब्दो मे ४. टीकाएँ, व्याख्याएँ ५ अनुभव ६ आत्म-विस्मृत, तल्लीन, खोया हुआ ७ तरफ ८ जीवन के दुख को ९ प्रकट, व्यक्त १० रहस्य, भेद ११ 'सोऽहम्' का अभिप्राय समझकर १२ अर्थात् जीव से ब्रह्म और आत्मा से परमात्मा बनने का प्रयास कर १३ ससार से १४ प्रयोजन, मतलब १५ सुख-शान्ति, चैन १६ प्राप्त, उपलब्ध १७ दुखी, सतप्त १८ प्यारे की चौखट से दिली मुहब्बत १९ प्यारे की चौखट पर मस्तक रगड़ने से २०. भाषण का स्थान २१. वास्तविक सत्य का स्थान अर्थात् भाषण करने मे और सत्य कहने मे अन्तर है, कयनी एव करनी मे कितना अन्तर है २२ भाषण तो मच मे दिया जाता है, पर सत्य के लिए सूली पर चढ़ना होता है ।

५८६ कँदे-हस्ती से<sup>१</sup> कोई जर्र<sup>२</sup> रिहा<sup>३</sup> होता नहीं ।  
टूट जाता है कफ़स<sup>४</sup>, ताइर<sup>५</sup> फना होता नहीं ॥

५८७ इश्क की माला का इक मोती बिखर सकता नहीं ।  
इत्तिहादे-बातिनी<sup>६</sup> मरने से मर सकता नहीं ॥

५८८. इश्क की शाखे किसी आँधी से भुक सकती नहीं ।  
रूह की सरगोशियाँ<sup>७</sup> मरने से मर सकती नहीं ॥

५८९ जिन्दगी बेरूह आवाजो मे देती है पयाम<sup>८</sup> ।  
मौत सर्द अल्फाज को<sup>९</sup> ठुकराके करती है कमाल ॥

—जोश

५९० आये थे उसी की तजस्सुसमे,<sup>१०</sup> जाते हैं उसी को ढूँढेंगे ।  
इस आरजी<sup>११</sup> आने-जाने को, फिर मरना-जीना क्या कहिए ?

५९१ कुछ-न-कुछ हुआ आखिर दौरे-आस्माँ<sup>१२</sup> अपना ।  
ढूँढने चले उनको, मिल गया निशा अपना ॥

—बासित भोपाली

५९२. नहीं अपने किसी मकसद से खाली कोई भी सज्दा<sup>१३</sup> ।  
खुदा के नाम से करता है इन्साँ बन्दगी अपनी ॥

५९३ हर बुलन्दो-पस्त को<sup>१४</sup> इस तरह ठुकराता हूँ मैं ।  
कोई यह समझे कि ऐसे ठोकरे खाता हूँ मैं ॥

५९४ बैठें तो किस उम्मीद पै, बैठे रहे यहाँ ।  
उट्ठें तो उठके जाएँ कहाँ तेरे दर से हम ॥

—बिस्मिल सर्वहो

१ जीवन की कैद से २ कण, परमाणु ३ मुक्त ४ पिजरा ५ पछी  
६ अन्तरंग सम्बन्ध, आन्तरिक रिश्ता ७ कानाफूसी ८ सन्देश ९ शब्दों को  
१० खोज, तलाश में ११ कृत्रिम, वनावटी १२ आकाश का चक्र, भाग्य का  
चक्र १३ नमाज में नतमस्तक होना १४ चढ़ाव-उतार, ऊँच-नीचा

५९८ कुछ अपने एतमादे-नजरसे<sup>१</sup> भी काम ले ।  
चल कारवाँके<sup>२</sup> साथ, मगर राहबर<sup>३</sup> से दूर ॥

५९९ वही हज़ारो बहिश्ते<sup>४</sup> भी है खुदा-बन्दा<sup>५</sup> ।  
सिसक-सिसक के कटी जिन्दगी जहाँ मेरी ॥

६०० यह अपने-अपने जफ़्त-तमन्ना<sup>६</sup> की बात है ।  
वरना चमन करीब<sup>७</sup> था, बीराना<sup>८</sup> घर से दूर ॥

—बिहार कोटी

६०१ आप मैं अपनी निगाहो से हुआ था ओभल ।  
लेकर पहुँची थी कहाँ मुझको मेरी कमनजरी<sup>९</sup> ॥

—महमूद सईदी

६०२ अब तक मैं वन्दगी मे तआय्युन<sup>१०</sup> न कर सका ।  
दिल है कही, ज़बी<sup>११</sup> है कही, और नजर कही ॥

—मशीर भिभानवी

६०३ तू जिसे जर्ज़<sup>१२</sup> समझकर कर रहा है पायमाल<sup>१३</sup> ।  
देख उस जर्ज़ के सीने मे कही दुनिया न हो ॥

६०४ इक नयी बुनियाद<sup>१४</sup> डालेगे तजस्सुस<sup>१५</sup> की 'शिफा' ।  
हर गुवारे-कारवाँ<sup>१६</sup> मे कारवाँ ढूँढेगे हम ॥

—शिफा ग्वालियरी

६०५ ऐ दोस्त ! रफ़ता-रफ़ता<sup>१७</sup> तुझको भी ढूँढ लूँगा ।  
खोया हूँ मैं अभी तो अपनी ही आगही<sup>१८</sup> मे ॥

१ दृष्टि के विश्वास से २ यात्री दल ३ मार्ग-दर्शक से ४ स्वर्ग  
५ हे प्रभो ! ६. कामना की योग्यता, पात्रता अथवा गम्भीरता वी ७ निकट  
८ वन, जंगल ९ सकीर्णता, सकुचित दृष्टि १० स्थिरता ११ मस्तक  
१२. कण, परमाणु १३ नष्ट, बर्बाद १४ नीव १५ खोज की १६ यात्री  
दल की घूलि १७. धीरे-धीरे १८ ज्ञान, परिचय, पहचान मे ।

- ६२२ तेरी तलाश की मंज़िल अभी है दूर ऐ दोस्त !  
अभी तो खुद मुझे अपना निशाँ नहीं मिलता ॥
- ६२३ अब हैं सरगरमे-तलाशे-मजिले-जानाँ<sup>१</sup> न हम ।  
छोड़ आये हैं हृद्दे-काब-ओ-बुतखाना<sup>२</sup> हम ॥  
—जगन्नाथ आज्ञाद
- ६२४ तकलीद के दीवाने<sup>३</sup> तकलीद<sup>४</sup> गदाई<sup>५</sup> है ।  
तहकीक<sup>६</sup> है सुलतानी<sup>७</sup> हम-पाय-ए-सुलताँ<sup>८</sup> बन ॥  
—जोश
- ६२५ हस्ती<sup>९</sup> है ब-जाहिर<sup>१०</sup> ऐ 'सागर' । आमेजए-ख्वाबो-वेदारी<sup>११</sup> ।  
और फिर भी जीना होण नहीं, और फिर भी हस्ती ख्वाब नहीं ॥
- ६२६ न आस्माँ की न अर्शे-वरी की<sup>१२</sup> बात करो ।  
जमी की गोद के पालो । जमी की बात करो ॥  
—सागर
- ६२७ तेरे और उसके दरमियाँ तेरी खुदी<sup>१३</sup> हिजाब<sup>१४</sup> है ।  
अपना निशान खोये जा, उसका मुकाम पाये जा ॥  
—अख्तर सीरानी
- ६२८ हर गै को<sup>१५</sup> मुसलसल<sup>१६</sup> जुम्बिश<sup>१७</sup> है,  
राहतका<sup>१८</sup> जहाँ मे नाम नहीं ।  
इस आलमे<sup>१९</sup>-सई<sup>२०</sup>-ओ-काविग<sup>२१</sup> मे  
इत्साँ के लिए आराम नहीं ॥

१, २ अपने प्यारे की खोज मे इतने लीन हैं कि कावा, काशी पीछे छूट गए हैं ३ अनुकरण करने की धुन के पागल ४ अनुकरण, नक़ल ५ भिखारीपन, मँगतापन ६ खोज ७. श्रेष्ठता ८ सर्वोपरि के समान, वादशाह के जैसा ९ अस्तित्व, जीवन १० प्रत्यक्षत ११ स्वप्न और जाग्रत अवस्था का सगम १२ स्वर्ग की १३ अहमन्यता १४ पर्दा १५ वस्तु अथवा पदार्थ को १६ निरन्तर, लगातार स्थायी १७ प्रकम्पन, हलन-चलन १८ सुख चैन का १९, २०, २१ ससार की आपाधापी मे (नये-नये दुःख-शोक, शत्रुता, मनोमालिन्य आदि की खोज मे रहने से ससार मे मनुष्य को जरा भी आराम नहीं ।)

छाई है फजा<sup>१</sup> पर तिश्नालबी<sup>२</sup> मफकूद<sup>३</sup> यहाँ सैराबी<sup>४</sup> है ।  
हर जिस्म मे इक बेचैनी<sup>५</sup> है, हर रूह<sup>६</sup> मे एक बेताबी<sup>७</sup> है ॥

६२६ ऐ दोस्त ! दिल मे गर्दे-कदूरत<sup>८</sup> न चाहिए ।  
अच्छे तो क्या बुरो से भी नफरत<sup>९</sup> न चाहिए ।  
कहता है कौन, फूल से रग़बत<sup>१०</sup> न चाहिए ।  
काँटे से भी मगर तुझे बहशत<sup>११</sup> न चाहिए ॥

काँटे की रग मे भी है, लहू सब्जाजार<sup>१२</sup> का ।  
पाला हुआ है वह भी नसीमे-बहार<sup>१३</sup> का ॥

—जोश

६३० खिजा<sup>१४</sup> अब आयेगी तो आयेगी ढलकर बहारो मे ।  
कुछ इस अन्दाज<sup>१५</sup> से नज्मे-गुलिस्ता<sup>१६</sup> कर रहा हूँ मैं ॥

—शफक टोकी

६३१ क्यामतखोज<sup>१७</sup> अगर तूफाने-गम उट्ठा तो क्या परवा ?  
कि अब तो डूबकर पैदा किनारा कर लिया मैंने ॥  
६३२ मैं नादाँ नहीं हूँ कि घबराके ग़म से ।  
तेरे पास आकर तुझे दूर कर दूँ ॥

—साहिर भोपाली

६३३ जवानी को सजाए-लज्जते-एहसास<sup>१८</sup> दे देना ।  
मैं इस हृद पर खुदा को आदमी महसूस करता हूँ ॥

—क़सील शिफ्राई

१ वातावरण पर २ पिपासा, प्यास ३. लुप्त, नष्ट, गायब ४ पिपासा की तृप्ति, प्यास का बुझना ५ व्याकुलता ६ आत्मा मे ७ अधीरता, वे सत्री ८ द्वेष-भाव का मैल, धूल ९ घृणा १०. स्नेह, आकर्षण ११ उपेक्षा, घृणा १२ हरियाली का १३ मृदु पवन द्वारा १४ पतझड़ १५. ढग से १६ उद्यान की व्यवस्था १७ प्रलयकर १८. अनुभूति के आनन्द का दण्ड ।

- ६३४ मुसाफिरो<sup>१</sup> मे हो तजकिरा<sup>२</sup> क्या  
 'जमील' अपनी सुवुकरवी<sup>३</sup> का ?  
 न हमने रस्ते मे गर्द उड़ाई  
 न कोई नक्गे-कदम<sup>४</sup> बनाया ॥
६३५. मेरी नज़र मे तजल्ली<sup>५</sup> की हकीकत<sup>६</sup> क्या है ?  
 तजल्लियो की हकीकत<sup>७</sup> को देखता हूँ मैं ॥
६३६. वह भी है दस्ते-हविम<sup>८</sup>, दस्ते-दुआ<sup>९</sup> जिसको कहे ।  
 इन्फ़ियाल<sup>१०</sup> अपनी खुदी<sup>११</sup> का है, खुदा जिसको कहे ॥
- ६३७ वे है अमीर, निज़ामे-जहाँ<sup>१२</sup> बनाते है ।  
 मैं हूँ फकीर, मिज़ाजे-जहाँ<sup>१३</sup> बदलता हूँ ॥  
 यह सर बना नही ऐ दोस्त ! आस्ता<sup>१४</sup> के लिए ।  
 मैं इसके वास्ते जानू<sup>१५</sup> तलाश करता हूँ ॥
६३८. भुकाया तूने, भुके हम, बरावरी न रही ।  
 यह वन्दगी हुई ऐ दोस्त ! आशिकी न रही ।
६३९. दीवार से घिरा था हरम<sup>१६</sup> का कसूर<sup>१७</sup> था ।  
 पैदा अगर हद्द मे<sup>१८</sup> वुसअत<sup>१९</sup> न हो सकी ॥
- ६४० तलव के सहरा मे<sup>२०</sup> चप्पे-चप्पे पे हैं मेरे नक्गे-पा के<sup>२१</sup> मुहरे ।  
 अगर्चे मैं इस हविसकदे<sup>२२</sup> से गुज़र गया था मुसाफिराना ॥

---

१. जनता में, यात्रियों मे २ चर्चा, जिक्र ३. तेज़ रफ्तारी का ४. चरण  
 चिह्न ५ ईश्वरीय चमत्कार की ६ मूल्य, कीमत ७ वास्तविकता को  
 ८. तृष्णा का हाथ ९ जो हाथ खुदा से माँगने के लिए फैला हो १०. सकोच,  
 लज्जा ११. अहभाव का १२ विश्व की व्यवस्था १३ संसार का मत-  
 परिवर्तन, स्वभाव मे हेर-फेर, हृदय परिवर्तन १४ नमाज़ों मे झुकने के लिए,  
 प्रिय की चीखट चूमने के लिए तृष्णा १५ घुटना, जघा १६. कावे का  
 १७ अपराध, दोष १८ सीमित क्षेत्र मे १९ विनाशिता २० इच्छास्पी  
 रेगिस्तान मे २१. चरण-चिह्न २२ तृष्णागार से ।

- ६४१ मोती बनने से क्या हासिल ? जब अपनी हकीकत<sup>१</sup> ही खो दी ।  
कतरे<sup>२</sup> के लिए बेहतर था यही, कुलजुम<sup>३</sup> न सही दरिया होता ।
- ६४२ .खुदा की रहमत पै<sup>४</sup> भूल बैठूँ, यही न मानी<sup>५</sup> है इसके वाइज<sup>६</sup> ।  
वह अन्नका<sup>७</sup> मुन्तजिर<sup>८</sup> खड़ा हो, मकान जलता हो जब किसी का ॥  
वह लाख भुक्वाले सरको मेरे, मगर यह दिल अब नहीं भुकेगा ।  
कि कित्नाई से<sup>९</sup> भी ज़ियादा, मिजाज ना जुक है बन्दगी का ॥
६४३. मजनू<sup>१०</sup> हैं, मगर ख्वाहिशे-लैला नहीं करते ।  
हम इश्क तो करते हैं, तमन्ना नहीं करते ॥  
—जमील मजहरी
- ६४४ जो जीना हो तो पहले ज़िन्दगी का मुद्आ<sup>११</sup> समझे ।  
खुदा तौफीक<sup>१२</sup> दे तो आदमी खुद को .खुदा समझे ॥
- ६४५ किसे कहते है दरिया, यह खसो-खाशाक<sup>१३</sup> क्या जानें ?  
हकीकत<sup>१४</sup> का पता शायद मिले कुछ तहनशीनो<sup>१५</sup> से ॥  
—अफसर मेरठी
६४६. मैं क्या था, किसलिए भेजा गया इस दौरे-हस्ती मे ?  
न अब तक .खुद को पहचाना, न कुछ राज़े-सफर समझा ॥
६४७. खुदा से दूर हो कर के, यह दिल इतना न समझा मैं ।  
कि उस आलम मे क्या था और इस आलम मे क्या हूँ मैं ?
- ६४८ कोई हँस रहा है, कोई रो रहा है,  
कोई पा रहा है, कोई खो रहा है ।  
इसी सोच मे तो रहता हूँ 'अकबर',  
यह क्या हो रहा है, यह क्यों हो रहा है ?

— अकबर

---

१. अस्तित्व, वास्तविकता २ ब्रूँद के लिए ३ समुद्र ४ दया पर  
५ अर्थ ६. धर्मोपदेशक । ७ वर्षा की ८ प्रतीक्षा मे ९ ईश्वरत्व से  
१० उद्देश्य, अर्थ, तात्पर्य ११ शक्ति, सामर्थ्य, पावता १२ तिनके, घास  
१३ वास्तविकता का १४ दरिया की तह मे जाने वाले से ।



६४६ एहसास<sup>१</sup> मे कमी थी, डदराक<sup>२</sup> मे थी खामी<sup>३</sup> ।  
वह भी वही थे 'अनवर' गुजरा हूँ मैं जहाँ से ॥

—अनवर

६५०. तलागे-खिज्र<sup>४</sup> मे हूँ, खूनासे-खिज्र<sup>५</sup> नही ।  
मुझे यह दिल से गिला<sup>६</sup> है कि रहनुमा<sup>७</sup> न मिला ॥

—फानी

६५१ पहलू मे गुल<sup>८</sup> के खार<sup>९</sup> भी है वेसवव<sup>१०</sup> नही ।  
यह हुस्न<sup>११</sup> तीलने का है काँटा लगा हुआ ॥

६५२. उलभी थी कभी आदम के हाथो ।  
वह गुत्थी<sup>१२</sup> आज तक सुलभा रहा हूँ ॥

—फिराक

६५३ हजार मर्तवा<sup>१३</sup> बेहतर<sup>१४</sup> है बादशाही से ।  
अगर नसीब<sup>१५</sup> तेरे कूचे की गदाई<sup>१६</sup> हो ॥

—मीर

६५४ होते हैं बडे किस्मत के धनी, जो यह सदमे<sup>१७</sup> सह जाते हैं ।  
तूफाने-हवादिस<sup>१८</sup> मे वर्ना अच्छे अच्छे वह जाते हैं ॥

—अजीज



१. अनुमति २ ज्ञान मे ३ न्यूनता, कच्चापन ४ पथ-प्रदर्शक की तलाश मे ५ पथ-प्रदर्शक के रूप का पारखी ६. शिकायत ७ पथ-प्रदर्शक ८ फूल की बगल मे ९. काँटा १० निष्कारण ११, सौन्दर्य १२ समस्या, उलझन, गाँठ १३. वार १४ अच्छा १५ प्राप्त, उपलब्ध १६ भिक्षा-वृत्ति, भोज मार्गने का काम १७ चोट, दु.ख, तकलीफ़ १८. मुसीबतों के तूफान मे ।

## अपनी खुदी ही पर्दा है दीदार के लिए



१. अपनी खुदी<sup>१</sup> ही पर्दा है दीदार<sup>२</sup> के लिए ।  
वर्ना<sup>३</sup> कोई नकाब<sup>४</sup> नहीं यार<sup>५</sup> के लिए ॥
२. थी दुई<sup>६</sup> जब तक, नज़र आती थी लाखों सूरतें ।  
सब से जब देखा उसी को तफ़का<sup>७</sup> जाता रहा ॥
३. खुदी की इल्तिदा<sup>८</sup> यह थी कि अपने-आप में गुम<sup>९</sup> था ।  
खुदी की इन्तिहा<sup>१०</sup> यह है खुदा को याद करता हूँ ॥  
—अख़्तर
४. तर्क<sup>११</sup> कर अपनी खुदी तुझको खुदा मिल जाएगा ।  
कौन कहता है कि ठूँठे से खुदा मिलता नहीं ॥  
—हुनर
५. दिया हमने जो अपनी खुदी को मिटा,  
वह जो पर्दा था बीच में अब न रहा ।  
रहा पर्दे में अब न वह पर्दे-नशी,<sup>१२</sup>  
कोई दूसरा उसके सिवा<sup>१३</sup> न रहा ॥  
—हाली

---

१ अहवाद, यह भाव कि 'वस हम ही हम हैं' २ दर्शन के लिए ३ अन्यथा, नहीं तो ४ पर्दा, ओट ५ मित्र, प्रेमपात्र के ६ द्वैत, यह भाव कि मैं अलग हूँ, वह अलग है ७ भेद, पृथक्ता, जुदाई ८ आदि, शुरूआत ९ खोया हुआ, आत्मविस्मृत १० अन्त ११ छोड़ना, त्याग देना १२ पर्दे में बैठने वाला १३ अतिरिक्त ।

६. मिटा दरमिया<sup>१</sup> से खुदी का जो पर्दा ।  
हम उनके हुए, वह हमारे हुए है ॥

७ अपनी खुदी मिटाएँ तो पाएँ रहे-विसाल<sup>२</sup> ।  
खोएँ जो आपको, वह तेरी जुस्तजू<sup>३</sup> करे ॥

—मस्ती

८ .खुदी से वे.खुदी<sup>४</sup> म आ, जो ज़ौके-हकपरस्ती<sup>५</sup> है ।  
जिसे तू नेस्ती<sup>६</sup> समझा है ऐ गाफिल । हक-परस्ती<sup>७</sup> है ॥

—अमीर

९ मिटा दो .खुद को इतना कि रहे न निशाँ बाकी ।  
अगर पाना सनम<sup>८</sup> को है, .खुदी से हाथ धो बैठो ॥

१० वे.खुदी मे इस कदर महवे-जमाले-यार<sup>९</sup> हूँ ।  
जिस तरफ मैं देखता हूँ यार की तस्वीर है ॥

—एहसान दानिश

११. न था कुछ, तो तू था, कुछ न होता तो .खुदा होता ।  
डुवोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता ?

—गालिव

१२. भगडे से जब दुई के फरागत<sup>१०</sup> हुई हमे ।  
कस्रत से<sup>११</sup> सैरे-आलमे-वहदत<sup>१२</sup> हुई हमे ।

—सलीम

१. वीच मे से २. मिलन का मार्ग ३. खोज, तलाश ४ मस्ती, वेखवरी, तल्लीनता ५ ईश्वर भक्ति की लगन ६ ध्वस, वरवादी, विनाश. तवाही ७ मत्यनिष्ठता, सत्य की पूजा, धर्म परायणता ८ प्रिय, इष्ट मित्र ९ प्रिय के मौन्दर्य मे तन्मय १० मुक्ति, छुट्टी, छुटकारा ११. खूब अच्छी तरह से १२ अद्वैत या एकत्व की स्थिति की सैर ।

१३ वफूरे-वे खुदी<sup>१</sup> ने मर्हले<sup>२</sup> तय कर दिये सारे ।  
कि अपना ही मकाँ अब हो गया है लामकाँ<sup>३</sup> मुभको ॥

१४ जादए-राहे-बका<sup>४</sup> गैर-अज-फना<sup>५</sup> मिलता नहीं ।  
है खुदी जब तक कि इन्साँ मे खुदा मिलता नहीं ॥

१५ मिट गई सारी खुदी, जाती रही दिल से दुई ।  
सब मे उसको जब से देखा, तफ़का<sup>६</sup> जाता रहा ॥

१६ कोई भी दुश्मन नजर आता नहीं अब गैर दोस्त !  
किस्सा ऐ 'नासिख' दुई का था सो यकसू<sup>७</sup> हो गया ॥

—नासिख

१७. वे खुदी बेसवब<sup>८</sup> नहीं 'गालिब' ।  
कुछ तो है, जिसकी पर्दादारी<sup>९</sup> है ॥

१८. उसे कौन देख सकता कि यगाना<sup>१०</sup> है वह यकता<sup>११</sup> ।  
जो दुई की बू<sup>१२</sup> भी होती, तो कही दो-चार होता ॥

—गालिब

१९ दुई मे यकदिली<sup>१३</sup> का रग पैदा हो नहीं सकता ।  
शनासा<sup>१४</sup> गैर का<sup>१५</sup>, तेरा शनासा हो नहीं सकता ॥

२० खोकर खुदी को पाया खोये हुए को हमने ।  
सब-कुछ अर्या<sup>१६</sup> हुआ है, जो था निहाँ<sup>१७</sup> नज़र से ॥

१. मस्ती की स्थिति ने २ समस्याएँ, प्रश्न, कठिन काम ३ वह स्थान जो घर न हो, ईश्वर ४ अमर पथ पर मुक्ति-पथ का पायेय ५. नष्ट हुए बिना, अपने आपको मिटाये बिना ६ भेद, जुदाई ७ एक ओर, निश्चिन्त, एकाग्रचित्त ८ अकारण ९ पर्दा करना १०. अद्वितीय, लाजवाब, एकाकी ११ अद्वितीय, अनुपम, बेमिसाल १२ गन्व १३. एकत्व, एकता १४. परिचित, पहचानने वाला, जानकार १५. अन्य का १६ प्रकट, प्रत्यक्ष १७. लुप्त, छुपा हुआ, ओझल ।

२१. जो खुदी का पर्दा उठा दिया तो विसाले-यार<sup>१</sup> का ढव<sup>२</sup> बना ।  
वह हमारे सामने आ गया कि शहूद<sup>३</sup> जिसका मुहाल<sup>४</sup> था ॥
२२. ता दुई है दरमियाँ,<sup>५</sup> हफ<sup>६</sup> आशनाई<sup>७</sup> का गलत ।  
आश्ना<sup>८</sup> उससे है, जो आपसे वेगाना<sup>९</sup> है ॥
२३. हमने खुदी को खोया, तो वेखुदी को पाया ।  
खोया हुआ न पाया, पाया हुआ न भूले ॥
२४. हाय पहुँचा न गया क़ैदे-खुदी से उस तक ।  
अपने ही दाम<sup>१०</sup> से छुटना उसे दुगवार<sup>११</sup> हुआ ॥

—सौदा

२५. हिजावे-रुखे-यार<sup>१२</sup> ये आप ही हम ।  
खुली आँख जब, कोई पर्दा न देखा ॥

—दद

२६. वेख दी दिखलाती है जल्वे मुझे हरदम नये ।  
है अजब आलम<sup>१३</sup> कि हर आलम<sup>१४</sup> मे हैं आलम<sup>१५</sup> नये ॥
२७. वज़ाहिर<sup>१६</sup> है दुई, पर असल<sup>१७</sup> मे वहदत<sup>१८</sup>-ही-वहदत है ।  
न जाना एक तूने हाय ! गाफिल ! दो को दो जाना ॥

—अमीर

२८. खुदी जब तक रहे इन्सान मे, उसको नहीं पाता ।  
यह पर्दा उठ गया दिल से, तो वह पर्दानशी पाया ॥

—सादिक

१ प्रिय का २. ढग, उपाय ३. प्रत्यक्ष, प्रकटीकरण ४. असम्भव  
५. द्वैत-भाव के बीच में रहने तक, जब तक द्वैत की स्थिति है तब तक  
६. शब्द ७. मित्रता, यारी ८. मित्र, दोस्त ९. अपरिचित, अजान १०. जाल  
११. कठिन १२. प्रिय की आकृति का पर्दा १३. स्थिति १४. अवस्था  
१५. नमार, दशा १६. प्रकटित प्रत्यक्ष रूप से, स्थूल दृष्टि से १७. वस्तुतः  
१८. एकत्व, अद्वैत ।

२९. किया है बेखुदी ने नेको-बद से बेखबर ऐसा ।  
कि शिकवा दोस्त का करता हूँ मैं जा-जाके दुश्मन से ॥

—ऐजाज

३० ग़ैर से क्या मामला, आप है अपने [दाम] मे ।  
क़ैदे-खुदी अगर न हो, तो फिर अजब फराग<sup>२</sup> है ॥

—बद

३१. उठ गया दीदा<sup>३</sup> व दिल से दुई का पर्दा ।  
एक ही नूर<sup>४</sup> हुआ अर्जो-समा<sup>५</sup> से पैदा ॥

—सब

३२ हो वस्ल<sup>६</sup>, पर दुई की कही इसमे बू न हो ।  
तू हो तो मैं न हूँ, अगर हूँ तो, तू न हो ;

—अमीर

३३ मिला है हमको यह मजमूने-रीशन<sup>७</sup> चश्मबीना<sup>८</sup> से ।  
कि छोड़ी जिसने खुदबीनी<sup>९</sup>, उसे सब-कुछ नजर आया ॥

३४ पहुँचा दिया कहाँ-से-कहाँ बेखुदी ने आज ।  
पर्दा जो उठ गया, तो न मैं था, न राज<sup>१०</sup> था ॥

३५ खुदी को इतना मिटा, कि तू न रहे ।  
और तुझ मे दुई की बू<sup>११</sup> न रहे ॥



१. जाल मे, २ मुक्ति, छुटकारा, नजात, सुख, आराम, सन्तोष ३ आँख  
और मन से ४. प्रकाश, ज्योति ५. पृथ्वी और आकाश से ६ मिलन  
७. प्रकाशपूर्ण लेख, प्रकाशित सीख, ज्योतिर्मय सन्देश ८. देखने वाली आँख  
से ९. अपने को सब-कुछ समझना, अहभाव, अहकार १०. रहस्य, भेद  
११. गन्ध ।

## हम मिट गए तो सूरते-हस्ती नजर पड़ी ।



१. हम मिट गए तो सूरते-हस्ती<sup>१</sup> नजर पड़ी ।  
वीरान<sup>२</sup> जब आप हो गए वस्ती नजर पड़ी ॥

—विस्मिल

- २ मिटा दे आपको मजूर अगर है नामवर<sup>३</sup> होना ।  
निशा<sup>४</sup> से जो गुजर जाते हैं, वही नाम करते हैं ॥

—रिन्द

- ३ उठा ले जिन्दगी से हाथ, अगर है वस्ल<sup>५</sup> का तालिब<sup>६</sup> ।  
कि बे सर देने के<sup>७</sup> यह किला<sup>८</sup> सर<sup>९</sup> मुश्किल से होता है ॥

—सहर

- ४ कुछ लज्जते-विसाल<sup>१०</sup> उस को हुई नसीब<sup>११</sup> ।  
जो नामुराद<sup>१२</sup> खेल गया अपनी जान पर ॥

—बेवाक

- ५ गरतू मर जाये तो जीने का मज्जा<sup>१३</sup> आये तुम्हे ।  
ज़हर गर पीवे तो अमृत का मज्जा आये तुम्हे ॥

- ६ निशा पाते हैं, पहले जो निशा अपना मिटाते है ।  
खुद अपना नाश करके वीज फिर फल-फूल पाते हैं ॥

---

१ जीवन का उपाय, जीवन का रूप २. खण्डहर, ध्वस्त ३ प्रसिद्ध, ख्यातिप्राप्त, यशस्वी ४ चिन्ह, खोज ५ मिलन का ६. इच्छुक ७ विना सिर की वाजी लगाये ८ दुर्ग ९ विजित, जीतना १०. मिलन का आनन्द ११ प्राप्त १२. निस्पृह, निःसंग १३ आनन्द ।

७ न दाना खाक<sup>१</sup> मे मिलता, न पाता औजे-सर सब्जी<sup>२</sup> ।  
उभरते है वही इक दिन, जो अपने को दबाते है ॥

—सफी

८ मुयस्सर<sup>३</sup> क्यों न फिर उसको, हयाते-जाविदानी<sup>४</sup> हो ।  
फना<sup>५</sup> जो हो मुहब्बत मे वही वह मर भी सकता है ?

९ मर चुके जीते जी खुशा-किस्मत<sup>६</sup> ।  
इससे अच्छी तो जिन्दगी ही नहीं ॥

—इस्माईल

१० जब हुए वर्बाद, ऐ 'आवाद' तब पाया पता ।  
बेनिशा<sup>७</sup> होकर मिला हमको निशाने-क़ए-दोस्त<sup>८</sup> ॥

—आवाद

११ दिल जलाकर रखे-महबूब<sup>९</sup> का जल्वा<sup>१०</sup> देखा ।  
हमने घर फूँक के क्या खूब तमाशा देखा ?

१२ हुआ तहकीक<sup>११</sup> उन लोगो से जो है आप से बाहर ।  
पता मिलता है जब जोया<sup>१२</sup> तेरे, सरसे गुजरते है ॥

—रिन्द

१३. रौशन<sup>१३</sup> हुआ यह महफिले-आलम<sup>१४</sup> मे शमअ<sup>१५</sup> से ।  
परवाए-सर<sup>१६</sup> नहीं जिसे, वह सर-फराज<sup>१७</sup> है ॥

१. मिट्टी या धूल मे २ हरेभरेपन की समृद्धि, सफलता की उच्चता  
३ उपलब्ध, प्राप्त ४ अमरता का जीवन, शाश्वत जीवन, अमरत्व ५ नष्ट,  
ध्वस्त ६, क्या खूब, क्या अच्छी किस्मत है ७ जिसका कोई अता-पता ही  
न हो, नष्ट, ध्वस्त ८ मित्र की गली का पता ९. प्रेम पात्र का १० दृश्य,  
नजारा ११. ज्ञात, विदित १२ खोजी, ढूँढने वाले १३. प्रकाशित, प्रकट  
१४ ससार गोष्ठी मे १५ मोमवत्ती से १६. सिर देने मे भी जो हिचकता  
नहीं, जी-जान की बाजी लगा देने वाला १७. सर्वोपरि, सर्वोच्च ।



- १४ मरना तेरे फिराक<sup>१</sup> मे जीने की है दलील<sup>२</sup> ।  
मैं गुम<sup>३</sup> हुआ तो तेरा पता मुझको मिल गया ॥

—महशर

- १५ हमको लगा है हाथ यह मजमू<sup>४</sup> चिराग<sup>५</sup> से ।  
रौशन हो नाम उसका, जो अपना जलाये दिल ॥
- १६ मिल गया महबूब<sup>६</sup> से, जो आपसे बाहर हुआ ।  
ऐसी अज-खुद-रफ्तगी<sup>७</sup> क्या है अजीमत<sup>८</sup> दूरकी ॥
- १७ हुवाव-आसा<sup>९</sup> मुहीते-इश्क<sup>१०</sup> से जो पार उतरते हैं ।  
गुजर जाते हैं पहले सर से, पीछे पाँव धरते हैं ॥
- १८ आपको खोया मगर जोया<sup>११</sup> खुदा का हो गया ।  
राज जिस पर मुनक सिफ<sup>१२</sup> फकरो-फना<sup>१३</sup> का हो गया ॥

—रिन्द

- १९ नामद<sup>१४</sup> ऐसी वादी मे रखेगा क्या कदम<sup>१५</sup> ?  
सर<sup>१६</sup> हो मुहिम्मे-इश्क<sup>१६</sup> न वेसर दिये हुए ॥
२०. वरगे-शमअ<sup>१७</sup> दिल जिसने जलाया तेरी दूरी मे ।  
तो उसने मंजिले-मकसूद<sup>१८</sup> को जेरे-कदम<sup>१९</sup> पाया ॥

—आतिश

- २१ क्यो कर हुवाव<sup>२०</sup> हो सके दर्याए-वेकराँ<sup>२१</sup> ?  
दर्यासे जब तलक न मिले टूट फूटके ॥

१ वियोग मे २. युक्ति ३ खोया हुआ ४ लेख ५ दीपक से  
६ प्रेमपात्र से ७ अपने आप से मिट जाना ८. सकल्प, निश्चय, इरादा  
९ बुलबुले के समान १० प्रेम की नदी से ११. खोजी १२. स्पष्ट,  
उद्घाटित १३ मिट जाने का १४. भीरु, क्लीव १५ विजित १६ प्रेम-युद्ध  
१७. मोमवत्ती की तरह १८. लक्ष्य-विन्दु को १९ पैर के नीचे २० बुलबुला  
२१. अपार, अथाह, असीम नदी, सागर ।

२२ मरने पै अपने मत जा, सालिक<sup>१</sup> तलव<sup>२</sup> मे उसके ।  
गो<sup>३</sup> सर को खो रहेगा, फिर उसको पा रहेगा ॥

२३ देखा जो बादे-मर्ग,<sup>४</sup> तो मरना जियाँ<sup>५</sup> न था ।  
वदले फना<sup>६</sup> के मुल्के-वका<sup>७</sup> कुछ गिराँ<sup>८</sup> न था ॥

२४. है अजमे-तर्के-हस्ती<sup>९</sup> वजहे-मुदामे-हस्ती<sup>१०</sup> ।  
जीते ही जी फना हो, गर हो बका<sup>११</sup> की ख्वाहिश<sup>१२</sup> ॥

—रासिख

२५ जब तलक हस्त<sup>१३</sup> थी, दुस्वार था पाना तेरा ।  
मिट गये हम तो मिला हमको ठिकाना तेरा ॥

—अमीर

२६ आपसे गुजरे जो गोया, पहुँचे कूए-यार<sup>१४</sup> तक ।  
बेखबर जब हो गए, पाई खबर तब यार की ॥

—गोया

२७ आ रही है यह गहीदो के मजारो<sup>१५</sup> से सदा<sup>१६</sup> ।  
ऊम्मे-जावेद<sup>१७</sup> मिली है हमे वेदम होकर ॥

—फसाहत

२८. सच पूछिए तो नेस्ती<sup>१८</sup> हस्ती का राज<sup>१९</sup> है ।  
जो सर चढा है दार<sup>२०</sup> पर, वह सर-फराज<sup>२१</sup> है ॥

१ पथिक, बटोही, गृहस्थ-साधक २ चाह मे ३. यद्यपि ४ मरने के बाद ५. हानि, टोटा, घाटा ६. मृत्यु के ७. अमरलोक, ८ मँहगा ९ जीवन-त्याग का संकल्प १० शाश्वत जीवन का कारण ११ अनश्वरता, नित्यता की १२ इच्छा १३ अस्तित्व, बवजूद १४ मित्र या प्रिय की गली १५ कब्रों से १६ आवाज १७ शाश्वत जीवन, अमरत्व १८ ध्वस, बरबादी, अपने आपको मिटा देना १९ जीवन-रहस्य २० सूली पर २१. सर्वोच्च सर्वोत्कृष्ट, सर्वोपरि ।

२६. उसे पाया नहीं आसाँ<sup>१</sup> कि हमने ।  
न जब तक आपको खोया, न पाया ॥

—जफर

- ३० सालिक<sup>२</sup> को यही जादा<sup>३</sup> से आवाज है आती ।  
पामाल<sup>४</sup> जो हो, राह वह मजिल की निकाल ॥
- ३१ किस कदर सीमाव<sup>५</sup> है वेताव<sup>६</sup> मरने के लिए ?  
शौक है अक्सीर<sup>७</sup> कहलाऊँगा मर जाने के बाद ॥
- ३२ दुरे-मक्सद<sup>८</sup> की खाहिश और गमे-जाँकी<sup>९</sup> हिमाकृत<sup>१०</sup> है ।  
किसी को हाथ आये है, कही मोती भी साहिल<sup>११</sup> से ॥
- ३३ पर्दा-राजे-फना<sup>१२</sup> है ऐन<sup>१३</sup> आसारे-फना<sup>१४</sup> ।  
बेनिशाँ होते हुए, नामो-निशाँ देखा किये ॥

—तालिब

३४. जादए-राहे-बका<sup>१५</sup> गैर-अज-फना<sup>१६</sup> मिलता नहीं ।  
है खुदी जब तक कि इन्साँ पै खुदा मिलता नहीं ॥




---

१. सरल, सुगम, सुलभ २. पथिक, बटोही, साधक को ३. पथ, मार्ग  
४. विनष्ट, बग़्वाद, छ्वस्त ५. पारद, पारा ६. वेचैन, उतावला ७. कीमियाँ  
रसायन ८. उद्देश्य के मुक्ता की, इच्छा के मोती की ९. प्राण-सकट की  
१०. चिन्ता फिक्र ११. तट से १२. मृत्यु-रहस्य का पर्दा १३. यथार्थ,  
वास्तविक, वाकई १४. मृत्यु का लक्षण, मृत्यु का चिह्न १५. मुक्ति-पथ का,  
पाथेय, १६. मरने के अतिरिक्त, अपने आपको मिटाने के बिना ।

## दिल के आईने में है तस्वीरे-यार !



- १ दिल के आईने में है तस्वीरे-यार ।  
जब जरा गर्दन झुकाई देखली ॥
- २ न देखा वह कहीं जल्वा<sup>१</sup>, जो देखा खानए-दिल<sup>२</sup> में ।  
बहुत मस्जिद में सर मारा, बहुत-सा ढूँढा बुतखाना<sup>३</sup> ॥  
—जफर
- ३ 'अमीर' उस बेनिशों को दिल में पाया ।  
जिसे ढूँढा किये थे चारसू<sup>४</sup> हम ॥  
—अमीर
- ४ खल गया जब यह कि दिल भी जल्वागाहे-यार<sup>५</sup> है ।  
कौन चक्कर खाये फिर दैरो-हरम<sup>६</sup> की राह का ?
५. न आवारा<sup>७</sup> हो, दिल में ढूँढ उसे जोया<sup>८</sup> है तू जिसका ।  
यही वीराना है जिसमें कि वह गजे-निहानी<sup>९</sup> है ॥  
—सलीम
- ६ कहीं तुझको न पाया, गर्चे हमने इक जहाँ ढूँढा ।  
फिर आखिर दिल ही में देखा, बगल<sup>१०</sup> ही में से तू निकला ॥  
—जोह्र

---

१. दृश्य २ हृद् देश में, मन मन्दिर में ३ मन्दिर ४ चारों ओर, सर्वत्र  
५ मित्र का दृश्य देखने का स्थान ६ मन्दिर-मस्जिद की ७. बेकार धूमने  
वाला ८ खोजी ९ आन्तरिक निधि, भीतरी खजाना १० पहलू ।

- ७ .खुदा को हमने जब ढूँढा, तो पाया खानए-दिल मे ।  
परेगाँ जुस्तजू<sup>१</sup> मे उसकी फिर खल्के-खुदा<sup>२</sup> क्यों है ?  
—रक्तीब
- ८ है वह दिल ही मे तुम्हारे, तुम अगर ढूँढो उसे ।  
फिरते हो नाहक<sup>३</sup> भटकते, ऐ 'जफर' चारो तरफ ॥  
—जफर
- ९ दिल मे आती है नजर अपने मुझे तस्वीरे-यार ।  
क्या तमाशा है कि कावे मे सनम पैदा हुआ ॥  
—रमज
१०. देख गर देखना है 'जौक' कि वह पर्दा-नगी<sup>४</sup> ।  
दोदए-रोजने-दिल<sup>५</sup> से है दिखाई देता ॥  
—जौक
- ११ दिल खानए-खुदा, जो सुना तो यकी<sup>६</sup> हुआ ।  
वह घर बना कि हो गया मेमार<sup>७</sup> को पसन्द ॥
१२. .खुदा का घर बनाना है, तो नक्शा ले किसी दिल का ।  
यह दीवारो की क्या तजवीज<sup>८</sup> है, जाहिद<sup>९</sup> यह छत कैसी ?
१३. खुदा का घर है वुतखाना हमारा दिल नही 'आतिश' ।  
मुकामे-आश्ना<sup>१०</sup> है याँ नही वेगाना<sup>११</sup> आता है ॥  
—आतिश
१४. पूछा है आरिफो<sup>१२</sup> से जो हमने मकाने-यार ।  
आँखो को वन्द करके है दिल का पता दिया ॥

---

१ खोज मे, तलाश मे २ परमात्मा की सृष्टि ३ व्यर्थ ४. पर्दे मे बैठने वाला, अन्तर्यामी ५. मन के विवर या छिद्र की आँख से ६ विश्वास ७. निर्माता को ८ प्रबन्ध, योजना, उपाय, प्रयत्न ९ सयमी, जितेन्द्रिय, विरक्त १० प्रिय, मित्र का स्थान ११ पराया, अपरिचित १२ जानने वालो से, ब्रह्मज्ञानियो से ।

१५. निशाँ मिलता नही, लेकिन तेरा नाम ।  
अजल<sup>१</sup> से नक्श<sup>२</sup> है दिल के नगी<sup>३</sup> पर ॥

—जका

१६. हमारे दिल की वुसअत<sup>४</sup> का पता क्या कोई पाएगा ?  
यह वह घर है खुदा भी जिसके अन्दर आके बसता है ॥

१७. तरन्नुम-सज<sup>५</sup> है कोई, न कोई खानए-दिल मे ।  
जो नग्मा<sup>६</sup> दिल के पद<sup>७</sup> मे मेरे हर आन<sup>८</sup> होता है ॥

१८. दिल के आईने मे जब पाता हूँ तुझको जल्वागर ।  
काबे से मुझको क्या गरज<sup>९</sup>, फिर बुतकदा<sup>१०</sup> क्या चीज है ?

१९. दिल के आगे क्यो बढा, तू ऐ तलबगारे-विसाल<sup>१०</sup> ।  
फिर उधर ही जा, वही घर जल्वागाहे-यार था ॥

२०. अर्जो-समा<sup>११</sup> कहाँ तेरी वुसअत<sup>१२</sup> को पा सके ।  
मेरा ही दिल है वोह कि जहाँ तू समा सके ॥

२१. निहाँ<sup>१३</sup> आँखो से रहने वाले जल्वा भी दिखा देना ।  
अजल<sup>१४</sup> से तू समझता है, मेरे दिल को मकाँ अपना ॥

—कसर

२२. खानए-दिल मे किसी पर्दानिशी की आरज<sup>१५</sup> ।  
आरजू क्या है दुलहन बैठी है शर्माई हुई ॥

२३. खुदा से जब तक न हो शनासा<sup>१६</sup> हरीमे-दिल<sup>१७</sup> का है शौक<sup>१८</sup> बेजा<sup>१९</sup> ।  
मका का तब पता मिलेगा कि कुछ पता याद हो मकी<sup>२०</sup> का ॥

१ अनादि काल से २ अकित, खुदा हुआ ३ नग पर, अँगूठी का वह नग, जिस पर नाम खुदा रहता है ४. लम्बाई, विशालता ५. स्वर-माधुर्य को तौलने वाला ६. गाना ७ प्रतिक्षण ८ प्रयोजन, मतलब ९ मन्दिर १० मिलन का आकाशी ११ पृथ्वी और आकाश १२ विशालता १३ गुप्त, ओझल, १४ अनादि काल से १५ इच्छा, अभिलाषा १६, जानने पहचानने वाला, परिचित, अभिज्ञ १७ मन-मन्दिर का १८ लगन १९ अनुचित, नामुनासिब २०. मकान मे रहने वाला, निवासी ।

- २४ मैं यह कहता हूँ मेरे खानए-दिल<sup>१</sup> मे है मकी ।  
लोग कहते है कि कावे मे खुदा मिलता है ॥
- २५ आईने की तरह गाफिल<sup>१</sup> खोल छाती के किवाड़ ।  
देख तो है कौन बारे<sup>२</sup> तेरे कागाने<sup>३</sup> के बीच ?
- २६ आती है दिल मे और ही सूरत मुझे नज़र ।  
गायद यह आईना भी किसी के हुजूर<sup>४</sup> है ॥
- दर्द
- २७ तलाश उसकी थी कावे मे, मिला वह खानए-दिल मे ।  
'फसीह' इस बात का हमको न था वहमो-गुर्मा<sup>५</sup> हर्गिज ॥
- फसीह
२८. ढूँढना है उसको, ऐ जाहिद<sup>६</sup> ! तू अपने दिल मे ढूँढ ।  
छत मे कावे की न वह कावे की दीवारो मे है ॥
- २९ दैरो-कावे मे रहे शेखो-विरहमन जोया<sup>७</sup> ।  
हमने घरबार तेरा ढूँढ निकाला दिल मे ॥
३०. गेख कावे मे है सरगर्दा<sup>८</sup> विरहमन दैर<sup>९</sup> मे ।  
जिसको दोनो ढूँढते है, वह हमारे दिल मे है ॥
- ३१ हरम<sup>१०</sup> क्या, वुतकदा<sup>११</sup> क्या, मैं उसे घर-घर पुकार आया ।  
यही अब जी मे आता है कि दस्तक<sup>१२</sup> ढूँ दरे-दिल<sup>१३</sup> पर ॥
- अमीर
- ३२ कावे से कम नही है हमारा हरीमे-दिल<sup>१४</sup> ।  
इसमे भी है खुदी हुई तसवीर यार की ॥

— १सिख



- १ मन-मन्दिर २ अन्ततः, आखिरकार ३, छोटा-सा घर, भौपडी, यानी दिल  
४. साक्षात् उपस्थित, हाजिर ५ अम, आशका ६ सयमी, नितेन्द्रिय ७ खोजी,  
ढूँढने वाला ८ उद्विग्न, हैगन, परेशान, राह भूला हुआ ९. मन्दिर मे  
१० कावा, खुदा का घर ११ मन्दिर, मूर्तिगृह १२ खटखटाना १३ हृदय  
द्वार पर १४ मन-मन्दिर, हृदय-रूपी घर ।

## साफ़ दिल हो तो जल्वागर हो यार !

१. साफ़दिल<sup>१</sup> हो तो जल्वागर<sup>२</sup> हो यार ।  
आईना हो साफ़ तो लो तमाशा लूट ॥

—आतिश

२. किसी से बुज<sup>३</sup> है, रश्को-कदूरत<sup>४</sup> है न कीना<sup>५</sup> है ।  
दिल अपना साफ़ है सब से हमे याराना<sup>६</sup> है ॥

—हासिब

३. क्या अहले-जहाँ करते हैं जाहिर की सफाई ?  
वातिन<sup>७</sup> को उजला क्यों नहीं करते ॥

४. तूने ऐ गाफिल ! अगर सारा बदन<sup>८</sup> धोया तो क्या ? ~?  
धो सके गर मैले-दुनिया दिल के तू अन्दर से धो ॥

—जफ़र

५. दूर कर दिल की कदूरत<sup>९</sup>, महव<sup>१०</sup> हो दीदार<sup>११</sup> का ।  
आईने को बस सफाई ने दिखाया रूप-दोस्त<sup>१२</sup> ॥

—आतिश

६. दिल सियाह<sup>१३</sup> है बाल सब अपने है पीरी<sup>१४</sup> मे सफेद<sup>१५</sup> ।  
घर के अन्दर है अधेरा और बाहर धाँदनी ॥

—नासिख

१ पवित्र हृदय २ उपस्थित, प्रस्तुत, प्रत्यक्ष ३ जलन, हसद, ईसरो  
की उन्नति को देखकर जलने की वृत्ति ४ ईर्ष्या, स्पर्धा ५ द्वेष, खुम्स  
६ मित्रता, प्रेम-भाव ७ अन्तरंग, भीतर को ८ शरीर ९. मन का द्वेष  
१० तन्मय, तल्लीन ११ दर्शन १२ मित्र की मुखाकृति, प्रिय का मुख  
१३ काला १४ बुढ़ापा ।



७. जफ<sup>१</sup> नापाक<sup>२</sup> है तो उसमे है हर शै<sup>३</sup> नापाक<sup>४</sup> ।  
दिल नही साफ तो क्या खाक इबादत<sup>५</sup> होगी ?

—महर

८. अपने ऐबो<sup>६</sup> पर नज़र कर, अपने दिल को 'पाक कर ।  
क्या हुआ गर खल्क<sup>७</sup> मे तू पारसा<sup>८</sup> मशहूर है ॥

९. दिल से वो काफिर सनम निकले तो अब-कुछ हो कबूल ।  
जाके मस्जिद मे इबादत मैं करूँ तो क्या करूँ ?

—दाग

१०. दिल अगर है साफ कुछ मुश्किल नही दीदारे-यार ।  
देख लो आईना सूरत-आइना<sup>९</sup> क्यों कर हुआ ?

—अमीर

११. करके साफ आईन-ए-दिल<sup>१०</sup> इसमे तू देख आपको ।  
बख्शेगा ऐ यार । तेरा ही तुझे दीदारे-फ़ैज<sup>११</sup> ॥

—सौदा

१२. लाख सूरत<sup>१२</sup> से बनाएँ, आईनागर<sup>१३</sup> आईना<sup>१४</sup> ।  
दिल से हर्गिज़ हो सफाई मे न बढकर आईना ॥

१३. दिल मे कभी न गदे<sup>१५</sup>-कदूरत<sup>१५</sup> को राह दे ।  
इस आईने मे काम नही है गुबार<sup>१६</sup> का ॥

—आबाद

१४. पैदा जो आईने मे भी होती सफाई-ए-दिल ।  
सीने मे अपने रखता सिकन्दर बजाये-दिल<sup>१७</sup> ॥

१. पात्र, वर्तन २ अपवित्र, मैला, गन्दा ३ वस्तु, चीज ४ अपवित्र,  
खराब, गन्दी ५ भक्ति ६ दोषो, बुराइयो ७ ससार मे ८. सयमी,  
जितेन्द्रिय ९ जो केवल सूरत पहचानता हो, नाम आदि और कुछ न जानता  
हो १० हृदय-दर्पण ११ दर्शन का लाभ १२ उपाय, ढग, तदवीर  
१३. दर्पणकार, शीशा बनाने वाला १४ दर्पण १५ द्वेष की घूलि को  
१६ घूलि, रज, मनोमालिन्य, दिल का मैल १७. मन के अतिरिक्त ।

साफ़ दिल हो तो जल्वागर हो यार ?

१५. चारो तरफ से सूरते-जाना<sup>१</sup> हो जल्वागर<sup>२</sup> ।  
दिल साफ़ हो तेरा तो आईनाखाना<sup>३</sup> क्या ?

—आतिश

१६. दिल के आईने को तू साफ़ तो कर, देख जरा ।  
उसकी सूरत तुझे आवेगी आप-से-आप नजर ॥

१७. आईना दिल का रियाज़त<sup>४</sup> से अगर हो जाए साफ़ ।  
फिर तमाशा है वही मुमकिन<sup>५</sup> जो जामे-जम<sup>६</sup> में है ॥

१८. आईने को दोस्त रखते हैं जहाँ के खूबो-ज़िश्त<sup>७</sup> !  
दिल हुआ जब साफ़ बस आलम<sup>८</sup> से भगडा पाक है ॥

—नासिख

१९. दिखला रही है दिल की सफाई दो जहाँ की सैर ।  
क्या आईना लगा हुआ अपने मकाँ में है ॥

—आतिश

२०. अक्स-रुखे-दिलदार<sup>९</sup> वही होवे नुमायाँ<sup>१०</sup> ।  
जुँ आईना<sup>११</sup> कुछ दिल में अगर अपने सफा<sup>१२</sup> हो ॥

—ज़फर

२१. खुदा को दिल ही में ढूँढो, इधर उधर न फिरो ।  
नहीं किताब का मतलब किताब से बाहर ॥

—अमीर

२२. खयाल इन्सान को हरदम रहे दिल की सफाई का ।  
नजर आता है इस आईने में नक्शा<sup>१३</sup> खुदाई का ॥

१ प्रेमपात्र या प्रेयसी की मुखाकृति, प्रिय का रूप २ प्रत्यक्ष, उपस्थित  
३ दर्पण-गृह ४ तपस्या, जप-तप, इबादत ५ सभव ६ प्रसिद्ध है कि ईरान  
के शासक जमशेद ने एक प्याला बनाया था जिसे ससार का हाल ज्ञात होता  
था, जामे-जमशेद ७ सुन्दर और निकृष्ट, स्वच्छ और खराब, अच्छा और  
बुरा ८ दुनिया ९ प्रिय की मुखाकृति, प्रेमपात्र का चेहरा १० स्पष्ट,  
व्यक्त, प्रकट, जाहिर ११ दर्पण की भाँति १२ साफ़, स्वच्छ, निर्मल  
१३ चित्र, आकृति ।

२३. न देखा आईने की शक्ल<sup>१</sup> मे सूफी<sup>२</sup> ने वह हर्गिज<sup>३</sup> ।  
तमाशा हमने जो दिल करके अपना बासफा<sup>४</sup> देखा ॥

—झफ़र

२४. ऐ 'दर्द' कर टुक आईनए-दिल को साफ़ तू ।  
फिर हर तरफ़ नजार-ए-हुस्नो-जमाल<sup>५</sup> तू ॥

—दर्द

२५. ऐ खयाले-यार करता हूँ रियाजत<sup>६</sup> से सफ़ा<sup>७</sup> ।  
खानए-दिल मे है करनी तेरी महमानी<sup>८</sup> मुझे ॥

—आतिश

२६ सफ़ाईयाँ हो रही है जितनी, दिल उतने ही हो रहे हैं मैले ।  
अँधेरा छा जाएगा जहाँ मे, अगर यही रोशनी रहेगी ॥

—जोश

२७ दिल पाक न हो जब तक, दुनिया की तमन्ना से ।  
क्या काम निकलता है तसवीह<sup>९</sup> व मुसल्ला<sup>१०</sup> से ॥

२८ दिल को किस शक्ल से<sup>११</sup> अपने न मुसफ़ा<sup>१२</sup> रक्खूँ ।  
जल्वागर यार की सूरत है इस आईने मे ॥

२९. मिसाले-आईना<sup>१३</sup> तू साफ़ रह कि ऐ 'आवाद' ।  
दिले-हवीव<sup>१४</sup> मे दाखिल कभी गुवार<sup>१५</sup> न हो ॥

—आवाद

३०. खाक आईने से है नामे-सिकन्दर रोशन ।  
रोशनी देखता, गर दिल की सफ़ाई करता ॥

१. आकृति मे २ ब्रह्मज्ञानी, अध्यात्मवादी ३ कदापि, कभी भी  
४. पवित्र, निर्मल, स्वच्छ ५ रूप सौन्दर्य का दृश्य ६ तपस्या से, जप-तप से  
७ पवित्र ८ आतिथ्य, अतिथि-सत्कार ९ माला, जपमाला १० नमाज़  
पढ़ने की चटाई अथवा दरी ११ किस तरह से, (कैसे) १२ साफ़ किया हुआ,  
शुद्ध, उज्ज्वल १३ दर्पण की भाँति १४. मित्र, प्रिय, प्रेमपात्र या माशूक के  
दिल मे १५ धूल, रज, मैल, मलिनता ।

३१. है अगर शीके-जमाल<sup>१</sup> उसका तो इसको साफ़ कर ।  
यह जो है दिल का पुर-अज-जगे-कदूरत<sup>२</sup> आईना ॥
३२. चाहे कि अक्से<sup>३</sup>-दोस्त रहे तुझ में जल्वागर ।  
आईनावार<sup>४</sup> दिल को रख अपने सफा-परस्त<sup>५</sup> ॥
३३. हर सिम्त<sup>६</sup> से हो साया-फिगन<sup>७</sup> यार<sup>८</sup> की सूरत<sup>९</sup> ।  
आईनए-खातिर<sup>१०</sup> में अगर कुछ भी सफा<sup>११</sup> हो ॥

—अनवर




---

१. रूप दर्शन की रुचि २ ईर्ष्या द्वेष के मेल से भरा हुआ ३ मित्र या प्रेमपात्र का प्रतिविम्ब ४. दर्पण के समान ५ स्वच्छ, पवित्र, निर्मल ६ प्रत्येक दिशा से, सब ओर से ७ प्रतिविम्ब डालने वाला, प्रतिविम्बित, प्रकट होने वाला, प्रत्यक्ष होने वाला ८ प्रेमपात्र, प्रिय ९ आकृति, छवि, रूप १०. मनके दर्पण में ११ स्वच्छता, पवित्रता, सफ़ाई ।

## चश्मे-बीना चाहिए, तो जल्वागर है हर तरफ़ !



- १ चश्मे-बीना<sup>१</sup> चाहिए तो जल्वागर है हर तरफ़ ।  
पर्दा है ऐ शमग्र<sup>२</sup> रूपर्दा<sup>३</sup> तेरा फ़ानूस<sup>४</sup> का ॥  
—आतिश
२. चश्मे-बीना चाहिए उस दर से इर्फा<sup>५</sup> के लिए ।  
हर वरक<sup>६</sup> पर दफ़्तरे-हस्ती<sup>७</sup> के तेरा नाम है ॥  
—महशर
- ३ चश्मे-बीना एक भी आई न आलम मे नज़र ।  
जूस्तजू मे गर्चे दौडी हर तरफ़ बीनाईयाँ<sup>८</sup> ॥
- ४ वह आँखे दिल के अन्दर जो हैं उनको खोल ऐ गाफ़िल ।  
इन आँखो से कही तू जल्वाए-हक<sup>९</sup> देख सकता है ॥  
—कलामी
५. वह अन्वे है, जो कहते हैं, हम-ही-हम हैं ।  
जो आँखें हो रीशन तो फिर तू-ही-तू है ॥
- ६ वज्मे-क़सत नूरे-वहदत<sup>१०</sup> से कभी खाली नहीं ।  
चश्मे-बीना हो तो यूसुफ़<sup>११</sup> सैकड़ो बाज़ार है ॥  
—अमीर

---

१ देखने वाली आँख, स्वस्थ आँख २ मोमवत्ती ३ मुखावरण ४ कडील, लैम्प की चिमनी का ५ परिचय, ज्ञान, बोध ६ पृष्ठ, पन्ने पर ७ जीवन कार्यालय के ८ दृष्टियाँ, नजरें ९ सत्य का दृश्य, सत्यदर्शन १० एकत्व का प्रकाश, अद्वैत ११ एक पैगम्बर, जो अत्यन्त सुन्दर थे ।

७. ज़र्रे-ज़र्रे<sup>१</sup> मे निहाँ इक जल्वये-गुलफाम<sup>२</sup> है !  
शर्त यह है होके सरशारे-मुहब्बत<sup>३</sup> देखिए ॥

—असर

८. ज़र्रे-ज़र्रे मे है यहाँ खाक<sup>४</sup> के पैदा खुशीद<sup>५</sup> ।  
लेकिन आया तुझे गफलत से नजर खाक<sup>६</sup> नहीं ॥

—ज़फर

९. यह वह आँखे है, जो हैं नाआश्नाए-रूए-गैर<sup>७</sup> ।  
आँख खोली जब से मैंने, तू नजर आया मुझे ॥

१०. मिटे अगर दिल से रगे-गफलत, खुले अगर दीदए-हकीकत<sup>८</sup> ।  
तो खाके-दिल<sup>९</sup> का हरएक जर्ग, करेगा सौ आफ़ताब<sup>१०</sup> पैदा ॥

—जिगर

११. हर चीज मे है जल्वा, हर शै मे तमाशा है ।  
आँखे है मेरी लेकिन बीनाई<sup>११</sup> का पर्दा है ॥

—इशरत

१२. जल्वे तेरी वहदत<sup>१२</sup> के कस्रत<sup>१३</sup> से नजर आएँ ।  
जब चश्मे-हकीकत-बी<sup>१४</sup> मसरूफ़े तमाशा<sup>१५</sup> हो ॥

१३. नजर आया हर इक ज़र्रे मे जल्वा शाने-वहदत का<sup>१६</sup> ।  
जो आँखे खोलकर देखे तमाशा तेरी कुदरत का ॥

—खज़र

१ अगु-अगु मे २. पुष्पागी, पुष्पागना का दृश्य ३ परिपूर्ण प्रेमी

४ धूल, रज ५ सूरज ६. कुछ भी ७. पराये चेहरे से अपरिचित ८ ज्ञान-  
नेत्र, अन्तर्नेत्र ९ मन की धूल का १० सूर्य ११ दृष्टि, ज्योति १२ एकत्व,  
अद्वैतता के १३ प्राचुर्य, बहुलता से १४. सच्चाई को देखने वाली आँख  
१५ तमाशा देखने मे सलग्न या आसक्त १६. एकत्व अथवा अद्वैत की  
प्रतिष्ठा का ।

१४. वह हुस्न जल्वागर है, वह रुख<sup>१</sup> बेनकाब<sup>२</sup> है ।  
लेकिन कुछ अपनी आँखों का पर्दा हिजाब<sup>३</sup> है ॥

—आश्ना

१५. कर तमाशाए-जहाँ<sup>४</sup> से पहले अपनी आँख वन्द ।  
देखना उसका अगर 'नासिख' तुझे मंजूर<sup>५</sup> है ॥

—नासिख

१६. हो दीद<sup>६</sup> का जो शोक तो आँखों को वन्द कर ।  
है देखना यही कि न देखा करे कोई ॥

१७. पैदा किये फलक<sup>७</sup> ने नादीदनी<sup>८</sup> मनाजिर<sup>९</sup> ।  
पहुँची है उनकी नजरे, जो साहिबे-नजर<sup>१०</sup> है ॥

१८. रौशन अगर हो नूरे-हकीकत<sup>११</sup> से तेरी चश्म<sup>१२</sup> ।  
है हर शरारे-संगे-निहा<sup>१३</sup> तूर<sup>१४</sup> का चिराग<sup>१५</sup> ॥

—जफर

१९. जाहिर की आँख से न तमाशा करे कोई ।  
हो देखना तो दीदए-दिल<sup>१६</sup> वा<sup>१७</sup> करे कोई ॥

२०. चश्मे-जाहिर<sup>१८</sup> गर है रोशन, चश्मे-वातिन<sup>१९</sup> कोर<sup>२०</sup> है ।  
यह नहीं मुमकिन कभी देखे कोई वेदार<sup>२१</sup> ख्वाव<sup>२२</sup> ॥

१ मुखाकृति, छवि, चेहरा २ अनावृत, वेपर्दा, स्पष्ट, प्रत्यक्ष ३ ओट, आड ४ सप्तर की लीला से ५ स्वीकार ६ दर्शन ७ आकाश ने ८ अदर्शनीय, जो देखने में न आएँ ९ अमूर्त १० दृश्य ११ दृष्टि वाले १२ यथार्थ प्रकाश १३ आँख १४ पत्थर में छुपा प्रत्येक स्फूर्ति १५ सीरिया का एक पहाड़, जिस पर हजरत मूसा ने खुदा का जल्वा देखा था १६ दीपक १७ मन की आँख, अन्तर्नेत्र १८ खोलना १९ बाह्य चक्षु बाहर की आँख १९ अन्तर्नेत्र, २० अन्वा, ज्योति-विहीन २१ जाग्रत, सोते से उठा हुआ २२ सपना ।

२१ सब तरफ से दीदए-बातिन<sup>१</sup> को जब यकसू<sup>२</sup> किया ।  
जिसकी ख्वाहिश<sup>३</sup> थी वही हरसू<sup>४</sup> नजर आया मुझे ॥

— नासिख

२२ नजर हो तो नजर आती है कैफियत<sup>५</sup> दो आलम<sup>६</sup> की ।  
चलो 'अनवर' तमाशा देख आएँ बज्मे-रिन्दा<sup>७</sup> मे ॥

—अनवर

२३ किस जान जल्वागर तेरी बहदत का नूर था ?  
जल्वा तेरा था आम, नजर का कसूर<sup>८</sup> था ॥

—खुशींद

२४. वख्ते है जल्वये-गुल<sup>९</sup>, जीके-तमाशा<sup>१०</sup> 'गालिब ।  
चश्म को चाहिए हर रंग मे वा<sup>११</sup> हो जाना ॥

—गालिब

२५ कोरवातिन<sup>१२</sup> को नजर क्या पडे जल्वा उनका ।  
दीखता है उन्हे हर शौ मे शनासा<sup>१३</sup> उनका ॥

—अदीब

२६ मुँदे गर चश्मे-जाहिर, दीदए-बेदार<sup>१४</sup> हो पैदा ।  
दरो-दीवार से नक्शे-जमाले-यार<sup>१५</sup> हो पैदा ॥

—आतिश

२७ वह था न हमसे दूर, न मैं उनसे दूर था ।  
आता न था नजर, तो नजर का कसूर था ॥

२८ तुझे देखा तो, अब कुछ देखने को जी नही चाहता ।  
किये है बन्द आँखे तेरी सूरत देखने वाले ॥

—हनीफ

---

१ अन्तर्नेत्र २ एकाग्र, ६ इच्छा ४ हर तरफ, सर्वत्र, चारो ओर  
५ अवस्था, स्थिति, हालत, ६ इहलोक, परलोक ७. मस्तो की सभा मे  
८ दोष ९ फूलो के दृश्य १० खेल का मजा ११ खुलना १२ जिसकी  
आत्मा मे ज्ञान का प्रकाश नही, अन्वात्मा का, १३ पहचानने वाला, जानकार  
१४ जाग्रत नेत्र, अन्तर्नेत्र १५ प्रिय दर्शन का चित्र ।



२६. आँखे तो वेशुमार देखी—लेकिन ।  
कम थी बखुदा<sup>१</sup>—जिनको बीना<sup>२</sup> पाया ॥
३०. 'अमीर' उसकी तजल्लीगाह<sup>३</sup> है दुनिया, जो आँखे हों ।  
वही गुल<sup>४</sup> है गुलिस्ता<sup>५</sup> में, वही है शमअ महफिल में ॥  
—अमीर
३१. खुली है चश्मे-हकीकत जिन्हो की शकल-हुबाब<sup>६</sup> ।  
वह बाँधते नहीं तकिया जहाने-फानी<sup>७</sup> पर ॥  
—ज़फर
३२. जल्वए दोस्त तो मौजूद है हर शै में रिन्द ।  
आप अन्धा है तो आँखो में तेरे नूर नहीं ॥
३३. जल्वए-यार हर इक शै में नजर आता है ।  
तू न देखे तो यह तकसीर<sup>८</sup> है बीनाई<sup>९</sup> की ॥  
—रिन्द
३४. तू अगर देखे तो हर ज़र्रा कितावे-पन्द<sup>१०</sup> है ।  
क्या मगर देखेगा तू, तेरा तो दीदा<sup>११</sup> वन्द है ॥
३५. हर जा है उसका जल्वए-रुख, वह किधर नहीं ?  
पर जिससे देख लें, वह हमारी नजर नहीं ॥
३६. अगर निगाह<sup>१२</sup> हो, तो क्या तलाश<sup>१३</sup> की हाजत<sup>१४</sup> ।  
तेरा ही जलवा है चारो तरफ जमाने में ॥
३७. बेकार बनाये नहीं आँखो के पियाले ।  
दीदार<sup>१५</sup> का साइल<sup>१६</sup> हो जो याराए-नजर<sup>१७</sup> है ॥

---

१ ईश्वर के लिए २ देखने वाली ३ ज्योति-गृह, प्रकाशालय ४ पुष्प  
५ वाग़ में ६ बुलबुले की तरह ७ नश्वर ससार पर ८ दोष ९ दृष्टि  
का १० उपदेश ग्रन्थ, सदुपदेश या शिक्षा पूर्ण ग्रन्थ ११. आख १२ दृष्टि,  
या नजर १३ खोज १४ आवश्यकता १५ दर्शन का १६ प्रार्थी,  
उम्मीदवार १७. दृष्टि वाला ।

३८. तजस्सिस<sup>१</sup> की नज़र से सैरे फितरत<sup>२</sup> की जो ऐ अकबर ।  
कोई ज़र्रा न था जिसमे कि इक आलम<sup>३</sup> नहीं निकला ॥

—अकबर

३९. जिनकी आंखे हैं नहीं, वह देखते हैरान हो ।  
वह सनम<sup>४</sup> पिनहीं<sup>५</sup> नहीं है कोरे-मादरज़ाद<sup>६</sup> से ॥

४०. चश्मे-वहदतबी<sup>७</sup> से लाजिम है तमाशाए-चमन<sup>८</sup> ।  
ख़ार<sup>९</sup> गुल दोनो बगल-परवर्दा<sup>१०</sup> है गुलजार<sup>११</sup> के ॥

—दर्द

४१. चश्मे-जाहिरबी<sup>१२</sup> से तो देखा नहीं जाता है यार ।  
तुमने भी ऐ दिल की आखो । उसको दिखलाया नहीं ॥  
हो मुयस्सर<sup>१३</sup> क्यों कर उस पर्देनशी का देखना ?  
है जो पर्दा दरमियाँ<sup>१४</sup>, वह उसने उठवाया नहीं ॥

—ज़फ़र

४२. जो है पर्दे मे पिन्हीं<sup>१५</sup> चश्मे-बीना<sup>१६</sup> देख लेती है ।  
जमाने की तबीअत<sup>१७</sup> का तकाजा<sup>१८</sup> देख लेती है ॥

—इक़बाल




---

१ खोज की २ प्रकृति की सैर ३. ससार ४ प्रिय ५. गुप्त, छिपा हुआ ६ जन्मान्ध से, जो माँ के पेट से ही अन्धा जन्मा हो ७. अद्वैत दृष्टि से ८ उद्यान की क्रीड़ा ९ काँटा १० पास-पास या साथ-साथ पलने वाले ११. उद्यान के १२ बाहरी तडक-भडक या ऊपरी टीम-टाम को देखने वाली आँख, बाह्य दृष्टि १३. प्राप्त, उपलब्ध १४ बीच मे १५ गुप्त, छिपा हुआ १६. देखने वाली आँख १७. स्वभाव का १८. माँग, आवश्यकता ।

दुनिया में हूँ, दुनिया का तलबगार नहीं हूँ !

७

१ दुनिया मे हूँ, दुनिया का तलबगार नही हूँ ।  
वाज़ार से गुजरा हूँ, खरीदार नही हूँ ॥

—गालिब

२. जमाने ने मेरे आगे भी दुनिया पेश कर दी थी ।  
मगर मैंने तो अपना फ़ायदा इनकार मे देखा ॥

३. मैं भागता हूँ दुनिया आ-आके है लिपटती ।  
'आतिश' मुझी को इसने गायद कि मर्द<sup>१</sup> पाया ॥

—आतिश

४. भागती फिरती थी दुनिया जब तलब<sup>२</sup> करते थे हम ।  
अब जो नफरत<sup>३</sup> हमने की, वह वेकरार<sup>४</sup> आने को है ॥

५. दुनिया है वह सैय्याद<sup>५</sup> कि सब दाम<sup>६</sup> मे इसके ।  
आ जाते है, लेकिन कोई दाना<sup>७</sup> नही आता ॥

६ हजारो ही मसाइव<sup>८</sup> भेलकर पाई है यह नेमत<sup>९</sup> ।  
न था कुछ सहल<sup>१०</sup> दुनिया से मेरा बेजार<sup>११</sup> हो जाना ॥

७ दुनिया का तरद्दुद<sup>१२</sup> तब तक था,  
जब तक हम उसके तालिब<sup>१३</sup> थे ।

फेरी जो नज़र गम<sup>१४</sup> हो गए कम,  
रगवत<sup>१५</sup> न रही दुनिया न रही ॥

---

१. पुरुष, वीर २ चाह, इच्छा ३. घृणा ४ वेचैन ५. शिकारी  
६ जाल ७ होशियार, बुद्धिमान ८ विपत्तियाँ ९ वन्दान १० सरल  
११ दुःखी, वेचैन १२ दुःख १३ इच्छुक १४. दुःख १५ आसक्ति ।

८. सच पूछिये तो राहत<sup>१</sup> ही मिली दुनिया से जुदा<sup>२</sup> हो जाने मे ।  
थोड़ी-सी उदासी<sup>३</sup> हो भी तो हो आफत<sup>४</sup> तो मगर बरपा<sup>५</sup> न रही ।
९. लज्जते-दुनिया<sup>६</sup> जो सच पूछो उसी को मिल गई ।  
जिसने यह समझा कि दुनिया का मजा<sup>७</sup> कुछ भी नहीं ॥
१०. वह इसका राज<sup>८</sup> समझा, वह इसका पेच<sup>९</sup> समझा ।  
दुनिया मे रहके जिसने दुनियाँ को हेच<sup>१०</sup> समझा ॥
११. नहीं इक मर्द<sup>११</sup> को दुनिया से मतलब<sup>१२</sup> ।  
मरें नामद<sup>१३</sup> इस जन<sup>१४</sup> पर हजारो ॥
१२. लज्जत<sup>१५</sup> को तर्क<sup>१६</sup> कर तो हो दुनिया का रज दूर ।  
परहेज<sup>१७</sup> भी दवा है जो बीमार ने किया ॥
१३. पाँव आराम से फैलाये हैं उसने अपने ।  
हाथ दुनियाँ से 'जफर' जिसने यहाँ खीच लिया ॥
१४. तर्क-दुनियाँ से हुई जमीयते-स्वातिर<sup>१८</sup> नसीब<sup>१९</sup> ।  
हाल मेरा गो कि जाहिर मे परेशाँ<sup>२०</sup> हो गया ॥
१५. खुदा के वास्ते दुनियाए-दूँ से<sup>२१</sup> मुँह जो मोडे हैं ।  
वही है मुस्तनद<sup>२२</sup> इन्सान, मगर अफसोस थोडे हैं ॥
१६. जाहिदा<sup>२३</sup> क्यों कर करूँ मैं तर्क दुनिया, यह वह है ।  
सैर को आये थे आदम<sup>२४</sup> वागे-रिजवाँ<sup>२५</sup> छोडकर ॥

—आतिश

—जफर

—नासिख

१ आराम, सुख २ अलग ३ परेशानी ४ मुसीबत, ५. व्याप्त, छाई हुई, हावी ६ मसार का सुख, ७ स्वाद, आनन्द ८ भेद, रहस्य ९ टेढापन, १० निम्न, हेय ११ पुरुष १२ प्रयोजन १३ नपुंसक, कायर १४ औरत १५ दुनियावी सुख का स्वाद १६ त्याग १७ पथ्य १८. आत्म-सन्तोष १९. प्राप्त २०. उदासीन, कष्टप्रद २१ पापमय समार से २२. विश्वस्त, प्रामाणिक २३. जितेन्द्रिय, सयमी २४ हजरत आदम, जो सबसे पहले पुरुष थे, मूल पुरुष २५ स्वर्ग, बहिस्त ।

- १७ छोड़ दे दुनिया को कोई जो वजरे-आसमाँ<sup>१</sup> ।  
हिम्मत-हातिम<sup>२</sup> का पहुँचे उसके कब्र पासंग दस्त<sup>३</sup> ?  
—सौदा
- १८ रगे-दुनिया देखकर बेचारा 'अकबर' डर गया ।  
पन्दे-वाइज<sup>४</sup> मान ली, मरने से पहले मर गया ॥  
—अकबर
- १९ दुनिया के खराबे<sup>५</sup> मे न घर जिसने बनाया ।  
जन्नत<sup>६</sup> मे निकलेगा जवाब उमके मर्का का ॥  
—आतिश
२०. आराम का नालिब<sup>७</sup> है तो लाजिम<sup>८</sup> है सफर कर ।  
है आकिवनअन्ज<sup>९</sup> तो दुनिया से गुजर भी ॥
- २१ नजात<sup>१०</sup> होनी नही मर्के-जाल<sup>११</sup> दुनिया से ।  
यह लिपटी जाती है, दामनकगाहजार<sup>१२</sup> हूँ मैं ॥  
—जरार
- २२ दुनिया भी दीन है जो हो लज्जत वशर<sup>१३</sup> से तर्क ।  
क्यो हो हराम<sup>१४</sup> नगा न हो जिस गराव मे ॥
- २३ आसा<sup>१५</sup> नही है दाम<sup>१६</sup> से दुनिया के छूटना ।  
यह डक वडे हकीम का वाधा तिलिस्म<sup>१७</sup> है ॥  
—अमीर
- २४ दौलते-दुनिया से 'आतिश' हमने जब फेरी निगाह ।  
जिम तरफ आँख उठ गई तोदे<sup>१८</sup> लगे अदसीर<sup>१९</sup> के ॥  
—शाबिअ

१ आकाश के नीचे २ हातिमताई के साहस का ३ हाथ ४ उपदेशक की शिक्षा ५ निर्जन और अन्नजल-रहित स्थान में, सुनसान, खण्डहर में ६ स्वर्ग, सुरलोक ७ इच्छुक ८ आवश्यक, जरूरी ९ हर काम को उसका परिणाम सोचकर करने वाला, परिणामदर्शी, १० मुक्ति, छुटकारा ११. मायावी, छलपूर्ण, १२ पल्ला बचाता हुआ १३ मनुष्य १४ अविहित, निषिद्ध १५ सरल, मुकर १६ जाल १७ जादू १८ ढेर १९ कीमिया, रसायन के ।

२५. दुनिया मे हम रहे तो कई दिन, पर इस तरह ।  
दुश्मन के घर से जैसे कोई महमाँ रहे ॥

—क्रायम

२६. मरना कबूल, पर मुझे दुनिया नहीं कबूल ।  
अमज<sup>१</sup> उठेगे मुझ से न इस पीर-जाल<sup>२</sup> के ॥

—नासिख

२७. जो अज्म<sup>३</sup> सैर-मानी<sup>४</sup> है सुबक<sup>५</sup> हो बारे-दुनिया<sup>६</sup> से ।  
कि सरपर बोझ होने से सफर मुश्किल से होता है ॥

—सहर

२८. मरने की दुआएँ क्यों मागूँ, जीने की तमन्ना कौन करे ?  
यह दुनिया हो या वोह दुनिया, अब ख्वाहिगे-दुनिया<sup>७</sup> कौन करे ?

२९. दुनिया ने हमे छोडा 'जज्बी' हम छोड न दे क्यों दुनिया को ?  
दुनिया को समझकर बैठे है, अब दुनिया-दुनिया कौन करे ?

—जज्बी

३०. रहिये अब ऐसी जगह चलकर जहा कोई न हो ।  
हमस-खुन<sup>८</sup> कोई न हो, और हमजुवा<sup>९</sup> कोई न हो ॥  
वे दरोदीवार-सा इक घर बनाना चाहिए ।  
कोई हमसाया<sup>१०</sup> न हो और पासबा<sup>११</sup> कोई न हो ॥  
पड़िये गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार<sup>१२</sup> ।  
और अगर मर जाइए तो नौहाखा<sup>१३</sup> कोई न हो ॥

—गालिव

३१. दुनिया की महफिलो<sup>१४</sup> मे उकता गया हूँ या रब<sup>१५</sup> ।  
क्या लुत्फ अजुमनका<sup>१६</sup> जब दिल ही बुझ गया हो ॥

१ दुख २ वृद्धा स्त्री के ३ सकल्प ४ पर्यटन का आशय, ५ मुक्त, रहित, ६ ससार के भार से ७ ससार की इच्छा ८ अपने जैसा धोल कहने वाला, बोलने वाला ९ अपनी जैसी भापा बोलने वाला १० पड़ोसी ११ निरीक्षक, निगराँ १२ परिचर्या करने वाला, १३ रोने वाला १४ गोष्ठियो से, जलसो से १५. हे प्रभो ! १६. सभा का ।

३२. शोरिश<sup>१</sup> से भागता हूँ, दिल ढूँढता है मेरा ।  
ऐसा सकूत<sup>२</sup> जिस पर तकरीर<sup>३</sup> भी फिदा हो ॥
३३. मरता हूँ खामशी<sup>४</sup> पर, यह आरजू है मेरी ।  
दामन में कोह<sup>५</sup> के इक छोटा-सा भीपड़ा हो ॥

—इकबाल

३४. नादान<sup>६</sup> से नहीं कहते, कहते हैं दाना<sup>७</sup> से ।  
दाना है वह जो अपना फेरे दिल दुनिया से ॥

—चफर

३५. दिल पाक न हो जब तक दुनिया की तमन्ना से ।  
क्या काम निकलता है तसबीह<sup>८</sup>-ओ-मुसल्लाह<sup>९</sup> से ॥
३६. अरे न आओ दुनि-दू<sup>१०</sup> के धोखे में ।  
सराव<sup>११</sup> है यह, जिसे मौजे-आव<sup>१२</sup> समझते हैं ॥

—अनीस

३७. गोता<sup>१३</sup> तो लगाये जमजम<sup>१४</sup> में,  
और गर्क<sup>१५</sup> है मुहब्बे-दुनिया<sup>१६</sup> में ।  
पानी ने वदन को पाक किया,  
अब वातिन<sup>१७</sup> जाहिर<sup>१८</sup> कौन करे ?

—जाकिर

३८. हकीकत<sup>१९</sup> में जगह दुनिया नहीं है दिल लगाने की ।  
बफा करती नहीं बेवफा सारे जमाने की ॥

१. उपद्रव, दगा, फसाद २. शान्ति ३. वक्तुत्व ४. मौन ५. पर्वत ६. अनाड़ी, मूर्ख, नासमझ ७. बुद्धिमान, होशियार समझदार ८. जपमाला ९. नमाज पढ़ने की चटाई या दरी १०. पापमय ससार के ११. मृगतृष्णा १२. पानी की लहर १३. डुबकी १४. मक्के का एक कुआँ, जिसका पानी बड़ा पवित्र समझा जाता है १५. डूबा हुआ १६. ससार के प्रेम में १७. अन्तरंग मन, हृदय १८. उज्ज्वल १९. वस्तुतः ।

दुनिया में हूँ, दुनिया का तलबगार नहीं हूँ !

११७

३९. ऐ जीक ! गर है होश तो दुनिया से दूर भाग ।  
इस मैकदे<sup>१</sup> मे काम नहीं होशियार का ॥

४०. कह रहा है आसमा यह सब समा कुछ भी नहीं ।  
पीस दूँगा एक गर्दिश<sup>२</sup> मे जहाँ कुछ भी नहीं ॥

—जीक

४१. घर कौन-सा बसा कि जो वीरा<sup>३</sup> न हो गया ।  
गुल कौन-सा हुआ कि परेशाँ<sup>४</sup> न हो गया ॥

—दबीर



---

१ मदिरालय २ चक्कर में ३ उजाड़, सुनसान ४ मुरझाया हुआ, नष्ट ।



## एक आलम है नज़र में, एक दुनिया दिल में है



१. किस को देखे किस तरह और किसको चाहे किस तरह ?  
एक आलम<sup>१</sup> है नज़र में, एक दुनिया दिल में है ॥

—इकबाल

- २ मजिले-हस्ती<sup>२</sup> में दुश्मन को भी अपना दोस्त कह ।  
रात हो जावे तो दिखलावे तुझे रहजन<sup>३</sup> चराग़<sup>४</sup> ॥

—ग़ालिब

३. वोह आदमी कहाँ है, वोह इन्सान है कहा ?  
जो दोस्त का हो दोस्त, उदूका<sup>५</sup> उदू न हो ॥  
४. अपने दिल में दोनों रखते हैं वरावर मुझको याद ।  
हो सके तो दोस्त-दुश्मन को वरावर चाहिए ॥  
५. दुश्मन से भी अदावत<sup>६</sup> नहीं है फकीर को ।  
ऐ दोस्त ! याँ वदी<sup>७</sup> का एवज<sup>८</sup> भी निकोई<sup>९</sup> है ॥  
६. वोह कौन लोग है, वेगाने<sup>१०</sup> है जो अपनी से ।  
हमें तो गैर<sup>११</sup> से भी बूए-आशना<sup>१२</sup> आई ॥

—रिन्द

- ७ वह तर्जे-जिन्दगी<sup>१३</sup> हो कि मरने के बाद भी ।  
दुनियाँ के लव<sup>१४</sup> पे तेरे लिए वाह-वाह<sup>१५</sup> रहे ॥

---

१ ससार २ जीवन-यात्रा में ३ लुटेरा ४ दीपक ५ शत्रु ६. शत्रुता, दुश्मनी ७ बुराई ८ बदला ९ अच्छाई, भलाई १०. पराये, अनजान, अपरिचित ११ पराये, दूसरे, अपरिचित १२. मित्र की गन्ध, परिचित की गन्ध १३ जीवन-पद्धति, जीवन का ढंग १४ होठ १५ धन्य, शावाणी ।

८. शाहराहे-हस्ति-मौहूम<sup>१</sup> में वह चाल चल ।  
अपनी आँखों को बिछावे दोस्त-दुश्मन ज़ेरे-पा<sup>२</sup> ॥

९. दुश्मन भी हो तो दोस्ती से पेश आए है ।  
बेगानगी<sup>३</sup> से अपना नहीं आशना<sup>४</sup> मिजाज<sup>५</sup> ॥

—आतिश

१०. बफा-सरिश्त<sup>६</sup> हूँ, शेवा<sup>७</sup> है दोस्ती मेरा ।  
न की वह बात, जो दुश्मन को नागवार<sup>८</sup> हुई ॥

—दुर

११. सफ़-हए-हस्ती<sup>९</sup> में सूरत है नहीं अगयार<sup>१०</sup> की ।  
हर मुरक्का<sup>११</sup> में है तसवीरे बस अपने यार की ॥

१२. भरी है मेरे जफ़-दिल<sup>१२</sup> में, याँ तक दोस्त की उल्फत<sup>१३</sup> ।  
कि वुजे-गैर<sup>१४</sup> का जिसमें, गुजर मुश्किल से होता है ॥

—सहर

१३. क्या जाने कैसी होती है, 'नासिख' उदू<sup>१५</sup> की शक्ल ?  
याँ कोई जुज-हबीब<sup>१६</sup> हज़रे-नजर<sup>१७</sup> नहीं ॥

—नासिख

१४. बेगाना गर नजर पड़े, तो आशना को देख ।  
बन्दा गर आए सामने तो भी खुदा को देख ॥

—दर्द

१५. मुहब्बत-पेशा<sup>१८</sup> है, दिल में कदूरत<sup>१९</sup> हम नहीं रखते ।  
सफाई है हमारी आईना हर दोस्त-दुश्मन पर ॥

१ अमात्मक अथवा मायावी जीवन के राजमार्ग में २ पैर के नीचे ३ परायेपन ४ परिचित ५ स्वभाव ६ प्रतिज्ञा पालन करने वाला, बफा करने वाला ७ ढग, तरीका, परिपाटी, पद्धति ८ वेमजा, प्रतिकूल, नापसन्द जो अच्छी न लगे ९ जीवन में १० परायो की, अपरिचितों की ११ तसवीरो का, एलवम, चित्रावली १२ मन के पात्र में १३ प्रेम, स्ने १४ पर के द्वेष का १५ शत्रु की १६ मित्र के अतिरिक्त १७ दृष्टि के सामने उपस्थित या पस्तुत १८ प्रेम के व्यापारी १९ जलन, द्वेष ।

१६. अहले-इस्लाम<sup>१</sup> तो कहते हैं, मुसलमान है यह ।  
हिन्दू कहते हैं, नही कोई यह हिन्दू होगा ॥

—फरेब

१७. मजूर<sup>२</sup> है कि रज<sup>३</sup> मुझे हो, जहां को ऐश<sup>४</sup> ।  
तोड़ू एवज<sup>५</sup> में फूल के कांटा गुलाब का ॥

—वजीर

१८. हर्गिज मुझे नजर नहीं आता बजूदे-गैर<sup>६</sup> ।  
आलम<sup>७</sup> तमाम<sup>८</sup> एक बदन<sup>९</sup> ही में दीदा<sup>१०</sup> हैं ॥

१९. सुल्ह-कुल<sup>११</sup> मश्रब-ओ-मजहब<sup>१२</sup> है तो क्या दुश्मन-ओ-दोस्त ?  
दिल में वोह फूल हुए, आँख में जो खार<sup>१३</sup> हुए ॥

—अनवर

२०. दोस्त तो दोस्त है, दुश्मन से भी है रव्त<sup>१४</sup> मुझे ।  
दिल में हर शख्स के रहता हूँ तमन्ना होकर ॥

—सादिक

२१. हम न है दोस्त किसी के, न किसी के दुश्मन ।  
यार से हमको लगावट है न अगयार से लाग ॥

—अमीर

२२. न तो दुश्मन कोई मेरा, न कोई मेरा दोस्त ।  
वारे-खातिर<sup>१५</sup> न किसी का, न गुवारे-दामन<sup>१६</sup> ॥

२३. दोस्त-दुश्मन-यार रखता, खातिर अपनी क्या अजीज ?  
ऐव<sup>१७</sup> उल्फत के सिवा, हममें हुनर<sup>१८</sup> कोई न था ॥

—आतिश

१ मुसलमान २. स्वीकार ३. दुख, पीडा ४. सुख, आराम, चैन  
५ बदन में ६ पराये का अस्तित्व ७ ससार ८. समस्त, सारा ९. देह,  
शरीर, १० आँख, आँख का डेला ११ जो सबके साथ दोस्ती रखे १२ घर्म  
और मत १३ कांटे १४ मैत्री, मेल-जोल १५. तबीअत का बोझ, ऐसी बात  
या ऐसा काम जिसे मन न चाहे १६. आचल की धूल १७ दुगुण, दोष  
१८ गुण, खूबी ।

२४ गुंजाइशे-अदावते-अगयार<sup>१</sup> इक तरफ ।  
याँ दिल में जौक<sup>२</sup> से खलिशे-खार<sup>३</sup> भी नहीं ॥

— गालिब

२५ इक नया एहसास इस सीने में अब पाता हूँ मैं ।  
दुश्मनी करते हैं दुश्मन और शरमाता हूँ मैं ॥  
बेकसो-मजबूर इन्सा को दुआ देता हूँ मैं ।  
बार<sup>४</sup> करता है कोई तो मुस्करा देता हूँ मैं ॥

— जोश

२६. करूँ मैं दुश्मनी किससे, नहीं दुश्मन कोई मेरा ।  
मुहब्बत ने जगह दिल में नहीं छोड़ी अदावत<sup>५</sup> की ॥  
२७ खिदमत करूँ मैं सबकी खिदमत-गुजार<sup>६</sup> बनकर ।  
दुश्मन के भी न खटकूँ, आँखों में खार<sup>७</sup> बनकर ॥  
२८. इलाही करके तय किन 'रफ़अतो' को मैं कहाँ पहुँचा ?  
कि यकसाँ<sup>८</sup> पड़ रही हैं अब निगाहें दोस्त-दुश्मन पर ॥

— हबीब

२९ न मुझको फूलों से दुश्मनी है, न मुझको खारों से है अदावत<sup>९</sup> ।  
जो इख़्तिलाफ़-वमन<sup>१०</sup> मिटा दे, मैं उन बहारों का साथ दूँगा ॥

— अदीब




---

१ हमरो की शत्रुता का अवकाश २ दुर्बलता, कमजोरी, दीनता  
३. काटे की चुभन ४. आक्रमण, हमला ५ शत्रुता, दुश्मनी ६ दिल से  
सेवा करने वाला, सेवक, फर्मावरदार ७ काटा ८ ऊँचाइयों को ९ समान,  
एक जैसी १०, विरोध ११ उद्यान का मतभेद, वैमनस्य, फूट ।

## अहिंसा का मतलब वही जानते हैं ।

०

१. अहिंसा का मतलब वही जानते हैं ।  
जो इन्साँ को अपना खुदा मानते हैं ॥
  २. मत जुल्म<sup>१</sup> करो, मत जुल्म सहो, इसी का नाम अहिंसा है ।  
बुजदिल<sup>२</sup> है जो, बेजान<sup>३</sup> है जो, उनसे बदनाम अहिंसा है ॥
  ३. अहिंसा वह धर्म है कि जिस पे कुदरत नाज<sup>४</sup> करती है ।  
सदाकत<sup>५</sup> नाज करती है, नदामत<sup>६</sup> नाज करती है ॥  
उसूलो<sup>७</sup> पर इसी के शाने-बहदत<sup>८</sup> नाज करती है ।  
हकीकत में अगर पूछो, हकीकत<sup>९</sup> नाज करती है ॥
  ४. खजर<sup>१०</sup> चले किसी पे, तड़पते हैं हम 'अमीर' ।  
मारे जहाँ का दर्द, हमारे जिगर में है ॥
- अमीर
५. किया तसलीम<sup>११</sup> यह मैंने, अहिंसा नाम है मेरा ।  
सितम<sup>१२</sup> सह लेना, गम खाना, अगर्चे<sup>१३</sup> काम है मेरा ॥  
मगर जब भी कभी मैं मूरते-सादिक पे<sup>१४</sup> आती हूँ ।  
नजर भर मे<sup>१५</sup> कयामत<sup>१६</sup> के नये जौहर<sup>१७</sup> दिखाती हूँ ॥

---

१ अत्याचार, अन्याय २ कायर, डरपोक ३ निष्प्राण, शक्तिहीन ४. गर्व ५ यथायता, मत्पता, मच्चाई ६ लज्जा, हया ७ मिद्वान्तो, नियमो ८ एकता का वैभव, एकत्व अथवा अद्वैत की श्रेष्ठता ९ सच्चाई, वास्तविकता १० तलवार ११ मानना, स्वीकार, १२ अत्याचार १३ यद्यपि १४ वास्तविक रूप में, मच्चे ढग में १५ खण भर में, पलक मारते १६. प्रलय के १७ गुण, दक्षना ।

मुझे वुजदिल समझना, वुजदिली की इक अलामत<sup>१</sup> है ।  
हकीकत मे मेरा पैगाम, पैगामे-बगावत<sup>२</sup> है ॥

६ दर हकीकत<sup>३</sup> दिल नही, जिसमे न हो एहसासे-दर्द<sup>४</sup> ॥  
दीए-बेनूर<sup>५</sup> है वह चश्म<sup>६</sup>, जो पुरनम<sup>७</sup> नही ॥

७. कोई रोता नजर आये तो आंसू पोछ दामन<sup>८</sup> से ।  
मदद बेकस<sup>९</sup> की कर दामो-दिरम<sup>१०</sup> से, जान से, दिल से ॥

८. अगर तेरे दिल मे दया ही नही ।  
समझ ले तुझे दिल मिला ही नही ॥

९ हर दुखी को आँसुओ की बूँद दो ।  
इस खजाने मे न आयेगी कमी ॥

१० मसीहो-खिज़्र<sup>११</sup> की उम्रो से उसका हर नफस<sup>१२</sup> बेहतर<sup>१३</sup> ।  
वह इन्साँ, जो मुसीबत मे, किसी इन्साँ के काम आये ॥

—हफीज

११ वह आँख, आँख नही, वह दिल, दिल नही ।  
जिसे किसी की मुसीबत नजर नही आती ॥

१२ मुसीबत जिसको पेग आये, तो उसका आश्ना<sup>१४</sup> तू हो ।  
कोई मातमजदा<sup>१५</sup> पाये तो उसका गमख्वा<sup>१६</sup> तू हो ॥  
कोई हो राह-गुमकरदा<sup>१७</sup> तो उसका रहनुमा<sup>१८</sup> तू हो ।  
गरज<sup>१९</sup> हर जख्म<sup>२०</sup> का भरहम हो, हर दुख का दवा तू हो ॥

—अहमदी

१. लक्षण, चिन्ह २ क्रांति का सन्देश ३ वस्तुतः ४ दुःखानुभूति  
५. अन्धी आख ६ आख ७. आसुओ से भोगी हुई ८ आचल ९ दीन-हीन,  
गरीब, असहाय १० रुपये-पैसे से ११ मार्ग दर्शक देवता की १२ सास १३.  
श्रेष्ठ, अच्छा १४ मित्र, साथी १५ शोक-ग्रस्त, दुःखी १६ दुःख मिटाने  
वाला १७ भूला-भटका हुआ, पथ-भ्रष्ट १८ मार्ग दर्शक १९ किंवहुना  
२०. धाव ।

१३. मत सता जालिम किसी को, मत किसी की आह ले ।  
दिल के दुख जाने से नादाँ<sup>१</sup> ! अर्ग<sup>२</sup> भी हिल जायगा ॥
१४. वता अय खाक के पुतले । कि दुनिया मे किया क्या है ?  
गरज जिसके लिए आया, उसे पूरा किया क्या है ?  
दुआएँ ली, कभी ठडा किया दिल दर्द-मन्दो<sup>३</sup> का ।  
बुरे हालो मे तू शामिल हुआ मोहताज वन्दो का ?  
शरीके-दर्दों-गम<sup>४</sup> होकर किसी का दुख वटाया है ?  
मुसीबत मे किसी आफतजदा के<sup>५</sup> काम आया है ?  
मिसाले-बुलबुला<sup>६</sup> है जिन्दगी दुनियाए-फानी में ।  
जो तुभसे हो सके करले भलाई जिन्दगानी मे ॥
१५. तनपरस्ती पै<sup>७</sup> जो हो सर्फ,<sup>८</sup> वह दौलत क्या है ?  
गैर को<sup>९</sup> जिससे न हो राहत,<sup>१०</sup> वह राहत<sup>१०</sup> क्या है ?
१६. मगर मेरा जीके-परस्तिग<sup>११</sup> जुदा<sup>१२</sup> है ।  
मैं सागर<sup>१</sup> हूँ भाई का अपने पुजारी ॥
- सातार निजामी
१७. अपनी हस्ती<sup>१३</sup> का सफीना<sup>१४</sup> सूए<sup>१५</sup>-तूफाँ करले ।  
हम मुह्वत को शरीके-गमे-इन्साँ<sup>१६</sup> करले ॥
- मजाज
१८. खुदा के वन्दे<sup>१७</sup> तो हैं हज़ारो, वनो मे फिरते हैं मारे-मारे ।  
मैं उसका वन्दा बनूँगा जिसको, खुदा के वन्दो से प्यार होगा ॥
- इक़बाल

१. आकाश २. दुखियो का ३. दुख-पीडा मे सम्मिलित ४. विपत्ति-ग्रस्त, पीडित ५. बुलबुले की तरह ६. शरीर-पूजा पर, अपने शारीरिक सुख पर ७. व्यय, खर्च ८. हमरे को ९. सुख, शान्ति, आराम १०. सुख ११. उपामना की रचि, आराधना का ढग १२. पृथक्, अलग, हमरा १३. जीवन की १४. नाव १५. तूफान की ओर १६. मनुष्य के दुख मे सम्मिलित १७. सेवक ।

- १६ किसी दुनिया के वन्दे को, अगर शौके-गहादत<sup>१</sup> हो ।  
तो उसका काम दुनिया में, सदा इन्साँ की खिदमत<sup>२</sup> हो ॥
२०. यूँ ही काम दुनिया का चलता रहेगा ।  
दिये-से-दिया यूँ ही जलता रहेगा ॥
२१. मर्द हो तो किसी के काम आओ ।  
वर्ना खाओ, पियो, चले जाओ ॥
२२. जागने वालो ! गाफिलो को जगाओ ।  
तैरने वालो ! डूबतो को तिराओ ॥  
तुम अगर हाथ-पाँव रखते हो ।  
लंगड़े-लूलो को कुछ सहारा दे जाओ ॥

—हाली

- २३ पढ-पढके घिसा देता है तस्वीह<sup>३</sup> के दाने ।  
इक दानए-खैरात<sup>४</sup> में सौ-सौ है वहाने ।  
दरगाहे-खुदा<sup>५</sup> में तो सदा हाथ उठाये ।  
साइल<sup>६</sup> की अजावत<sup>७</sup> पै जवाँ तक न हिलाये ॥  
दामन<sup>८</sup> तो गो वक्ते-दुआ<sup>९</sup> अश्क<sup>१०</sup> से तर हो ।  
मुहताज<sup>११</sup> की जारी<sup>१२</sup> का मगर कुछ न असर हो ॥  
ऐमाल<sup>१३</sup> का यह हाल है फिर स्वाहिशे-फिरदौम<sup>१४</sup> ।  
अफ़सोस है, अफ़सोस है, अफ़सोस है, अफ़सोस ॥
- २४ ईमा<sup>१५</sup> गलत, उसूल<sup>१६</sup> गलत, इद्दुआ<sup>१७</sup> गलत ।  
इन्साँ की दिलदिही,<sup>१८</sup> अगर इन्साँ न कर सके ॥

—असर लखनवी

१ वलिदान होने की लगन २. सेवा ३ माला ४ दान के नाम पर एक अन्न का दाना देने में ५ प्रभु के दरबार में ६ प्रार्थी, भिक्षुक, सवाल करने वाला ७ अभ्यर्थना, याचना ८ आचल ९ प्रार्थना या स्तुति के समय १० आसू ११ असहाय, निराश्रय १२ विलाप, रोना १३. कर्म, कृत्य, आचरण, व्यवहार-वर्तवि १४ स्वर्ग की इच्छा १५ धर्म १६ सिद्धान्त, नियम १७. दावा १८. सान्त्वना, ढारस, दिलासा, सहायता, सहानुभूति ।



- २५ मुकर्रम<sup>१</sup> जिन्म<sup>२</sup> है, याँ दस्तगीरी<sup>३</sup> नीमजानो की<sup>४</sup> ।  
खरीदा कर मिले जितनी दुआएँ नातुवानो<sup>५</sup> की ॥
- २६, वह आदमी ही क्या है, जो दर्द-आइना न हो ।  
पत्थर से कम है, दिल में शरर गर निहाँ नहीं ॥

—जकी

- २७ दर्द-दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान को ।  
वर्ना ताअत<sup>६</sup> के लिये, कुछ कम न थे करों-वर्याँ<sup>७</sup> ॥

—दर्द

- २८ यही है इबादत<sup>८</sup> यही दीनो-ईमाँ ।  
कि काम आये दुनियाँ में इन्साँ के इन्साँ ॥

- २९ किसी का रंज देखूँ यह नहीं होगा मेरे दिल से ।  
नजर सैयाद<sup>९</sup> की भूपके, तो कुछ कह दूँ अनादिल<sup>१०</sup> से ॥

—साकिब

३०. इज्जत उसी की अहले-नजर की नजर में है ।  
सब कुछ वगर में है, जो मुहब्बत वगर में है ॥

—अमीर

- ३१ किसी की आँख तर देखूँ तो अदक<sup>११</sup> आँखों से जारी हो ।  
किसी की बेकरारी<sup>१२</sup> से, मुझे भी बेकरारी हो ॥  
किसी की जान से बढ़कर न अपनी जान प्यारी हो ।  
मेरी हस्ती<sup>१३</sup> का मरकज<sup>१४</sup> और मकसद<sup>१५</sup> इन्किसारी<sup>१६</sup> हो ॥

१ स्थायी २ वस्तु ३. सहायता, मदद ४. आसन्न मृत्यु, मृतप्राय,  
निराश्रय, अत्यन्त पीड़ित ५ निर्बल, शक्तिहीन ६. ईश्वर-आराधना के लिए,  
प्रभु की उपासना के लिए ७ देवता, फरिश्ते ८ भक्ति, उपासना ९  
शिकारी १० बुलबुल ११ आसू १२ व्याकुलता, बेचैनी १३. जीवन  
१४. केन्द्र, परिधि १५ उद्देश्य, लक्ष्य १६ विनय, नम्रता, सेवा-भाव ।

दिले-दर्द आश्ना<sup>१</sup> को भी अता<sup>२</sup> हो सोजे-परवाना<sup>३</sup> ।  
पतंगे की तरह आये मुझे हँस-हँस के मर जाना ॥

३२ दर्द जिस दिल में हो, उस दिल की दवा बन जाऊँ ।  
दुख में हिलते हुए लव<sup>४</sup> की दुआ बन जाऊँ ॥

३३ मुबारक है, जो दिल में दूसरो का दर्द रखते हैं ।  
जो आँसू आँख में और लवपै आँहे-सद<sup>५</sup> रखते हैं ॥

३४ जिन सवेरो से मिले, सुबहे-मुहब्बत<sup>६</sup> का पयाम<sup>७</sup> ।  
उन सवेरो को किसी के खूँ से<sup>८</sup> क्यों नहलाइए ?

—मुनवर लखनवी

३५. दिखा सकेगी न हरगिज जहा को अमन की<sup>९</sup> राह ।  
सितमगरी<sup>१०</sup> की वोह मशअल<sup>११</sup> जो दूद<sup>१२</sup> से है सियाह<sup>१३</sup> ॥

—मुल्ला

३६ कही बिजली गिरे वह अपना गुलशन हो कि औरो का ।  
मुझे अपनी ही शाखे-आगियाँ<sup>१४</sup> मालूम होती हैं ॥

—सरदार जाफरी

३७ तेरे अत्वार<sup>१५</sup> की तरह जाहिद ।  
क्या भरोसा तेरी बहिश्तो का ?  
मुझको इन्सान से मुहब्बत है,  
मैं नहीं मौतकिद<sup>१६</sup> फिरिश्तो का ॥

—शाद

१ सहानुभूतिकर्ता हृदय, हमदर्द दिल २ प्राप्त ३. पतंगे की जलन  
४. होठ ५ ठंडी आह ६ प्रेमरूपी प्रभात ७. सन्देश ८ रक्त से ९  
शान्ति की १० अत्याचार करने की ११ मशाल १२ धूँ से १३.  
काली १४ घोंसले की टहनी १५ चाल-ढाल की १६ विश्वासी,  
अट्टालु ।

५१. खिरमने-दिल<sup>१</sup> जला रहा हूँ मैं ।  
 नक्के-हस्ती<sup>२</sup> मिटा रहा हूँ मैं ॥  
 तू न मगमूम<sup>३</sup> हो, मगर ऐ दोस्त ।  
 तेरी ही सिम्त<sup>४</sup> आ रहा हूँ मैं ॥
- ५२ दूर इन्सान के सर से यह मुमीवत कर दो ।  
 आग दोजख की बुझा दो उसे जन्नत कर दो ॥  
 — मजाज
५३. जीस्तमे<sup>५</sup> एहतयाज के लमहे,<sup>६</sup> लोग कहते है आम आते हैं ।  
 मुफलिसो के दिलो को मत ठुकरा, यह पियाले भी काम आते है ॥
- ५४ कसरते-गम मे<sup>७</sup> लुत्फे-गमख्वारी,<sup>८</sup>  
 सागुरे-जमका<sup>९</sup> काम देता है ।  
 वक्त पर एक लफ्जे-हमदर्दी,<sup>१०</sup>  
 इब्ने-मरियम<sup>११</sup> का काम देता है ॥  
 — अदम
- ५५ गैर के दर्द पै भी अश्क-वदामाँ<sup>१२</sup> होना ।  
 यही मैराजे-वशर<sup>१३</sup> है, यही इन्साँ होना ॥
५६. तगद्दुद को तगद्दुद से<sup>१४</sup> दवाले यह तो मुमकिन<sup>१५</sup> है ।  
 मगर गोले को<sup>१६</sup> गोले से बुझाया जा नहीं सकता ॥
- ५७ इसी का नाम जीना है, जिगर खूँ हो तो हो जाये ।  
 न कूगे-दहर मे<sup>१७</sup> डक खास अपना रंग भरता जा ॥

१ मनस्वी खलिहान, २ अपना अस्तित्व ३ सन्तप्त, दुःखी ४ ओर, तरफ ५. जिन्दगी मे, ६ आवश्यकता के अवसर ७ दुखो की अधिकता मे ८ दुख सहन करने का स्वभाव या आनन्द ९ वह प्याला जिसमे जमशेद बादशाह विश्व की भूलक देखा करता था १०. सहानुभूति का शब्द ११ ईमामसीह, जो दीन-दुनियो के पिता कहलाते थे १२ रोना १३ मनुष्य जीवन का आदर्श १४ हिंसा मे, दवाव से १५ सम्भव १६ आग को, चिनगारी को १७ ससार के मानचित्र मे ।

५८. मरीजे-गमको<sup>१</sup> तसल्लियो से  
कही सिवा<sup>२</sup> दे रहा है तसकी ।  
वोह डक चमकता हुआ-सा आँसू,  
जो दीदए चारासाज मे<sup>३</sup> है ॥
५९. जय कभी अमनकी<sup>४</sup> इन्साँ ने कसम खाई है ।  
लवे-इब्लीस पं<sup>५</sup> हल्की-सी हँसी आई है ॥

—मुल्ला

३०. मेरे नग्मोका<sup>६</sup> यह हासिल<sup>७</sup> ।  
दुनियाँ को सीने से लगा ले ॥

—फिराक गोरखपुरी

६१. किमी का जखम<sup>८</sup> हो, मेरा ही वह बने नासूर ।  
किसी का चाक<sup>९</sup> हो, मेरा ही चाक कहलाये ॥

—मुनवर लखनवी

६२. अहिंसा से है ऐ गाफिल । कयामे-आलमे-इमकाँ<sup>१०</sup> ।  
जो यह दुनिया से उठेगी तो दुनिया भी नहीं होगी ॥

६३. वह की खलूसकी<sup>११</sup> तोहीन<sup>१२</sup> अहले-दुनिया<sup>१३</sup> ने ।  
जवाँ पै<sup>१४</sup> लफ्ज़ मुहव्वत<sup>१५</sup> गराँ<sup>१६</sup> गुजरता है ॥

—निहाल सेवहारबी

६४. खुशी की मुआरिफत<sup>१७</sup> और गम की आगही<sup>१८</sup> न मिली ।  
जिसे जहाँ मे मुहव्वत की जिन्दगी न मिली ॥

१. दु खी-दर्दी को, २ अधिक ३ चिकित्सक की आँख मे ४ शान्ति की ५ शैतान के होटो पर ६ गीतो का ७ निष्कर्ष, नतीजा, तात्पर्य ८ घाव ९ फटन, दरार, विदीर्ण १० ससार का अस्तित्व स्थिर है ११ प्रेम की, सद्व्यवहार तथा सदाचार की १२ अपमान १३ दुनिया के लोगो ने १४ जिह्वा पर १५ प्रेम का शब्द १६ भारी, कठिन १७ परख १८ जानकारी ।

३८ वता दो आविदाने-वे-ग्रमल<sup>१</sup> को,  
 खुदा उकता चुका है बन्दगी से ।  
 खुदा से क्या मुहव्वत कर सकेगा,  
 जिसे नफरत है उसके आदमी से ॥

—नरेशकुमार शाह

३९ ओ वेरहम मुसाफिर हँसकर साहिल की तौहीन<sup>२</sup> न कर ।  
 हमने अपनी नाव डुवोकर, तुझको पार लगाया है ॥  
 ४० जो पार उतारे औरो को, उसकी भी नाँव उतरनी है ।  
 जो ग़र्क़ करे<sup>३</sup> फिर उसकी भी यहाँ डुवको-डुवको करती है ॥  
 ४१ मुत्तिलाए-दर्द<sup>४</sup> होने की यह लज़्जत<sup>५</sup> देखिए ।  
 किस्स-ए-गम<sup>६</sup> हो किसी का, दिल मेरा धक्-धक् करे ॥

—कतीलशिफाई

४२. तुझको जो खुदा से उल्फत है,  
 उसके बन्दो से उल्फत कर ।  
 क्या रक्खा मन्दिर-मस्जिद मे,  
 कल्वे-इन्साँ की जियारत<sup>७</sup> कर ॥

४३., अपना दर्द-दिल समझने की यहाँ फुर्सत किसे ?  
 हम तो औरो का तडपना देखकर तडपा किये ॥  
 ४४ किसी को हम न रौदेंगे अगर राहे-तरक्की मे<sup>८</sup> ।  
 तो हर इक खाक के ज़र्रे को दामनगीर<sup>९</sup> देखेंगे ॥  
 ४५ जीने का लुत्फ सारा उल्फत की याद से है ।  
 पहले जो दर्द-दिल था, अब वह सकूने-जा<sup>१०</sup> है ॥

---

१ चरित्रहीन भक्त को २ अपमान ३ डुवोए ४ दुख में लीन अथवा मगन ५ मजा, आनन्द, स्वाद ६ दुख की कथा या कहानी ७. मनुष्य के मन की ८ तीर्थ यात्रा ९ उन्नति अथवा विकास के मार्ग में १० दामन पकड़ने वाला, आचल पकड़ कर रोकने वाला ११. मन की शान्ति ।

४६ दिल है इक दौलत, मगर दर्द-आश्ना<sup>१</sup> होने के बाद ।  
अश्क<sup>२</sup> मोती है मगर गम की जिला<sup>३</sup> होने के बाद ॥

—मुल्ला

४७ परिस्तारियाँ<sup>४</sup> है जहाँ जुल्मतो की<sup>५</sup>,  
वहाँ नूरे-शम्सो-क़मर<sup>६</sup> वेचता हूँ ।  
जहाँ दर्द-दिल का मुखालिफ<sup>७</sup> है आलम<sup>८</sup>,  
वहाँ दर्द-दिल का असर वेचता हूँ ॥

—नोश

४८. ऐ .खुदा ! तुझको पूजने वाले,  
तग करते है तेरे बन्दो को<sup>९</sup> ।  
बागे-जन्नत के सब्ज पेडो से,  
बाँध अपने नियाजमन्दो को<sup>१०</sup> ॥

४९. ऐ गरीबो को रीदने वालो !  
आदमी सब्जा-ओ-गयाह<sup>११</sup> नहीं ॥  
यह फकीराने-राहे-उफतादा<sup>१२</sup>,  
दर्से-इबरत<sup>१३</sup> है फर्से-राह<sup>१४</sup> नहीं ॥

—अवम

५०. कभी वोह दिन थे अपने दिल को हम अपना न कहते थे ।  
मगर अब हर बशर के दिल को अपना दिल समझते है ॥

—जगन्नाथ आज़ाद

१ हमदर्द, जो किसी के दुख-दर्द को जानता हो, दुख में सहायता देने वाला २ आँसू ३. रोशनी, ज्योति ४ सरक्षण ५ अघेरो को ६ चन्द्र सूर्य का प्रकाश ७ विरोधी ८, ससार ९ सेवको को १० श्रद्धालुओं को ११. घास-फूस १२. रास्ते पर पड़े रहने वाले दुखी, मँगते १३ नसीहत के सबक हैं १४ रास्ते के फर्श ।

६५. कांटे चुनने से क्या हासिल, इकबार मजाके-सब्ज-ओ-गुल<sup>१</sup> ।  
जिसमें कांटे जम ही न सके, वोह सीरते-आबो-गुल<sup>२</sup> कर दे ॥  
—मुल्ला
६६. खुद को पहचान सकी दुख-भरी दुनिया न अभी ।  
गमे-इन्साँ<sup>३</sup> को न आया गमे-इन्साँ होना ॥
६७. यह शोला<sup>४</sup> मुहव्वत का, यह आँच मुहव्वत की ।  
इन्सान की मिट्टी को अक्सीर<sup>५</sup> बनाये है ॥  
—फिराक गोरखपुरी
६८. कभी भूलकर न क'ना किसी से सुलूक<sup>६</sup> ऐसा ।  
कि जो तुम से कोई करता, तुम्हे नागवार<sup>७</sup> होता ॥




---

१ फूल-पत्तियों से सुरुचि रखने वाले २. फूलों का स्वभाव ३ मनुष्य के  
दुख को ४ चिनगारी ५. रसायन ६ वर्तव्य, व्यवहार, आचरण  
७ प्रतिकूल, नापसन्द ।

## इन्सान का फरिश्तों से रुतबा बढ़ा दिया !



- १ क्या शाने- एजदी<sup>१</sup> ने तमाशा दिखा दिया ।  
इन्तान का फरिश्तो<sup>२</sup> से रुतबा<sup>३</sup> बढ़ा दिया ॥
- २ बनाया 'जफर' खालिक्<sup>४</sup> ने कब इन्सान से बेहतर<sup>५</sup> ।  
मलक<sup>६</sup> को, देव को, जिनको<sup>७</sup>, परी को, हूरो-गिल्मा<sup>८</sup> को ॥

— जफर

- ३ 'अमीर' इसकी है ला-मका<sup>९</sup> तक रसाई<sup>१०</sup> ।  
फरिश्ते से भी कुछ सवा<sup>११</sup> आदमी है ॥

— अमीर

- ४ यह शरफ<sup>१२</sup> कम नहीं ऐ आदमे-खाकी<sup>१३</sup> । तेरा ।  
उसने अपने लिए तामीर किया खानए-दिल<sup>१४</sup> ॥

— असर

- ५ जो फरिश्ते करते हैं, कर सकता है इन्सान भी ।  
पर, फरिश्तो से न हो, जो काम है इन्सान का ॥

— जोक

---

१. ईश्वरीय तेज ने २ देवताओं से ३ पद, दर्जा ४. सृष्टिकर्ता, ईश्वर ने ५ उत्तम, अच्छा, श्रेष्ठ ६ फरिश्ते को ७. एक प्राणी, जिसकी उत्पत्ति अग्नि में मानी जाती है और वह दिखायी नहीं पड़ता, भूत को, ८ स्वर्गाङ्गना देवी और स्वर्ग के बालक देवकुमार को ९ ईश्वर १०. पहुँच, प्रवेश ११ अधिक, उच्च १२ श्रेष्ठता, उत्तमता, सम्मान, मत्कार, उत्तुङ्गता १३ मिट्टी के पुतले १४ मन का मन्दिर ।



६. खाक के पुतले ने वोह वोभ लिया गर्दन पर ।  
कि समझते थे जिसे अर्ग के हामिल<sup>१</sup> भारी ॥

—आतिश

- ७ बावजूद कि परो-वाल न थे आदम के ।  
पहुँचा उम जा<sup>२</sup> कि फरिस्तो का भी मक़दूर<sup>३</sup> न था ॥

—मीर दर्द

- ८ मलक<sup>४</sup> सज्दा<sup>५</sup> करे आदम<sup>६</sup> को, क्या बन्दा-निवाजी<sup>७</sup> है ।  
दिया वन्दे को अपने उसने खुद आदाब<sup>८</sup> अपना-सा ॥

—जीक़

- ९ हैं मुश्ते-खाक<sup>९</sup> लेकिन, जो-कुछ हैं 'मीर' हम है ।  
मक़दूर<sup>१०</sup> से जियादा मक़दूर<sup>११</sup> है हमारा ॥

—मीर

- १० वशर जो इस तीरे-खाकदाँ<sup>१२</sup> में पडा यह इसकी फिरोतनी<sup>१३</sup> है ।  
वगर्ना कन्दील-अर्ग<sup>१४</sup> में भी इसी के जलवे की रोशनी है ॥

- ११ पर फरिस्तो के जहाँ जलते थे वाँ बुलवा लिया ।  
वाह क्या रुतवा<sup>१५</sup> दिया खालिक<sup>१६</sup> ने आदमजाद को<sup>१७</sup> ॥

—बजरार

- १२ हुर्मत<sup>१८</sup> से मलाइक<sup>१९</sup> ने, इसे सजदा किया है ।  
जिस वक्त कि वह सूरते-इन्सान<sup>२०</sup> में आया ॥

१ आकाश को धारण करने वाले २ जगह ३. सामर्थ्य ४. फरिश्ते, देवता ५ सिर झुकाना, नमस्कार करना, मत्था टेकना ६ मनुष्य को ७. मानव-पूजा ८ सम्मान, प्रतिष्ठा ९ मुद्दी-भर खाक, आदमी १० शक्ति, बल ११ साहस, हिम्मत १२ मृत्युलोक, ससार में, १३. विनम्रता, विनीतता, खाकसारी वरतना १४ आकाश के कंडील में १५ महत्ता, श्रेष्ठता, पद, दर्जा १६. सिरजनहार, ईश्वर १७ मनुष्य को १८. प्रतिष्ठा, सम्मान, इज्जत १९ देवतागण, फरिश्ते २० मनुष्य के रूप में ।

- १३ मत सहल हमे जानो, फिरता है फलक<sup>१</sup> बरसो ।  
तब खाक के पर्दे से इन्सान निकलते है ॥

—मीर

- १४ जमीनो-आसमानो-महरो<sup>२</sup> - मह सब तुझ मे है इन्साँ ।  
नजर कर देख मुश्ते-खाक<sup>३</sup> मे क्या-क्या भ्रमकता है ?  
१५ अग्रफु-मखलूक<sup>४</sup> कहलाता न क्योकर आदमी ?  
तू खुदा होकर खुदी से अक्ले-इन्साँ<sup>५</sup> हो गया ॥  
१६ मूसा<sup>६</sup> ने कोहे-तूर पै, वाते खुदा से की ।  
रूतवा वगर का देखिए, होता है क्या से क्या ?  
१७ गर आँख है तो वातिने<sup>७</sup>-इन्साँकी दीद<sup>८</sup> कर ।  
क्या-क्या तिलिस्म-ओ-फन<sup>९</sup> है मुश्ते-गुबार<sup>१०</sup> मे ॥

—नासिख

- १८ और पैराये<sup>११</sup> मे मुमकिन<sup>१२</sup> नही कुदरत का ज़हूर<sup>१३</sup> ।  
है यकी<sup>१४</sup> मुझको खुदा सूरते-इन्साँ होगा ॥

—सहर

१९. दिया अल्लाह ने ऐसा कमाले-इश्क इन्साँ को ।  
फरिश्ता देखकर इन्साने-कामिल<sup>१५</sup> हाथ मलता है ॥

—जफर

- २० फरिश्ते सजदा करते है, बडी तौकीर<sup>१६</sup> है उनकी ।  
बढाया क्या खुदा ने मर्तबा औलादे-आदम<sup>१७</sup> का ॥

—आबाद

---

१ आकाश २ पृथ्वी, आकाश, सूर्य और चन्द्र ३ मनुष्य मे ४ प्राणियो मे सर्वश्रेष्ठ ५ मनुष्याकृति, मनुष्य के रूप मे ६ एक पैगम्बर, जिन्होने फिराँन को मारा था ७ मनुष्य के अन्तर का ८ दर्शन ९ जादू और हुनर १० मुट्ठी-भर धूल, मनुष्य ११ वस्त्र, लिवास मे, १२ सम्भव १३ जल्वा, दर्शन, आविर्भाव १४ विश्वास १५ सर्वाङ्गपूर्ण मनुष्य को, १६ प्रतिष्ठा, सम्मान, इज्जत, सत्कार १७ मनुष्य का ।

२१ क्या गजब है नही इन्साँ को इन्साँ की कदर ।  
हर फरिश्ते को यह हसरत<sup>१</sup> है कि इन्साँ होता ॥

—हसरत

२२. फरिश्ते से बेहतर है इन्सान बनना ।  
मगर इसमे पडती है मेहनत ज़ियादा<sup>२</sup> ॥

—जीक

२३ जीहर<sup>३</sup> वह कौन-सा है, जो इन्सान में नहीं ।  
देकर खुदा ने अक्ल इसे जुजी-फतू<sup>४</sup> किया ॥

२४. जाहिरा हस्ति-ए-नाचीज<sup>५</sup> वशर है क्या चीज़ ?  
यह वोह कतरा है, जो बढ जाए तो दर्या हो जाए ।

२५ फरिश्तो को क्या मात दी आदमी ने ।  
क़यामत का यह मुग्ते-खाक निकला ॥

२६ फरिश्ते भी देखे तो खुल जाएँ आँखे ।  
वशर को वह जलवे दिखाए गए है ॥

२७. सुनते है कान रखके, फरिश्ते भी इसकी बात ।  
कहता है दूर-दूर की इन्साँ कभी-कभी ॥

२८ जो खान-ए-हस्ती<sup>६</sup> में है, इन्साँ के लिए है ।  
आरास्ता<sup>७</sup> यह घर इसी महमाँ<sup>८</sup> के लिए है ॥

—जीक

२९. ऐ 'दाग़' आदमी की रसाई<sup>९</sup> तो देखना ।  
सर पर धरे है अर्गने<sup>१०</sup> खँर-उल-वशर<sup>११</sup> के पाँव ॥

—दाग़

१ लालमा, इच्छा, अभिलाषा २. अधिक ३. गुण ४ ज्योतिर्मय, प्रकाशपूर्ण ५ हेच जीवन, शुद्ध जीवन ६ जीवन रूपी घर, मन-मन्दिर ७, सजा हुआ, मुमज्जित ८ अतिथि ९. पहुँच १०. आकाश ने ११ श्रेष्ठ पुरुष के ।

३०. शाने-खालिक<sup>१</sup> है अयाँ,<sup>२</sup> इन्सान की तकरीर<sup>३</sup> मे ।  
 खुद मुसव्वर<sup>४</sup> बोलता है, पर्दान-तसवीर<sup>५</sup> मे ॥
३१. अर्श तक हो नहीं सकती जो रसाई<sup>६</sup>, न सही ।  
 यही इन्साँ की है मैराज<sup>७</sup> कि इन्साँ हो जाए ॥
- ३२ जल्वा तो हर इक तरह का, हर गान मे देखा ।  
 जो कुछ कि सुना तुझ मे, सो इन्सान मे देखा ॥
- ३३ इन्साँ की जात से है खुदाई के खेल याँ ।  
 बाजी कहा विसात पै<sup>८</sup> गर शाह ही नहीं ॥

—दर्द

३४. समझे 'आतिश' न कोई आदमे-खाकी<sup>९</sup> को हकीर<sup>१०</sup> ।  
 नहीं असरार<sup>११</sup> से यह खाक का पुतला खाली ॥

—आतिश

३५. मुस्तार<sup>१२</sup> भी मजबूर भी कामो मे बशर है ।  
 इससे यह सजावार,<sup>१३</sup> जजा<sup>१४</sup> है भी नहीं भी ॥

—अकसर

३६. अपनी सूरत का वह हुआ शंदा<sup>१५</sup> ।  
 अपने-आपको इन्साँ बना देखा ॥

- ३७ फरिश्ते और वोह सजदा करे आदम के पुतले को ।  
 भुकाया तूरियो<sup>१६</sup> के सर को भी इस पैकरे-गुल<sup>१७</sup> ने ॥

—सफी

१ ईश्वर की श्रेष्ठता अथवा महत्ता २ प्रकट, व्यक्त ३ भाषण, बोली, भाषा ४ चित्रकार, चितेरा, शिल्पी, तस्वीर बनाने वाला ५ चित्र की ओट मे ६ पहुँच ७ उच्चता ८ शतरज के तस्ते पर ९ मनुष्य को १० नगण्य, तुच्छ ११ मर्म, भेद, रहस्य से १२ सर्वेसर्वा, समर्थ १३ योग्य, पात्र, लायक १४ प्रतिकार, बदला १५ आसक्त १६ देवताओं १७ फूल जैसे शरीर ने, गुलबदन ने ।

३८ यह सब जहूर गाने-हकीकत<sup>१</sup> वगर मे है ।  
जो कुछ निहाँ<sup>२</sup> था तुख्म<sup>३</sup> मे, पैदा शरर<sup>४</sup> मे है ॥

३९ लज्जते-गर्म<sup>५</sup> गना<sup>६</sup> थी कव फरिश्तो को नसीव ?  
यह मजा चखने को पैदा खलक<sup>७</sup> में आदम हुआ ॥

४०. सानअर<sup>८</sup> की सनअतो<sup>९</sup> की सी हुस्न क्यों न वरमे ?  
अपनी किसी अदा<sup>१०</sup> को इन्साँ बना दिया है ॥

—अमीर

४१ जीहर<sup>११</sup> है तुम मे सब मलकूतीसिफात<sup>१२</sup> के ।  
इन्साँ किया सज्दए-मलाइक<sup>१३</sup> के वास्ते ॥

—सज्दए-मलाइक

४२. नही असरार<sup>१४</sup> से आतिश, यह पुतला खाक का खाली ।  
यही वह गर्द है, जिससे सवार आखिर अयाँ<sup>१५</sup> होगा ॥

—आतिश

४३. जहूरे-आदमे-खाकी<sup>१६</sup> से, यह हमको यकी आया ।  
तमाशा अजुमन<sup>१७</sup> का देखने खित्वत-नशी<sup>१८</sup> आया ॥

४४. फख<sup>१९</sup> आदम<sup>२०</sup> को न होता, जो फरिश्ता<sup>२१</sup> होता ।  
वनी-आदम<sup>२२</sup> से जो मन्सूव<sup>२३</sup> हुआ, खूब<sup>२४</sup> हुआ ॥

१ सत्यता की प्रतिष्ठा या मर्यादा २ छिपा हुआ ३. बीज मे ४ स्फुलिंग, चिनगारी ५. लज्जा का मजा ६. प्राप्ति, लाभ ७ ससार मे ८ निर्माता, बनाने वाला, कारीगर ९ कारीगरियो १० हाव-भाव, अगभगिमा को ११ गुण १२ देवताओ जैसे, देवताओ के गुणवाली १३ देवताओ के सिर झुकाने के लिए १४. रहस्य, भेद १५ प्रकट, जाहिर १६ मनुष्य के आविर्भाव मे १७ समा, गोष्ठी महफिल का १८ एकान्त सेवी १९ गौरव, नाज २० मनुष्य २१ देवता २२ मानव-जाति मे २३ नम्वद, जिसकी किसी की ओर निस्वत की गयी हो २४ मुन्दर, उत्तम, अच्छा ।

४५. आदमे-खाकी से आलम<sup>१</sup> को जिला<sup>२</sup> है वरना ।  
आईना<sup>३</sup> यह था, मगर काबिले-दीद<sup>४</sup> न था ॥

४६ फरिश्ते आदमी बनकर न रह सके ।  
वह ऐसी कौनसी मुश्किल थी आदमीयत मे ॥

—अकबर हैदरी

४७. मैं क्या हूँ मेरे समझने को समझ है दरकार<sup>५</sup> ।  
खाक समझा जो मुझे खाक का पुतला समझा ?

४८. हुस्ने-इन्सा<sup>६</sup> से फरिश्तो ने भी भाँके हैं कुएँ ।  
आफते ढाता है यह खाक का पुतला क्या-क्या ?

४९ आदमी के हाले-अवतर<sup>७</sup> पर फरिश्ते रो दिए ।  
हम खुदा थे, किस्मतो से टुकड़े-टुकड़े हो गए ॥

—फिराक

५० जिन्हे शर्क<sup>८</sup> हो, वोह करे, और खुदाओ की तलाश ।  
हम तो इन्सान को दुनिया का खुदा कहते हैं ॥

—मुल्ला

५१. फितरते-आदम<sup>९</sup> मे थी अल्लाह क्या नश्वोनुमा<sup>१०</sup> ।  
एक मुट्ठी खाक यो फैली कि दुनिया हो गई ॥

—सोमाव

५२ खाइफ<sup>११</sup> खुदा है जिनसे वे इन्सा<sup>६</sup> है आजकल ।  
डरते थे जो खुदा से वे इन्सा<sup>६</sup> कहाँ रहे ?

—नरेन्द्रकुमार शाद

१ ससार की २ आभा, प्रभा, चमक, रोशनी ३ दर्पण ४ देखने के योग्य, दर्शनीय ५ वाछित, आवश्यक, जरूरी ६ मानव-सौन्दर्य ७. दुर्दशा पर, बुरी हालत पर ८. अविश्वास, सन्देह ९ मनुष्य की प्रकृति या स्वभाव मे १० विकसित होना, विकास पाना ११ भयभीत ।

५३. मुझको अब मेहरो-मुहव्वत<sup>१</sup> से कोई प्यार नहो ।  
मैंने इन्सान को चाहा भी तो क्या पाया है ?

—कतील शिफाई

५४ इन्ने-आदम<sup>२</sup> को साहवे-जाह<sup>३</sup> करो,  
कम्बखन को अब ग्रीर न गुमराह<sup>४</sup> करो ।  
अल्लाह से इन्सान है -कवका वाकिफ<sup>५</sup>,  
इन्मान से इन्सान को आगाह<sup>६</sup> करो ॥

—जोश

५५ कमाले-आदमे खाकी<sup>७</sup> तो देखो ।  
जमीमे आममाँ तक छा रहा है ॥  
५६ अगर अपने को फिनरतकार<sup>८</sup> यह इन्गाँ राजदाँ<sup>९</sup> कर ले ।  
हर-इक ज़र्रे से पैदा वेतकल्लुफ<sup>१०</sup> मी जहाँ कर ले ॥  
५७. आँखो मे समाती नही कुछ रफअते-अफ़लाक<sup>११</sup> ।  
किन मर्तवे-ओजपे<sup>१२</sup> इन्साँ नज़र आया ॥  
५८. चश्मे-जहाँ को<sup>१३</sup> बुमअते-जोये-अमल<sup>१४</sup> दिखाये जा ।  
अर्जो-समा के ताजदार<sup>१५</sup> अर्जो-समा पै छाये जा ॥

—निहाल सेबिहारखी

५९. कोई मज़िल इन्तहाए-ओजे-इन्सानी<sup>१६</sup> नहीं ।  
कोकवे-तकदीरे-आदम<sup>१७</sup> है फरोगे-लामकाँ<sup>१८</sup> ॥

—रविश सिद्दीकी

१ कृपा और स्नेह से २ मानव-सन्तान को ३ गौरवान्वित, प्रतिष्ठित  
४ पथ-भ्रष्ट ५ अभिज्ञ, परिचित ६ सावधान, सचेत ७ मिट्टी से बने  
मनुष्य का कौशल ८ प्रकृति का ९ मर्मज्ञ, जानी, जानने वाला, रहस्यज्ञ  
१० निःमकोच, बेखटके, आराम से ११ आकाश की चाल, उच्चता १२.  
उन्नत पद पर १३ विष्व दृष्टि को १४ कर्तव्य के उत्साह का क्षेत्र १५  
पृथिवी आकाश के सम्राट् १६ मनुष्य की महानता की कोई सीमा नहीं  
१७. मनुष्य का भाग्य-नक्षत्र ही १८ ईश्वर को प्रकाश देता है ।

६०. .खुदारियो<sup>१</sup> के होते हर शख्स के कदमचर ।  
भुकता है क्यो मेरा सर<sup>२</sup> दुनियाँ नही समझती ॥
६१. फिर कोई कैद<sup>३</sup> न तेरे लिए बाकी रहती ।  
तू अगर्चे<sup>४</sup> दामसे<sup>५</sup> खुद अपनी रिहा<sup>६</sup> हो जाता ॥  
अपनी अजमतका<sup>७</sup> नही खुद तुझे गाफिल एहसास<sup>८</sup> ।  
बन्दगी अपनी जो करता तो खुदा हो जाता ॥
- ६२ अगर जन्नत<sup>९</sup> भी तुझको मिल गई क्या तेरे हाथ आया ?  
तुझे खुद खूबिए-आमाल का इनआम<sup>१०</sup> होना था ॥
- ६३ इन्सान के उरुज<sup>११</sup> का क्या खाक ऐतबार<sup>१२</sup> ?  
बिगडा वही हुबाब की सूरत,<sup>१३</sup> जहाँ बना ॥
- ६४ पूजती है इन्हे माबूद<sup>१४</sup> समझकर दुनिया ।  
आदमी से तो मुनव्वर कही पत्थर अच्छे ॥

— मुनव्वर लखनवी

- ६५ शेखजी<sup>१५</sup> आप वली<sup>१६</sup> है तो बताये मुझको ।  
आजकल हजरते-इन्सान कहाँ होता है ?
- ६६ वहिस्त मे<sup>१७</sup> कोई रौनक नही है मुद्त से ।  
.खुदा को देर से इन्सान की जरूरत है ॥

---

१ स्वाभिमान होने पर भी २ मस्तक ३ बन्धन ४ यदि  
५ जाल से, कैद से ६ मुक्त ७ गौरव का, महिमा-गरिमा का  
८ ज्ञान, अनुभूति ९ स्वर्ग १० सदाचार का पुरस्कार ११ उत्थान,  
उन्नति, विकास का १२ विश्वास १३. बुलबुले की तरह १४.  
आराध्य, ईश्वर १५ वृद्ध, बुजुर्ग १६ महात्मा, ऋषि १७ स्वर्ग,  
वैकुण्ठ मे ।



६७ न जा इन वेशरो-सामान इन्सानो की हालत पर ।  
हयाते-जाविदा<sup>१</sup> इनके तय्यारुफ को<sup>२</sup> तरसती है ॥

—अदम

६८. वगावत<sup>३</sup> का अलमवरदार<sup>४</sup> हूँ, महंगर वदामाँ<sup>५</sup> हूँ ।  
फरिश्तो ने<sup>६</sup> जिसे सिज्दे<sup>७</sup> किये हैं, मैं वह इन्साँ हूँ ॥

—मजाज




---

१ अमर जीवन २. परिचय प्राप्त करने को ३ विद्रोह, क्रांति का  
४. झुका उठाने वाला ५ प्रलयकर ६ देवताओं ने १४ नमस्कार,  
झुककर नतमस्तक होना ।

## इन्सानियत का दहर मे मिलना मुहाल है !



- १ इन्सानियत का दहर<sup>१</sup> मे मिलना मुहाल<sup>२</sup> है ।  
लेकर चराग<sup>३</sup> शौक<sup>४</sup> से ढूँढा करे कोई ॥
- २ हो न कुछ इन्सानियत<sup>५</sup> इन्साँ<sup>६</sup> मे तो फिर इन्सान क्या ?  
ऐ 'जफर' गर्व<sup>७</sup> हुआ जाहिर<sup>८</sup> मे वह इन्सा की शकल<sup>९</sup> ॥  
—जफर
३. अब कहाँ इन्साँ, जिसे इन्साँ कहे ।  
चलती-फिरती देख लो परछाइयाँ<sup>१०</sup> ॥  
—जिगर
- ४ गो<sup>११</sup> बजाहिर<sup>१२</sup> खाक<sup>१३</sup> के पुतले हैं यकसाँ<sup>१४</sup> सब, मगर ।  
कोई है अक्सीर<sup>१५</sup> इनमें और कोई खाक<sup>१६</sup> है ॥
५. आदमी कहते है जिनको, कम हैं दुनिया मे वोह लोग ।  
यो तो सब औलादे-आदम<sup>१७</sup> से यह बस्ती है भरी ॥
- ६ बजाहिर<sup>१८</sup> सब है इन्साँ, लेक<sup>१९</sup> बातिन<sup>२०</sup> की खुदा जाने ।  
कि हैं इन्सान इनमे कितने और हैवान<sup>२१</sup> कितने हैं ?
७. न हो कुछ भी अमल<sup>२२</sup> और हो किताबो से लदा ।  
'जफर' उस आदमी को हम तसव्वुर<sup>२३</sup> वैल करते है ॥

---

१ ससार २ असम्भव ३ दीपक ४ चाव ५ मनुष्यता ६ मनुष्य  
७ यदि ८ प्रकट रूप मे, देखने मे ९ आकृति, ढाँचा १०. प्रतिबिम्ब, साए  
११ यद्यपि १२. प्रकट, प्रत्यक्ष रूप मे १३. माटी के १४ बराबर १५  
रसायन, कीमिया १६ मिट्टी, धूल १७ मानव-सन्तति १८ देखने मे,  
प्रत्यक्ष रूप मे १९. परन्तु २०. अन्दर, २१ पशु २२. आचरण  
२३. खयाल ।

८. जानवर<sup>१</sup>, आदमी<sup>२</sup>, फ़रिश्ता<sup>३</sup>, खुदा<sup>४</sup> ।  
आदमी की है सैकड़ों किस्में<sup>५</sup> ॥

—जफर

९. शक्लो-सूरत<sup>६</sup> से जाहिर है कि हैं इन्सान के पुतले ।  
मगर ऐमाल<sup>७</sup> कहते हैं कि है गैतान<sup>८</sup> के पुतले ॥  
१०. आदमीयत<sup>९</sup> और गै<sup>१०</sup> है, इल्म है कुछ और गै ।  
लाख तोते को पढाया फिर भी हैवा<sup>११</sup> ही रहा ॥

—जीक

११. नाज<sup>१२</sup> है ताकते-गुफ्तार<sup>१३</sup> पै इन्सानो<sup>१४</sup> को ।  
वात करने का सलोका<sup>१५</sup> नहीं नादानो<sup>१६</sup> को ॥

१२. सराफन<sup>१७</sup> इसमें नहीं इन्सा की,  
उसने दुनिया में क्या कमाया ?  
वले<sup>१८</sup> बुजुर्गी<sup>१९</sup> छुपी है इसमें,  
कि उसने अपने को क्या बनाया ?

—हाली

१३. देखने में गो सरापा<sup>२०</sup> सूरते इन्सा<sup>२१</sup> है तू ।  
अपनी सीरत<sup>२२</sup> में जियादातर<sup>२३</sup> मगर हैवा है तू ॥

—कमाल

१४. हुस्ने-सीरत<sup>२४</sup> पर नजर कर, हुस्ने-सूरत<sup>२५</sup> को न देख ।  
आदमी है नाम को गर खू<sup>२६</sup> नहीं इन्सान की ।

—आरजू

१ पशु २ मनुष्य ३ देवता ४ परमात्मा ५ प्रकार, रूप  
६ आकृति से ७. कर्म, आचरण, व्यवहार ८ राक्षस ९. मानवता  
१०. वस्तु ११ पशु १२. गर्व १३ वक्तृत्व शक्ति १४ मनुष्यो १५.  
ढग १६ मुखों १७ विगिष्ठता, श्रेष्ठता १८ किन्तु, मगर १९ बड़प्पन,  
गौरव २० आपाद-मस्तक, मिर में पैर तक २१ मनुष्य की आकृति २२.  
स्वभाव २३ अधिकांशत २४ स्वभाव-सौन्दर्य २५ आकृति की सुन्दरता को  
२६ स्वभाव, आदत ।

१५ पढके दो कलमे अगर कोई मुसलमा<sup>१</sup> हो जाय ।  
फिर तो हैवान भी दो रोज मे इन्साँ हो जाय ॥

—मुस्ला

१६ खेलते हैं जो मजलूमो<sup>२</sup> की जानो<sup>३</sup> से ।  
हैवान अच्छे है ऐसे इन्सानो से ॥

—खालिश दर्दो

१७. अम्ने-आलम<sup>४</sup> तो मुश्किल<sup>५</sup> नहीं है ।  
आदमी, आदमी हो तो जाए ॥

—अनवर

१८ इन्साँ की जहालत<sup>६</sup> का अभी है वही मेयार<sup>७</sup> ।  
है सबसे सिवा<sup>८</sup> पुस्ता<sup>९</sup> दलील<sup>१०</sup> आज भी तलवार ॥

—मुस्ला

१९ मजहब से न ईमान को खतरा है बहुत,  
दुनिया मे न शैतान से खतरा है बहुत ।  
सच पूछे जो मुझसे कोई 'फरहत' साहब,  
इन्सान का इन्सान से खतरा है बहुत ॥

—फरहत

२० दरिन्दो<sup>११</sup> मे हुआ करती हैं अब सरगोशियाँ<sup>१२</sup> इस पर ।  
कि इन्सानो से बढकर कोई खूँ-आशाम<sup>१३</sup> क्या होगा ?

—आदीब

२१ 'मीर' साहब गर फरिश्ता<sup>१४</sup> हो तो हो ।  
आदमी होना मगर दुशवार<sup>१५</sup> है ॥

—मीर

१. मुसलमान २ पीडितो की ३ प्राणो से ४ विश्व-शान्ति ५ कठिन ६ अज्ञानता, नासमझी का ७ स्तर, घरातल ८ अधिक ९ पक्की, दृढ १० तर्क ११ खूँखार, जानवरो १२ कानाफूसी, चर्चा १३ रक्त-पिपासु, खून बहाने वाला १४ देवता १५ कठिन ।

२२. दिल-सोज<sup>१</sup> नहीं है अब आहें, तासीर<sup>२</sup> नहीं अफसानो में ।  
दुनिया में दिखावा आम हुआ, अखलास<sup>३</sup> नहीं इन्सानो में ॥
२३. खुदा ! कुछ भी न दे, फिर भी यह सौ देने का देना है ।  
अगर इन्सान के पहलू में तू इन्सान का दिल दे ॥
२४. मुल्ला दुखी, रहमान नहीं मिलता है,  
पडित दुखी, भगवान नहीं मिलता है ।  
मैं हूँ दुखी इन्सानो की इस वस्ती में  
ढूँढ़े से इन्सान नहीं मिलता है ॥

—कमल

२५. दर्दे-दिल, “पासे-वफा”, जज्वए-ईमा<sup>४</sup> होना ।  
आदमीयत है यही और यही इन्साँ होना ॥

—चकवस्त

२६. न वोह रास्ते हैं, न वोह मंजिले हैं,  
वदल ही दिया जैसे रुख जिन्दगी ने ॥  
अभी आदमी, आदमी का है दुश्मन,  
अभी खुद को समझा नहीं आदमी ने ॥

—दर्द सईदी

२७. भटके हुए इन्सान को देखो तो जरा,  
इस अक्ल के नादान को देखो तो जरा ।  
किस तरह अकड़-अकड़ के रखता है कदम,  
दो पाँवों के हैवान को देखो तो जरा ॥

—हसरत

२८. सच पूछिए तो मिलना मुमकिन नहीं जहाँ में ।  
दाना<sup>५</sup> भी आदमी-सा, नादान<sup>६</sup> भी वशर-सा ॥

—बेदिल

---

१ दिल को तडफा देने वाली २ प्रभाव, असर ३ सदाचार, प्रेम-भाव ४ मानसिक पीड़ा की अनुभूति ५ नेकी का गुण ६ धर्म-श्रद्धा का भाव ७ बुद्धिमान ८. मूर्ख, नासमझ ।

- २९ हुस्ने-सूरन<sup>१</sup> महज<sup>२</sup> बेरौनक<sup>३</sup> है सीरत<sup>४</sup> के बढू<sup>५</sup> ।  
जिन गुलो<sup>६</sup> मे वू<sup>७</sup> नही वोह खुगनुमा<sup>८</sup> कहने को है ॥
- ३० और कुछ हाजत<sup>९</sup> नही है दोस्ती के वास्ते ।  
आदमी होना है काफी<sup>१०</sup> आदमी के वास्ते ॥
- ३१ आओ वोह सूरत<sup>११</sup> निकाले, जिसके अन्दर जान<sup>१२</sup> हो ।  
आदमीयत दीन हो, इन्सानियत ईमान हो ॥
- ३२ मैं शरावे-वहम आबाई<sup>१३</sup> का मतवाला नही ।  
आदमीयत से कोई शै<sup>१४</sup> दहर<sup>१५</sup> मे वाला<sup>१६</sup> नही ॥

—जोश

- ३३ सभी कुछ हो रहा है, इस तरक्की के जमाने मे ।  
मगर यह क्या गजब है कि आदमी इन्साँ नही होता ॥

—फिराक

- ३४ न दौलत याद आती है, न गम होता है सरबत<sup>१७</sup> का ॥  
जिसे रोती है दुनिया, वह है जौहर<sup>१८</sup> आदमीयत का ॥
- ३५ सीरत<sup>१९</sup> के हम गुलाम है, सूरत<sup>२०</sup> हुई तो क्या ?  
सुखों-सफेद मिट्टी की मूरत हुई तो क्या ।
३६. खुदा तो मिलता है, इन्सान नही मिलता ॥  
यह जिन्स वोह है कि देखी कही-कहीं मैंने ॥

—इक़बाल

- ३७ आदमी होना बहुत दुशवार है ।  
फिर फरिश्ते हिर्से-आदम<sup>२१</sup> क्या करे ?

—दाग

---

१ शरीर-सौन्दर्य २ केवल ३ अशोभास्पद ४ स्वभाव ५ बिना  
६ फूलो ७ सुगन्ध ८ सुन्दर ९ आवश्यकता १० पर्याप्त ११ ढग,  
तरीका, उपाय १२ प्राण १३ परम्परागत, रूढि रूपी शराब का १४ चीज  
१५. ससार १६ ऊँची १७ पूँजी का १८ गुण, खूबी १९ स्वभाव  
२०. शम्ल, शरीर-सौन्दर्य २१ मनुष्य होने का लालच ।

३८ वस कि दुशवार है हर काम का आसा<sup>१</sup> होना ।  
आदमी को भी मुयस्सर<sup>२</sup> नही इन्सा<sup>३</sup> होना ॥

— गालिव

३९ इस दर्जा गिराया है खुद को, इस दौर<sup>३</sup> के आदमजादोने<sup>४</sup> ।  
इन्मान तो है फिर भी इन्सा<sup>५</sup>, हैवानो को गरमाते हैं ॥

— मजर

४०. हमने माना हो फग्गिते शेख जी ।

आदमी होना बहुत दुशवार है ॥

४१ गैतां भी अमां<sup>६</sup> मांगता है इनके अमल<sup>६</sup> से ।

क्या हजरते-आदम<sup>७</sup> की भी औलाद गजब है ॥

— जोक

४२ दुनियां वढी ननज्जुले-इन्सानियत<sup>८</sup> के साथ ।

सब कुछ यहाँ मही, मगर इन्सा<sup>९</sup> नही रहा ॥

— अब्बास सहारनपुरी

४३ हो गया क्या आदमी को ऐ खुदा ।

कुछ खयाले-आदमीयत ही नही ॥

४४ उठ गये दुनिया मे मानी-आश्ना<sup>१०</sup> ।

ऐ जिगर ! सूरत के बन्दे रह गये ॥

— जिगर

४५ है और कोई गै इन्मानियत मेरे तखयुल<sup>१०</sup> मे ।

खयालो मे कभी तस्वीरे-इन्सा<sup>११</sup> देख लेता हूँ ॥

— सीमाव

४६ इस जमाने का इन्कलाव<sup>१२</sup> न पूछ ।

रुह गैलान की, शकल आदम की ॥

— जिगर

---

१ सरल २ प्राप्त, नसीब ३ युग ४ आदमियो ने ५ शरण ६  
करतूत ७. बाबा आदम ८. मनुष्यता की अवन्ति ९ तत्त्वाथ-प्रेमी १०  
विचार ११ मनुष्य का चित्र १२ परिवर्तन ।

४७ इन्साँ कहाँ है ? किस कुरे<sup>१</sup> मे गुम है ।  
याँ तो कोई हिन्दू है मुसलमाँ कोई ॥

—जोश

४८. चिगाग<sup>२</sup> इन्सानियन के हरमू,<sup>३</sup> न जब तक इन्साँ जला सकेगे ।  
रहेगा छाया हुआ अधेरा, फिजा<sup>४</sup> भी तारीक<sup>५</sup> ही मिलेगी ॥

—वारिस

४९ इन्सानियत कि जिससे अव्वारत<sup>६</sup> है जिन्दगी,  
इन्साँ के साये से भी गुरेजाँ<sup>७</sup> है आजकल ।  
शाइस्तगी के<sup>८</sup> भेम मे<sup>९</sup> रूहे-दरिन्दगी,<sup>१</sup>  
इन्सान के लिवाम मे गैताँ है आजकल ।  
वो दिन गए कि ताइरे-मकसूद<sup>१०</sup> था शिकार,  
इन्सान का शिकार खुद इन्साँ हे आजकल ॥

५० हरचन्द<sup>११</sup> कायनाते-दोआलम मे<sup>१२</sup> ऐ जिगर ।  
इन्साँ ही एक चीज़ है—इन्साँ मगर कहाँ ?

५१ जब तक इन्साँ पाकतीनत<sup>१३</sup> ही नही ।  
इल्मो-हिकमत, इल्मो-हिकमत ही नही ।  
आदमी के पास सब कुछ है, मगर—  
एक तनहा<sup>१४</sup> आदमीयत ही नही ॥

—जिगर

५२ राजदारे-खुदी<sup>१५</sup> हो तो जाये, हासिले-जिन्दगी<sup>१६</sup> हो तो जाये ।  
अमले-आलम तो मुश्किल नही है, आदमी आदमी हो तो जाये ॥

—अनवर साबरी

---

१ कोने मे २ दीपक ३ चारो ओर ४ वातावरण ५ अन्धकार पूर्ण  
६ श्रेष्ठ, उत्तम ७, भागती हुई, पास न आने वाली ८ शिष्टता एवं  
सम्पत्ता के ९ हिसक पशु की आत्मा १० इच्छा का पछी ११ यद्यपि १२  
उभय लोक मे, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मे १३ शुद्धात्म स्वच्छ प्रकृतिवाला १४  
एकमात्र, केवल १५ अहवाद का मर्मज्ञ १६ जीवन का निष्कर्ष, निबोड,  
सार ।



- ५३ इलाही दुनिया मे और कुछ दिन, अभी कयामत<sup>१</sup> न आने पाये।  
तेरे बनाये हुए बशर को, अभी मैं इन्साँ बना रहा हूँ ॥  
—विस्मिल सईदी
५४. इन्सानियत खुद अपनी निगाहो मे है जलील<sup>२</sup> ।  
इतनी बुलन्दियो पै<sup>३</sup> तो इन्साँ न था कभी ॥  
—जगन्नाथ आजाद
५५. कबूल<sup>४</sup> करते न हम अजल मे<sup>५</sup>, किसी तरह यह लिवासे-इन्साँ ।  
खबर जो होती कि पस्त इस दर्जह<sup>६</sup> फितरते-आदमी<sup>७</sup> मिलेगी ॥  
—आरिफ बांकोटी
५६. यह दिल बयाये-फिरका परस्ती का<sup>८</sup> है गिकार ।  
इन्सानियत की मौत नुमायाँ<sup>९</sup> अभी से है ॥  
—निशात सईदी
- ५७ यह दुनिया है या दरिन्दो की<sup>१०</sup> वस्ती ?  
है खाइफ<sup>११</sup> यहाँ आदमी आदमी से ॥  
—एजाज सद्दीकी
- ५८ जहाँ इन्सानियत वहगत के<sup>१२</sup> आगे जिवह<sup>१३</sup> होती है ।  
वहाँ जिल्लत<sup>१४</sup> है दम लेना, वहाँ बेहतर है मर जाना ॥  
—गुलजार देहलवी
- ५९ इस फिक्रो-नज़र की दुनियाँ से, इन्साँ का उभरना लाजिम है ।  
गुल कैसे खिलेगे आइन्दा<sup>१५</sup> ? आईने-गुलिस्ता<sup>१६</sup> क्या होगा ?  
—नज़र

---

१, प्रलय २ अष्ट, तिरस्कृत ३ ऊचाइयो पर, उन्नति पर ४. स्वीकार ५ सृष्टि के आदि काल मे, प्रारम्भिक काल मे ६ इस सीमा तक ७. मनुष्य की प्रकृति, स्वभाव ८ साम्प्रदायिक एवं धार्मिक भेदभाव की महामारी का ९ व्यक्त, प्रकट, स्पष्ट १० जंगली जानवरों की ११. भयभीत १२ पागलपन, आस के १३ कत्ल १४ पाप, गुनाह १५ भविष्य मे, आगे १६ उद्यान का विधान, नियम ।

६० कौन अब नेकी करे इन्सानियत के नाम पर ।

नेकियाँ तो जिस कदर थी सर्फ-ईमा<sup>१</sup> हो गई ॥

—अर्श मलसियानी

६१ नामजा<sup>२</sup> आहाम<sup>३</sup> कर सकते न हो जिनका शिकार,  
गाये-बाजे पर न हो जिनके अकायद<sup>४</sup> का मदार<sup>५</sup>,  
ऐ खुदा । हमको नजाए कुफ्रो-ईमा<sup>६</sup> से बचा,  
अपने हिन्दू से बचा, अपने मुसलमाँ से बचा,  
रूह की रफअत मे<sup>७</sup> जो हो आस्मानी<sup>८</sup> आदमी,  
अलगरज<sup>९</sup> मेरे वतन को जिन्दगी दे ऐ खुदा ।  
आदमी दे, आदमी दे, आदमी दे, ऐ खुदा ॥

—जोश

६२ इस अहद<sup>१०</sup> मे कमयाबिए-इन्साँ<sup>११</sup> है कुछ ऐसी ।

लाखो मे व-मुश्किल<sup>१२</sup> कोई इन्साँ नजर आया ॥

६३. गर्मे-पैकार<sup>१३</sup> हुई गुर्ग-खसाइल<sup>१४</sup> अकवाम<sup>१५</sup> ।

खूने-इन्साँ है, दरिन्दो को<sup>१६</sup> हलाल ऐ साकी !

आदमीयत का है तावूत<sup>१७</sup> सरे-दोश-कमाल<sup>१८</sup> ।

आदमीयत की यह पामाले-कमाल<sup>१९</sup> ऐ साकी ।

—निहाल सेवहारवी

६४. अजमते-इन्साँ<sup>२०</sup> नहीं है, नाज्जे-दाराई का<sup>२१</sup> नाम ।

आदमीयत है खुद इन्साँ की परीजाई का<sup>२२</sup> नाम ॥

१. ईमान के लिए खर्च २ अनुचित ३ बहम, अन्ध विश्वास ४. विश्वास, श्रद्धा का ५ निर्भरता, दारमदार ६ धर्म-अधर्म के झगड़े से ७ आत्मा की विशाल उदारता, दिल के हौसले वाले ८ देवतुल्य ९. भाव यह है, तात्पर्य यह कि १० युग ११ मनुष्यता का अकाल १२ कठिनता से १३ लड़ने-मरने मे लीन १४ भेड़ियो जैसे स्वभाव वाली १५ जातियाँ १६ खूनी जानवरों की १७ अर्थों, जनाजा १८. चालाक कन्धों पर १९. गुगो का पतन २०. मनुष्य की महता, प्रतिष्ठा २१ वादशाही घमण्ड का २२ नम्रता ।

जल्द इम आईने-जुल्मन को<sup>१</sup> मिटाया जायगा ।  
कैमरो-कस्त्री को<sup>२</sup> अब इन्साँ बनाया जायगा ॥

६५ आदमीयन है फरिश्तो से बहुत दूर 'रविश' ।

वाइजो-गहर को<sup>३</sup> दुगवार है इन्साँ होना ॥

६६. आदमीयन<sup>४</sup> की बलन्दी<sup>५</sup> लेकर ।

बादगाहो की निगाहो से गुजर ॥

६७ वह इन्साँ इन्किलावे-आस्माँ<sup>६</sup> की राह तकता है ।  
कि जिमका मुन्तजिर<sup>७</sup> है, इन्किलावे-आस्माँ अब तक ॥

६८ नजर के सामने दम तोड़ते रहे इन्साँ ।

यह जिन्दगी हो तो इस जिन्दगी से क्या हासिल ?

६९ यह है दौरे-जलाले-इब्ने-आदम<sup>८</sup> ।

न सुलतानी न खाकानी के<sup>९</sup> दिन है ॥

—रविश सद्दीकी

७० जब-जब इसे सोचा है, दिल धाम लिया मैंने ।

इन्सान के हातां से इन्मान पै जो गुजरी ॥

७१ क्या करे हम भी, क्या करो तुम भी ।

आदमी आदमी का दुश्मन है ।

—फिराक़ गोरखपुरी

७२. इन्सानो मे साँप बहुत है,

कातिल भी जहरीले भी ।

इनसे बचना मुश्किल है,

आजाद भी है फुर्तीले भी ॥

—हफीज़ जालन्धरी

---

१ अन्धकार में डालने वाले विधान को २ बड़े-छोटे सबको ३ नगर के उपदेश को ४ मानवता की ५ उच्चता, उन्नति, विकास ६. आकाश-परिवर्तन, क्रान्ति ७ प्रतीक्षा करने वाला ८ मानव पुत्रों के गौरव का युग ९ बादगाहत और रईमों के ।

७३. यह कहते हैं कि सब मख़लूक<sup>१</sup> से इन्सान अफ़जल<sup>२</sup> है ।  
न हो जब जीहरे-जाती<sup>३</sup> तो फिर दावा मोह्मल<sup>४</sup> है ॥
- ७४ जो जुल्म<sup>५</sup> इन्साँ करता है, वह हैवाँ<sup>६</sup> कर नहीं सकता ।  
वह कोन ऐसी जफा<sup>७</sup> है, जोकि इन्साँ कर नहीं सकता ?
- ७५ गिरे इन्मान तो हैवान की हद से भी गिर जाये ।  
वने गैताने-सानी<sup>८</sup> आदमीयत से जो फिर जाये ॥

—अस्मन् लखनवी

७६. मुझको इन्सान की जरूरत है ।  
रहम खाकर खुदा न दे जाना ॥
- ७७ कोई यजदाँ<sup>९</sup> है यहाँ कोई फरिश्ता<sup>१०</sup> है यहाँ ।  
क्या बुराई थी अगर, आदमी इन्साँ होता ॥
- ७८ जिसे आदमीयत नहीं रास आई ।  
वही इब्ने-आदम<sup>११</sup> खुदा हो गया है ॥
- ७९ मद्रिम<sup>१२</sup> है दैरो-कावाके गर दोस्तो चिराग ।  
इन्मानियत के नक्के-कदम<sup>१३</sup> ही से काम लो ॥
- ८० तखलीक-कायनात के<sup>१४</sup> दिलचस्प जुर्म पर<sup>१५</sup> ।  
हँसता तो होगा आप भी यजदाँ<sup>१६</sup> कभी-कभी ॥
- ८१ यजदा-ओ-अहरमन के<sup>१७</sup> ज़माने गुजर गये ।  
अब वक्त हर लिहाज से<sup>१८</sup> इन्साँ का वक्त है ॥
८२. ज़ोरे-ख़लाक को<sup>१९</sup> तफ़रीहका सामाँ<sup>२०</sup> होना ।  
किस कदर मज़ह-अँगज<sup>२१</sup> है इन्साँ होना ॥

—अदम

१ प्राणिगो से, २ श्रेष्ठ ३. निजी गुण मानवता ४. व्यर्थ, झूठा ५. अत्याचार ६. पशु ७. अन्याय, अनौति, अत्याचार ८ दूसरा शैतान ९. ईश्वर १०. देवता ११. मानवपुत्र १२. मन्द १३. चरण-चिन्ह १४. सृष्टि निर्माण के १५. अपराध पर १६. ईश्वर १७. खुदा और शैतान के १८. प्रत्येक दृष्टि के १९. खुदा के २०. मनोरजन का साधन २१. उपहासास्पद ।

८३. आदमी इकवार छूकर सरहदे-हैवानियत<sup>१</sup> ।  
लौट आएगा कभी इन्सानियत की राह पर<sup>२</sup> ॥

—दानिश

८४. इन्सानियत से जिसने वशर को<sup>३</sup> गिरा दिया ।  
या रब<sup>४</sup> ! वह बन्दगी<sup>५</sup> हुई या अवतरी<sup>६</sup> हुई ॥

—अमन

८५. इन्सान है जहा मे वह आदमी कि जो ।  
मुतआस्मुवो-हरीस<sup>७</sup> नही, ऐववी<sup>८</sup> नही ॥




---

१ पशुता की सीमा २ मानवता की पगडन्डी पर ३ मनुष्य को ४ हे प्रभो ! ५ उपासना, भक्ति ६ पतनोन्मुखी स्थिति, ७ पक्षपाती, कट्टर, नकुचित हृदय और लालची ८ दोषदर्शी, छिद्रान्वेगी ।

यह है तहजीब, आदमी में हो हया !



१. यह नहीं तहजीब<sup>१</sup> आला मूट हो ।  
 हैट सर पर पाँवों में फुल<sup>२</sup> बूट हो ॥  
 आँखों पर ऐनक, कलाई पर घड़ी ।  
 पीछे कुत्ता, हाथ में फैंसी छड़ी ॥  
 यह नहीं तहजीब ऐसी शान हो ।  
 देखे नफरत<sup>३</sup> से गरीब इन्सान को ॥  
 यह नहीं तहजीब, पहने वह लिवास ।  
 देख कर जिसको हया<sup>४</sup> आये न पास ॥  
 यह नहीं तहजीब, नगे सर फिरे ।  
 वक्त खोये सीधी-ट्रेडी माँग में ॥  
 यह है तहजीब आदमी में हो हया ।  
 दिल में हर लहजा<sup>५</sup> रहे खौफ-खुदा<sup>६</sup> ॥  
 जीने का मकसद हो खिदमत<sup>७</sup> खल्क<sup>८</sup> की ।  
 आदमी के काम आए आदमी ॥  
 बस शराफत<sup>९</sup> है निहायत खूब<sup>१०</sup> शै<sup>११</sup> ।  
 नाम इसका दूसरा तहजीब है ॥

— नवतर

---

१ सम्बन्धता २ पूरा ३ घृणा ४ लज्जा, शर्म ५ प्रत्येक क्षण  
 ६ प्रभु का डर ७ सेवा ८ जनता की ९ सज्जनता, शिष्टता १०. बहुत  
 बढ़िया, उत्तम ११ वस्तु ।

- २ जिम रोगनी मे लूट ही की आपको सूभे,  
तहजीव की मै उसको तजल्ली<sup>१</sup> न कहूँगा ।  
लाखो को मिटा कर जो हजारो को उवारे<sup>२</sup>,  
उसको तो मैं दुनिया की तरक्की<sup>३</sup> न कहूँगा ॥
- ३ हमको नई रविग<sup>४</sup> के हलक<sup>५</sup> जकड रहे है ।  
वाते तो बन रही है और घर उजड़ रहे है ॥

—दाग

- ४ यूनानो मिश्र रुमाँ सब मिट गए जहाँ से,  
अब तक मगर है वाकी नामो-निशाँ हमारा ।  
कुछ वान है कि हस्ती<sup>६</sup> मिटती नही हमारी,  
सदियो रहा है दुश्मन दौरे-जमाँ<sup>७</sup> हमारा ॥

—इकबाल

- ५ इन्साँ की जहानन<sup>८</sup> का अभी है वही मेयार<sup>९</sup> ।  
है मव से मिवा<sup>१०</sup> पुख्ता दलील<sup>११</sup> आज भी तलवार ॥

—मुल्ला

६. तहजीव का आईना<sup>१२</sup> अब तक  
गर्मिन्दए-ग्रहमाँ<sup>१३</sup> हो न सका ।  
क्यो गोरे-तरक्की<sup>१४</sup> है या रव<sup>१५</sup> ।  
इन्माँ ही जब इन्माँ हो न सका ॥

—शफीक

- ७ नई तहजीव मे दिक्कत<sup>१६</sup> जियादह<sup>१७</sup> तो नही होती ।  
मजाहव<sup>१८</sup> रहते है कायम, फकत<sup>१९</sup> ईमान<sup>२०</sup> जाता है ॥

—अकबर

---

१ ज्योति, रोगनी २ उठाए ३ उन्नति ४ टग, पद्धति के ५ क्षेत्र, सीमा ६ अस्तित्व ७ काल-चक्र ८ अज्ञानता ९ मायदण्ड १० अधिक ११ प्रबल युक्ति १२ दर्पण १३ आभारी, कृतज्ञ १४ उन्नति या प्रगति का कोलाहल १५ हे प्रभो । १६ कठिनाई १७ अधिक १८ पन्थ, सम्प्रदाय १९ केवल मिर्क २० धर्म ।

८ न वह रास्ते है, न वह मजिले हैं,  
बदल ही दिया जैसे रख<sup>१</sup> जिन्दगी ने ।  
अभी आदमी, आदमी का है दुश्मन,  
अभी खुद को समझा नही आदमी ने ।  
जहाँ सैकड़ो वुतकदे<sup>२</sup> ढा दिये है,  
खुदा भी तराशे हैं कुछ बन्दगी ने ॥

—बर्द सईदी

९. पुरानी रोशनी मे और नई मे फर्क इतना है ।  
उसे किशनी नही मिलती, इसे साहिल नही मिलता ॥  
१० तालीम हमे दी जाती है, वह क्या है, फकत बाजारी है ।  
जो अक्ल सिखाई जाती है, वह क्या है, फकत सरकारी है ।

—अकबर

११. इस जगह तो कापती है कहर<sup>३</sup> की परछाईया ।  
जिन्दगी गायब<sup>४</sup> है मुर्दे सास लेते है यहा ॥

—जोश

१२. हमे घेरे हुए है हर तरफ इस्लाह<sup>५</sup> की मीजे<sup>६</sup> ।  
मगर यह हिस्<sup>७</sup> नही है कि डूबते है या उभरते है ?  
१३ दयारे-मगरिब के रहने वालो ! खुदा की बस्ती दुका नही है ।  
खरा जिसे तुम समझ रहे हो, वही जरे-कम अय्यार होगा ॥  
तुम्हारी तहजीब अपने खजर<sup>८</sup> से आपही खुदकशी<sup>९</sup> करेगी ।  
जो शाखे-ना जुक<sup>१०</sup> पै आशियाना<sup>११</sup> बनेगा, नापायदार<sup>१२</sup> होगा ॥

—इकबाल

---

१ दिशा, ढग २ मन्दिर, मूर्ति-गृह ३. दैवी आपत्ति, दैवी कोप की,  
बलाए आस्मानी ४ लुप्त, समाप्त ५ सुवार की ६ लहरें, उमर्गे ७.  
सवेदन, अनुभव, एहसास ८ तलवार ९ आत्महत्या १०. कमजोर या  
पतली टहनी पर ११ घोंसला १२ कमजोर ।



- १४ न कोई तक़रीमे-वाहमी<sup>१</sup> है, न प्यार बाकी है अब दिलो मे ।  
ये सिर्फ तहरीर<sup>२</sup> मे डियर सर, है या 'जनावे-मुकरर भी'<sup>३</sup> है ॥
- १५ इल्मी तरक्कियो से जवाँ<sup>४</sup> तो चमक गई ।  
लेकिन अमल<sup>५</sup> वही हैं फरेवो दगा<sup>६</sup> के साथ ॥
- १६ तालीम का शोर ऐसा, तहजीब का गुल<sup>७</sup> इतना ।  
वरकत<sup>८</sup> जो नहीं होती, नीयत<sup>९</sup> की खराबी है ॥
- अकबर
- १७ वक़ीले-अहले मगरिव,<sup>१०</sup> यह जमाना है तरक्की का ।  
मुझे भी शक<sup>११</sup> नहीं इसमे कि गफलत<sup>१२</sup> का जमाना है ॥
- १८ सफाईयाँ हो रही है जितनी, दिल उतने ही हो रहे है मैले ।  
अन्वेरा छा जायेगा जहाँ मे, अगर यही रोगनी रहेगी ॥
- जोश
- १९ तरक्की मुस्तकिल<sup>१३</sup> वह है, जो रुहानी<sup>१४</sup> हो ए-अकबर ।  
उडा जो जर्ऐ-अन्सर<sup>१५</sup>, वह फिर सूए-जमी<sup>१६</sup> आया ॥
- २० वह दिल मे खुश है—वी० ए० पास अब मेरा भतीजा है ।  
मगर उनसे कोई पूछे कि क्या इसका नतीजा<sup>१७</sup> है ॥
- २१ अब पढे लिखो का यह दस्तूर है ।  
जो कहे वीवी उन्हे मजूर हैं ॥
- २२ तिपल<sup>१८</sup> मे वू<sup>१९</sup> आए क्या, माँ-बाप के अतवार<sup>२०</sup> की ।  
दूब तो डब्बे का है, तालीम<sup>२१</sup> है सरकार की ॥

---

१. पारस्परिक निष्ठाचार २. लेखन ३. पूज्य, मान्यवर, महाशय  
४. वाणी ५. आचार-व्यवहार ६. छल-कपट ७. कोलाहल ८. बढ़ोतरी,  
कल्याण ९. मंकल्प, इरादा, खयाल, आशय की १०. पश्चिम वालो के  
कथनानुसार ११. मन्देह १२. अमावधानी, अज्ञानता, देखवरी का १३.  
स्वायी १४. आध्यात्मिक १५. परमाणु का टुकड़ा १६. पृथ्वी की ओर १७.  
परिणाम १८. वच्चो मे १९. गन्ध २०. रग-ढंग, गुणो की २१. शिक्षा ।

यह है तहजीब आदमी मे हो हया ।

२३. तमाशा देखिये बिजली का मगरिब<sup>१</sup> और मशरिक<sup>२</sup> मे ।  
कलो<sup>३</sup> मे है वहाँ दाखिल,<sup>४</sup> यहाँ मजहब पै गिरती है ॥
- २४ नज़र उनकी रही कालिज मे बस इल्मी<sup>५</sup> फवायद<sup>६</sup> पर ।  
गिरा की चुपके-चुपके बिजलियाँ दीनी<sup>७</sup> अकायद<sup>८</sup> पर ॥

—अकबर

- २५ इज्जत<sup>१</sup> कुछ और शै<sup>२</sup> है, नुमायश<sup>३</sup> कुछ और शै ।  
यूँ तो यहाँ खुरोस<sup>४</sup> के सरपर भी ताज है ॥  
नाज है ताकते-गुफ्तार<sup>५</sup> पै इन्सानो को ।  
बात करने का सलीका<sup>६</sup> नही हैवानो को ॥

—आरजू

- २६ मसावात<sup>१</sup> इसको कहते है, नई तहजीब क्या कहना ?  
कि सूरत हो गई यकसाँ<sup>२</sup> जनानी और मर्दानी ॥
२७. आजकल है अदबियत<sup>३</sup> का यह मैयार<sup>४</sup> 'जरीफ' ।  
वही उस्ताद<sup>५</sup> है मश्शाक<sup>६</sup> जो हो गाने का ॥

—जरीफ

२८. बाज़ार नया, ग्राहक भी नये, अब जिन्से-वफा<sup>१</sup> की कद्र नही ।  
बेसूद<sup>२</sup> नुमाइश रहने दे, ऐ दिल ! यह माल पुराना है ॥

—अनवर

२९. महर<sup>१</sup> सदियो से चमकता ही रहा अफलाक<sup>२</sup> पर ।  
रात ही तारी<sup>३</sup> रही इन्सान के इदराक<sup>४</sup> पर ॥

---

१ पश्चिम २ पूर्व ३ मशीनो मे ४ प्रविष्ट ५. शैक्षणिक ६ लाभोपर ७ धार्मिक ८. विश्वासो, विधि-विधानो पर ९ प्रतिष्ठा १०. चीज ११. प्रदर्शन, दिखावा १२. मुगं के १३ वाक्शक्ति १४ ढग, तरीका १५ बराबरी, समानता १६ बराबर, एक—जैसे, समान १७. साहित्यिकता १८ मापदण्ड १९ अध्यापक, गुरु २० अभ्यस्त २१ नेकी के माल की २२. वेकार, व्यर्थ, अलाभप्रद २३ सूर्य २४. आकाश पर २५ छाई रही २६. बोध, ज्ञान ।

अक्ल के मैदान में जुल्मत<sup>१</sup> का डेरा ही रहा ।  
दिल में तारीकी,<sup>२</sup> दिमागो में अधेरा ही रहा ॥

—मजाज

३० फिक्रविन्दी है कही और कही जाते हैं ।  
क्या जमाने में पनपने की यही बातें हैं ॥

—इकबाल

३१ उफक<sup>३</sup> पर जग<sup>४</sup> का खूनी सितारा जगमगाता है ।  
हर इक भोका हवाका मौत का पैगाम<sup>५</sup> लाता है ॥

—मजाज

३२ रगे-दुनिया देखकर घबरा गया अपना तो जी ।  
भाई को भाई से भी इस दौर<sup>६</sup> में उल्फत<sup>७</sup> नहीं ॥

—दाग

३३ फरेव<sup>८</sup> देकर हयाते-नौ का<sup>९</sup>, हयात<sup>१०</sup> ही छीन ली है हमसे ।  
हम इस जमाने का क्या करेंगे, अगर यही है नया जमाना ॥

३४ अक्ल<sup>११</sup> बारीक<sup>१२</sup> हुई जाती है ।  
रूह<sup>१३</sup> तारीक<sup>१४</sup> हुई जाती है ।

—जिगर

३५. ढूँढने वाला सितारो की गुज़रगाहो का<sup>१५</sup>,  
अपने अफकार<sup>१६</sup> की दुनिया में सफर कर न सका ।  
जिसने सूरज की गुआओ<sup>१७</sup> को गिरफ्तार किया,  
जिन्दगी की शवे-तारीक<sup>१८</sup> सहर<sup>१९</sup> कर न सका ॥

—इकबाल

१. अन्धकार का २. अंधियारी, धुँधलापन ३. क्षितिज पर ४. युद्ध  
५. मन्देह ६. युग में ७. प्रेम ८. धोखा, वहकावा, भाँसा ९. नवजीवन का  
१०. जीवन ११. बुद्धि १२. सूक्ष्म, पैंनी १३. आत्मा १४. अन्धकार पूर्ण १५.  
रास्तो, मार्गो १६. चिन्तन, विचार, खयाल १७. किरणों को १८. अंधेरी  
रात १९. प्रभात, सुबह, प्रकाशपूर्ण, रोशन ।

३६ आग सब कुछ हो रहा है, इस तरक्की<sup>१</sup> के जमाने मे ।  
मगर यह क्या गजब है, आदमी इन्सा<sup>२</sup> नहीं होता ॥

—बक<sup>३</sup>

३७ जहालत<sup>४</sup> है इफा<sup>५</sup> पे छाई हुई ।  
तो दुनिया है चक्कर मे आई हुई ॥

३८. जिसे हम इल्म समझे, इतिकाए-बरबरीयत<sup>६</sup> है ।  
कि एटमबम बनाना आज शाने-आदमीयत है ॥  
घरौदे है हद्दे<sup>७</sup>-रगो-नस्लो-कौमो-मजहब के ।  
हुए दिल तग और आदर्श नीचे हो गये सबके ॥  
बुतो के नाम पर लडना, खुदा के नाम पर लडना ।  
गरज हर काम पर, हर नाम पर, हर गाम<sup>८</sup> पर लडना ॥  
गिरे इन्सान तो हैवान<sup>९</sup> की हद् से भी गिर जाए ।  
वने गैताने-सानी<sup>१०</sup> आदमीयत से जो गिर जाए ।

—अमन

३९ क्या करे हम भी, क्या करो तुम भी ।  
आदमी, आदमी का दुश्मन है ॥

४० रुपया राज करे, आदमी बन जाय गुलाम ।  
ऐसी तहजीब तो तहजीब की खुस्वाई<sup>११</sup> है ॥

४१ गिरती दुनिया ले जो सभाल, है कोई माई का लाल ?  
मजहब वाले दौलत वाले, दोनो बडे गुरू घंटाल ॥

—फिराक

४२ निगाहे जिस तरफ उट्ठी, वही है लूट का आलम ।  
दयानत<sup>१२</sup> मिट गई है अब न कुछ ईमान बाकी है ॥

---

१ प्रगति, उन्नति २ अज्ञानता, जडता, मूढता ३. विवेक, ज्ञान, बोध, ब्रह्मज्ञान ४ जघन्य अपराध ५ सीमाएं ६ पग, कदम ७ पशु ८ सीमा ९ दूसरा गैतान । १० निन्दा, बदनामी ११ सत्यता, ईमानदारी ।

ऐ भागने वाले । वक्त है यह,  
 हाँ सहने-चमन से<sup>१</sup> भाग निकल ।  
 जब बाग कफस<sup>२</sup> बन जायेगा,  
 उस वक्त गुरेजाँ<sup>३</sup> क्या होगा ?

५५. जिसको मैंने रेशमी फरगल<sup>४</sup> दिये ।  
 उसने बख्शा<sup>५</sup> है मुझे दामाने-चाक<sup>६</sup> ॥  
 क्या यही तहजीब की मैराज<sup>७</sup> है ?  
 जमा कर लाना हूँ जरू<sup>८</sup>, पाता हूँ खाक<sup>९</sup> ॥

—नदीम क़ासिमी

५६ फज़ाए-आस्माँ<sup>१०</sup> से वे-गुनह<sup>११</sup> वन्दो पै बमबारी ।  
 फना-कोशी<sup>१२</sup> की खातिर नस्ले-इन्सानी<sup>१३</sup> की तैयारी ॥  
 यह इन्सानो के अन्दर जज्बए-वह्शन<sup>१४</sup> अरे तौबा ।  
 दरिन्दो की-सी इन्सानो की यह खसलत<sup>१५</sup> अरे तौबा ॥  
 बहाना खूने-इन्साँ दौरे-मौजूदा<sup>१६</sup> का इक फन<sup>१७</sup> है ।  
 तबाही हाँ तबाही मशरिको-मगरिव<sup>१८</sup> मे कदगन<sup>१९</sup> है ॥  
 वही साइंस<sup>२०</sup>, जिस पर अहले-मगरिव<sup>२१</sup> नाज़<sup>२२</sup> करते हैं ।  
 वही तहजीबे-खूनी<sup>२३</sup>, मगरिवी<sup>२४</sup> दम जिसका भरते हैं ॥

—अमन लखवी

---

१. उद्यान के भीतर से २ पिंजरा, कारागार ३ पलायन, भागना  
 ४ लम्बे परिधान ५ प्रदान किया है ६ फटा वस्त्र ७ आदर्श, उच्चता,  
 लक्ष्य-विन्दु ८ घन ९ घूल, मिट्टी १० आकाश से ११ निरपराध १२.  
 युद्ध-लिप्सा १३ मनुष्य जाति १४ पागलपन के विचार १५. स्वभाव,  
 प्रकृति, आदत १६ वर्तमान युग १७ कला, गुण, हुनर १८. पूर्व और  
 पश्चिम में १९ वर्जित २०. विज्ञान २१ पश्चिम वाले २२ गर्व २३.  
 रक्षित मम्यता २४ पश्चिम वाले ।

५७ ज़रा देखो तो विगडी किस कदर हालत हमारी है ।  
रविश<sup>१</sup> विगडी, चलन बिगडा, हमारा पैरहन<sup>२</sup> बिगडा ॥

—खुशीद

५८ यह तहजीबे-ज़र-अफशा<sup>३</sup> दाग़दारे-खूने-आदम<sup>४</sup> है ।  
यह खू-आशामिए-सरमाया<sup>५</sup> कज्जाकी<sup>६</sup> से क्या कम है ?  
अब इस लानत को दुनिया से मिटा देने का वक्त आया ॥

५९ है रौशन कस्ने-दौलत मे<sup>७</sup> चिरागे-सर खुशी<sup>८</sup> अब तक ।  
ख़फा है भोपडो से जिन्दगी की रौशनी अब तक ।  
अँधेरे मे नई शमएँ जला देने का वक्त आया ॥

६० तमदुन<sup>९</sup> खुद-फरेबी<sup>१०</sup> और सियासत<sup>११</sup>, तग-दामानी<sup>१२</sup> ।  
बहुत गमनाक<sup>१३</sup> है, कागानए-आदम<sup>१४</sup> की वीरानी ।  
अब इस उजड़े हुए घर को बसा देने का वक्त आया ॥

६१. यह तूफाने-हसद<sup>१५</sup>, यह साजिशे-बुग़्ज़ो-रिया<sup>१६</sup> कब तक ?  
यह नफरत, आह जंजीरे-दरे-खल्के-खुदा<sup>१७</sup> कब तक ?  
हर-इक दर पर मुहब्बत फ़ी सदा<sup>१८</sup> देने का वक्त आया ॥

—रविश

१ आचरण, आचार-व्यवहार २ परिधान, लिबास ३ पूँजीवाद  
सम्पत्ता, धन-वैभव का गर्व ४ मानव रक्त से रजित है ५ रक्तलोलुप धन-  
सत्तावाद ६ लुटेरेपन से ७ पूँजीवाद के गढ़ मे ८ सुख-वैभव के दीपक  
प्रज्वलित हैं ९ सम्पत्ता १० आत्म-छल, आत्म-वचना ११ राजनीति १२  
सकीर्ण मनोवृत्ति १३ दुखपूर्ण, शोक-पूर्ण १४ मानवता का निवास-गृह  
(मानवता का निवास-गृह शोकपूर्ण एव उजाड़ है) १५ ईर्ष्या का तूफान  
१६ द्वेष तथा मायाचारी का पङ्कज १७ ईश्वरीय सृष्टि के द्वार की  
जजीर (साकल) कब तक लगी रहेगी १८ आवाज़ ।

नही बाकी रहा इन्सान मे जज्बा<sup>१</sup> गराफत<sup>२</sup> का ।  
अगर्व<sup>३</sup> देखने को आज भी इन्सान बाकी है ॥

४३. ऐ आस्मान ! तेरे खुदा से नही है खौफ<sup>४</sup> ।  
डरते है ऐ जमीन ! तेरे आदमी से हम ॥

—जोश

- ४४ न भाईयो से रही मिल्लत,<sup>५</sup> न यारो<sup>६</sup> से रही यारी<sup>७</sup> ।  
जो उल्फत<sup>८</sup> है तो जर<sup>९</sup> से है, यही वम सबको प्यारा है ॥
- ४५ .खुदा के फज्ल<sup>१०</sup> मे वीवी-मियाँ, दोनो मुहज्जब<sup>११</sup> हैं ।  
हिजाब<sup>१२</sup> उनको नही आता, इन्हे गुस्ता<sup>१३</sup> नही आता ॥

—अकबर

४६. यह राज<sup>१४</sup> अब कोई राज नही, सब अहले-गुलिस्ताँ<sup>१५</sup> जान गये ।  
हर शाख<sup>१६</sup> पे उल्लू बैठा है, अजामे-गुलिस्ताँ<sup>१७</sup> क्या होगा ?

—मुल्ला

- ४७ गुलशने-हस्ती<sup>१८</sup> मे यकरगी<sup>१९</sup> का आलम<sup>२०</sup> आम था ।  
पहले सिर्फ इक कौम थी, इन्सान जिसका नाम था ॥
४८. जो मरहले<sup>२१</sup> है दीन के, उन सबसे क्या गरज ?  
कॉलिज के पढने वालो को मजहब से क्या गरज ?

—विस्मिल

४९. पहले कभी समझ का उलट-फेर यूँ न था ।  
रौशन थी अक्ल, अक्ल का अन्धेर यूँ न था ॥

—अकबर

१ भावना, विचार, खयाल २ सज्जनता, सुशीलता, ३. यद्यपि ४ भय, डर ५ प्रेम-सद्भाव, मेल-जोल ६ मित्रो से ७ मित्रता, ८. प्रेम, मुहब्बत ९ धन १० कृपा, दया, मेहरबानी ११ सम्य, शिष्ट, शिक्षित १२ पर्दा, लज्जा, शर्म, हिचकिचाहट, सकोच १३. क्रोध १४ रहस्य, भेद १५ चमन वाले १६. टहनी १७ उद्यान का परिणाम १८. जीवन, ससारोद्यान १९. एकात्मता, समानता २० स्थिति, हालत २१ समस्याएँ, प्रश्न ।

५०. गामजन<sup>१</sup> सदियो से है, गो जादए-तहजीब<sup>२</sup> पर ।  
द्वर है इन्सानियत से नौए-इन्सानी<sup>३</sup> बहुत ॥

५१ है यह सब तहजीबे-हाजिरकी<sup>४</sup> करम-फरमाईयाँ<sup>५</sup> ।  
हो गया है आज अरजाँ<sup>६</sup> खूने-इन्सानी<sup>७</sup> बहुत ॥

—अफसर मेरठी

५२. यह तहजीबे-हाजिरकी<sup>८</sup> इश्वा-तराजी<sup>९</sup> ।  
कि है मर्द भी रक्के-जन<sup>१०</sup> तौबा-तौबा ॥  
वही सौमनातो के मेमार है, अब ।  
जो कल तक थे, खँवर-शिकन<sup>११</sup> तौबा-तौबा ॥

—मुअल्लिम

५३. वस्तियो-की-वस्तियाँ बर्बादो-वीराँ<sup>१२</sup> हो गई ।  
आदमी की पस्तियाँ<sup>१३</sup> आखिर नुमायाँ<sup>१४</sup> हो गई ॥  
कत्लो-गारन के हजारो दाग लेकर वहशते<sup>१५</sup> ।  
आज सुनते है कि फिर इस्मत-बदामाँ<sup>१६</sup> हांगई ॥

—अशं मलसियानी

५४ तहजीब का परचम<sup>१७</sup> लहराया  
हर शहरो-चमन वीरान<sup>१८</sup> हुआ ।  
तामीर का<sup>१९</sup> है सामाँ<sup>२०</sup> जो यही,  
तखरीब<sup>२१</sup> का सामाँ क्या होगा ?

१. मार्ग-रत २ सम्म्यता की पगडंडी पर ३ वर्तमान मानवता ४ वर्तमान सम्म्यता की ५ कृपा, मेहरवानियाँ ६ सस्ता ७ मानव-रक्त ८ वर्तमान सम्म्यता की ९ हाव-भाव दिखाने का भाव, नाजो-अन्दाज १० नारी को भी लज्जित करने वाले ११ खँवर नामक एक अरब दुर्ग को तोड़ने वाले १२. नष्ट-भ्रष्ट १३ पतितावस्थाएँ १४ उजागर, प्रकट १५ पागलपन १६ शील को लूटने वाली १७ झुंडा १८ उजाड़, सुनसान १९ निर्माण का २०. साधन-सामग्री २१, ध्वस, विनाश ।



- ६२ इसी तहज़ीवे-नी ने<sup>१</sup> की नसाइयत की<sup>२</sup> वरवादी ।  
 इसी ने छीन ली हम से मसरत की<sup>३</sup> फिरावानी<sup>४</sup> ॥  
 यही तहज़ीवे-नी है राहज़न<sup>५</sup> तकदीसो-ईमाँ<sup>६</sup> की ।  
 इसी तहजीव ने मजरूह<sup>७</sup> कर दी रूहे-ईमानी<sup>८</sup> ॥  
 खुदा महफूज़<sup>९</sup> रक्खे हमको इम तहजीव से दाइम<sup>१०</sup> ।  
 करे खुददारियो<sup>११</sup> की खालिके-अववर<sup>१२</sup> निगहवानी<sup>१३</sup> ॥
- ६३ नक़ल<sup>१४</sup> अँग्रेजो की फैशन मे तो करली तुमने ।  
 नकल, पर तुमसे तरक्की<sup>१५</sup> मे उतारी न गई ॥  
 किस तरह तौके-असीरी<sup>१६</sup> का उतर सकता है ?  
 जब कि यह टाई गले से भी उतारी न गई ॥  
 ताव मूँछो पै दिया, बाल सँवारे, लेकिन—  
 कौम की विगडी यह नक़दीर सँवारी न गई ॥




---

१ नयी सम्पत्ता २ सदुपदेशो, नसीहतो की ३ .खुशी की ४ प्रचुरता, अधिकता ५ लुटेरी ६ पवित्रता तथा धर्म ७ धायल, ८. धर्म-विश्वास-रूप आत्मा की, ९ निरापद, सुरक्षित, सही-सलामत १० नित्य, सदा ११. स्वाभिमान तथा आत्म-गौरव की १२ ईश्वर, परमात्मा १३ देख-रेख, सुरक्षा १४ अनुकरण १५ उन्नति १६ वन्दीपन का पट्टा, पराधीनता का पट्टा ।

## जीना किस काम का, जो मंजिल न मिले !



१. मिलना किस काम का, अगर दिल न मिले ।  
जीना किम काम का, जो मजिल न मिले ॥
२. मेरी जिन्दगी इक मुसलसल<sup>१</sup> सफर<sup>२</sup> है ।  
जो मजिल पे पहुँचा तो मजिल बढा दी ॥
३. आई सदा कि तू अभी मजिल से दूर है ।  
पहुँचा जहाँ-जहाँ भी मुझे दिल लिये हुए ॥

—दिल

४. ढूँढता फिरता हूँ ऐ 'इक़बाल' अपने-आपको ।  
आप ही गोया मुसाफ़िर आप ही मंजिल हूँ मैं ॥

—इक़बाल

५. सँभलने दे जरा ऐ बेताबिये-दिल<sup>३</sup> ।  
नज़र आते हैं आसारे-मजिल<sup>४</sup> ॥

—जुज्वी

६. अभी तकमीले-उल्फ़त<sup>५</sup> पर, न दिल मगरूर<sup>६</sup> हो जाए ।  
यह मजिल वह है, जितनी तय हो, उतनी दूर हो जाए ॥
७. जितनी करीब<sup>७</sup> है मंजिले-यार<sup>८</sup> ।  
ऐ दिल ! उतनी ही दूर भी है ॥

—अहसान

---

१ निरन्तर, क्रम-वद्ध २ यात्रा ३ दिल की बेचैनी ४ गन्तव्य स्थान के लक्षण ५ प्रेम की पूर्णता पर ६ गर्वीला ७ समीप ८. प्रिय का गन्तव्य स्थान ।

- ८ अभी है मजिले-मकसूद<sup>१</sup> कोसो ।  
 रहे पीछे 'जिगर हम कारवाँ<sup>२</sup> से ॥
- ९ सफर करते हुए मंजिल-ब-मंजिल जा रहे है हम ।  
 मुझे यह सारी दुनिया, कारवाँ मालूम देती है ॥
- १० मजिले-ऐश<sup>३</sup> नहीं है यह सराये-फ़ानी<sup>४</sup> ।  
 रात की रात ठहर जाएँ ठहरने वाले ॥
- ११ मेरी हस्ती<sup>५</sup> शौके-पैहम<sup>६</sup>, मेरी फितरत<sup>७</sup> इज़तराव<sup>८</sup> ।  
 कोई मजिल हो, मगर गुज़रा चला जाता हूँ मैं ॥

—जिगर

- १२ न जाने कहाँ से, न जाने किधर से,  
 बस इक अपनी धुन मे उडा जा रहा हूँ ।  
 निगाहो<sup>९</sup> मे मंजिल मेरी फिर रही है,  
 यूँ ही गिरता-पडता चला जा रहा हूँ ॥  
 न इदराके-हस्ती<sup>१०</sup> न एहसासे-मस्ती<sup>११</sup>,  
 जिधर चल पडा हूँ चला जा रहा हूँ ॥
- १३ भटका हूँ अपनी मजिले-मकसूद से वारहा<sup>१२</sup> ।  
 आसान<sup>१३</sup> जानकर कभी दुश्वार<sup>१४</sup> जानकर ॥

—अहसान दानिश

- १४ मजाहब<sup>१५</sup> क्या है ? राहे<sup>१६</sup> मुख्तलिफ<sup>१७</sup> है एक मजिल की ।  
 है मजिल क्या ? जहाँ सब कुछ है, पर राहे नहीं होती ॥

—अफसर

---

१. लक्ष्य-विन्दु २ काफला, यात्री-दल ३. सुख-घाम ४. क्षणिक  
 निवास स्थान ५ अस्तित्व, जीवन ६ निरन्तर उत्कण्ठा ७ स्वभाव  
 ८. व्याकुलता, वेचैनी ९ नजरो १० अस्तित्व का ज्ञान, जीवन की समझ  
 ११. मस्ती की अनुभूति १२ कई वार १३ मुशम, सरल १४ कठिन  
 १५ धर्म, पन्थ १६ मार्ग १७ विभिन्न, अलग-अलग ।

१५ इस तरह तय की हैं हमने मंजिलें ।  
गिर पड़े, गिर कर उठे, उठ कर चले ॥

—हैबरअली

१६. उहरे अगर तो मजिले-मकसूद<sup>१</sup> फिर कहाँ ?  
सागर<sup>२</sup> वकफ<sup>३</sup> गिरे तो सँभलना न चाहिए ॥

१७ न कामयाब<sup>३</sup> हुआ मैं, न रह गया महरूम<sup>४</sup> ।  
बड़ा ग़ज़ब है कि मजिल पै खो गया हूँ मैं ॥

१८ अभी कोई मजिल नहीं कोई मजिल,  
अभी पाये-हिम्मत<sup>५</sup> बढ़ाता चला जा ।

कहाँ के मनाजिर<sup>६</sup>, कहाँ के मज़ाहिर<sup>७</sup>,

तू खुद अपने नज़दीक<sup>८</sup> आता चला जा ॥

कयूदे-दो-आलम<sup>९</sup> से आजाद<sup>१०</sup> होकर,

हदूदे-मुहब्बत<sup>११</sup> बढ़ाता चला जा ॥

—जिगर

१९ इससे बढके और क्या बे-राहरवी<sup>१२</sup> होगी ।  
गामे-पुरशौक<sup>१३</sup> का मजिल से शनासा<sup>१४</sup> होना ॥

—असगर

२० हर क़दम पर थी उसकी मजिल, लेक<sup>१५</sup> ।  
सर से सौदाए-जुस्तजू<sup>१६</sup> न गया ॥

—मीर

२१. 'काफिर' विचारा किस क़दर काफिर नसीब<sup>१७</sup> है ।  
मजिल पै पहुँच के भी हम मजिल से दूर हैं ॥

—काफिर

१ प्याला २. हाथ मे ३ सफ़न ४ वचित ५ साहस पूर्ण पग ६. हृदय ७. प्रदर्शन ८ समीप ९ लोक परलोक के विधान या नियम-उ।नियम १० स्वतन्त्र ११ प्रेम की सीमा १२ गुमराही, पथ-भ्रष्ट १३ साहम पूर्ण पग का १४ परिचित, जानकार १५ परन्तु १६ तलाश का पागलपन १७. भाग्यहीन ।

- २२ रसा<sup>१</sup> ऐ खिजरे-मंजिल<sup>२</sup> । कौन उसके आस्तां<sup>३</sup> तक है ।  
वही तक मुझको पहुँचा दे, नजर मेरी जहाँ तक है ॥  
—नातिक
- २३ न वाकिफ<sup>४</sup> कारवाँ से हूँ, न कुछ आगाह<sup>५</sup> मजिल से ।  
किया मैं वादिये-उल्फत<sup>६</sup> को तै इक जु बिगे-दिल<sup>७</sup> से ॥  
—कुदरत
- २४ रहरवे-राहे-मुहब्बत<sup>८</sup> रह न जाना राह मे ।  
लज्जते-सहरानवर्दी<sup>९</sup> दूरिये-मजिल<sup>१०</sup> मे है ॥  
—विस्मिल
२५. मजिले-मकसूद तक पहुँचे बड़ी मुश्किल से हम ।  
जौफ<sup>११</sup> ने अक्सर<sup>१२</sup> बिठाया, शौक<sup>१३</sup> अक्सर ले चला ।  
—दास
२६. उन्ही को हम जहा मे रहरवे-कामिल<sup>१४</sup> समझते है ।  
जो हस्ती को सफर और कन्न को मजिल समझते हैं ॥  
—बक<sup>१५</sup>
२७. मैं चाहता हूँ कि मजिल ही मुँह से बोल उठे ।  
फिजा-शनास<sup>१६</sup> कोई मेरे कारवाँ मे नहीं ॥  
—सीमाद
२८. पहुँचे है जो अपनी मजिल पर, उनको तो नहीं कुछ नाजे-सफर ।  
चलने का जिन्हे मकदूर<sup>१७</sup> नहीं, रफ्तार की बाते करते हैं ॥
- २९ चले जब राह मे उसकी तो तफरीक<sup>१८</sup> क्या मानी ?  
जहाँ पर पाँव पड जाए, वही मजिल समझते है ॥  
—शफील

---

१. पहुँचा हुआ २. मार्ग-दर्शक ३. चौखट ४. परिचित ५. जानकारी  
६. प्रेम की घाटी को ७. हृदय की गति, दिल की हरकत से ८. प्रेम-पथ के  
पथिक ९. जंगल में धूमने का मजा १०. गन्तव्य स्थान का दूरस्थ होना  
११. दुर्वलता १२. प्रायः, बहुधा १३. लगन १४. पूर्ण पथिक १५. हालात  
का जानकारी १६. अज्ञ १७. भेद-भाव ।

३० नहीं मुमकिन कभी वोह मजिले-मकसूद पर पहुँचे ।  
जो पहले ही कदम पर हो गया सरगस्ताँ-ओ-हैरा<sup>१</sup> ॥

—नाशाद

३१. अपने कदम के साथ है मजिल लगी हुई ।  
मंजिल पे जो नहीं, वोह हमारा कदम नहीं ॥

—निहाल

३२. हमी थे क्या जुस्तजू का हासिल<sup>२</sup>,  
हमी थे क्या आप अपनी मजिल ?  
वही पै आकर ठहर गया हैं,  
चले थे जिस रहगुजर<sup>३</sup> से पहले ॥

३३ अव्वल-अव्वल हर कदम पर, थी हज़ारो मजिले ।

आखिर-आखिर इक मुकामे-बेमुकाम आ ही गया ॥

३४. फिके-मंजिल है, न होशे-जादये-मजिल<sup>४</sup> मुझे ।  
जा रहा हूँ, जिस तरफ ले जा रहा है दिल मुझे ॥

—जिगर

३५. न हिम्मत हार ऐ मजिल के राही ।

कि मंजिल भी अब तेरी मुन्तजिर<sup>५</sup> है ॥

३६. मुसाफिर पहुँच कर मजिल पे अपनी चैन पाते हैं ।

वो मौजे<sup>६</sup> सर पटकती है; जिन्हे साहिल<sup>७</sup> नहीं मिलता ॥

३७ दुनिया की सैर करने को ठहरे नहीं है हम ।

दम ले लिया है मजिले-दुशवार देखकर ॥

—अस्तर

३८ सिर्फ इक कदम उठा था ग़लत राहे-शौक<sup>८</sup> मे ।

मजिल तमाम उम्र मुझे ढूँढती रही ॥

—अदम

---

१ हैरान और परेशान २ प्राप्तव्य ३ मार्ग से, पड़ाव से ४. गन्तव्य  
स्थान के पाथेय की सुध ५ प्रतीक्षा मे ६. लहरें ७ किनारा ८.  
प्रेम-मार्ग ।

- ३६ 'फिराक' तू ही मुसाफिर है, तू ही मजिल है ।  
किधर चला है मुहब्बत की चोट खाये हुए ॥  
—फिराक
४०. यहाँ नेकी-बदी<sup>१</sup> दो रास्ते हैं, गौर<sup>२</sup> से सुन ले ।  
तुझे जाना है किस मजिल पै, अपना रास्ता चुन ले ॥
- ४१ सर शमा-सा कटाइए, पर दम न मारिए ।  
मजिल हजार दूर हो, हिम्मत न हारिए ॥
४२. मजिल से भी नावाकिफ<sup>३</sup> है<sup>३</sup> राह से भी आगाह<sup>४</sup> नहीं ।  
अपनी धुन में फिर भी रवाँ<sup>५</sup> हैं, यह भी अजब दीवाने हैं ॥  
—आजाद
४३. सरे-मजिल पहुँच सकता नहीं वोह काफिला हर्गिज ।  
जिसे रहवर<sup>६</sup> पै भी बेगानये-मजिल<sup>७</sup> का धोका है ।
- ४४ सामने मजिल है और आहिस्ता उठते हैं कदम ।  
पास आकर हो रहे हैं दूर फिर मजिल से हम ।  
कामयाबी में भी है नाकामयाबे-जिन्दगी<sup>८</sup> ।  
ऐन मजिल पर नहीं हैं आश्ना<sup>९</sup> मजिल से हम ॥  
—अलम
४५. गर्चे<sup>१०</sup> हैं गुमराह<sup>११</sup>, मजिल पर पहुँच जाऊँगा मैं ।  
रहरवो<sup>१२</sup> के पाँव के चलते निशाँ<sup>१३</sup> को देखकर ॥  
—नाशाद
- ४६ चलते-चलते थक गया, अफ़सोस है ।  
फिर भी मंजिल मेरी लाखों कोस है ॥
४७. मजिल की जुस्तजू से पहले किसे खबर थी ?  
रस्तो के बीच होंगे और रहनुमा<sup>१४</sup> न होगा ॥  
—कैफी

१ अच्छाई-बुराई २. ध्यान ३ अपरिचित ४-अभिज्ञ ५ गतिशील  
६ पथ-प्रदर्शक ७ गन्तव्य स्थान से अपरिचित ८. जीवन की असफलता  
९ परिचित, अभिज्ञ १० यद्यपि ११ भटका हुआ, अनभिज्ञ १२ यात्रियों  
१३ चिन्ह को १४. मार्ग-दर्शक ।

४८ हजार नाकामियाँ<sup>१</sup> हो 'नशतर'<sup>२</sup> हजार गुमराहियाँ हो, लेकिन ।  
तलाशे-मजिल अगर है दिल से, तो एक दिन लाजिमी<sup>३</sup> मिलेगी ॥

— नशतर

४९ खुदा रियाँ<sup>३</sup> यह मेरे तजस्मुस<sup>४</sup> की देखना ।  
मजिल पे आके अपना पता पूछता हूँ मैं ॥

—अफसर मेरठी

५०. काट लेना हर कठिन मजिल का कुछ मुश्किल नहीं ।  
इक ज़रा इन्सान मे चलने की आदन चाहिए ॥

५१ अहले-हिम्मत<sup>५</sup> मजिले-मकसूद तक आ ही गए ।  
वन्दाए-तकदीर<sup>६</sup> किस्मत का गिला<sup>७</sup> करते रहे ॥

—चकवस्त

५२ दिल को होना था जुस्तजू<sup>८</sup> मे खराब ।  
पाम थी वर्ना मजिले-मकसूद ॥

—जब्बी

५३. खुद जानता हूँ मजिले-मकसूद का पता ।  
हँसता हूँ छेड़-छाड़ के हर राहबर<sup>९</sup> को मैं ॥

५४ मजिल किधर है, इस पे अपनी नजर नहीं ।  
जो राह मे मिला उसी राही के साथ है ॥

५५. किस्मत पे उस मुसाफिरे-वेबस<sup>१०</sup> की रोइए ।  
जो थक गया हो सामने मजिल के बैठ के ॥

५६ तू कहाँ है कि तेरी राह मे यह काबा औ दैर<sup>११</sup> ।  
नक्श<sup>१२</sup> बन जाते हैं, मजिल नहीं होने पाते ॥

—फानी

---

१ असफलताएँ २ अवश्य ३ अहमन्यता ४ तलाश ५ साहसी  
६ भाग्यवादी ७. शिकायत ८ तलाश ९ मार्ग-दर्शक को १० विवश यात्री  
११ मन्दिर १२ चित्र, चिन्ह ।



५७ आह ! किम की जुस्तजू<sup>१</sup> आवारा<sup>२</sup> रखती है तुम्हें ।  
राह<sup>३</sup> तू, रहरो<sup>४</sup> भी तू, रहवर<sup>५</sup> भी तू, मंजिल<sup>६</sup> भी तू ॥

—इक़बाल

५८ देखवर<sup>७</sup> मजिल से हैं वोह सालिकाने-राहे-इश्क़<sup>८</sup> ।  
जो कदम रखते है राह-ओ-रस्मे-मंजिल<sup>९</sup> देखकर ॥

—बहशत

५९ फिर मैं आया हूँ तेरे पास, ऐ अमीरे-कारवाँ<sup>१०</sup> ।  
छोड़ आया था जहाँ तू, वह मेरी मंजिल न थी ॥

६० उकावी रुह<sup>११</sup> जब वेदार<sup>१२</sup> होती है जवानो मे ।  
नजर आती है उनको अपनी मंजिल आसमानो मे ॥

—इक़बाल

६१. आएगी हाथ मजिले-मकसूद .खुद-व-खुद<sup>१३</sup> ।  
देखो तो चल के चार कदम राहवर के साथ ॥

६२. वही रस्ता हूँ .खुद चलने लगा जो मेरे चलने मे ।  
जो .खुद चलने लगी मजिल, वही मैं एक मजिल हूँ ॥

६३ चाहूँ तो अब भी जानिवे-मंजिल<sup>१४</sup> पलट चलूँ ।  
गुमराह इसलिए हूँ कि रहवर खफा<sup>१५</sup> न हो ॥

६४ खिज्मे-रहे-मजिल<sup>१६</sup> तेरा गर दिल नही होता ।  
मजिल का पता सैकड़ो मंजिल नही होता ॥

६५. क़यामत<sup>१७</sup> तक रहे यह लुत्फ़ जौके-जुस्तजू<sup>१८</sup> मेरा ।  
जो थक कर बैठ जाऊँ तो मंजिल दूर हो जाए ॥

—माजिद

---

१ तलाश २. घुमकड़ ३ पथ ४ पथिक, ५. पथ-प्रदर्शक ६ गन्तव्य स्थान ७. अनभिज्ञ, अनजान ८ प्रेम-पथ के पथिक ९ प्रेम-मार्ग के रीति-रिवाज १०. काफ़ने का सरदार ११. गिद्ध-की सी आत्मा १२ जाग्रत १३. अपने आप १४ गन्तव्य स्थान की ओर १५. नाराज १६ गन्तव्य स्थान का मार्ग-दर्शक १७. प्रलयकाल १८. तलाश की लगन ।

६६ इनको क्या मालूम क्या मजिलत<sup>१</sup> इन्सान की ?  
यह गुलामी को समझते हैं सिफ<sup>२</sup> इन्सान की ॥

—निहाल

६७ जो तुन्द<sup>३</sup> बगूलो<sup>४</sup> से उलझे, वोह अजमे-सफर<sup>५</sup> की बात करें ।  
इस मजिले-नौ<sup>६</sup> के रस्ते में कितने ही बयाबा<sup>७</sup> होते हैं ॥

६८ कदम चूम लेती है खुद आके मजिल ।

मुसाफिर अगर आप हिम्मत न हारे ॥

६९ पस्त-हिम्मत<sup>८</sup> वोह हैं राहे-शौक में जो रह गए ।

हौसले वाले के आगे दूर कुछ मजिल नहीं ॥

७० जहाँ खुद खिञ्जे मजिल राहे-मजिल भूल जाता है ।

हमें आता है उन पुर-पेच<sup>९</sup> राहों से गुजर जाना ॥

—अनवर

७१. सफर में सई-ए-कामिल<sup>१०</sup> हो तो निकले राह मंजिल की ।  
कि दरिया की रवानी<sup>११</sup> से बिना<sup>१२</sup> पडती है साहिल की ॥

७२ गुमरही<sup>१३</sup> खुद मजिले-मकसूद की है रहनुमा<sup>१४</sup> ।  
खिञ्ज मिल जाते हैं, जिनको रास्ता मिलता नहीं ॥

७३ क्यों किसी रहवर से पूछूँ अपनी मजिल का पता ?  
मौजे-दरिया<sup>१५</sup> खुद लगा लेती है साहिल का पता ॥

७४ चाल धीमी है तो क्या, आएगी मजिल जरूर ।  
खौफ<sup>१६</sup> गिर जाने का भी तो तेज-रफ्तारी में है ॥

७५. उठता नहीं है अब तो कदम मुझ गरीब का ।  
मजिल से कह दो दौड़ के ले मुझको राह में ॥

१ गन्तव्य दिशा २ खूबी, विशेषता ३ तीव्र ४ भोको ५ यात्रा का सकल्प ६ नूतन गन्तव्य स्थान के ७ सुनसान जंगल ८ अनुत्साही ९ टेढ़ी-मेढ़ी १० पूर्णतः प्रयत्नशील ११ प्रवाह, बहाव १२ नींव, बुनियाद १३ मूल जाना, भटकना १४ मार्ग-दर्शन १५ नदी की लहर १६ भय, डर ।

- ७६ मजिल की तरफ अपना कदम जितना बढ़ाता हूँ ।  
जिसे नजदीक समझा था, उसे अब दूर पाता हूँ ॥
- ७७ न पीछे हटाया कदम को बढ़ाकर ।  
अगर दम लिया भी तो मजिल पै जाकर ॥
- ७८ घर बैठे हमें हाथ लगी मजिले-मकसूद ।  
जब बैठ गए तोड़ के हम पाँव तलब<sup>१</sup> के ॥
- ७९ डरादे तो है मजिल के, सफ़र करना नहीं आता ।  
हमें कहना तो आता है, मगर करना नहीं आता ॥
- ८० जुस्तजू-ए-यार<sup>२</sup> में गुम<sup>३</sup> खुद मेरा दिल हो गया ।  
यह मुनाफिर चलते-चलते आप मजिल हो गया ॥
- ८१ गर्दिश<sup>४</sup> जो हो तकदीर में कुछ सई<sup>५</sup> काम आती नहीं ।  
मजिल कुछ आगे बढ़ गई, पहुँचा जो मैं मजिल के पास ॥  
—ताज मुन्व्वर
८२. कदम बढ़ाओ खिजानसीबो<sup>६</sup> । वो मजिले मुन्तजिर<sup>७</sup> है अपनी ।  
जहाँ पहुँच कर निगाहे-दिल<sup>८</sup> को, बहार<sup>९</sup> की ताजगी<sup>१०</sup> मिलेगी ॥  
—शाद
- ८३ खबर हो कारवाँ को मजिले मकसूद<sup>११</sup> की क्यों कर ?  
बजाये रहनुमाई<sup>१२</sup> रहजनी<sup>१३</sup> है आम ऐ साकी ॥  
—आजाद
८४. अभी कोई मजिल नहीं तेरी मजिल ।  
अभी पाये-मजिल बढ़ाता चला जा ॥  
—जिगर
- ८५ मजिल में मुहव्वत की हस्ती<sup>१४</sup> ही रुकावट है ।  
कल वज्म<sup>१५</sup> में कहता था हँसता हुआ परवाना ॥  
—साही

१ चाह, इच्छा, कामना २. प्रिय की खोज ३ विलुप्त ४ चक्कर  
५ कोशिश, पुरुषार्थ ६ पतझड़ में रहने वाला ७. प्रतीक्षित ८ मन की  
दृष्टि ९. वसन्त १० स्फूर्ति ११ लक्ष्य १२. पथ-प्रदर्शक १३ लुटेरापन  
१४. जीवन १५. महफ़िल, सभा ।

- ८६ जहाँ तक आखिरी नजरें तेरी मुश्किल से पहुँची है ।  
वही मजिल की हद है खावे-मजिल देखने वाले ॥  
— जज्बी
- ८७ आगे बढ़ने को बड़े मजिल-ब-मजिल हम, मगर ।  
यह नहीं सोचा कभी आखिर कहाँ तक आ गए ?  
— मजूर अयूबी
८८. हमें राहे-तलब<sup>१</sup> में खाक हो जाने से मतलब है ।  
कदम पहुँचे न पहुँचे मजिले-मकसूद पर अपना ॥  
— बक्र<sup>२</sup>
- ८९ जबी<sup>३</sup> पै बल<sup>३</sup> तक न आने पाये, सऊबतो<sup>४</sup> को उठाते जाओ ।  
मिले न जब तक निशाने<sup>५</sup>-मजिल, कदम को आगे बढ़ाते जाओ ॥
९०. जरा इतना तो फर्मा दे कि मजिल की तमन्ना में ।  
भटकते हम फिरेंगे ऐ अमीरे-कारवाँ<sup>६</sup> कब तक ?  
— जगन्नाथ आज़ाद
- ९१ वोह अज्म<sup>७</sup> है जो ले आता है,  
कदमों तक खीच के मजिल को ।  
इस राज<sup>८</sup> को रहबर<sup>९</sup> क्या समझे,  
इस भेद को मजिल क्या जाने ?
९२. जब इश्क हो अपनी धुन में रवाँ<sup>१०</sup>  
बे-खौफो-खतर मजिल की तरफ ।  
वोह राह की मुश्किल क्या समझे,  
वोह दूरिए-मजिल<sup>११</sup> क्या जाने ?  
— आज़ाद

---

१ मार्ग की चाह २. मस्तक ३ सलबट, शिकन ४ कठिनाइयो, कष्टो ५ चिन्ह ६ यात्री दल के नेता ७ सकल्प, इरादा ८ मार्ग दर्शक ९. जाता हुआ, वहता हुआ १० बिना किसी भय और खटके के, निर्भयता के साथ, ११ गन्तव्य की दूरी को ।

६३ पाये-तलब<sup>१</sup> भी तेज था, मजिल भी थी करीब<sup>२</sup> ।  
लेकिन नजात<sup>३</sup> पा न सके रहनुमाँ<sup>४</sup> से हम ॥

६४ न आने दिया राह पर रहबरो ने<sup>५</sup> ।  
किये लाख मजिल ने हमको इशारे ॥

—अर्श मलसियानी

६५. खुदी<sup>६</sup> को अपनी मिटा चुके हैं,  
अब अपनी हस्ती<sup>७</sup> मिटा रहे हैं ।  
हटा के रस्ते से हम यह पत्थर,  
करीब<sup>८</sup> मजिल के जा रहे हैं ॥

—नफीस देहलवी

६६. गुमाँ<sup>९</sup> था मजिल का मुझको जिस पर,  
वहाँ पहुँच कर खुला यह उक़दा<sup>१०</sup> ।  
कि मैं भी गुमकरदहराह<sup>११</sup> तुम भी,  
यहाँ कोई राहदाँ<sup>१२</sup> नहीं है ॥

—अफसर

६७. होगी इसी तरह से तै मजिले ओज<sup>१३</sup> की तमाम ।  
रफअते-महरो माह को<sup>१४</sup> फर्गे कदम<sup>१५</sup> बनाये जा ॥

—निहाल सेवहारवी

६८. आस्माँ मवहूत<sup>१६</sup> था, तपती ज़मी खामोश थी ।  
एक वीरां रास्ते पर जा रहा था एक जवाँ<sup>१७</sup> ॥  
मैंने पूछा—“ऐ मुसाफिर ! किस तरफ जायेगा तू ?”  
काँपती आवाज़ मे बोला—“मेरी मजिल कहाँ ?”

१ चाह का चरण २ निकट, नजदीक ३ मुक्ति, छुड़कारा ४. पथ-प्रदर्शक-से ५ मार्ग-दर्शको ने ६ अहभाव को ७ अस्तित्व ८ निकट, समीप ९. विश्वास, मन्देह १०. भेद ११ मार्ग भ्रष्ट, मार्ग से भटका हुआ १२ मार्ग में अभिज्ञ, मार्ग जानने वाला १३ उन्नति की, विकास की १४ १५. सूर्य-चन्द्र की चाल के साथ चल १६ हक्का-बक्का, हैराँ १७ युवक ।

६६. तुझे मालूम क्या मर्दे-खिरदमन्द<sup>१</sup>,  
कि मेरे शौक की मजिल कहाँ ?  
खिरद<sup>२</sup> नन्ही-सी इक महदूद<sup>३</sup> वस्ती,  
मुहव्वत एक खलाए-बेकराँ<sup>४</sup> है ॥

— नदीम कासिमी

१०० वोह सामने सरे-मजिल चिराग जलते हैं ।  
जवाब पाँव न देते तो मैं कहाँ होता ?

— राज रामपुरी

१०१ न जाने कौन रहजन<sup>५</sup> का कदम हो, कौन रहवर<sup>६</sup> का ।  
मिटा डाला रहे-मजिल<sup>७</sup> का इक-इक नक्शे-पाँ<sup>८</sup> मैंने ॥

— शाद आरफ़ी

१०२ गजब है जुस्तजूए-दिलका<sup>९</sup> यह अजाम<sup>१०</sup> हो जाये ।  
कि मजिल दूर हो और रास्ते में शाम हो जाये ॥

— शेरि भोपाली

१०३. मुक़ाम ऐसा भी आता है राहे-ज़िन्दगानी में<sup>११</sup> ।  
जहाँ मजिल भी गर्दे-कारवाँ<sup>१२</sup> मालूम देती है ॥

— हुसमत उलइकराम

१०४. है कारवाँ<sup>१३</sup> अभी मजिल से दूर ही लेकिन ।  
यह कम नहीं है, कि रहजन<sup>१४</sup> की रहबरी<sup>१५</sup>, न रही ॥

— मजहर इसाम

१०५ यह हादसाते-इश्क<sup>१६</sup> नहीं है तो और क्या ?  
मजिल कही है, दिल है कही, राहवर<sup>१७</sup> कही ॥

— मशीर भिक्कानवी

१ अक्लमन्द २ अक्ल ३ सीमित ४ असीमित क्षेत्र ५ लुटेरे का  
६ पथ-प्रदर्शक का ७ गन्तव्य मार्ग का ८ चरण-चिन्ह ९ मन की  
खोज का १०. परिणाम, स्थिति ११ जीवन के मार्ग में १२ यात्री दल की  
धूलि १३. यात्री दल १४ लुटेरो की १५ नेतृत्व १६ प्रेम-सम्बन्धी  
घटनाएँ १७. पथ-प्रदर्शक ।

१०६. दीदनी<sup>१</sup> है यह जनुने-गोक की वा-रपतगी<sup>२</sup> ।  
पूछते हैं अपनी मजिल का पता मंजिल से हम ॥
१०७. तेरे कूचे तक पहुँचने में पड़ी सी मजिले ।  
वे-नियाजाना<sup>३</sup> गुजर आये हर-इक मजिल से हम ॥  
— मस्मूर सईदी
१०८. खुदा मालूम ? मूसा तूर से<sup>४</sup> क्यों वेकरार<sup>५</sup> आये ?  
मेरी मजिल में ऐसे मरहले<sup>६</sup> तो बेगुमार आये ॥  
— बिस्मिल शाहजहाँपुरी
१०९. ठोकर किसी पत्थर से अगर खाई है मैंने ।  
मजिल का निगा<sup>७</sup> भी उसी पत्थर से धिला है ।  
— बिस्मिल सईदी
११०. रहवर<sup>८</sup> ने रहजनो<sup>९</sup> से बढाई है दोस्ती ।  
मंजिल पै आके लुटने का इमकाँ<sup>१०</sup> अभी से है ॥  
— निशात सईदी
१११. मिल गया आखिर निशाने-मंजिले-मकसद<sup>११</sup>, मगर ।  
अब यह रोना है कि जौके-जुस्तजू<sup>१२</sup> जाता रहा ॥
११२. रहवर<sup>१३</sup> या तो रहजन<sup>१४</sup> निकले या है अपने आप में गुम<sup>१५</sup> ।  
काफिलेवाले किससे पूछें, किस मजिल तक जाना है ?  
— अर्श मलसियानी



१ देखने योग्य २ प्रेम के उत्साह का दौर ३ निरपेक्ष भाव से ४ शाम [सीरिया] का एक पर्वत, जिस पर हजरत मूसा ने ईश्वर का जल्वा देखा था ५ व्याकुल, बेचैन ६ पड़ाव, उतरने का स्थान ७ पता, चिन्ह ८ पथ-प्रदर्शक ने ९ लुटेरो से १०. सम्भावना ११ उद्देश्य-पूर्ति का साधन १२. खोज की लगन या रुचि १३ मार्ग-दर्शक १४. लुटेरे १५ आत्मविस्मृत, खोये हुए ।

## जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है !



१ जिन्दगी जिन्दादिली<sup>१</sup> का नाम है ।  
मुर्दा-दिल<sup>२</sup> खाक जिया करते हैं ॥

—नासिख

२. होशियार ओ कामयाबे-जिन्दगी<sup>३</sup> ।  
जिन्दगी नाकामियो<sup>४</sup> का नाम है ॥

—जोश

३ हर नफस<sup>५</sup> आह और अनफास<sup>६</sup> पै जीने का मदार<sup>७</sup> ।  
जिन्दगी आहे-मुसलसल<sup>८</sup> के सिवा कुछ भी नहीं ॥

—फानी

४ न समझने की बातें हैं, न ये समझाने की ।  
जिन्दगी उचटी हुई नीद है दीवाने की ॥

—फिराक

५ खुलूसे-इश्क<sup>९</sup>, न जोशे-अमल<sup>१०</sup>, न दर्दे-वतन<sup>११</sup> ।  
यह जिन्दगी है खुदा या जिन्दगी का कफन ?

—जिगर

१ जीवितहृदयता २ मृतकहृदय ३ सफल जीवन वाले ४ असफलताओं का ५ प्राण ६ प्राणों पर ७ इच्छा, कामना ८ निरन्तर दुख, अटूट आह ९. प्रेम-निष्ठा १० आचरण का उत्साह ११. राष्ट्र के प्रति सहानुभूति ।



६. कही से हूँ कर ला दे हमे भी ऐ गुलेतर<sup>१</sup> ।  
वोह जिन्दगी जो गुजर जाय मस्कराने मे ॥

—आरजू

७. होश जब आया तो कयामत<sup>२</sup> आ गई ।  
जिन्दगी मेरी जभी तक है कि मैं गफलत<sup>३</sup> मे हूँ ॥

—बाग

८. जिन्दगी है या कोई तूफान है,  
हम तो इस जीने के हाथो मर चले ।  
दोस्तो ! देखा तमाशा याँका बस,  
तुम रहो, अब हम तो अपने घर चले ॥

—दर्द

९. नहीं जिन्दगी को वफा<sup>४</sup> वनी 'अख्तर'<sup>५</sup> ।  
मुहब्बत से दुनिया को मामूर<sup>६</sup> कर हूँ ॥

—अख्तर

१०. दारे-फानी<sup>७</sup> मे यह क्या हूँ रह रहा है 'फानी' ।  
जिन्दगी भी कही मिलती है फना<sup>८</sup> से पहले ॥

—फानी

११. कोई नामालूम<sup>९</sup> मजिल है खुदा जाने कहाँ ?  
जिन्दगी जिसकी तरफ इक मुस्तकिल<sup>१०</sup> परवाज़<sup>११</sup> है ।

—खयाल

१२. जिन्दगी नाकामियो<sup>१२</sup> की इक मुसलसल<sup>१३</sup> दास्ता<sup>१४</sup> ।  
मीत क्या है, जिन्दगी की दास्ताँ का खात्मा<sup>१५</sup> ॥

—महसूम

---

१ फूल २. प्रलय ३. प्रमाद, अज्ञान ४. बात निवाहना ५. पूर्ण, भरा हुआ ६. नश्वर ससार ७. मृत्यु से ८. अज्ञात ९. स्थायी १०. उडान ११. असफलताओं की १२. क्रम-बद्ध, निरन्तर १३. कहानी १४. समाप्ति ।

१३ जिन्दगी तो नाज<sup>१</sup> के काबिल<sup>२</sup> नहीं ।  
जिन्दगी पर सब को बेजा<sup>३</sup> नाज है ॥

—बिस्मिल

१४ जिन्दगी का साज भी क्या साज है ?  
बज रहा है और बे-आवाज है ॥

१५ उम्मे-अजीज<sup>४</sup> गुजरी हसरत-परस्तियों<sup>५</sup> में ।  
ऐसी भी जिन्दगी का या रब ! हिसाब होगा ?

१६ मैं यह कहता हूँ फना को भी अता<sup>६</sup> कर जिन्दगी ।  
तू कमाले-जिन्दगी<sup>७</sup> कहता है मर जाने में है ॥

—असगर

१७ इत्तहादे-बाहमी<sup>८</sup> का है नतीजा जिन्दगी ।  
जरेँ क्या सौ थे, मगर मिलने से इन्साँ होगया ॥

—साकिब

१८ यही जिन्दगी मुसीबत<sup>९</sup>, यही जिन्दगी मसरत<sup>१०</sup> ।  
यही जिन्दगी हकीकत<sup>११</sup>, यही जिन्दगी फसाना<sup>१२</sup> ॥

१९ ऐश से क्यों खुश हुए, क्यों गम से घबराया किये ।  
जिन्दगी क्या जाने क्या थी और क्या समझा किये ॥

—जब्बी

२० जिन्दगी क्या है, गुनाहे-आदम<sup>१३</sup> ।  
जिन्दगी है तो गुनहगार<sup>१४</sup> हूँ मैं ॥

—नजाज

२१ यह भी कोई जिन्दगी है गम की मारी जिन्दगी ?  
चीखती, रोती, बिलखती, बिलविलाती जिन्दगी ॥

—सबा

---

१ अभिमान, गर्व २ योग्य ३ अनुचित ४ प्यारी उम्म ५ इच्छाओं की पूजा ६ प्रदान ७ जीवन की वास्तविकता ८ पारस्परिक एवता, मेल-जोल ९ दुख, विपत्ति १० खुशी, सुख ११ वास्तविक सच्चाई १२ कहानी १३. बाबा आदम का पाप १४. पापी ।

२२. दारे-फानी मे हो गाफिल मौत से इक पल नही ।  
क्या भरोसा जिन्दगी का आज है और कल नही ॥

२३ जिन्दगी है, फज्र<sup>१</sup> अदा<sup>२</sup> करने का नाम ।  
जिन्दगी है, फज्र<sup>३</sup> पै मरने का नाम ॥

—नज़र

२४ जिन्दगी क्या है ? अनासिर<sup>३</sup> मे जहूरे-तरतीब<sup>४</sup> ।  
मौत क्या है ? इन्ही अजजा का<sup>५</sup> परेगाँ होना<sup>६</sup> ॥

—शालिब

२५. 'बक'<sup>७</sup> उसकी जिन्दगी है दरहकीकत<sup>८</sup> जिन्दगी ।  
जिसको दुनिया मे सकूने-कल्ब<sup>९</sup> हासिल हो गया ॥

—बक

२६. यह माना जिन्दगी है चार दिन की ।  
बहुत होते है यारो ! चार दिन भी ॥

—फिराक

२७. क्या-क्या बताऊँ तुमको, क्या-क्या छुपाऊँ तुमसे ?  
इस जिन्दगी की हालत सागर से कम नही है ॥

२८ इक मुअम्मा<sup>१०</sup> है समझने का न समझाने का ।  
जिन्दगी काहे की है, ख्वाब<sup>११</sup> है दीवाने<sup>१२</sup> का ॥

—फानी

२९ उमीदो मे ही जाने-जिन्दगी<sup>१३</sup> है ।  
तमन्ना<sup>१४</sup> पासवाने-जिन्दगी<sup>१५</sup> है ॥  
वोह जिन्दा क्या है जिसका बुझ गया दिल ।  
सरासर नौहा - ख्वाने - जिन्दगी<sup>१६</sup> है ॥

—अम्न

१ कर्तव्य २. पूर्ण, पूरा ३. तत्त्वो मे ४. क्रमबद्ध प्रकटीकरण, ५ तत्त्वो का ६ विखर जाना, अलग-अलग हो जाना ७ वस्तुतः ८ मन की शान्ति ९ गुत्थी, पहेली १० मपना ११ पागल का १२ आशाओ पर ही जीवन निर्भर है १३. आशा १४. जीवन की रक्षक १५ जिन्दगी का मातम ।

३०. जिन्दगी इन्सा की है मानिन्दे-मुर्गे-खुशनवा<sup>१</sup> ।  
शाख पर बैठा कोई दम, चहचहाया, उड़ गया ॥

३१. समझता है तू राज<sup>२</sup> है जिन्दगी ।  
फकत<sup>३</sup> जीके-परबाज<sup>४</sup> है जिन्दगी ॥

—इकबाल

३२. कभी मुस्कराहट, कभी चश्मे-पुरनम<sup>५</sup> ।  
बस इतना-सा है जिन्दगी का फसाना ॥

—सलमा

३३. पर्दा-दर-पर्दा, नकाब-दर-नकाब<sup>६</sup> ।  
जिन्दगी कितना रसीला साज है ॥

—ताजवर

३४. यही है जिन्दगी तो जिन्दगी से खुदकशी<sup>७</sup> अच्छी ।  
कि इन्सा आलमे-फानी<sup>८</sup> पै वार<sup>९</sup> हो जाए ॥

—जिगर

३५. महदूद<sup>१०</sup> जिन्दगानी दुनिया है इस क़दर<sup>११</sup> ।  
हर साँस पर गुमाँ<sup>१२</sup> है, कही आखिरी<sup>१३</sup> न हो ॥

—नानक

३६. जिन्दगी इक तीर है, जाने न पाए रायगाँ<sup>१४</sup> ।  
देखलो पहले निशाना<sup>१५</sup>, बाद में खीचो कमाँ ॥

३७. गम<sup>१६</sup> की तलछटके सिवा कुछ जामे-हस्ती<sup>१७</sup> में नहीं ।  
है हकीकत में सरापा<sup>१८</sup> सोज<sup>१९</sup> साजे-जिन्दगी<sup>२०</sup> ।  
बुलबुला पानी पै उट्ठा और मिटकर यह कहा ।  
यह मआले-जिन्दगी<sup>२१</sup> है, यह है राजे-जिन्दगी<sup>२२</sup> ॥

१. मृदुभाषी पछी की तरह २. रहस्य ३. केवल ४. उड़ने की अभिरुचि  
५. गीली आँखें, रोना ६. आवरण ७. आत्महत्या ८. नश्वर ससार पर  
९. मार, बोझ १०. सीमित ११. इतनी १२. शक, सन्देह १३. अन्तिम  
१४. व्यर्थ १५. लक्ष्य १६. दुख, रंज की १७. जीवन के प्याले में १८.  
सिर से पैर तक १९. जलन, दुख, आह २०. जीघन का बाजा २१. जीवन  
का परिणाम, अन्त २२. जीवन का रहस्य ।

३८. जिन्दगी की रह<sup>१</sup> मे चल, लेकिन जरा बच-बच के चल ।  
यह समझ ले कोई मीनाखाना<sup>२</sup> बारे-दोश<sup>३</sup> है ॥
३९. कौन कहता है कि मौत अजाम<sup>४</sup> होना चाहिए ।  
जिन्दगी का जिन्दगी पैगाम<sup>५</sup> होना चाहिए ॥

—बसर

४०. जिन्दगी की दूसरी करवट थी मौत ।  
जिन्दगी करवट बदल कर रह गयी ॥
४१. 'फानी' की जिन्दगी भी क्या जिन्दगी थी या रब ।  
मौत और जिन्दगी मे कुछ फर्क चाहिए था ॥

—फानी

४२. सैकड़ो गम है, हजारो रज है लाखो अलम ।  
क्या बताऊँ आपसे, क्या है हिसाबे-जिन्दगी<sup>६</sup> ॥  
दिल अगर खुश है तो मव कुछ है, नही तो कुछ नही ।  
यह सबाबे-जिन्दगी<sup>७</sup> है, यह अजाबे-जिन्दगी<sup>८</sup> ॥
४३. जिन्दगी इल्मो<sup>९</sup>-हुनर<sup>१०</sup> अज्मो<sup>११</sup>-अमल<sup>१२</sup> का नाम है ।  
जिन्दगी उसकी है जिमको है शऊरे-जिन्दगी<sup>१३</sup> ॥
४४. आरजू<sup>१४</sup>, फिर आरजू के बाद खूने-आरजू<sup>१५</sup> ।  
चार हफ्तो<sup>१६</sup> मे है सारी दास्ताने-जिन्दगी<sup>१७</sup> ॥
४५. जिन्दगी क्या है मुसलसल<sup>१८</sup> इज्तराब<sup>१९</sup> ।  
इज्तराबे-दिल<sup>२०</sup> से फिर घवराएँ क्या ?

—शातिर

---

१. मार्ग मे २. पात्र-घर ३. कन्धे का बोझ ४. परिणाम, नतीजा  
५. सन्देश ६. जीवन का हिसाब ७. पुण्यमय जीवन ८. पापमय जीवन  
९-१०-११-१२ विद्या, गुण या कला, विचार=ज्ञान और आचरण का  
१३. जीवन का ज्ञान, जीवन की समझ, जिन्दगी का होश १४ इच्छा, कामना,  
हविस १५ कामना की अपूर्ति १६ यब्दो मे १७ जीवन की कहानी १८.  
निरन्तर, लगातार १९ बेचैनी, व्याकुलता २० मन की व्याकुलता ।

४६. वह सौदा जिन्दगी का है कि गम इन्सान सहता है ।  
नहीं तो है बहुत आसान इस जीने से मर जाना ॥

—चकबस्त

४७. इक जान का अजाब<sup>१</sup> है, यह जिन्दगी नहीं ।  
अल्लाह किस बला<sup>२</sup> में गिरफ्तार<sup>३</sup> होगए ?

—अकबर

४८. यह अकामत<sup>४</sup> में हमें पैंगामे-सफर<sup>५</sup> देती है ।  
जिन्दगी मौत के आने की खबर देती है ॥

—जीक

४९. मअ्राले<sup>६</sup>-जिन्दगी को सोचकर धुनता हूँ सर पहरों ।  
वोह कैसे लोग हैं या रब ! जिन्हे जीने का अरमाँ<sup>७</sup> है ?

५०. हम हुए जिस दिन से पैदा मौत पर ईमान<sup>८</sup> है ।  
जिन्दगी गोया फना होने का इक सामान है ॥

—तसकीन

५१. जिन्दगी इक तिलिस्म<sup>९</sup> फानी<sup>१०</sup> है ।  
सब करामात है साँस चलने की ॥

—जफर

५२. जिन्दगी चश्मे-जहाँ में ख्वा र रखती है दिला ।  
दोश<sup>११</sup> पर सब ने लिया, जब आदमी बेदम<sup>१२</sup> हुआ ॥

—नासिख

५३. अब भी इक उम्र पै, जीने का न अन्दाज<sup>१३</sup> आया ।  
जिन्दगी छोड़ दे पीछा मेरा, मैं बाज आया ॥

—शाद

---

१ यातना, पीडा, दुःख, तकलीफ २ आफत में ३ कंद्, ग्रस्त ४ प्रारम्भ में ५ यात्रा का सन्देश ६ जीवन के परिणामको ७ इच्छा, लालसा ८ विश्वास ९ माया, इन्द्रजाल, जादू १० नश्वर, क्षणभंगुर ११ कन्धे पर १२ निष्प्राण १३ ढंग, तरीका, सलीका ।

५४. हैरत में ख़त्म हो गई, इन्शाए<sup>१</sup>-जिन्दगी ।  
हल हो सका न हमसे मुअम्मा<sup>२</sup>-ए-जिन्दगी ॥
५५. आलमे-नज्ज<sup>३</sup> में दिन-रात बसर करते हैं ।  
जिन्दगी नाम को है, मौत के दिन भरते हैं ॥
५६. जिन्दगी अपनी जब इस शकल<sup>४</sup> में गुज़रे 'गालिब' !  
हम भी क्या याद करेंगे कि खुदा रखते थे ?

—गालिब

५७. दीनो-दुनिया दोनों अपने जेबो-दामांगीर<sup>५</sup> हैं ।  
इस दोरोजा जिन्दगी में 'गाद' हम क्या-क्या करें ?

—शाद

५८. जिन्दगी की कशमकश<sup>६</sup> से मरके कुछ पाई नजात<sup>७</sup> ।  
इससे पहले ऐ 'नज़र' फुर्सत कभी ऐसी न थी ॥

—नज़र

५९. मिमाले-बुलबुगा<sup>८</sup> है जिन्दगी दुनिया-ए-फानी<sup>९</sup> में ।  
जो तुझसे हो सके कर ले भलाई जिन्दगानी में ॥

६०. न भूल इस जिन्दगी में गाफिल ।  
नहीं कुछ एतवार<sup>१०</sup> इसका ।  
कि राह लेगी यह अपनी इक दिन,  
अदम<sup>११</sup> का रस्ता तुझे बताकर ॥

—अमीर

६१. कीन-सा भोका बुझा देगा किसे मालूम है ?  
जिन्दगी इक अमज़ रोगन<sup>१२</sup> है हवा के सामने ॥

—सराज

---

१ साहित्य, लेख, तहरीर २ पहिली, गुथी, समस्या ३. मरणावस्था में दशा, ४. अवस्था, हालत, ढंग में ५ पावेट और अचल में ६ खीचातानी, सघर्ष, लड़ाई ७ मुक्ति, छुटकारा ८ बुलबुले की तरह ९. नश्वर संसार में १०. विश्वास, यकीन ११ परलोक, यमलोक का १२ जलती हुई मोमवत्ती ।

६२ तेगे-उरियाँ<sup>१</sup> बन गई है, जिन्दगी मेरे लिए ।  
मौत के पर्दे मे है, पिनहाँ<sup>२</sup> खुशी मेरे लिए ॥

—असर

६३ जो हैं अहले-बसीरत<sup>३</sup> इस तमाशागाहे-हस्ती<sup>३</sup> मे ।  
तिलिस्मे-जिन्दगी को खेल लडको का समझते है ॥

६४. जिन्दगी बहरे-जहाँ<sup>४</sup> मे, है बगर की ऐसी ।  
बुलबुला णनी मे जिस तरह उठा, वैठ गया ॥

—रहीम

६५. जिन्दगी मे भूलकर लगजिश<sup>५</sup> न हो इन्सान से ।  
गर खयाल इतना रहे, क्या होगा मर जाने के बाद ॥

—बासित

६६ जिन्दगी नाम है जज्बे-परस्तारी<sup>६</sup> का ।  
वाह<sup>७</sup> वो बन्दा<sup>८</sup> कि जिसका कोई माबूद<sup>९</sup> न हो ॥

—सईद

६७ जिन्दगानी है अलामत<sup>१०</sup> मर्ग<sup>११</sup> की ऐ गाफिलो !  
और कुछ इस ख्वाब<sup>१२</sup> की तावीर<sup>१३</sup> की हाजत<sup>१४</sup> नही ॥

६८ हर इक को है ज़माने मे जिन्दगी मकसूद<sup>१५</sup> ।  
किसे खबर है कि मकसूदे-जिन्दगी<sup>१६</sup> क्या है ?

६९ ऐन<sup>१७</sup> हस्ती<sup>१८</sup> थी अदम<sup>१९</sup> की नेस्ती<sup>२०</sup> मेरे लिए ।  
मौत का पैग़ाम लाई जिन्दगी मेरे लिए ॥

—यूसुफ

---

१. नगी तलवार २. छिपी हुई ३ बुद्धिमान, चतुर ४ जीवन के क्रीडास्थल मे ५ ससार-समुद्र मे ६. खेलन, श्रुति, भूल, अपराध ७. पूजा की भावना, पूजा का विचार ८ खूब, धन्य ९ उपासक, भक्त, पुजारी १०. ईश्वर, जिसको पूजा जाय ११. चिन्ह, निशानी १२ मृत्यु की १३ स्वप्न १४. स्वप्न-फल १५ आवश्यकता, जरूरत १६ अभीष्ट, अभिलषित १७. जीवन का उद्देश्य, जीवन का लक्ष्य-बिन्दु, १८ वस्तुत वाकई १९. अस्तित्व, जीवन २०. परलोक, यमलोक की बरवादी, तबाही ।



७० जिन्दगी मीजे-आब<sup>१</sup> है गोया<sup>२</sup> ।  
दम का आना हुवाब<sup>३</sup> है गोया ॥

—फकीर

७१ दर्द बढ कर दवा न हो जाए ।  
जिन्दगी बे-मज़ा न हो जाए ?

—जबेबा

७२. है किस कदर गरूरे-शिकन राहे-जिन्दगी ।  
जिस सर को देखता हूँ वही पायमाल<sup>४</sup> है ॥

—हफीज़

७३ हम जिन्दगी समझते थे जिसको, वह खाव था ।  
वाली<sup>५</sup> पै आके मौत ने बेदार<sup>६</sup> कर दिया ॥

—बिस्मिल

७४ जिन्दगी जामे-ऐश<sup>७</sup> है, लेकिन ।  
फायदा क्या अगर मुदाम<sup>८</sup> नहीं ॥

—बली

७५. इक उम्र से है जिन्दगी और मौत मे भगडा ।  
किस्सा नहीं चुकता यह बखेडा है कहाँ का ॥

—रिन्द

७६ कयामे जिन्दगी<sup>९</sup> बहरे-फना मे गैर मुसकिन<sup>१०</sup> है ।  
यह जिन्दगी तीर की सूरत<sup>११</sup> चली जाती है तूफ़ाँ मे ॥

—आवाव

७७ जिन्दगी की लज्जतो में जिस कदर आगे बढे ।  
दिलकशी<sup>१२</sup> के साथ रस्ता पुरखतर<sup>१३</sup> होता गया ॥

---

१ पानी की लहर २ मानो, जैसे ३. बुलबुला ४ पाँव तले रौंदता हुआ  
५ उपधान, तकिये ६ सचेत, जाग्रत ७. सुख का पिआला ८ स्थायी ९.  
जीवन की स्थिरता १०. असम्भव ११ भाति १२. मनोहरता, सुन्दरता,  
चित्ताकर्षकता १३. भयानक, भयकर, विकट ।

- ७८ साँचा यह जिन्दगी है फकत रूह के लिए ।  
जब ढल चुके तो साचे को लाजिम है आए मौत ॥
७९. क्या-सबाते-उम्र<sup>१</sup> वस इक जुम्बिशे-फितरत<sup>२</sup> की ।  
जिन्दगी क्या है, फकत हक अक्स<sup>३</sup> आईने<sup>४</sup> मे है ॥
८०. था जिन्दगी ने मर्ग का खटका<sup>५</sup> लगा हुआ ।  
उड़ने से पेन्तर<sup>६</sup> ही मेरा रग जर्द<sup>७</sup> था ॥

—गालिब

- ८१ अदस<sup>८</sup> इस जिन्दगी पर गाफिलो का फख्र<sup>९</sup> करना है ।  
यह जीना कोई जीना है कि जिसके साथ मरना है ?
- ८२ जिन्दगी कहती है दुनिया से तू अपना दिल लगा ।  
मौत कहती है कि ऐसी दिल-लगी अच्छी नहीं ॥
- ८३ बशर<sup>१०</sup> को जिन्दगी मे गफलते उम्मीदे-फर्दा<sup>११</sup> है ।  
मगर दम-भर भी अपने कस्द से वह जी नहीं सकता ॥
८४. गुजर की जब न हो सूरत,<sup>१२</sup> गुजर जाना ही बेहतर है ॥  
हुई जब जिन्दगी दुश्वार<sup>१३</sup> मर जाना ही बेहतर है ॥
- ८५ जिन्दगी कैसी मुसीबत थी कि अल्ला की पनाह ।  
जान निकली है तो अब होश ठिकाने आई ॥

—असर

- ८६ आर जूए-जिन्दगी<sup>१४</sup> थी वाइसे-तकलीफे-जां<sup>१५</sup> ।  
यह खलिश<sup>१६</sup> मिटती तो फिर आराम ही आराम था ॥

—रवी

---

१ आयु का चिरस्थायित्व २ प्रकृति के कम्पन की ३ प्रतिबिम्ब ४. दर्पण मे ५ मृत्यु का भय ६ पहले ७. पीला ८. व्यर्थ, बेकार, फिजूल ९ गर्व, अभिमान, नाज १० मनुष्य को ११ आनेवाले कल की बेखबरी १२ सकल्प, इरादे, इच्छा से १३ ढग, उपाय १४ कठिन, मुश्किल १५. जीवन की कामना १६ प्राणों के कण्ट का कारण १७ चुभन ।

८७. किस जिन्दगी पे खूब अकड़ते थे सुबह-ओ-शाम ।  
भोका हवा का था इधर आया उधर गया ॥
८८. जिन्दगी की कद्र ऐ 'महमूद' मुश्किल हो गई ।  
बार<sup>१</sup> वोह डाला हृदादिस<sup>२</sup> ने दिले-नाशाद<sup>३</sup> पर ॥

—महमूद

८९. यह अदम<sup>४</sup> वालो की खामोशी ने सावित<sup>५</sup> कर दिया ।  
था अजाबे-कब्र<sup>६</sup> के वदतर<sup>७</sup> अजाबे-जिन्दगी<sup>८</sup> ॥
९०. अपनी जिन्दगी को गमो-रजो मुसीबत समझो ।  
मौत की क़द लगा दी है गनीमत समझो ॥
९१. हर नफस<sup>९</sup> उम्र-गुज़िश्ता<sup>१०</sup> की है मैदयत<sup>११</sup> फानी ।  
जिन्दगी नाम है मर-मर के जिये जाने का ॥

—फानी

९२. मरना ही लिक्खा है मेरी किस्मत मे अजीजो<sup>१२</sup> ।  
गर<sup>१३</sup> जिन्दगी होती तो यह आज़ार<sup>१४</sup> न होता ॥

—दर्द

९३. असर्<sup>१५</sup> तो जिन्दगी का नहीं इस कदर भी यँ ।  
अफसोस मे किसी के कोई हाथ मल सके ॥
९४. खुशी जिसकी तमन्ना थी मिली वह कजे-मरकद<sup>१६</sup> मे ।  
बहुत ढूँढा तुझे बादे-फना<sup>१७</sup> ऐ जिन्दगी मैंने ॥

१ भार, वजन २ मुसीबतों ने ३ सन्तप्त मन पर, दुखी दिल पर  
४ परलोक, यमलोक ५ प्रमाणित ६ कब्र की पीड़ा से ७. बहुत ख़राब  
८. जीवन की यातना ९ सास १०. बीती हुई आयु की ११. मृतक, मरा हुआ  
आदमी १२. प्रिय जनो ! प्यारो ! १३. यदि, अगर १४. रोग, विपत्ति,  
खेद, कष्ट, दुःख १५. समय, वक्त १६ कब्र के एकान्त में १७. मरने  
के बाद ।

६५. जुस्तजू<sup>१</sup> से यह मिला आखिर निशाने-जिन्दगी<sup>२</sup> ।  
चन्द कन्ने नक्शे-पाए-रहरवाने-जिन्दगी<sup>३</sup> ॥

६६. मौज<sup>४</sup> की शान है तूफान के बरपा<sup>५</sup> रहने में ।  
जिन्दगी क्या है ? गिरिफ़्तारे-बला<sup>६</sup> हो जाना ॥

—बमीन

६७. जिन्दगी खुद क्या है फानी, यह तो क्या कहिए मगर ।  
मौत कहते हैं जिसे वह जिन्दगी का होश है ॥

—फानी

६८. मेरी यह जिन्दगी है कि मरना पडा मुझे ।  
इक और जिन्दगी की तमन्ना लिये हुए ॥

—हफीज़

६९. जिन्दगी दरिया-ए-वेसाहिल<sup>७</sup> है और किस्ती ख़राब ।  
मैं तो घबरा कर दुआ करता हूँ तूफ़ाँ के लिए ॥

—सीमाव

१००. मुझे जिन्दगी की दुआ देने वाले ।  
हूँसी आ रही है तेरी सादगी पर ॥

—गोपाल मित्तल

१०१. मरके टूटा है कही सिलसिलये-कैदे-हयात<sup>८</sup> ।  
हाँ मगर इतना है ज़ज़ीर<sup>९</sup> बदल जाती है ॥

—फानी

१ खोज, तलाश से २. जीवन का चिन्ह, जीवन का पता ३ जीवन-यात्रियों के पांवों के चित्र या उभरे हुए चिन्ह ४ लहर-तरंग, ५. उपस्थित, कायम, व्याप्त, छाया हुआ ६ विपत्ति-गस्त, ७ बिना तट की नदी ८ जीवन की कैद का सिलसिला, ९ शृंखला, साकल ।

- १०२ जिन्दगी वस है गम का दरिया ।  
न कोई इसको है लाभ पाया ॥  
कि जिसने जब भी लगाई डुवकी ।  
वो उभर के ऊपर कभी न आया ॥ —रामस्वरूप
- १०३ जईफी जिन्दगी मे  
वेजाँ खू की रवानी है ।  
अगर जिन्दादिली है तो  
बुढापा भी जवानी है ॥
- १०४ कौन कहता है कि है अंजाम<sup>१</sup> मौत ?  
जिन्दगी का जिन्दगी अजाम है ॥ असर
- १०५ है अजल<sup>२</sup> की इस गलत-वखसी<sup>३</sup> पे हैरानी<sup>४</sup> मुझे ।  
इश्क<sup>५</sup> लाफानी<sup>६</sup> मिला है जिन्दगी फानी<sup>७</sup> मुझे ॥ हफीज
- १०६ मेरा तजरुवा<sup>८</sup> है कि इस जिन्दगी मे ।  
परेगानियाँ<sup>९</sup>—ही—परेगानियाँ हैं ॥ हफीज
१०७. जीने वाला यह समझता नही सौदाई<sup>१०</sup> है ।  
जिन्दगी मौत को भी साथ लगा लाई है ॥
- १०८ जुस्तजू है जिन्दगी, जौके-तलब<sup>११</sup> है जिन्दगी ।  
जिन्दगी का राज<sup>१२</sup> लेकिन दूरिये-मजिल<sup>१३</sup> मे है ॥ असगर

१ परिणाम २. सृष्टि के पहले दिन् की ३. अयुक्त दान ४ आश्चर्य  
५ प्रेम ६ अमर शाश्वत ७. क्षणिक ८. अनुभव ९ दुख  
वेचैनियाँ १० पागल ११ पाने की लगन १२. रहस्य १३. गन्तव्य-स्थान  
की दूरी मे ।

१०६. जन्मे-कुदरत<sup>१</sup> ने आदमी के लिए,  
कैसा दिल-आवेज<sup>२</sup> छाँटा है ।  
दिल की तस्कीन<sup>३</sup> ढूँढने वाले ।  
जिन्दगी एक हसीन<sup>४</sup> काटा है ॥

सदम

११०. अजब जिन्दगी है, अजब जिन्दगी है ।  
कि है जुल्म पर जुल्म और वेबसी<sup>५</sup> है ॥

आरजू

१११ हमरो को जिसने दुनिया में बनाया कामयाब ।  
जिन्दगी उसकी है 'दानिश' उसका जीना है सफल ॥

दानिश

११२ नहीं वह जिन्दगी, जिसको जहाँ नफरत<sup>६</sup> से ठुकराए,  
नहीं वह जिन्दगी, जो मौत के कदमों पै भुक्कजाए ।  
वही है जिन्दगी, जो नाम पाती है भलाई में,  
खुदी को छोड़ करके पहुँच जाती है खुदाई में ॥

११३ मुवारक जिन्दगी के वास्ते दुनिया को मरजाना ।  
हमें तो मौत में भी जिन्दगी मालूम देती है ॥

रज्म

११४ तबीबों से मैं क्यों पूछूँ, इलाजे-दर्दे-दिल<sup>७</sup> अपना ?  
मज्ज<sup>८</sup> जब जिन्दगी खुद हो तो, फिर उसकी दवा क्या है ?

११५. हम न होंगे, न जमाने में निशानी होगी ।  
जिन्दगी अपनी किसी रोज कहानी होगी ॥

बिस्मिल

१ प्रकृति की शान्ति ने २. मानसिक रोग ३ शान्ति ४ सुन्दर, ५ मजबूरी ६ मसार ७ घृणा ८ हकीमो ९ मानसिक पीडा की चिकित्सा १० रोग ।

- ११६ जिन्दगी याँ तो फकत<sup>१</sup> बाजिए-तिफलाना<sup>२</sup> है ।  
मर्द वोह है जो किसी रंग में दीवाना है ॥

—चकवस्त

- ११७ जहाँ तक हो बर<sup>३</sup> कर जिन्दगी आला खयालो<sup>४</sup> में ।  
बना देता है अच्छा बैठना साहब-कमालो में ॥

—शाब

- ११८ तमाम उम्र बर<sup>३</sup> यूँही जिन्दगी होगी ।  
खुशी में रंज कही, रज में खुशी होगी ॥

—दाग

- ११९ जौके-करम<sup>५</sup> नहीं हूँ, तावे-जफा<sup>६</sup> नहीं है ।  
बुजदिल<sup>७</sup> को जिन्दगी का कोई मजा नहीं है ॥

—मोश

- १२० पैगाम जिन्दगी ने दिया मौत का मुझे ।  
मरने के इन्तजार में रोना पड़ा मुझे ॥

१२१. वह जमाना और था, जब जिन्दगी आसान थी ।  
यह जमाना और है, अब जिन्दगी दुश्वार है ॥

- १२२ जिन्दगी नाम है तूफाने-आजादी<sup>८</sup> का 'रविश' ।  
नगे-साहिल<sup>९</sup> है वो जिसको कोई तूफान न मिला ॥

—रविश सिद्दीकी

- १२३ जो सच पूछो तो दुनिया में फकत रोना-ही-रोना है ।  
जिसे हम जिन्दगी कहते हैं, कांटो का बिछौना है ॥

१२४. इन्ही फिक्रो<sup>१०</sup> में अपनी जिन्दगी के दिन गुजरते हैं ।  
यह करना है, वह करना है, यह होना है, वह होना है ॥

—बिस्मिल

---

१ केवल २ बच्चों का खेल ३ व्यतीत ४ ऊँचे विचारों में ५. महरबानी का शौक ६ अत्याचार की शक्ति ७ डरपोक ८ बिपत्तियों और दुर्घटनाओं का तूफान ९ तट के लिए कलक, १० चिन्ताओं ।

१२५ कहने है इक फरेबे-मुसलसल<sup>१</sup> है जिन्दगी ।  
उसको भी वक्फे-हसरत-ओ-हिरमा<sup>२</sup> बना दिया ॥

—असगर

१२६ कर आँसू पसीने, लहू की रवानी<sup>३</sup> ।  
जो चाहे दिलेजार<sup>४</sup> तू जिन्दगानी ॥  
१२७ जिन्दगी नाम था जिसका उसे खो बैठे हम ।  
अब उमीदो<sup>५</sup> की फकत<sup>६</sup> जलवागरी<sup>७</sup> बाकी है ॥

—चफबस्त

१२८ तरस रही है जिन्दगी, वरस रही है जिन्दगी ।  
नफस-नफस मे<sup>८</sup> तिश्नगी<sup>९</sup> की दास्तो<sup>१०</sup> लिये हुए ॥

—जिगर

१२९. नतीजा जिन्दगानी का है कुछ दुनियाँ मे कर जाना ।  
खयाले-मौत<sup>११</sup> बेजा<sup>१२</sup> है, वह जव आये तो मर जाना ॥  
१३० हँस के दुनियाँ मे मरा और कोई रोके मरा ।  
जिन्दगी पाई मगर उसने, जो कुछ होके मरा ॥  
जी उठा मरने से वह जिसकी खुदा पर थी नजर ।  
जिसने दुनियाँ ही को पाया था वह सब खोके मरा ॥

—अकबर

१३१ जिन्दगी की हकीकत<sup>१३</sup> आह न पूछ ।  
मौत की वादियो मे<sup>१४</sup> इक आवाज ॥

—अख्तर शोरानी

१ धारावाहिक [लगातार] घोखा २. कामना और दुख के हवाले ।  
३ प्रवाह, बहाव, धार, ४ दीन हृदय, दुःखित मन, ५ आशाओ,  
आकाक्षाओ की ६ केवल, सिर्फ, ७ दिखावा प्रदर्शनी, ८ सास-सास मे,  
९ प्यास, १० कहानी, ११ मृत्यु का विचार, मरने की चिन्ता,  
१२ अनुचित, बेतुका, व्यर्थ १३ वास्तविकता, यथार्थता, सत्यता,  
१४ वादियो मे ।



१३२. हमको क्या जिन्दगी से 'अदम' ।  
आप जाती है, आप आती हैं ॥

१३३. जिन्दगी खोके यह खयाल आया ।  
जिन्दगी चीज थी जरूरत की ॥

—अदम

१३४. जो जीना हो तो पहले जिन्दगी का मुद्दा<sup>१</sup> समझे ।  
खुदा तौफीक<sup>२</sup> दे तो आदमी खुद को खुदा समझे ॥

—अफसर

१३५. जिन्दगी क्या है मुसलिसल<sup>३</sup> शौक पैहम इज्तराब<sup>४</sup> ।  
हर कदम पहले कदम से तेजतर<sup>५</sup> रखता हूँ मैं ॥

—जानिसार अख्तर

१३६. दिल से गर्मो-सर्दका<sup>६</sup> एहसास<sup>७</sup> तक जाता रहा ।  
जिन्दगी यह है तो नैयर, मौत किसका नाम है ?

—नैयर अकबरावादी

१३७. मुसलसल<sup>८</sup> मुसीबत<sup>९</sup>, सरासर<sup>१०</sup> तवाही<sup>११</sup> ।  
मेरी जिन्दगानी अरे तौवा । तौवा ॥

—हरीचन्द अख्तर

१३८. उमीदो मे<sup>१२</sup> ही जाने-जिन्दगी है,  
तमन्ना पासवाने-जिन्दगी<sup>१३</sup> है,  
रहे जोड़े-अमल दिल मे मुसलसल<sup>१४</sup>,

१ उद्देश्य, अभिप्राय, प्रयोजन, २ योग्यता, पात्रता, ३. निरन्तर चाह, लगन, अलावा, ४ लगातार बेचनी, ५ अधिक तेज, ६ संसारिक सुख-दुख का ऊँच-नीचका, ७ ज्ञान, अनुभूति, सजा ८ निरन्तर ९ विपत्ति १० विन्कुल ११ विनाश १२ आशा मे ही जीवन का प्राण है, आशा पर ही १३ जीवन निर्भर है । जीवन की रक्षक १४ लगातार

यही रूहे-रवाने<sup>१</sup>-जिन्दगी है,  
नही बाकी जो सरमे कोई सौदा,  
तो फिर क्या खाक शाने-जिन्दगी है ?  
वह जिन्दा क्या जिसका बुझ गया दिल ।  
सरासर नौहा-खवाने-जिन्दगी<sup>२</sup> है ॥

—अमन लखनवी

१३६ जिन्दगी है सिर्फ शायद एक मौजे-बेकरार<sup>३</sup> ।  
बारहा<sup>४</sup> लौटे है तूफ़ों की तरफ साहिल से हम ॥

—मल्हूर सईवी

१४० न सोज है तेरे दिल में, न साज फितरत में ।  
यह जिन्दगी तो नहीं, जिन्दगी हकीकत में ॥

—राज चाँदपुरी

१४१ जानता है बता नहीं सकता ।  
जिन्दगी किस तरह हुई बरबाद ?

„

१४२ अरे ओ बेकसी पै रोने वाले ! कुछ खबर भी है ?  
वही है जिन्दगी, जो जिन्दगी देखी नहीं जाती ॥

—शिफर ग्वालियरी

१४३ जिन्दगी धूप-छाँव है ऐ दोस्त ।  
गम से उकता के मुस्करा देगे ॥

—हुवाय तरमजी

१४४ गमे-दौरा में<sup>५</sup> गुजरी जिस कदर गुजरी जहाँ गुजरी ।  
और इस पर लुत्फ ये है जिन्दगी को मुस्तसर<sup>६</sup> जाना ॥

—मजाज

---

१ प्राण डालने वाली २ जिन्दगी का मातम, जीवन का शोक  
३ बेचैन लहर ४ बार-बार, कई बार ५ दुनिया की मुशिवतों में ६  
सक्षिप्त, अत्यल्प, थोड़ी ।

१४५ जिन्दगी पर डालली, जिसने हकीकत-बी<sup>१</sup> निगाह ।  
जिन्दगी उसकी नजर मे बे-हकीकत<sup>२</sup> हो गई ॥

—नजर सहवारवी

१४६ जिन्दगी होती है मुश्किल से कही मुश्किलतर<sup>३</sup> ।  
जिस कदर कहते है आशा मुझे मालूम न था ॥

—निहाल

१४७ इस कदर शादाव<sup>४</sup> हो जायेगी कुश्ते-जिन्दगी<sup>५</sup> ।  
यह जहाँ कहलायेगा, डक दिन विहिस्ते-जिन्दगी<sup>६</sup> ॥

—निहाल

१४८ हाय क्यों फितरत को<sup>७</sup> मासूमो पै<sup>८</sup> रहम आता नही ।  
मुख्तसर<sup>९</sup> है किस कदर यह जिन्दगी का खेल भी ॥

—नदीम क़ासिमो

१४९ कौन कह सकता है स्वावे-रायगाँ<sup>१०</sup> है जिन्दगी ?  
ऐ अमीने-होश<sup>११</sup> कैफे-जाविदा<sup>१२</sup> है जिन्दगी ॥  
जादा-पैमाँ,<sup>१३</sup> कारवाँ-दर-कारवाँ है जिन्दगी ।  
जिन्दगी मौजे-रवा, जूए-रवाँ, व्हरे-रवाँ<sup>१४</sup> ॥

—रविश सिद्दी की

१५० आरजू<sup>१५</sup> डक जुर्म<sup>१६</sup> है, जिसकी सजा है जिन्दगी ।  
जिन्दगी-भर आजूँओ को पगेमाँ<sup>१७</sup> कीजिये ॥

—दानिश



१ यथार्थदर्शी, मन्त्रार्थ ज्ञो देखने वाली २ अवास्तविक, तुच्छ, नगण्य, असत्य  
३ अधिक जटिल, कठिन ४ हरी-भरी ५. मुर्झाई जिन्दगी ६ जीवन का स्वर्ग  
७ प्रकृति को ८ बेगुनाहो पर, निरपराधो पर ९ सक्षिप्त स्वल्प, थोड़ा  
१०. व्यथ म्वप्न ११ हाज की घरोहर के रक्षक १२ स्थायी आनन्द  
१३ जीवनमयी यात्रोदल पगडंडी पर बटा जा रहा है १४ जीवन बहती हुई  
सहज, नहर बाज समुद्र है १५ इच्छा, कामना, चाह, १६ अपराध १७.  
नज्मान, गर्मि दा ।

# जवानी की कहानी क्या ? जवानी खुद कहानी है !



१. कहानी कहने वाले हाय, क्यों जिक्रे-जवानी<sup>१</sup> है ।  
जवानी की कहानी क्या, जवानी खुद कहानी है ॥

—सीमाव

२. बला<sup>२</sup> है, अहदे-जवानी से खुश न हो ऐ दिल ।  
समल कि उम्र की दुनियाँ मे इनकलाब<sup>३</sup> आया ॥

—साक्रिब

३. रहती है कब बहारे-जवानी<sup>४</sup> तमाम उम्र ?  
मानिन्द<sup>५</sup> बूये-गुल<sup>६</sup> इधर आई, उधर गई ॥

४. जवानी आदमी की मायए-इलजाम<sup>७</sup> होती है ।  
निगाहे-नेक<sup>८</sup> भी इस उम्र मे बदनाम होती है ॥

५. महतरानी होकि रानी मुस्करायेगी जरूर ।  
कोई आलम<sup>९</sup> हो जवानी गुन गुनायेगी जरूर ॥

६. मौत से बढकर बुढापा आएगा ।  
जान से बढकर जवानी जाएगी ॥

—बाग

७. है जवानी खुद जवानी का सिंगार ।  
सादगी गहना है इस सिम के<sup>१०</sup> लिए ॥

—अमीर

१ युवावस्था की चर्चा २ मुसीबत ३ परिवर्तन, क्रान्ति ४. यौवन का वसन्त ५. तरह ६ फूल की महक ७. दोषों की सम्पत्ति ८. पवित्र दृष्टि ९ अवस्था १०. उम्र के ।

८. मुहब्बत है अपनी भी लेकिन न अन्धी ।  
जवानी है लेकिन दिवानी नहीं है ॥

—जिगर

९ हर गुनाह<sup>१</sup> से तोबा कर ली, जब जवानी हो चुकी ।  
जाहिदो<sup>२</sup> जन्नत<sup>३</sup> में जाना कोई तुमसे सीखले ॥

१०. इधर आँख भपकी, उधर ढल गई वह ।  
जवानी भी इक धूप थी दोपहर की ॥

—इवरत

११ जो जिन्दादिल<sup>४</sup> है हमेशा जवान रहते है ।  
बहारे-जीरत<sup>५</sup> यकीन<sup>६</sup> इसी शवाब<sup>७</sup> में है ॥

—फैकी

१२ गफलत<sup>८</sup> में गई आह मेरी सारी जवानी ।  
ऐ उम्र-गुजिस्ता<sup>९</sup> तेरी मैं कद्र न जानी ॥

—मीर

१३. जवानी और हगामो<sup>१०</sup> से खाली ।  
ये, जीना है यह कोई जिन्दगी है ?

—दिलीप शादानी

१४ शवाब<sup>११</sup> नाम है उन जानवाज<sup>१२</sup> लमहो<sup>१३</sup> का ।  
जब आदमी को यह महसूस<sup>१४</sup> हो जवाँ हैं मैं ॥

—नितार

१५. रियाजत<sup>१५</sup> चीज़ तो अच्छी है लेकिन हजरते-जाहिद<sup>१६</sup> ।  
यह वेमौमम-सी शै<sup>१७</sup> मालूम होती है जवानी में ॥

—अदम

१. पाप-कर्म २ सयमी पुरुषो । ३ स्वर्ग में ४ प्रसन्न-चित्त ५ जीवन-  
शोभा ६ निस्सन्देह ७ जवानी में ८. प्रमाद ९ गुजरी हुई उम्र १० हो-  
हल्ला, लड़ाई-मगडा ११ जवानी १२ प्रसन्न १३ क्षणो १४ अनुभव १५  
त्याग-तपस्या १६ सयमी महोदय । १७ वस्तु ।

१६ हाय वह दौरे-जिन्दगी<sup>१</sup>, जिसका लकव<sup>२</sup> शबाव था ।  
कैसी लतीफ<sup>३</sup> नीद थी, कैसा हसीन<sup>४</sup> ख्वाब<sup>५</sup> था ?

—कदौर लखनधी

१७ जवानी हो गर जाविदानी<sup>६</sup> तो या रब !  
तेरी सादा दुनिया को जन्नत<sup>७</sup> बना दे ॥

—अद सर

१८ जवानी हासिले-हुस्ने-दो-आलम<sup>८</sup> होती जाती है ।  
अरे तोवा कयामत<sup>९</sup> कदे-आदम<sup>१०</sup> होती जाती है ॥

१९ कदम डगमगाये, नजर वहकी-वहकी ।  
जवानी का आलम<sup>११</sup> है सरगारियाँ<sup>१२</sup> है ॥

—जिगर

२० जवानी से अच्छे ये दिन कमसिनी<sup>१३</sup> के ।  
कि अब छिपते हैं सामने होने वाले ॥

२१ फानी<sup>१४</sup> है, यह दुनिया भी, हर ऐश<sup>१५</sup> भी फानी है ।  
उम्मे-रवाँकी<sup>१६</sup> कीमत कुछ है तो जवानी है ॥

—अहसान

२२ पीरी<sup>१७</sup> मे बलबले<sup>१८</sup> वोह कहाँ है शबाव के ?  
एक धूप थी, जो साथ गई आफताव<sup>१९</sup> के ॥

२३ दो लफ्जो<sup>२०</sup> मे पोशीदा<sup>२१</sup> कुल मेरी कहानी है ।  
इक लफ्ज मुहब्बत है, इक लफ्ज जवानी है ॥

२४ फिक्रे-दुनिया<sup>२२</sup> थी न कुछ अन्देश-ए-अजाम<sup>२३</sup> था ।  
हाय क्या आलम था वह, जिसका जवानी नाम था ॥

१. जीवन का युग २ उपनाम, उपाधि ३ मजेदार ४ सुन्दर ५ सपना  
६ शाश्वत, अमर ७ स्वर्ग ८ जिसे दो दुनिया का सौन्दर्य प्राप्त है ९ प्रलय  
१० मानवाकार ११ दशा, अवस्था १२ मदमस्तिर्याँ १३ अल्पवय, कमउम्र  
१४ क्षणिक १५ ऐश्वर्य १६ बहती हुई आयु की १७ बुढ़ापे मे १८ उमरों,  
जोश १९ सूर्य २० शब्दो २१ छिपी हुई २२ ससार की चिन्ता २३ परि-  
णाम या अन्त का डर ।

२५ कहता हूँ जो मैं कि जवानी मेरी ।  
पीरी<sup>१</sup> कहती है कि ख्वाब<sup>२</sup> देखा होगा ॥

—रशीद

२६. अखीर<sup>३</sup> हो गए गफलत<sup>४</sup> में दिन जवानी के ।  
वहारे-उम्र<sup>५</sup> हुई कब खिजा<sup>६</sup> नहीं मालूम ॥

—आतिश

२७ वह जवानी हो चुकी, वह नौजवानी हो चुकी ।  
बिर्फ मरना रह गया, अब जिन्दगानी हो चुकी ॥

२८. पीरी में अब न 'हातिम' जवानी को याद कर ।  
सूखे दरख्त भी कही होने है फिर हरे ?

—हातिम

२९. जाना था कि आना था जवानी का इलाही ।  
सैलाब<sup>७</sup> की थी मौज या भोका था हवा का ?

३०. यही दिन थे सीसी वार तुम सवरते ।  
जवानी तो आई, सवरना न आया ॥

३१ जवानी भी अजब है कि जब तक है नगा उमका ।  
मज्जा है सादे पानी में गरावे-अर्गवानी<sup>८</sup> का ॥

३२. गमो<sup>९</sup> पर गम फटे पड़ते है अय्यामे-जवानी<sup>१०</sup> में ।  
डजाफे<sup>११</sup> हो रहे है वाकियाते-जिन्दगानी<sup>१२</sup> में ॥

३३. बुढापा नाम है जिसका, वह है अफमुर्दगी<sup>१३</sup> दिलकी ।  
जवानी कहते है जिसको तबीअत की जवानी है ॥

—नजर

३४ कुछ ठडी सासे होती है, अश्को<sup>१४</sup> की खानी होती है ।  
पूछे तो कोई मेरे दिल से, क्या चीज जवानी होती है ?

१. बुढापा २ स्वप्न ३. समाप्त ४ प्रमाद ५ आयु का वसन्त ६ पतझड़  
७. तूफान, बाढ़ ८. अगूरी गराव का, ९ दुख १० युवावस्था में, यौवन-काल  
में ११ बढोत्तरी वृद्धि १२ जीवन की घटनाओं १३ दुर्बलता, मुर्झाना  
१४. आँसुओं, ।

३५. गाफिल<sup>१</sup> किये देती है जवानी की उमरों ।  
इरा उम्र में इन्सा को दिखाई नहीं देता ॥

—शातिर

३६. अमीर<sup>२</sup> जाती जवानी यह मुझसे कहती है ।  
खिजा न समझो मुझे, आखिरी बहार हूँ मैं ॥

—अमीर

३७ हुस्न है बेवफा है फानी भी ।  
काश<sup>३</sup> ! समझे इसे जवानी भी ॥

३८ कुछ कदम न की अहदे-जवानी<sup>३</sup> की सद अफसोस<sup>४</sup> ।  
हम रह गए गफलत में, यह आया भी गया भी ॥

३९ सैर कर दुनियाँ की गाफिल ! जिन्दगानी फिर कहाँ ?  
जिन्दगी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहाँ ?

४०. उम्रे-दो-रोज़ा<sup>५</sup> अपनी जवानी में कट गई ।  
यह रात सिर्फ एक कहानी में कट गई ॥

४१ चार दिन जोशे-जवानी में गनीमत जानिये ।  
खुशक<sup>६</sup> होकर नखल<sup>७</sup> फिर होता नहीं जिनहार सब्ज<sup>८</sup> ॥

४२ सकूने-कलब<sup>९</sup> की दौलत<sup>१०</sup> कहाँ दुनियाँ-ए-फानी में<sup>११</sup> ?  
बस इक गफलत<sup>१२</sup>-सी हो जाती है और वह भी जवानी में ॥

४३ ऐ जवानी ! यह तेरे दम के हैं सारे भगडे ।  
तू न होगी तो यह दिल न यह अरुमाँ<sup>१३</sup> होगा ॥

१. प्रमत्त २ क्या ही अच्छा हो ३. युवावस्था की ४ अत्यन्त दुःख, पछतावा, ५ दो दिन की आयु, ६ सूखे, ७ वृक्ष ८ हरे-भरे ९. मानसिक शांति १० सम्पत्ति ११ क्षण भगुर ससार १२ प्रमाद-सा, १३ इच्छा, उमर, कामना ।



४४. मस्ती शराब की सी है यह आमदे-शबाब<sup>१</sup> ।  
ऐसा न हो कि तुमको जवानी नशा करे ?

—मीर तकी

४५. हैफ<sup>२</sup> अय्याम<sup>३</sup> जवानी के चले जाते हैं ।  
हर घड़ी दिन की तरह हम तो ढले जाते हैं ॥

—इन्शा

४६. हवाए-नफ<sup>४</sup> का तूफान है वहरे-जिन्दगानी<sup>५</sup> में ।  
खुदा महफूज<sup>६</sup> रखे किश्तिये-दिल<sup>७</sup> को जवानी में ॥

४७. ता-हश्र<sup>८</sup> अब न होगी मुलाकात<sup>९</sup> आपसे ।  
खससत हुश्रा यह कहके जमाना शबाब का ॥

४८. आरजू<sup>१०</sup>-ही-आरजू है हासिले-अहूदे-शबाब<sup>११</sup> ।  
आरजू-ही-आरजू में फैसला हो जायगा ॥

४९. अफसान-ए-शबाब<sup>१२</sup> खुदारा न पूछिए ।  
देखा है जिसको जागते में यह वह खाब था ॥

५०. लुत्फ<sup>१३</sup> कहते हैं जिसे खाब है वेदारी<sup>१४</sup> का ।  
और जवानी है फकत आलमे-जजबात<sup>१५</sup> की रात ॥

५१. दो रोज में शबाब का आलम<sup>१६</sup> गुजर गया ।  
बदनाम करने आया था, बदनाम कर गया ॥

५२. न पूछ ऐश जवानी का हमसे पीरी में ।  
मिली थी खाब में वह सलतनत<sup>१७</sup>, शबाब न था ॥

—अमीर

१ युवावस्था का आगमन, २ आश्चर्य है ३ युवावस्था के दिन ।

४. विकार-वासना की हवा ५ जीवन-समुद्र में ६ सुरक्षित ७. मन की नैया, ८ प्रलय-काल पर्यन्त ९ राक्षात्कार, १० इच्छा, कामना ११. युवावस्था १२. जवानी की कहानी १३. मजा १४. जागत-अवस्था, १५ उमंगों की । १६ अवस्था १७. हकूमत ।

५३. आज ऐ गाफिल ! जवानी मे अकडना है अबस ।  
कल यह कदे-रास्त<sup>१</sup> मुहताजे असा<sup>२</sup> हो जायगा ॥

—फसाहत

५४ मुहताज अब नही हम नासह<sup>३</sup> । नसहीतो के<sup>४</sup> ।  
साथ अपने सब वह वाते लेती गई जवानी ॥

—दर्द

५५ जवानी का जब उतरा नशा सरसे तब यह होश आये ।  
बड़ी नादानियाँ की हमने दानाई<sup>५</sup> के पर्दे मे ॥

—महसर

५६. अगर कुछ जिन्दगानी मे मजा है ।  
तो अय्यामे-जवानी मे<sup>६</sup> मजा है ॥

—रानी

५७ ऐ 'दाग' यह किस काम की मस्ती-ओ जवानी ।  
तुम इसमे जो अन्देश-ए-फर्दा<sup>७</sup> नही रखते ॥

—दाग

५८ 'शायर' वस अब बहारे-जवानी तमाम<sup>८</sup> है ।  
समझे हो जिसको सास वह भोके खिजा के है ॥

—आगा शायर

५९ कर दिया जोफ ने<sup>९</sup> आजिज<sup>१०</sup> गालिब !  
नगे-पीरी<sup>११</sup> है जवानी मेरी ॥

—गालिब

१ सीधा पग, अकडा हुआ कदम २ लाठी का जरूरतमन्द  
३. उपदेशक ४ शिक्षाओं के ५ बुद्धिमत्ता की ओट मे ६ जीवन के  
दिनों मे, जीवन-काल मे ७ आने वाले फल का सन्देह ८ समाप्त ९.  
कमजोरी ने १०, नम्र, झुका हुआ ११ बुढ़ापे का कलक ।

६०. जिन्दगी रखसत हुई, जिस वक्त तू रखसत हुआ ।  
ऐ शबाब ऐ ! गुलशने-जन्नत<sup>१</sup> निशाने-जिन्दगी<sup>२</sup> ॥

—अकबर

६१. चली मुँह मोड़कर क्यों ऐ जवानी ।  
हमे यह बलबले अपने दिखाके ॥

—जुर्रत

६२. गुजर गये हैं जवानी के दिन जो गफलत से ।  
अब एक-एक का मुँह देख रहे हैं गफलत से ॥

—शाद

६३. जवानी हस के काटी, अब पलक पर अस्क चमकी है ।  
जो रात आखिर हुई निकला सितारा सुबहे-पीरीका<sup>३</sup> ॥

—रासिख

६४. आलम तमाम अपनी जवानी से था जवा ।  
हम पीर<sup>४</sup> क्या हुए कि जहा<sup>५</sup> पीर हो गया ॥

—अमीर

६५. अच्छा हुआ शबाब का आलम उतर गया ।  
इक जिन<sup>६</sup> चढा हुआ था कि सरसे उतर गया ॥

असद

६६. क्या खफा<sup>७</sup> कर दिया जवानी को ।  
कोसू<sup>८</sup> किस मुँह से नातवानी को<sup>९</sup> ?

—सोज

६७. दुश्मन न था शबाब<sup>१०</sup> । तू नादान दोस्त था ।  
बदनाम कर गया मुझे, बदनाम हो गया ॥

— — — — —

३

१ स्वर्ग का उद्यान २ जीवन का लक्ष्य, चिन्ह ३ वृद्धावस्था के प्रभात का ४ बूढ़ा, बूढ़े ५ समार ६ भूत ७ कुपित, नाराज ८ दुर्वृत्तता को ।

६८ गाफिल<sup>१</sup> है बहारे-गमन,<sup>२</sup> उम्मे-जवानी<sup>३</sup> ।  
कर सैर कि मौमम यह दुवारा नहीं होता ॥

—जीक

६९ जवानी है तो जीके-दीद<sup>४</sup> भी, लुत्फे-तमन्ना<sup>५</sup> भी ।  
हमारे घर की गवादी क्यामे-महमा<sup>६</sup> तक है ॥

७० खुदा की खुगई का जल्वा है ऐ वुत !  
यह हुस्ने-जवानी नहीं गाने-रव है ॥

७१ हुआ राही अदम<sup>७</sup> का कारवा<sup>८</sup> जब से जवानी का ।  
बदलता ही गया नकशा<sup>९</sup> निगाते-जिन्दगी<sup>१०</sup> का ॥

—जशर

७२. जवानी की दुआ लडको को नाहक<sup>११</sup> लोग देते हैं ।  
यही लडके मिटाते हैं जवानी को जवा<sup>१२</sup> होकर ॥

—मजाज

७३ जो दानिशमन्द<sup>१३</sup> है, वह यूँ दुआ देते हैं लडको को ।  
न हो मक्कार<sup>१४</sup> पीरी मे, न हो आशिक<sup>१५</sup> जवा<sup>१६</sup> होकर ॥

—अकबर

७४ वच जाए जो दुनिया मे जवानी की हवा से ।  
होता है फरिश्ता<sup>१७</sup> कोई इन्सा<sup>१८</sup> नहीं होता ॥

—कतील शफाई

७५ जवानी खो के इन्सां लाख तदवीरे करे, लेकिन ।  
दुवारा हाथ आ सकता नहीं दामन<sup>१९</sup> जवानी का ॥

१. प्रमत्त २ उद्यान की शोभा, वसत, ३. युवावस्था, ४ दर्शन की उत्कंठा ५ कामना का आनन्द, ६ अतिथि के ठहरने तक ७ परलोक, ८ काफला, ९ चित्र १० जीवन की प्रसन्नता ११ व्यर्थ १२ बुद्धिमान १३ चालवाज, मायावी १४ ससार-प्रेमी १५. देवता १६ मनुष्य १७ पल्ला ।

७६. जवानी के दिन जो गँवाते फिरे ।

बड़े होके चिमटे बजाते फिरे ॥

७७. किस काम की नदी वोह, जिसमे नही रवानी<sup>१</sup> ?

जब होश ही नही तो किस काम की जवानी ?

—जोश

७८. नदामत<sup>२</sup> हुई हश्र मे जिनके बदले ।

जवानी की दो-चार नादानियाँ है ॥

—हफीज

७९. नौजवानी मे मसाइब<sup>३</sup> से डराता है मुझे ।

नासिहा नादां<sup>४</sup> ! यह है मौसमे-बर्को-शरर<sup>५</sup> ॥

८०. आलमे-कैफी-जतू<sup>६</sup> मे मारती है कहकहे<sup>७</sup> ।

ज़िन्दगी जब मौत की आँखो मे आँखें डालकर ॥

—जोश मलीहाबादी




---

१. प्रवाह, बहाव २. शर्मिन्दगी, बदनामी ३. मुसीबतो, कष्टो  
४. मूर्ख उपदेशक ! ५. विजली और शोलो की चीज ६. उन्मत्तावस्था  
मे ७. ठहाके, अट्टहास ।

## कुछ करलो नौजवानो !



१ कुछ करलो नौजवानो ! उठती जवानियाँ हैं ।  
खेतो को दे लो पानी, यह बह रही है गंगा ॥

—हाली

२. उकावी रूह<sup>१</sup> जब वेदार<sup>२</sup> होती है जवानो मे ।  
नजर आती है उनको अपनी मजिल आसमानो मे ॥

—इकबाल

३ कदम कदम ही नहीं, दिल से दिल मिलाके चलो ।  
कदम उठाओ जरा और मुस्करा के चलो ॥

४ ले चुके अंगडाईयाँ, ऐ गेसुओवालो<sup>३</sup> ! उठो ।  
नूर<sup>४</sup> का तडका<sup>५</sup> हुआ, ऐ शव के मतवालो ! उठो ॥

—बक

५. मिटेगा दीन<sup>६</sup> भी और आबरू<sup>७</sup> भी जाएगी ।  
तुम्हारे नाम से दुनियाँ को शर्म आएगी ॥

—चकबस्त

६ दिल हमारा जज्बये-गैरत<sup>८</sup> को खो सकता नहीं ।  
हम किसी के सामने झुक जाएँ, हो सकता नहीं ॥  
राहे-खुदारी<sup>९</sup> से मरकर भी भटक सकते नहीं ।  
टूट तो सकते हैं हम, लेकिन लचक सकते नहीं ॥

---

१. गिद्ध की-सी आत्मा, २ जागृत ३ जुल्फो वालो ४ प्रकाश का  
५. प्रभात ६. धर्म, ७ प्रतिष्ठा, इज्जत ८ लज्जा को, व्यक्तित्व को आन से  
तात्पर्य है ९ स्वाभिमान के पथ से ।

हथ्र मे<sup>१</sup> भी खुसरवाना<sup>२</sup> शान से जाएंगे हम ।  
 और अगर पुरसिश<sup>३</sup> न होगी तो पलट<sup>४</sup> आएंगे हम ॥  
 अहलेदुनियाँ<sup>५</sup> क्या है और उनका असर क्या चीज है ?  
 हम खुदा से नाज करते हैं, बशर<sup>६</sup> क्या चीज है ?  
 नाज कर ऐ यार ! अपनी दिलवरी पर नाज कर ।  
 'जोग'-सा मगरूर है तेरा गुलामेकमतरी<sup>७</sup> ॥

—जोश

७ नीजवानो ! यह बड़े बूढ़े न मानेंगे कभी ।  
 सेहते-अफकार<sup>८</sup> से खाली<sup>९</sup> है इनकी जिन्दगी<sup>१०</sup> ॥  
 सुबह का जब नाम आता है तो सो जाते हैं यह ।  
 रोशनी को देखते ही कोर<sup>११</sup> हो जाते हैं यह ॥  
 इनके शानो<sup>१२</sup> पर तो ऐसे सर हैं ऐ अहले-निगाह<sup>१३</sup> ।  
 जिनका गूदा जल चुका है, जिनके खाने है सियाह<sup>१४</sup> ॥  
 और वह खाने है जिन तक रौशनी जाती नहीं ।  
 आँधियों के वक्त भी जिनमे हवा आती नहीं ॥

—जोश

८ तेरा शबाब<sup>१५</sup> अमानत<sup>१६</sup> है सारी दुनिया की ।  
 तू खारजारे जहाँमि<sup>१७</sup> गुलाब पैदा कर ॥  
 तू इन्कलाब<sup>१८</sup> की आमद<sup>१९</sup> का इन्तजार<sup>२०</sup> न देख ।  
 जो हो सके तो अभी इन्कलाब पैदा कर ॥

—मजाज

---

१. कयामत के दिन खुदा के सामने २. शाहाना वादशाही ३. पूछ, आवभगत ४. लौट ५. दुनिया वाले ६. आदमी ७. विनम्र सेवक ८. स्वस्थ चिन्तन से ९. रिक्त १०. जीवन ११. अन्धे । १२. कन्धो पर १३. दृष्टि-सम्पन्न १४. काले, अन्धकारपूर्ण १५. जवानी १६. धरोहर १७. कटीले ससार में १८. परिवर्तन १९. आगमन २०. प्रतीक्षा ।

९. इस जहाँ और इस जहाँ की तलखियो<sup>१</sup> के खबरू<sup>२</sup> ।  
 रक्ख<sup>३</sup> करते जाएँगे हम मुस्कराते जाएँगे ॥  
 राह में गर हादसे<sup>४</sup> आते हैं आने दो उन्हे ।  
 हादसो पर कहकहे-पैहम<sup>५</sup> लगाते जाएँगे ॥  
 नाय लेवा दर्द का कोई यहाँ हो या न हो ।  
 दोस्तो । हम दर्द की दौलत लुटाते जाएँगे ॥  
 हाँ, हमारे फँसलो<sup>६</sup> में फैसला इक यह भी है ।  
 दोस्त बनते जाएँगे, दुश्मन बनाते जाएँगे ॥  
 चश्मे-आलम<sup>७</sup> में तजल्ली<sup>८</sup> की कमी पाएँगे जब ।  
 नूर<sup>९</sup> बनकर चश्मे-आलम में समाते जाएँगे ॥

—जगन्नाथ आजाद

१०. जवानी में इबादत काहिली<sup>१०</sup> अच्छी नहीं ।  
 जब बुढापा आएगा कुछ बात बन पडती नहीं ॥  
 ११. जब नो को जरा परवाह<sup>११</sup> नहीं बे-ऐतिदाली<sup>१२</sup> की ।  
 बुढापे में नतीजे<sup>१३</sup> इसके यह नादान देखेंगे ॥

—अकबर

- १२ और चल-फिरले जरा तन-तन के ऐ बाके जवाँ<sup>१४</sup> ।  
 बार दिन के बाद फिर टेढी कमर हो जाएगी ॥  
 १३ इबरत<sup>१५</sup> यह कह रही है जवानो की कब्र पर ।  
 यारो ! कहो उमग जवानी की क्या हुई ?

—अमीर

---

१ कटुताओ, कठिनाइयो, कष्टो, विपत्तियों के २ सामने ३ नृत्य, नाच  
 ४ कष्ट, आपत्तिया ५ निरन्तर या बारम्बार अट्टहाम ६ निर्णयोंमें  
 ७ विश्व की दृष्टि ८ ज्योति ९ प्रकाश १० भक्ति करने में आलस्य  
 ११. खयाल, विचार १२ किसी काम में हृद से आगे बढ़ जाने की वद पर-  
 हेजी की १३ परिणाम १४ अकड ऐठ रखने वाले युवक १५ निआ,  
 सीख, लेख ।



१४. जवानी मे अदम<sup>१</sup> के वास्ते सामान कर गाफिल !  
मुसाफिर सबसे<sup>२</sup> उठते है, जो जाना दूर होता है ॥ —हथ
१५. खुदा की याद जवानी मे गाफिलो ! कर लो !  
वगर्ना वक्ते-फजीलत<sup>३</sup>, तमाम<sup>४</sup> होता है ॥ —आतिस
- १६ मजा है जोशे-जवानी मे पारसाई<sup>५</sup> का ।  
वो नाखुदा<sup>६</sup> है, जो किस्ती, बचाये तूफां से ॥ —हफीज
१७. सोहबे<sup>७</sup>-पीरा जवानो ! फैज<sup>८</sup> से खाली नही ।  
यह कमा का जोर है, जो देखते हो तीर मे ॥ —बेताब
- १८ चर्ख टेढ़ा ही रहा और सैकड़ों बाके जवा ।  
टेढ़े होकर जेरे<sup>९</sup>-चर्खेपीर<sup>१०</sup> सीधे हो गए ॥
१९. धर्म पे जो न फिदा<sup>११</sup> हो वह जवानी क्या है ?  
दूध की धार है तलवार का पानी क्या है ? —चकवस्त
२०. शवाब<sup>१२</sup> नाम है उस जाँवाज लमहे<sup>१३</sup> का ।  
जब आदमी को यह महसूस हो जवाँ हूँ मैं ॥ —अख्तर असारी
२१. कदामत<sup>१४</sup> हदे खीचती ही रहेगी,  
कदामत की बुनियाद ढाता चला जा,

१ परलोक २. रात से ३ श्रेष्ठ समय ४. समाप्त, व्यतीत ५. इन्द्रिय-निग्रह परहेजगारी ६ मल्लाह, नाविक ७. सत्पुरुषों की सगति ८. दानशीलता लाभ, उपकार, नफा, भलाई ९. पुराने आकाश के नीचे १०. न्यायवादी, बलिदान ११ यौवन १२ प्राण-प्रेरक पल १३ प्राचीनता, पुरानो दकियानुमी बातें ।

जो परचम<sup>१</sup> उठा ही लिया सरकशी<sup>२</sup> का ।  
इसे आस्मां तक उड़ाता चला जा ॥

—मजाज

२२ उट्ठो मेरे बेदारो<sup>३</sup> जवां अज्म<sup>४</sup> सपूतो ।  
मर्दाना<sup>५</sup> बढो नीद के मातो को जगादो ॥  
जो हिन्दका बागी<sup>६</sup> है वह ससार का बागी ।  
संसार से ससार के बागी को मिटा दो ॥

—सागर

२३ बढे चलो, रुको न अब यह कारवाँ,<sup>७</sup> बढे चलो ।  
कदम जवां है, तुम जवां हो, दिल जवां, बढे चलो ॥  
बढे चलो, बढे चलो .

गुलामी को पछाड़ दो,  
पुराना झुंडा फाड़ दो,  
हिमालय की चोटीपे निशान<sup>८</sup> अपना गाड़ दो ।  
तुम्हारे पाँव चूम लेगा आस्मां, बढे चलो ॥  
बढे चलो, बढे चलो  
कदम रुके न तुम रुको,  
वह मजिल आ गई बढो,  
हथेलियो पे सर लिये बढे चलो बढे चलो ।  
जमाना है तुम्हारे साथ, बे-गुर्मा<sup>९</sup> बढे चलो ॥  
बढे चलो, बढे चलो ....

—सागर

---

१ झुंडा २ विद्रोह, बगावत का ३ जाग्रत ४ सकल्प, इरादा ५ मर्दों की तरह ६ विद्रोही, अवज्ञाकारी ७ यात्रीदल ८. झुंडा ९. विश्वास-पूर्वक, निस्सन्देह असन्दिग्ध ।

२४ उल्फत<sup>१</sup> की गंगा हरसू<sup>२</sup> बहा दो,  
 बुग्जो-हसदका<sup>३</sup> किस्सा चुका दो,  
 हर तीरगी<sup>४</sup> को अज्मे-फना<sup>५</sup> दो,  
 महरो-वफाकी<sup>६</sup> शमएँ जला दो,  
 ऐ नौजवानो ! ऐ नौजवानो !!

२४ तू इन्किलाव की आभदका<sup>७</sup> इन्तजार न कर ।  
 जो हो सके तो अभी इन्किलाव पैदा कर ॥

—मजाज

२५ ऐ सोई हुई कीम के वेदार<sup>८</sup> जवानो !  
 ऐ हिम्मत-मर्दानाके जीरुह निगानो<sup>९</sup> !  
 सौ बात की यह बात है इस बात को मानो,  
 जीने का जो अरमान<sup>१०</sup> है तो मौत की ठानो,  
 बेगर्क<sup>११</sup> हुए कोई उभरता ही नहीं है ।  
 जो बात पै मरता है, वह मरता ही नहीं है ॥

२६ मैदाँ मे अगर सीना उभारा नहीं जाता,  
 लानत का<sup>१२</sup> कभी तौक<sup>१३</sup> उतारा नहीं जाता,  
 गेरो की तरह जिनसे डकारा नहीं जाता,  
 इज्जत की तरफ उनको पुकारा नहीं जाता,  
 मै खान-ए-इकराम मे<sup>१४</sup> पीने नहीं देती ।  
 दुनियाँ कभी नामर्दको<sup>१५</sup> जीने नहीं देती ॥

—जोश

---

१ प्रेम का २. हर तरफ, चारो ओर ३ ईर्ष्या द्वेषका ४ अँधेरे  
 को ५ मृत्यु का निमंत्रण ६ नेकियों की ७ आगमन का ८ जाग्रत, जागते  
 हुए ९ वीरोचित माहूम के मध्य कर्णधारो, १०. उत्कण्ठा, लालसा, इच्छा  
 ११ घिना दूँवे १२ धिक्कार, भर्त्सना १३ गले का पट्टा १४ प्रतिष्ठित  
 मदिरालय मे १५ भीरु, डरपोक, नपुंसक को ।

२७. ऐ जवा मर्दो ! खुदारा<sup>१</sup> बाँधलो गरमे कफन ।  
 सर बरहता<sup>२</sup> फिर रही है, इज्जते कीमे-वतन ।  
 हाँ जमीको जेर<sup>३</sup> करके आसमानो पर चटो ।  
 हाँ बढो ऐ सफशिकन<sup>४</sup> वीरो । बढो, जल्दी बढो ।  
 पाव मे ताचन्द<sup>५</sup> जंजीरे-गुलामी की<sup>६</sup> खराश<sup>७</sup> ।  
 सिर्फ़ इक जुम्बिश<sup>८</sup> अभी होती है कडिया<sup>९</sup> पाश-पाश ।<sup>१०</sup>
२८. ऐ मेरे हिन्दोस्ता के मुर्दा-खसलत<sup>११</sup> नौजवा !  
 तेरे खालो-खतमे<sup>१२</sup> पीरी के<sup>१३</sup> निशा<sup>१४</sup> पाता हूँ मैं ॥  
 तेरे मुस्तकाविल की जानिव<sup>१५</sup> जब उठाता हूँ निगाह<sup>१६</sup> ।  
 चर्ख<sup>१७</sup> पर<sup>१८</sup> उडती हुई कुछ धज्जिया पाता हूँ मैं ॥  
 हैफ<sup>१९</sup> तेरी नौजवानी पर है पीरी के निशा<sup>२०</sup> ।  
 दूसरी कीमो के घूढो को जवा पाता हूँ मैं ॥  
 आग बुझ जायेगी, छाती सर्दो-नम<sup>२१</sup> हो जायगी ।  
 चौक<sup>२२</sup> ! वन<sup>२३</sup> जिन्दगी की पुश्त<sup>२४</sup> खम<sup>२५</sup> हो जायगी ॥

—जोश




---

१. ईश्वर के लिए २. नगे मिर ३ जीत ४. सैनिको की पक्तियो  
 को चीरने वालो ५. कब तक ६ पराधीनता की वेडी की ७ खरोच,  
 खाज ८ प्रकम्पन, भटका ९ वेडियाँ, वन्वन १० टुकडे-टुकडे ११ मुर्दो  
 जैसे म्बभाववाले, १२ तिल और लकीर मे १३ बुढापे के १४ चिन्ह, लक्षण  
 १५ भविष्य की ओर १६ दृष्टि १७ आकाश पर १८ अफसोस १९.  
 लक्षण चिन्ह २०. ठडी-ठर २१, अन्यथा २२ पीठ २३ टेढी ।

## मेरा नारा इन्कलाबो-इन्कलाबो-इन्कलाव !



२. काम है मेरा तग्य्युर<sup>१</sup> नाम है मेरा शबाव<sup>२</sup> ।  
मेरा नारा इन्कलाबो<sup>३</sup>-इन्कलाबो-इन्कलाव ।

—जोश

- १ नया चश्मा<sup>४</sup> है पत्थर के शिगाफो<sup>५</sup> से उबलने वाला ।  
जमाना किस कदर वेताब<sup>६</sup> है करवट बदलने को ॥

—सरदार जाफरी

- ३ तुम्हे है याद नुस्खा<sup>७</sup> जुल्मते-आलम<sup>८</sup> बदलने का ।  
तो फिर क्यों मुन्तजिर<sup>९</sup> बैठा है तू सूरज निकलने का ॥

—सीमाव

४. है वक्त बदलने का, सब काम बदल डालो ।  
आगाज<sup>१०</sup> बदल डालो, अंजाम<sup>११</sup> बदल डालो ॥

—इकबाल

- ५ वगावत<sup>१२</sup> जवानों का मजहब<sup>१३</sup> है 'सागर' ।  
गुलाबी<sup>१४</sup> है पीरी, वगावत जवानी ॥

—सागर

- ६ दिल का चिराग जब तलक, तुम्हसे जले जलाए जा ।  
रात भी है अगर तो क्या ? रात को दिन बनाए जा ॥

—मुल्ला

१ परिवर्तन, तब्दीली २ जवानी ३ परिवर्तन, क्रान्ति ४ भरना  
५ छेदो, दगरो ६ वेचैन ७ उपाय, ढंग ८ संसार का अन्वेषण ९ प्रतीक्षा  
मे १० प्रारम्भ, आदि ११ परिणाम, अन्त १२ विद्रोह, क्रान्ति १३ धर्म  
१४. दामता ।

७. उठो और उठके निजामे-जहाँ<sup>१</sup> बदल डालो ।  
यह आसमाँ, यह जमीन, यह मकां बदल डालो ॥  
हयात कोई कहानी नहीं, हकीकत है ।  
इस एक लफ्ज से कुल दास्ता बदल डालो ॥

—सागर

८. तूफानो मे जो पलते जा रहे हैं ।  
वही दुनिया बदलते जा रहे हैं ॥

—जिगर

९. छिपा रखा है जिसने आज किस्मत के सितारो को ।  
उसी बदली से होंगे एक दिन शम्सो-कमर<sup>२</sup> पैदा ॥

—गालिब

१०. हुस्ने-माजी<sup>३</sup> से जो लिपटा<sup>४</sup> है, वह सौदाई<sup>५</sup> है ।  
कि बदल जाने की दुनिया ने कसम<sup>६</sup> खाई है ॥

—सीमाब

११. बढो कि रगे-चमन<sup>७</sup> बदल दें,  
चलो-चलो हिम्मत आजमाएँ ।  
जूनू<sup>८</sup> की लौ और तेज कर दो,  
फसुर्दा<sup>९</sup> शमओ<sup>१०</sup> को फिर जलाएँ ॥

१२. तुम्हें दुनिया को समझने की हविस<sup>११</sup> है ऐ काश<sup>१२</sup> !  
तुम्हें दुनिया को बदल देने का अरमा<sup>१३</sup> होता ॥

—फिराक

१ संसार की व्यवस्था २ सूरज और चाँद ३. अतीत के सौन्दर्य  
से ४ चिपटा ५. पागल ६ शापथ ७ उद्यान का रंग ८ पागलपन की  
९. बुझी हुई १०. दीपको को ११. इच्छा कामना १२. क्या ही अच्छा हो  
१३ अभिलाषा ।

१३. यजदा<sup>१</sup>-अौ-अहरमन<sup>२</sup> के जमाने गुजर गए ।  
अब वक्त हर लिहाज से इन्साँका वक्त है ॥

—अदम

१४. मैं जुलमतो<sup>३</sup> से उलझ-उलझ कर, वह दीर<sup>४</sup> नजदीक ला रहा हूँ ।  
मुसाफिरो की तलाश में जब नज्म<sup>५</sup> के कारवाँ रहेगे ॥

—नदीम

१५. यू नग्मासरा<sup>६</sup> हो कि यह आलम<sup>७</sup> ही बदल जाए ।  
अफमू<sup>८</sup> तेरा वेद्व<sup>९</sup>, हवादम<sup>१०</sup> पै भी चल जाए ॥

—वेद्व

१६. अगर दो-डक सफीने<sup>११</sup> डूबते हैं, डूब जाने दो,  
किसी कीमत सही, इन तुन्द<sup>१२</sup> धारो को बदल डाले ।  
ममल दे उन गुनो को, जो वादे-सरसर<sup>१३</sup> से मुरभाएँ,  
जो मुरभाएँ खिजासे उन बहारो को बदल डाले ॥

—शरर

१७. हकीकत<sup>१४</sup> में हकीकत मेरे ऊपर नाज करती है ।  
कि आवाजे-तगय्युर<sup>१५</sup> में मेरी ही आवाज करती है ॥

१८. जहाँ मे इनकलावे-ताजा<sup>१६</sup> होने वाला है ।  
गुलामी के अन्धेरे में उजाला होने वाला है ॥

१९. खुदाने आज तक उस कीम की हालत नहीं बदली ।  
न हो खुद जिमकी एहसास अपनी हालत बदलने का ॥

—सीमाव

---

१ ईश्वर २ शैतान कां ३ अंधेरे से ४ युग ५ सितारो  
के ६ अच्छी आवाज में गाने वाला ७. यमार ८. जाहू ९. मुसीबतो  
कण्टो पर १० नीकाएँ ११ नेज १२ सनसनाती हवा में १३ वास्तव में  
१४ परिवर्तन की ध्वनि १५ नवीन क्रान्ति ।

२०. जहाँ जुल्म<sup>१</sup> का सरकज<sup>२</sup>, आँधियों का आशियाना है ।  
वहाँ आजाद पैगामे-चिराग<sup>३</sup> लेके आया हूँ ॥

—आजाद

२१ सहफिले-नीमे<sup>४</sup> पुरानी दास्तानों<sup>५</sup> को न छेड़ ।  
रग पर जो अब न आएँ, उन फसानों को न छेड़ ।

२२ सितारों से आगे जहाँ और भी है,  
अभी इश्क के इम्तिहाँ<sup>६</sup> और भी है ।  
तू शाही<sup>७</sup> है, परवाज<sup>८</sup> है काम तेरा,  
तेरे सामने आसमाँ और भी है ।  
इसी शाखों<sup>९</sup>-गुल में उलझकर न रह जा,  
तेरे सामने आशियाँ<sup>१०</sup> और भी है ॥

२३ जिस कदर<sup>११</sup> दुनिया दवाये, उस कदर बेदार<sup>१२</sup> हो ।  
अपनी दुनिया खुद बदलने के लिये तैयार हो ॥

—इकबाल

२४ तजरवे<sup>१३</sup> सब हेच हैं, कानून<sup>१४</sup> सब बेकार है ।  
हर जमाना एक नया पैगाम लेकर आया है ॥

२५. कांटों को रोदते<sup>१५</sup> हुए, शोलों<sup>१६</sup> से खेलते,  
हर-हर कदम पै धूम मचाते चले चलो ।  
बुझते हुए चिराग<sup>१७</sup> भी हैं काम के असर,  
शमए<sup>१८</sup> नई उन्हीं से जलाते चले चलो ॥

—असर

---

१ अधरेका २. केन्द्र ३. दिव्य-सन्देश ४ नयी सभायें ५ कहानियों को  
६ किस्सों को ७ परीक्षा ८. वाज नामक पक्षी ९. उड़ान १०. टहनी और  
फूलों में ११ घोंसले १२ जितना १३. जाग्रत १४. अनुभव १५.  
विधान १६ कुचलते १७ स्फूर्ति १८. दीपक १९. मोमबत्ती ।



२६ जमीनो-आसमां से तग है तो छोड़ दे उनको ।  
मगर पहले नये पैदा जमीनो-आसमां करले ॥

—सीमाव

२७. मैं सोजे-वफा<sup>१</sup> का दुनिया को पैगाम सुनाने आया हूँ ।  
जो आग लगे तो बुझ न सके, वह आग लगाने आया हूँ ॥

—सीमाव

२८. वह जल्द-जल्द बदलता हुआ जमाना है ।  
कि आज है जो हकीकत<sup>२</sup> वह कल फसाना<sup>३</sup> है ॥

—अहसान

२९ नाज<sup>४</sup> क्या इसपै जो बदला है जमाने ने तुम्हे ?  
मर्द वह हैं, जो जमाने को बदल देते हैं ।

—अकबर

३०. लाने वाले गुलस्ती<sup>५</sup> मे वह व्हारे लाएँगे ।  
फूल कांटो की नजाकत<sup>६</sup> देखकर शरमाएँगे ॥  
वक्त इम दुनियाँ मे यह पैगाम लेकर आएगा ।  
वक्त से जो आज टक्कर खाएगा, मिट जाएगा ॥  
कमनजर<sup>७</sup> ! तू भी निगाहे खोलकर वोह दौर<sup>८</sup> देख ।  
ज़िन्दगी ने किस तरह बदले है अपने तौर<sup>९</sup> देख ॥  
और अगर देखा न तूने वक्त की रफ्तार<sup>१०</sup> को ।  
वक्त भूलेगा न इक लहजा<sup>११</sup> तेरे किरदार<sup>१२</sup> को ॥  
तू अगर मलहक<sup>१३</sup> रहा सिक्कों की भूतकारो के साथ ।  
वक्त रखेगा तुम्हे दुनिया के गहारो के साथ ॥

—आजाद

१. प्रेम के दुख का २ वास्तविकता, असलियत ३. कहानी-  
किस्सा, ४. गर्व ५ उद्यान वाग मे ६. कोमलता ७. सकीर्ण दृष्टि  
८. युग ९. ढग तरीके १०. गति, चालको ११. क्षण १२. आचरण,  
वर्तवि-व्यवहार को १३. आसक्त, मस्त ।

३१ खुदा जाने अब दिल कहाँ आके ठहरे ?

बड़े इन्कलाबात<sup>१</sup>-से हो रहे है ॥

३२ 'असद' चलो कि बदल दे हयात<sup>२</sup> की तकदीर ।

हमारे साथ जमाने का फैसला<sup>३</sup> होगा ॥

—असद भोपाली

३३ चाँद-तारे गुच्छओ-गुल सब यही होंगे, मगर ।

फिर भी करवट लेके दुनिया क्या-से-क्या हो जाएगी ?

—शफीक

३४. फिजाओ<sup>४</sup> पै परचम<sup>५</sup> उड़ाता चला जा;

हवाओं में हलचल मचाता चला जा ।

जमाना तेरे साथ आएगा, लेकिन,

जमाने को पीछे हटाता चला जा ॥

—कैफ़ी

३५. मिटा दे अपनी गफलत फिर जगा अरबाबे-गफलत<sup>६</sup> को ।

उन्हे सोने दे, पहले ख्वाब<sup>७</sup> से बेदार<sup>८</sup> तू हो जा ॥

—सीमाब

३६. हर गर्दिशे-हयात<sup>९</sup> है, दौरे हयात-नी<sup>१०</sup> ।

दुनिया को जो बदल न दे वह मैकदा<sup>११</sup> नहीं ॥

—फिराक

३७. नया आदम तराशूँगा, नई हव्वा बनाऊँगा ।

नया माबूद<sup>१२</sup> ढालूँगा, नया बन्दा बनाऊँगा ॥

—सागर

१ परिवर्तन-से २. जीवन ३. निर्णय, ४ वातावरण ५. पताका, झंडा ६. गफलत में पड़े हुएों को ७ सपना ८. जाग्रत ९. जीवन १०. नव जीवन का युग ११. उपासना के योग्य देवता १२ ईश्वर, आराध्य देव ।

३७ किधर है तू ऐ जुरते-वागियाना<sup>१</sup> ।  
 बदल दे मुकद्दर,<sup>२</sup> बदल दे जमाना<sup>३</sup> ॥  
 बगर<sup>४</sup> की यह पस्ती<sup>५</sup> अरे तौवा ! तौवा !<sup>६</sup>  
 जमाने का आका<sup>७</sup>, गुलामे-जमाना ॥<sup>८</sup>

—जिगर

३८ कहाँ यह दहरे-कुहना<sup>९</sup> और कहाँ जीके-जर्वा<sup>१०</sup> मेरा ?  
 कोई दुनिया नई होनी, कोई आलम<sup>११</sup> नया होता ?

—सीमाब

३९ उठ ऐ नदीम<sup>१२</sup> । कि रगे-जहाँ<sup>१३</sup> बदल डाले,  
 जमी को ताजा करे, आसमाँ बदल डालें ।  
 उरुजे-नौ-ए-बशर को<sup>१४</sup> फलकरवे<sup>१५</sup> टकराकर,  
 खयाले-रफजते-करों-वर्याँ<sup>१६</sup> बदल डाले ।  
 कदीम वहमने<sup>१७</sup> जिसको यकीन<sup>१८</sup> ममझा था,  
 नये यकीन से अब वोह गुमा<sup>१९</sup> बदल डालें ।  
 यह बलबला<sup>२०</sup> है, आ सबसे पेश्तर<sup>२१</sup> ऐ दोस्त ।  
 मिजाजे-तिफल के हिन्दोस्ताँ<sup>२२</sup> बदल डाले ॥

जोश

४०. उठो, वह सुवह का गर्फाँ<sup>२३</sup> खुला जजीरे-शब<sup>२४</sup> दूटी ।  
 वह देखो पी फटी, गुचे खिले, पहली किरन फूटी ।

१ क्रान्तिपूर्ण साहस २. भाग्य ३. युग, दुनिया ४. मनुष्य की ५. गिरावट, पतन ६. हाय ! हाय ! ७. युग युग का स्वामी ८. ससार का दास ९. पुराना युग १०. युवकोचित उत्साह ११. ससार १२. साकी १३. ससार की प्रणाली १४. नवीन मानवता की उन्नति की १५. आकाश से १६. वनो-जगलो के उमगी विचारों को १७. पुराने अन्ध-विश्वास ने १८. विश्वास १९. शक, वहम, अन्धविश्वास २०. उत्साह २१. पहले २२. भारत के बाल-स्वभाव को २३. द्वार २४. रात की शृंखला ।

उठो, चौको, बढो, मुँह-हाथ धो, आँखो को मल डालो ।  
हवाए-इनकलाब आने को है, हिन्दोस्तांवालो !

—जोश

४१ उठाओ सागर, बजाओ वरवत,<sup>१</sup> नया जमाना नया जमाना !  
वह दिन गये जब निगाहे-साकी पै नाचता था शराबखाना ॥  
कभी दवे हैं, न दब सकेंगे, पिजाज अपना है बागियाना ।  
कुछ अपना नुकसान ही करेगा, जो हमसे टकरायेगा जमाना ॥  
न तुझको काबू दिलो-नजर पर,

न अपनी परवाजे-वेखतर पर ।<sup>२</sup>

कफमको<sup>३</sup> वदनाम करने वाले ।

कफम तो है सिर्फ आबो-दाना ॥

जुनूने-तामीर<sup>४</sup> है सलामत तो वर्को-बाराँ का<sup>५</sup> हमको क्या गम ?  
चमन की हर शाख को बना लेगे फिर बहारोका<sup>६</sup> आशियाना ॥

—सागर

४२ इक दिन तुलूअ<sup>७</sup> होगा फर्दा<sup>८</sup> नये सिरे से ।  
होती है रोज पैदा दुनिया नये सिरे से ॥

—अफसर मेरठी

४३ उठ खूने-इन्किलाबका कसबल लिये हुए ।  
आँधी का शोर आग की हलचल लिये हुए ॥

—जोश

देख रफ्तारे-इन्किलाब<sup>९</sup> 'फिराक' ।

कितनी आहिस्ता और कितनी तेज ?

—फिराक

---

१. सितार की तरह का एक बाजा २ निर्भय उडान पर ३. पिजरे को  
४. निर्माण की धुन का पागलपन ५. विजली और वर्षा, ६ वसत ऋतु  
का, बहार का ७ उदय ८ भविष्य ९ परिवर्तन, क्रान्ति की चाल ।

४५. ऐ खाकनशीनो ! उठ बैठो, वह वक्त करीब आ पहुँचा है ।  
जब तख्त<sup>१</sup> गिराये जायेंगे, जब ताज<sup>२</sup> उछाले जायेंगे ॥  
अब टूट गिरेगी जजीरे, अब जिन्दानो की<sup>३</sup> खैर नहीं ।  
जो दरिया भूमके उट्ठे है, तिनको से न ढाले जायेंगे ॥

— फौज

- ४६ वगावत<sup>४</sup> का अलमवरदार<sup>५</sup> हूँ, महगर वदामाँ<sup>६</sup> हूँ ।  
फरिश्तो<sup>७</sup> ने जिसे सज्दे किये हैं मैं वह इन्साँ हूँ ॥  
पुरानी दुश्मनी है अहले-जरके आस्मानो से<sup>८</sup> ।  
मैं बिजली हूँ, गिरा करता हूँ अक्सर आस्मानो से ॥  
बढा हूँ जब भी मैदा में वगावत का अलम<sup>९</sup> खोले ।  
फरिश्तेने अजलके<sup>१०</sup> आस्माँ पर हँसके पर तोले ॥  
मेरे सीने में मुस्तकविलके<sup>११</sup> जलवे मुत्कराते हैं ।  
मेरी गुफ्तार<sup>१२</sup> सुनकर अहले-दौलत काँप जाते हैं ॥

—मजाज

- ४७ बेकसो के तहखानो में, आँभुओ के चिराग जलते हैं ।  
इन चिरागो की झिलमिलाहट में, सँकडो इन्किलाव पलते हैं ॥  
४८. निजामे-आलम<sup>१३</sup> बदल रहा है, खुदा भी शायद नया बनेगा ।  
नये-नये-से है सब मुजाविर,<sup>१४</sup> नयी-नयी-सी है खानकाहे<sup>१५</sup> ॥

—शाव

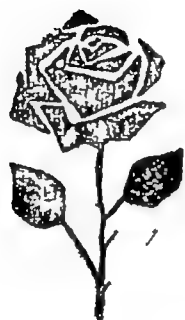
- ४९ वही हकदार है किनारो के ।  
जो बदल दे वहाव धारों के ॥

—निसार इटाशी

१ सिंहासन २ मुकुट ३. कैदखानों की ४. विद्रोह ५. झण्डा  
उठाने वाला ६ प्रलयकर ७ देवताओं से ८ धनिको से ९ झुका  
१० मृत्यु के ११ भविष्य का १२ वाणी आवाज १३ विश्व-व्यवस्था  
१४, मजार की कमाई खाने वाला, दरगाह आदि का खिदमती १५ दरगाहें ।

५०. गमे-हयातके<sup>१</sup> मारेहुओ न घबराओ !  
 तुम्हारे होंठो को हम मुस्तकिल<sup>२</sup> हँसी देंगे ॥  
 उठो और उठके करो सुबहे-नौ का<sup>३</sup> इस्तकबाल<sup>४</sup> ।  
 हम आफताब<sup>५</sup> है दुनिया को रौशनी देंगे ॥

—हरमतुलकराम




---

१ जीवन के दुलो के २ स्थायी ३. नव-प्रभात का ४ स्वागत  
 ५ सूर्य ।

## अहले-हिम्मत के कदम रुकते नहीं !



१. लाख पेचीदा हो राहे-जिन्दगी ।  
अहले-हिम्मत के कदम रुकते नहीं ॥  
—तालिब
२. अहसान ले न हिम्मते-मर्दाना<sup>१</sup> छोडकर ।  
रस्ता भी चल तो सब्जय-वेगाना<sup>२</sup> छोडकर ॥  
—नज्म
३. वह कौन-सा उकदा<sup>३</sup> है जो वा<sup>४</sup> हो नहीं सकता ?  
हिम्मत करे इन्सान तो क्या हो नहीं सकता ?
- ४ हिम्मत बुलन्द<sup>५</sup> चाहिए ऐ दिल कि वस्ले-दोस्त<sup>६</sup> ।  
आसा<sup>७</sup> अगर नहीं है तो दुश्वार<sup>८</sup> भी नहीं ॥
- ५ अहले-हिम्मत<sup>९</sup> ने हुसूले-मुद्ग्रा<sup>१०</sup> मे जान दी ।  
और हम बैठे हुए रोया किये तकदीर<sup>११</sup> को ॥
६. चला जाता हूँ हँसता-खेलता मौजे-हवादस<sup>१२</sup> से ।  
अगर आसानियाँ हो, जिन्दगी दुश्वार हो जाए ।
- ७ न शाखे-गुल<sup>१३</sup> ही ऊँची है, न दीवारे-चमन<sup>१४</sup> बुलबुल !  
तेरी हिम्मत की कोताही,<sup>१५</sup> तिरी हिम्मत की पस्ती<sup>१६</sup> है ॥  
—अमीर

---

१ पुरुषोचित साहस २ हरी-भरी घास को, ३ रहस्य, गुत्थी, समस्या  
४ हल ५. उच्च साहस ६ प्रिय मित्र का मिलन ७ सरल-सुगम ८. कठिन  
९. साहसिक ने १० उद्देश्य-पूर्ति मे ११ भाग्य १२ मुसीबतो सी लहर  
से १३. फूलों की टहनी १४ बगीचे की दीवार १५ कमी १६ निम्नता,  
दीनता ।

- ८ कदम चूम लेती है खुद आके मजिल ।  
मुसाफिर अगर आप हिम्मत न हारे ॥
- ९ यह मुमकिन<sup>१</sup> है कि लिक्खी हो कलम ने फतह<sup>२</sup> आखिर<sup>३</sup> मे ।  
जो है अहवावे-हिम्मत<sup>४</sup> गम नहीं करते शिकिस्तो<sup>५</sup> का ॥

—शाद

१०. हुआ करती हैं दुश्वारी से ही आसानियाँ पैदा ।  
बड़े नादान है मुश्किल को जो मुश्किल समझते हैं ॥
- ११ हम डूबने वाले मौजो<sup>६</sup> की तौहीन<sup>७</sup> गवारा<sup>८</sup> क्यों करते ?  
कश्ती का सहारा क्यों लेते, साहिल की तमन्ना क्यों करते ?  
बिजली की चमक, बादल की गरज,  
पुरजोर हवा तारीक फिजा<sup>९</sup> ।  
खुद आग नशेमन<sup>१०</sup> को दे दी,  
तिनको-पै भरोसा क्यों करते ?

—साहिर

- ११ पस्तियों मे<sup>११</sup> रहके भी जिनके इरादे<sup>१२</sup> हो बुलन्द ।  
डालते हैं वौह जवां-हिम्मत<sup>१३</sup> सितारो पर कमन्द<sup>१४</sup> ॥

—गालिब

- १२ कदम रहता है साबित<sup>१५</sup> जिनका इस सख्ती-ए-दौराँ<sup>१६</sup> मे ।  
बहादुर<sup>१७</sup> है वही सर<sup>१८</sup> किल-ए-फोलाद<sup>१९</sup> करते हैं ॥

—आतिश

---

१ सभव २ विजय ३ अन्त ४ साहसी ५ पराजयो का ६ लहरोकी ७ अपमान, वेईज्जती ८ सहन, वरदाश्त ९ अधकारपूर्ण वातावरण १०. घोसला ११. नीचाइयो मे १२ सकल्प १३ तरुण-साहसी १४ रस्मा १५ दृढ़ मजबूत १६ विपत्ति काल मे १७ वीर १८ विजय, फतह १९ फोलादी किले को ।



- १३ आसान नजर आए हर इक मुश्किले-दुनिर्या<sup>१</sup> ।  
 दे साथ अगर हिम्मते-मर्दाना किसीका ॥
१४. हरीफे-तूफां<sup>२</sup> जो बन सके बन, कि जिन्दगी नाम है इसीका ।  
 सहारा मोजो का लेके उठना भी डूब जाने से कम नहीं है ॥  
 —महर

१५. कमाले-बुज्जदिली<sup>३</sup> है पस्त<sup>४</sup> होना अपनी आँखो मे ।  
 अगर थोड़ी-सी हिम्मत हो तो फिर क्या हो नहीं सकता ?  
 उभरने ही नहीं देती हमे बेमायगी<sup>५</sup> दिल की ।  
 नहीं तो कौन कतरा है, जो दरिया हो नहीं सकता ?  
 —चकवस्त

१६. मुसीबतो मे न हार हिम्मत,  
 नजर मे रख यह उसूले-फितरत<sup>६</sup> ।  
 जो वादे-शब्<sup>७</sup> इक-सहर<sup>८</sup> भी होगी,  
 तो वादे-गम<sup>९</sup> इक खुशी मिलेगी ॥  
 —अब तर

- १७ किनारा गो किनारे को ही कहना चाहिए, ताहम<sup>१०</sup> ।  
 कुछ ऐसे जिन्दा-दिल भी है जो तूफानो को कहते है ॥  
 —अदम

- १८ मजा तो जब था कि माहिल<sup>११</sup> पे भूमने वाले ।  
 भवर मे घिरके भी थोड़ी-सी हा-हू<sup>१२</sup> करते ॥  
 —अदम

---

१. ससार की कठिनाता २ तूफान का शत्रु ३ परले सिरे का डरपोकपन ४. हीन ५ उत्साहहीनता, दीनभावना कमजोरी ६. प्रकृति का नियम ७ रात बीतने पर ८ सुबह, प्रात ९ दुख के पश्चात् १०. फिर भी ११ तट १२ हो-हल्ला, हाथ पेर मारना ।

१९ हवादस<sup>१</sup> से उलझकर मुस्कराना मेरी फितरत<sup>२</sup> है ॥  
मुझे दुश्वारियों<sup>३</sup> पर अशक<sup>४</sup> बरसाना नहीं आता ॥

—अहसान दानिश

२० सच पूछो तो इस दुनिया में, हरकत<sup>५</sup> से ही बरकत<sup>६</sup> है ।  
जिसने कुछ ढूँढा होगा तो उसने कुछ पाया होगा ॥

—अफसर

२१ खौफ<sup>७</sup> मत खाइए अन्वैरो से,  
जुलमतो<sup>८</sup> में भी नूर<sup>९</sup> होता है ।  
बाज आकात<sup>१०</sup> राहे-हस्ती<sup>११</sup> में,  
अपना साया<sup>१२</sup> भी दूर होता है ॥

—अदम

२२ बहुत चाहता हूँ करूँ लुत्फ<sup>१३</sup> हासिल ।  
मुझे काश<sup>१४</sup> मिल जाए हिम्मत कही से ॥

२३. किशनी है किनारे पर जिनकी,  
तूफां की हकीकत क्या जाने ?  
अन्दाज-ए-तूफा<sup>१५</sup> होता है,  
जब दूर किनारा होता है ॥

—अदतर

२४ जहाजों को डुबो दे जो उसे तूफान कहते हैं ।  
जो तूफानों से टक्कर ले, उसे इन्सान कहते हैं ॥

१ मुसीबतों, विपत्तियों से २. प्रकृति, स्वभाव ३ कठिनाइयों ४ रोना, अर्तू बहाना ५ स्पन्दन, श्रम ६. समृद्धि ७ डर, भय ८ अन्वैरोमे ९. प्रकाश १० कई बार, कभी-कभी ११ जीवन-मार्ग १२ छाया १३ खुशी, मजा १४ क्या अच्छा ही, १५ तूफान का अनुमान ।

२५. साहिबे-हिम्मत नही डरते मुसीबत से कभी ।  
मीत क्या उसके लिए तो जीस्त<sup>१</sup> का पैगाम है ॥

—अफरम

२६ मैं वार<sup>२</sup> भी खाता<sup>३</sup> जाता हूँ,  
कातिल से भी कहता जाता हूँ ।  
तौहीन<sup>४</sup> है दस्ते-वाजू<sup>५</sup> की वोह,  
वार कि जो भग्पूर<sup>६</sup> नही ॥

—जिगर

२७. न डर वादे-मुखालिफ<sup>७</sup> से तू ऐ उकाब<sup>८</sup> ।  
यह तो चलती है तुझे ऊँचा उठाने के लिए ॥

—इकबाल

२८. मर्द कहते हैं उसे ऐ माँग-पट्टी के गुलाम !  
जिसके हाथो मे हो तूफानी अनासर<sup>९</sup> की लगाम ।  
मर्द की तखलीफ<sup>१०</sup> है जोर आजमाने के लिए ।  
गर्दने सरकश<sup>११</sup> ह्वादम<sup>१२</sup> की भुकाने के लिए ॥

।—जोश

२९ हो अज्म<sup>१३</sup> तो सब काम सँवर<sup>१४</sup> जाते हैं,  
डूबे हुए दिल खुद ही उभर आते हैं ।  
जिस राह पे फरिश्ती<sup>१५</sup> को हो चलना मुश्किल,  
उस राह से इन्मान गुजर जाते हैं ॥

३० गर चाहते हो दहर<sup>१६</sup> मे मैदान मारना ।  
दुश्वारियां हजार हो, हिम्मत न हारना ॥

१. जीवन का सन्देश २ आक्रमण ३. सहता ४ अपमान ५ भुजाओंकी  
६ पूरा ७. प्रतिकूल वायु = गिद्धपक्षी, ८ तत्त्वों की १०. साहमिकता  
११ अकड़ो हुई, सीधी १२ विपत्तियों १३ मकल्प, साहस १४ सुधर,  
१५ देवताओं को १६ दुनिया ।

३१. अहले-हिम्मत<sup>१</sup> मजिले-मकसूद<sup>२</sup> तक आ ही गए ।  
बन्दये-तकदीर<sup>३</sup> किस्मत का गिला<sup>४</sup> करते रहे ॥
३२. दस्ते-हिम्मत<sup>५</sup> से हैं बाला<sup>६</sup> आदमी का मर्तबा<sup>७</sup> ।  
पस्त-हिम्मत<sup>८</sup> यह न होवे, पस्त-कामत<sup>९</sup> हो तो हो ॥

—जीक

३३. यह मुद्दत<sup>१०</sup> हस्ती<sup>११</sup> की आखिर, यूँभी तो गुजर ही जाएगी ।  
दो दिन के लिए मैं किस से कहूँ, आसान मेरी मुश्किल करदे ॥
३४. हो नहीं सकती कभी आसान उसकी मुश्किलें ।  
खुद जो अपनी मुश्किलें आसान करता ही नहीं ॥
३५. मौस्सर<sup>१२</sup> हादसे<sup>१३</sup> अर्जो-समा<sup>१४</sup> मुझ पै क्या होते ?  
मेरी फितरत<sup>१५</sup> ने सीखा ही नहीं मुश्किल से डर जाना ॥
३६. गजब है 'जौहर' मदद होती है हिम्मत चाहिए ।  
मुस्तैऊद<sup>१६</sup> रहिए मुकद्दर आजमाने के लिए ॥
३७. छिपा-दस्ते-हिम्मत<sup>१७</sup> मे जोरे-कजा<sup>१८</sup> है ।  
मसल<sup>१९</sup> है कि हिम्मत का हाभी<sup>२०</sup> खुदा है ॥
३८. जेरे-कदम<sup>२१</sup> है मजिले-मकसूद अपने 'रिन्द' !  
हिम्मत से तो करीब<sup>२२</sup> है गो<sup>२३</sup> राह दूर है ॥

—रिन्द

---

१ साहस वाले २ गन्तव्य स्थान ३. भाग्यवादी ४ शिकायत  
५ साहस से ६ श्रेष्ठ ७ गौरव ८ असाहसी, कायर ९ ठिगना,  
बोना १० समय ११ जीवन १२ प्रभावपूर्ण, असर डालने वाले १३ दुर्घटनाएँ  
१४ पृथ्वी और आकाश १५ प्रकृति, स्वभाव १६ सन्नद्ध, तैयार  
१७ साहसो मे १८ मृत्यु का बल १९ कहावत २०. समर्थक, पक्षपाती  
२१ पाँव-तले २२ निकट, समीप २३. यद्यपि ।

- ३६ मजिले-मकसूद पै हिम्मत से पहुँचता है बगर<sup>१</sup> ।  
पाये-हिम्मत<sup>२</sup> से पता चलता है कूए-यार<sup>३</sup> का ॥
४०. मिल नहीं सकती निकम्मा<sup>४</sup> को जमाने मे मुराद<sup>५</sup> ।  
कामयाबी<sup>६</sup> की जो स्वाहिश<sup>७</sup> हो तो मेहनत<sup>८</sup> चाहिए ॥
- ४१ थके जो पाँव तो चल सरके बल न ठहर 'आतिश' ।  
गुले-मुराद<sup>९</sup> है मजिल मे, खार<sup>१०</sup> राह मे ॥

—आतिश

४२. जायका<sup>११</sup> दर्दे-मुहब्बत का तन आसानो<sup>१२</sup> को क्या ?  
जानते है अहले-हिम्मत ही मुसीबत के मजे ॥
- ४३ काट लेना हर कठिन मजिल का कुछ मुश्किल नहीं ।  
इक जरा इन्मान मे चलने की आदत चाहिए ॥
- ४४ खुदाने वुसअते-दामाने<sup>१३</sup> हिम्मत की अता<sup>१४</sup> जिसको ।  
नहीं होने के हर्गिज तग-दिल<sup>१५</sup> वह तगदस्ती<sup>१६</sup> मे ॥

—जफर

- ४५ हिम्मत-ओ-मेहनत<sup>१७</sup> हां तो, सी बात की है एक बात ।  
लोग कहते है जिसे मुश्किल, वह मुश्किल ही नहीं ॥

—ऐश

४६. दुरे-मकसद<sup>१८</sup> की स्वाहिश और गमे-जा<sup>१९</sup>, क्या हिमाकत<sup>२०</sup> है ?  
किमी को हाथ आए है, कही मोती भी साहिल<sup>२१</sup> से ?

—जामिन

१ आदमी २. साहस के चिन्हों से ३ यार की गली का ४. बेकारो,  
साहस हीनो को ५ सफलता ६. सफलता ७. इच्छा ८. श्रम से ९  
आशा या भावना का फूल १० काटा ११ मजा, स्वाद १२. शारीरिक  
सुविधा चाहने वालो १३ मात्स्य की उच्चता १४ प्रदान १५ परेजान  
१६ गरीबी मे १७ श्रम और साहस १८ उद्देश्य का मोती १९ प्राणो  
की पीडा, २० अपमान २१ किनारे से ।

४७ समनून<sup>१</sup> हूँ मैं हिम्मते-मुश्किल-पसन्द<sup>२</sup> का ।  
जो काम सहल<sup>३</sup> थे वही दुश्वार हो गए ॥

—नजर

४८. पहुँचे उस वृत्त के न दर तक, यह है हिम्मत का कसूर<sup>४</sup> ।  
वर्ना<sup>५</sup> चाहे जो वशर अर्ग<sup>६</sup> पै काबू<sup>७</sup> हो जाय ॥

—वर्क

४९. ओ नगे-एतबार<sup>८</sup> दुआ<sup>९</sup> पर न रख मदार<sup>१०</sup> ।  
ओ वेवकूफ<sup>११</sup> हिम्मते-मर्दाना चाहिए ॥

—हफीज

५०. पस्त-हिम्मत<sup>१२</sup> वह है राहे-शौक<sup>१३</sup> में जो रह गए ।  
हौसले वाले<sup>१४</sup> के आगे दूर कुछ मंजिल नहीं ॥

—सालिक

५१' दरिया हूँ कोहसार<sup>१५</sup> से टकराके जाऊँगा ।  
रस्ते के हादसात<sup>१६</sup> पै मैं छाँके जाऊँगा ॥

५२ तरवकी कोशिश-ओ-मेहनत ही से दुनिया में होती है ।  
तनज्जुल<sup>१७</sup> उनका लाजिम<sup>१८</sup> है, जो हिम्मत हार बैठे है ॥

—अफजल

५३ हिम्मते-मर्दाना है मेरी मुझे मुश्किल-कुशा<sup>१९</sup> ।  
गैर से ख्वाहा<sup>२०</sup> मदद का वक्ते-मुश्किल<sup>२१</sup> मैं नहीं ॥

५४. बहादुर पर्वतो को धूल ही केवल समझते हैं ।  
वह तूफानों की हर इक मौज<sup>२२</sup> को मजिल समझते है ॥

१ अहसानमन्द २ कठिनाई पसन्द करने वाली की हिम्मत का  
३ आसान ४ अपराध ५ नहीं तो ६ आकाश ७ नियंत्रण ८ अविश्वासी  
९ प्रार्थना १० निर्भरता ११ हतोत्साह, अल्पसाहसी, कम हौसले वाले  
१२ शौक के रास्ते में १३ साहसी उत्साही १४ पर्वत से १५ कठिनाइयो,  
कष्टों, रुकावटों पर १६ अवनति, पतन १७ अनिवार्य १८. कठिनाइयो को  
हल करने वाली १९. इच्छुक २० कठिनाई के समय २१ लहर को ।

कही जाकर नहीं है खोजनी पड़ती उन्हे मंजिल ।  
जहा वह पाँव रखते हैं, वही मजिल समझते हैं ॥

५५. हिमाला गर आए राह मे, हटा दे ।  
सितारो से नजरे लडाता चला जा ॥

—अस्तर

५६. मर्द वह कब है भंवर से जो उभर सकता नहीं ।  
हक ही जीने का नहीं उसको जो मर सकता नहीं ॥

—जोश

५७. मुझे आगोशे<sup>१</sup>-तूफाँ ही जिगर आगोशे-मादर<sup>२</sup> है ।  
वोह कोई और होगे अम्नेसाहिल<sup>३</sup> देखने वाले ॥

—जिगर

५८. पड़ा रह आप अपनी पस्तिये-हिम्मत<sup>४</sup> से पस्ती<sup>५</sup> मे ।  
रसाई<sup>६</sup> तो तेरी ऐ खाक के पुतले खुदा तक है ॥

५९. रास्ते मे रुक के दम ले लू मेरी आदत नहीं ।  
लौटकर वापस चला जाऊँ, मेरी फितरत<sup>७</sup> नहीं ॥

—सजाज

६०. बढा दो इतना कहकर शमअ ने परवानो की हिम्मत ।  
“है जलना काम उनका, जो है दिल वाले जिगर वाले ॥

—अलम

६१. होते हैं अक्सर<sup>८</sup> मकासिद<sup>९</sup> मे वह अपने कामयाव<sup>१०</sup> ।  
नामुरादी<sup>११</sup> मे भी होते हैं जो हिम्मत-आशना<sup>१२</sup> ॥

—जहीन

६२. साहिबे-हिम्मत<sup>१३</sup> नहीं दबता मुसीबत से कभी ।  
जोर से आँधी के आतिश<sup>१४</sup> की भड़क जाती नहीं ॥

१. तूफान की गोद २ माता की गोद ३ शान्त किनारे को

४. साहसहीनता से ५ निचाई मे ६ पहुँच ७ प्रकृति, स्वभाव ८ प्राय.

९. उद्देश्यो मे १० सफल ११ मनोरथ मे असफलता, नाकामी, दुर्भाग्य

१२ साहसी, उत्साही १३ साहसी, हिम्मती १४ आग ।

६३ इसी दुनिया की अक्सर<sup>१</sup> तल्लियो ने<sup>२</sup> मुझको समझाया ।  
कि हिम्मत हो तो फिर है जहर भी इक चीज खाने की ॥

—नैयर

६४ कदम अपना फराजे-हिम्मते-आलीपै<sup>३</sup> रखता जा ।  
जिसे कहता है जाहिद अश<sup>४</sup> यह जीना<sup>५</sup> है कुर्सी का ॥

—शाद

६५ दरिया मे कूद मारिकाआरा<sup>६</sup> हो मौजो<sup>७</sup> से ।  
गौहर<sup>८</sup> की आजू<sup>९</sup> हो तो साहिलगजी<sup>१०</sup> न हो ॥

—मारिकाआरा

६६ पस्त-हिम्मत से<sup>११</sup> हसूले-मुद्आ<sup>१२</sup> होता नहीं ।  
हाथ आता है वडी मुश्किल से पानी चाह का ॥

६७ वह डूबे सैले-जमानामे<sup>१३</sup> या किनारे जाये ।  
बशर का<sup>१४</sup> काम है बस हाथ-पैर मारे जाये ॥

६८ बजुज<sup>१५</sup> सखनी उठाये नाम मुमकिन<sup>१६</sup> है कही निकले ।  
तराशा जाय जब सौ बार पत्थर तब नगी<sup>१७</sup> निकले ॥

६९. जहाँमे पाएगा क्योंकर वह गौहरे-मकसूद<sup>१८</sup> ?  
जिसे तलाश से हो शर्म जुस्तजूसे<sup>१९</sup> से गुरेज<sup>२०</sup> ॥

७० वही है साहिबे-इमरोज<sup>२१</sup> जिसने अपनी हिम्मत से<sup>२२</sup> ।  
जमाने के<sup>२३</sup> समन्दरसे<sup>२४</sup> निकाला गौहरे-फदर्<sup>२५</sup> ॥



१. प्राय, अधिकतर २ कटुताओवे ३ श्रेष्ठ साहस की ऊंचाई पर  
४ आकाश ५ सोपान ६ योद्धा, लड़ने वाला ७. लहरो से ८ मुक्ता,  
मोती ९ तटस्थ १०. उत्साहहीनता अनुत्साह ११ उद्देश्य की प्राप्ति  
१२ युग-प्रवाह, कालकी बाढमे १३ मानवका १४ अतिरिक्त, बिना १५.  
सम्भव १६ मुक्ता, मोती १७ इच्छा, उद्देश्य का मोती १८ खोज से  
१९. उपेक्षा, घृणा २०. आज के दिन का स्वामी २१ साहस से २२. समय,  
काल के २३ सागर से २४. आगामी कल का मोती ।



## गया वक्त फिर हाथ आता नहीं !

०

- १ इन्सान खोके वक्त को पाता नहीं कभी ।  
जो दम गुजर गया, वह फिर आता नहीं कभी ॥  
सदा दूर-दौरा दिखाता नहीं ।  
गया वक्त फिर हाथ आता नहीं ॥
- २ जिसने पहचानी न कोई कदर अपने वक्त की ।  
कामयात्री उमको हामिल हो नहीं सकती कभी ॥  
जिसने कल पर आज अपना काम छोड़ा, रह गया ।  
“कल भला देखी है कितने ?” खूब कोई कह गया ॥
- ३ गनीमत समझ वक्ते-फुर्सत<sup>१</sup> को ग्राफिल<sup>२</sup> ।  
न हाथ आएगा फिर यह मौका जो अब है ॥
- ४ अपने दम को आदमी हरदम गनीमत जान ले ।  
खाक का फिर ढेर है, वादे-फना<sup>३</sup> कुछ भी नहीं ॥

—दाग

- ५ मुझको गफलत ने<sup>४</sup> खबर अय्यामे-फुर्सत<sup>५</sup> की न दी ।  
आह ! जब जाते रहे दिन तब मैं पछताने लगा ॥

—कुदरत

- ६ जब खजाना लुट गया तब होश मे आये तो क्या ?  
वक्त खोकर दस्ते-हसरत<sup>६</sup> भलके पछताये तो क्या ?

—हाली

---

१ अवकाश के समय को २ प्रमादी ३. मरने के बाद ४ प्रमादने  
५ अवकाश के दिनों तथा क्षणों की ६ अतृप्त कामना के हाथ ।

- ७ दारे-फानी<sup>१</sup> में हो गाफिल मौन से इक पल नहीं ।  
क्या भरोसा जिन्दगी का आज है और कल नहीं ॥

—जीक

- ८ वक्त पर<sup>२</sup> कनरा<sup>३</sup> है काफी<sup>४</sup> अब खुश-अजाम<sup>५</sup> का ।  
जब कि खेती जल गई बरसा तो फिर किस काम का ?  
९ ऐ वक्त-वक्त प्यारे ! पछता रहे हैं खो कर ।  
मुमकिन नहीं है अब तो मरकर भी हो मुयस्सर<sup>६</sup> ॥  
१० गनीमत है कोई दम सैरे-गुलशन ।  
भरोसा क्या है ? दम आवे न आवे ?

—हिदायत

- ११ दोरोजा जीस्त<sup>७</sup> गनीमत है जिक्रो-हक<sup>८</sup> करले ।  
बदन में जान, दहन में ज्वाँ रहे, रहे न रहे ॥

—अमीर

- १२ गुजरने को गुजर जानी है उम्मे शादमानी<sup>९</sup> में ।  
यह मौके कम मिला करते हैं लेकिन जिन्दगानी में ॥  
१३ जो हम-तुम पास बैठे है सुनो यह दम गनीमत है ।  
यह हँसना, बोलना रह जाय तो क्या कम गनीमत है ॥  
१४ नग्माहाए<sup>१०</sup> गम को भी ऐ दिल गनीमत जानिये ।  
बेसदा<sup>११</sup> हो जाएगा यह साजे-हस्ती<sup>१२</sup> एक दिन ॥

—गालिव

- १५ बुरे है या भले हम-तुम, 'जफर' लेकिन गनीमत है ।  
कि याँ आएँगे फिर-फिर कर न हम-जैसे न तुम-जैसे ॥

—जफर

---

१ नश्वर संसार २ उचित समय पर ३ वृद्ध, ४ पर्याप्त ५. शुभ परिणाम लाने वाले बादल का ६. प्राप्त ७ जिन्दगी ८ सत्य की चर्चा, तत्व-चिन्तन, प्रभु-स्मरण ९ खुशी में १० शोकपूर्ण गीत ११ वन्द, चुप १२. जीवन का वाद्ययंत्र ।

१६ जो दम है गनीमत है, क्या जानिये क्या कल हो ?  
इक दौर<sup>१</sup> की निस्बत<sup>२</sup> है इमरोज<sup>३</sup> को फर्दा<sup>४</sup> से ॥

—यगाना

१७ फुर्सत बहुत ही कम है गनीमत समझ जफर ।  
हंस-बोल कर बसर हो जो आकाते-चन्द रोज<sup>५</sup> ॥

१८ जो आज सोहवते-अहवाव<sup>६</sup> है, गनीमत है ।  
शरीक<sup>७</sup> कल कोई हमदम रहे न रहे ॥

—वजीर

१९ यहाँ गर्दिश<sup>८</sup> फलक की चैन देती है किसे 'इन्शा' ।  
गनीमत है कि हम-सोहवन<sup>९</sup> यहाँ दो-चार बैठे हैं ॥

—इन्शा

२० नतीजा<sup>१०</sup> जिन्दगानी का है कुछ दुनियाँ में कर जाना ।  
खयाले-मौत<sup>११</sup> बेजा<sup>१२</sup> है, वह जब आये तो मर जाना ॥

२१ फस्ले-गुल<sup>१३</sup> है बुलबुल । अमों<sup>१४</sup> हो सके जितने निकाल ।  
शाखे-गुल<sup>१५</sup> सूनी नजर आयेगी मुरझाने के बाद ॥

—आजम

२२. फोरे-मंजिल के लिए हर मौका है, मगर ।  
इक जरा इनसान में चलने की आदत चाहिए ॥




---

१. प्रवाह, चक्र २ अपेक्षा ३ इस दिन को, आज के दिन को ४. आने वाले कल ५ अल्प कालीन अवसर ६ मित्रों का मिलन ७ सम्मिलित, शामिल ८. चक्र ९ सगी-साथी १० जीवन का परिणाम, अर्थ प्रयोजन ११ मृत्यु का विचार १२ अनुचित १३. मौसम बहार १४ इच्छा, लालसा, अभिलाषा १५. फूलों की ढाली ।

## अपनी करनी, पार उतरनी !

ॐ

१. अकड़-एँठ सब घरी रहेगी, सीधे होकर जाओगे ।  
अपनी करनी पार उतरनी, जैसा करोगे पाओगे ॥

—फना

२. नेक<sup>१</sup> फल पाता है वह, हर वक्त जो नेकी<sup>२</sup> करे ।  
फंसला<sup>३</sup> है, आदमी जैसा करे, वैसा भरे ॥
३. बुरा मागेगा जो औरों का खुद उसकी बदी<sup>४</sup> होगी ।  
जो खोदेगा गढा, उसके लिए खाई खुदी होगी ॥
४. अभी तो महवे-सितम<sup>५</sup> हो लेकिन,  
वोह दिन भी आएगा एक दिन ।  
जफा<sup>६</sup> की आँखों में होंगे आंसू,  
वफा<sup>७</sup> के लबपर हँसो मिलेगी ॥

—अकरम

५. अन्धा हुआ हूँ नामए-ऐमाल<sup>८</sup> देखकर ।  
जितनी कि खाक<sup>९</sup> उड़ाई थी, आँखों में भर गई ॥

—नजर

६. दुनिया अजब बाज़ार है, कुछ जिन्स<sup>१०</sup> याँ की साथ ले ।  
नेकी का बदला नेक है, बदसे बदी की बात ले ॥

---

१ अच्छा, भला २ भलाई ३ निर्णय ४ बुराई ५ अत्याचार-रत  
६ जुल्म, अत्याचार ७ नेकी के ८ कर्मों का बहीखाता ९ धूल १०  
सामग्री, सामान, माल ।

मेवा खिला मेवा मिले, फल-फूल दे, फल-पात ले ।  
 आराम दे, आराम ले, दुःख-दर्द दे, आफात<sup>१</sup> ले ॥  
 कलजुग नही, कर-जुग है, यां दिन को दे और रात ले !  
 क्या खूब सौदा नक़्द है, इस हाथ दे उस हाथ ले ॥

—नज़ीर

७. न चैन पाएगा तू भी जालिम<sup>२</sup> किसी का खाना<sup>३</sup> खराब<sup>४</sup> करके ।  
 यह याद रखना कि लेगे बदला जनाब बारी हिसाब करके ॥

—जफर

८. जो पार उतारे औरो को, उसकी भी नाव उतरती है ।  
 जो गुर्क<sup>५</sup> करे फिर उसकी भी यां डुबको-डुबको करती है ॥

९. बिखेरता है जो औरो की राह मे काँटे ।  
 वह हात<sup>६</sup> जख्म-रसीदा<sup>७</sup> जरूर होता है ॥

—मुनव्वर

१०. यह खूब<sup>८</sup> क्या है, यह जिस्त<sup>९</sup> क्या है,  
 जहा की असली सरिश्त<sup>१०</sup> क्या है ?  
 बड़ा मज़ा हो तमाम चेहरे,  
 अगर कोई बेनकाब<sup>११</sup> कर दे ॥  
 तेरे करम<sup>१२</sup> के मुआमिले<sup>१३</sup> को, तेरे करम पर ही छोड़ता हूँ ।  
 मेरी खताएँ<sup>१४</sup> गुमार<sup>१५</sup> करले, मेरी सज़ा<sup>१६</sup> का हिसाब करदे ॥

—हफीज़

११. बद<sup>१७</sup> न बोले जेरे-गदू<sup>१८</sup> गर कोई मेरी सुने ।  
 है यह गुम्बद<sup>१९</sup> की सदा<sup>२०</sup>, जैसी कहे वैसी सुने ॥

—जौक

१. मुसीबतें, विपत्तियाँ २. अत्याचारी ३. घर ४. उजाड़ कर,  
 ५. डुबोए ६. हाथ ७. घायल ८. अच्छा ९. बुरा १०. स्वभाव ११.  
 बेपर्दा, निरावरण १२. दयालुता १३. काम को १४. अपराध १५. गिनले  
 १६. दण्ड का १७. बुरा १८. आकाश के नीचे १९. गुम्बज, महराब की  
 २०. ध्वनि, आवाज़ ।

१२. एवज<sup>१</sup> नेकीका है नेकी, बदीका है बदी बदला ।  
मसल<sup>२</sup> है दूध का दूध और पानी है पानी का ॥
१३. नतीजा क्योकर अच्छा हो, न हो जब तक अमल अच्छा ।  
नही बोया है तुलम<sup>३</sup> अच्छा तो कब पाओगे फल अच्छा ?
१४. बढके फव्वारे के मानिन्द<sup>४</sup>, न बोल ऐ मुनश्म<sup>५</sup> !  
थूकना चख<sup>६</sup> को, है अपने ही मुँह पर आता ॥
१५. आदिल<sup>७</sup> है देगा हासिले-कश्ते-अमल<sup>८</sup> हमे ।  
काटेगे आप हमने यह खेती जो बोई है ॥
१६. दुश्मनी करने का फल दुश्मन को खुद मिल जायगा ।  
आने वाला एक दिन उसके लिए मुश्किल का है ॥

—रजा

१७. जो अमीरी मे गरीबो की मदद करता नही ।  
उसकी नादारी<sup>१</sup> मे कोई उसका दम भरता नही !
१८. दुनिया न जान इसको मियाँ । दरिया की यह मझधार है ।  
औरो का बेडा पार कर, तेरा भी बेडा पार है ॥
१९. जो बोया था वह खाते है, जो बोते हैं वह खाएँगे ।  
हर हालत मे, हर दुनिया मे ऐमाल<sup>१०</sup> ही आगे आएँगे ॥
२०. तुझको देता नही नैरंगे<sup>११</sup>-जमाना घोखा ।  
फेल<sup>१२</sup> तेरा तुझे इन्सान । दगा<sup>१३</sup> देता है ॥

—इन्द्रजीत

१ बदला, फल, परिणाम २ कहावत, लोकोक्ति ३ बीज ४ भाति, तरह ५. घनिक ६ आकाश पर ७. न्यायनिष्ठ, न्यायशील ८ कर्म की खेती का फल ९. दरिद्रता, गरीबी मे १० कर्म, आचरण ११ ससार की माया, जादू १२. कर्म १३ घोखा ।

२१. जिसने रखा दूसरो की शादमानी<sup>१</sup> का खयाल ।  
वह न पाएगा कभी अपनी तवीअत मे मलाल<sup>२</sup> ॥
२२. जब मैं कहता हूँ कि या अल्लाह ! मेरा हाल देख ।  
हुक्म होता है कि अपना नाम-ऐमाल<sup>३</sup> देख ॥
२३. जो पूछे जाएँगे आखिरमे<sup>४</sup> वह नेक ऐमाल<sup>५</sup> है तेरे ।  
अगर कुछ साथ जाएँगे, वह नेक अफ़्ग़ाल<sup>६</sup> है तेरे ॥

०

---

१ खुशी, प्रसन्नता, हर्ष का २. रंज, शोक, ६ कर्मों का बहीखाता,  
ऐमालनामा ४. अन्त मे ५. सत्कर्म ६. अच्छे कर्म, सत्कर्म ।

## रहा एक-सा कब किसीका जमाना ?



१. जो है आज खन्दां<sup>१</sup>, वह कल नालाज़न<sup>२</sup> है ।  
रहा एक-सा कब किसी का जमाना ?

—अदीब

२. बनने के बाद जिसको बिगड़ना नहीं पड़ा ।  
ऐसा कभी किसी का मुकद्दर<sup>३</sup> कहाँ बना ?

—मुनव्वर

३. सैलाब-के-सैलाब<sup>४</sup> गुज़र जाते हैं ,  
गरदाब-के-गरदाब<sup>५</sup> गुज़र जाते हैं !  
आलाम-ओ-हवादस<sup>६</sup> से परेशाँ<sup>७</sup> क्यों है ?  
यह ख्वाब<sup>८</sup> हैं और ख्वाब गुज़र जाते हैं ॥

—अबम

४. आज काटे हैं अगर तेरे मुकद्दर में तो क्या ?  
कल तेरा भर जायगा फूलों से दामन, गम न कर ॥

—निहाल

५. जो गम<sup>९</sup> हृद<sup>१०</sup> से ज़ियादा हो, खुशी नज़दीक होती है ।  
चमकते हैं सितारे रात जब तारीक<sup>११</sup> होती है ॥

—अफसर

१ हँसनेवाला २ चीखने-चिल्लाने वाला, रोता हुआ ३ भाग्य  
४ बाढ़ ५. भँवर ६ विपत्तियों और कष्टों से ७ दुखी ८. स्वप्न ९.  
दुःख १०. सीमा से ११. अँबेरी ।



- ६ चमनके माली अगर बना लें,  
मुआफिक<sup>१</sup> अपना शुआर<sup>२</sup> अब भी ।  
चमनमे आ सकती है पलट कर,  
चमन से रूठी वहार अब भी ॥

—जिगर

- ७ जिनके हँगामो<sup>३</sup> से थे आबाद वीराने<sup>४</sup> कभी ।  
शहर उनके मिट गए, आबादियाँ बन हो गई ॥

—इक़बाल

- ८ ऐ दिल ! न कर गिला,<sup>५</sup> दो-चार दिन की बात है ।  
चार दिन की गड़बड़ी और फिर चाँदनी रात है ॥  
९. ऐ गर्दिशे-दौरा<sup>६</sup> तेरे भी अन्दाज़<sup>७</sup> निराले होते हैं ।  
दुःख-दर्द उन्ही को मिलता है, जो नाज़<sup>८</sup> के पाले होते हैं ॥

—मुल्ता

१०. खुदाकी शान हमी थे कभी कफस<sup>९</sup>वाले ।  
हमे तो आज यहाँ आशियाँ<sup>१०</sup> नहीं मिलता ॥

—जिगर

- ११ कीन होता है दिले-अफसुर्दा<sup>११</sup> का पुरसाने-हाल<sup>१२</sup> ?  
फूलकी खुशबू भी चल देती है मुरझानेके बाद ॥  
१२. कल जिनपै ज़माना हँसता था, आज उनकी लहद<sup>१३</sup> पर रोता है ।  
अब जागने वाले जागे हैं जब सोने वाला सोता है ॥

—असद

१ अनुकूल २. आचरण ३ कोलाहल, शोरो-गुल से ४. जंगल ५. शिकायत ६ दुनिया की मुसीबत, संकट-युग ७ ढग ८ नज़ाकतके ९. पिजरे वाले १० घोंसला ११ उदास, दुःखी दिल का १२ हाल-चाल पूछनेवाला १३. कब्र पर ।

१३ हो दौरे-गम<sup>१</sup> कि अहदे-खुशी,<sup>२</sup> दोनो एक है ।  
दोनो गुजस्तनी<sup>३</sup> है, खिजाँ क्या बहार क्या ?

— महरूम

१४. वह जल्द-जल्द बदलता जमाना है ।  
कि आज है जो हकीकत,<sup>४</sup> वह कल फ़साना<sup>५</sup> है ॥

— असर

१५ बहार आई बजाओ अन्दलीबो<sup>६</sup> ! साज<sup>७</sup> इशरत<sup>८</sup> के ।  
गई हसरत<sup>९</sup> की वह रातें, गये वह दिन मुसीबत के ॥

— यकीन

१६. तमाम उम्र बसर यूँ ही जिन्दगी होगी ।  
.खुशीमे रज कही, रंजमे .खुशी होगी ॥

— वाग

१७. पल-भर मे कुछ-से-कुछ है जमाने<sup>१०</sup> की रंगतें ।  
आलम<sup>११</sup> के इनक़लाब<sup>१२</sup> कयामतसे कम नहीं ॥

१८ अब हम भी वह नहीं है, गर आप वह नहीं हैं ।  
हम भी बदल गये, जो जमाना बदल गया ॥

— नजर

१९. इतर मिट्टीका भी जो मलते न थे पोशाक<sup>१३</sup> मे ।  
कासए-सर<sup>१४</sup> उनके देखे हमने रुलते खाकमे ॥

२० मखमली गद्दोपे जिनको नीद तक आती न थी ।  
एक पत्थर है फकत उनके सिरहानेके लिए ॥  
जिनके लगर<sup>१५</sup> रात-दिन जारी<sup>१६</sup> थे भूखोके लिए ।  
आज वोह मूहताज है बस दाने-दानेके लिए ॥

---

१ विपत्ति का चक्र २ सुख का समय ३ नाशवान, अस्थायी ४. सत्य, तथ्य ५ कहानी ६. बुलबुलो ७ वाद्य ८ ऐश्वर्य, सुख के ९. अतृप्त कामना की १० काल, समय ११. संसार के १२. परिवर्तन १३. लिवास, कपड़ो मे १४, सिर के प्याले १५. भंडार १६. चालू ।

२१ शिकस्ता-दिल<sup>१</sup> हो न मेरे माली ।

वोह दिन भी नज़दीक आ रहा है ॥

कि फूल खिलते हुए मिलेंगे,

फिजा<sup>२</sup> महकती हुई मिलेगी ॥

—शरीफ

२२. मुसीबतो मे न हार हिम्मत,

नजर मे रख यह उसूले-फितरत<sup>३</sup> ।

जो बादे-शब<sup>४</sup> इक सहर<sup>५</sup> भी होगी,

तो बादे-गम<sup>६</sup> इक खुशी मिलेगी ॥

—अख्तर

२३ कभी तो इस जिन्दगी-ए-मुर्दा<sup>७</sup> पै रग आएगा जिन्दगी का ।

कभी तो बदलेंगे दिन हमारे, कभी तो हमको खुशी मिलेगी ॥

—अश

२४ फूलोसे जो खेला करते थे, दर-दरकी ठोकर खाते है ।

जीनेकी तमन्ना थी जिनको, अब जीनेसे घबराते हैं ॥

—मजर

२५ गुलिस्ताने-हयाते-चन्दरोज़ा<sup>८</sup> का न सुन किस्सा ।

बहार आई थी बरसोमे, बिजा<sup>९</sup> आई घडी-भरमे ॥

—शौकत थानवी

२६. क्या इससे बहस कैसे थे, जो दिन गुज़र गये ?

अच्छे थे या बुरे, हमे बर्बाद कर गये ॥

‘अख्तर’ यह गमके दिन भी गुज़र जायेंगे यूँ ही ।

जैसे वह राहतो<sup>१०</sup> के ज़माने गुज़र गये ॥

—अख्तर

१. भग्न-हृदय २ वातावरण ३. प्रकृति का नियम ४ रात के बाद  
५. प्रभात, सुबह ६ दुख के बाद ७ मुर्दे की जिन्दगीपर, निष्प्राण  
जीवन पर ८ अल्पकालीन जीवन के बगीचे का ९. सुखो के ।

२७ थी जो कल तक कश्तिए-उम्मीद<sup>१</sup>को थामे हुए ॥  
रुख बदलकर आज वोह मौजें<sup>२</sup> भी तूफां बन गईं ॥

२८ बेगाने<sup>३</sup> जो शुरू<sup>४</sup>से है, उनका जिक्र क्या ?  
अपने भी गँवर हो गए, इसका मलाल<sup>५</sup> है ॥

—अमन

२९ ऐ महवे-निशाते-फस्ले-गुल<sup>६</sup> अजामे-खुशी<sup>७</sup> गम होता है ।  
फूलों की तरह जो हँसते हैं, इक रोज वोह गिरियाँ<sup>८</sup> होते हैं ॥

—अलम मुजफ्फरनगरी

३० अब जहाँमे उनकी कब्रोंके निशाँ मिलते नहीं ।  
उम्र-भर जो फिकरे-तस्वीरे-जहाँ<sup>९</sup> करते रहे ॥

—महसूम

३१ नाम आज कोई याँ<sup>१०</sup> नहीं लेता है उन्होका ।  
जिन लोगोके कल मुल्क<sup>११</sup> ज़रे-नगी<sup>१२</sup> था ॥

३२ ऐ हुब्बे-जाहवालो<sup>१३</sup> ! जो आज ताजवर<sup>१४</sup> है ।  
कल उसको देखियो तुम, न ताज है, न सर है ॥

—मीर

३३. फलक देता है जिनको ऐश, उनको गुम भी होते हैं ।  
जहाँ बजते हैं नफ़कारे,<sup>१५</sup> वहाँ मातम<sup>१६</sup> भी होते हैं ॥

—बाग

१ आशा की नैया को २ लहरें ३. पराये ४. प्रारम्भ से ५. दुःख ६. सुख  
मे तल्लीन मौसमी फूल ७. हर्ष का परिणाम ८. रोते हैं ९. विश्व-विजय  
की चिन्ता १०. यहाँ ११. दुनिया १२. निगरानी, शासन मे १३. ऐश्वर्य  
से प्रेम रखने वालो, १४. सम्राट्, बादशाह १५. नगाड़े १६. शोक ।

३४. जिनके जलवे न समा सकते थे ईवानो<sup>१</sup>में ।  
उनकी खाक आज उड़ी फिरती है वीरानों<sup>२</sup>मे ॥

—रवा

३५. गुलशन बहारपर है, हँसो ऐ गुलो ! हँसो ।  
जब तक खबर न हो तुम्हे अपने मग़ाल<sup>३</sup>की ॥

—आसी

३६. यह सोचते ही रहे और बहार खत्म हुई ।  
कहाँ चमनमे नगेमन बने, कहाँ न बने ?

—असर

३७. दिन जो दुश्मनके फिरे, मेरे भी फिरने चाहिए<sup>४</sup> ।  
क्या जमाना एक ही करवट बदलकर रह गया ?

३८. क्या सुरमा-भरी आँखोंसे आँसू नहीं गिरते ?  
क्या मेहदी लगे हाथोंसे मातम नहीं होता ?

—रियाज

३९. क्या मौसमे-गुल<sup>५</sup>पर इतराकर हम गाएँ तराना फूलोंका ?  
दो रोज़मे आनेवाला है एक और ज़माना<sup>६</sup> फूलोंका ॥

४०. कभी शादी कभी ग़म है, कभी कुछ है कभी कुछ है ।  
बदलता रंग है मानिन्द हरबा<sup>७</sup> रोज़गार अपना ॥

—जरार

४१. हर मर्तवा ज़मानेको होता है इन्क़लाब<sup>८</sup> ।  
लाती है रंग गर्दिशे-दौरा<sup>९</sup> नये-नये ॥

४२. है रगे-तमाशाए-जहाँ<sup>१०</sup> सूरते-खुशीद<sup>११</sup> ।  
जो सुबहको देखा, वह नजर शाम न आया ॥

१ महलो में २ जगलो मे ३ परिणाम की ४. मौसम  
बहार पर ५. काल, समय ६. युद्ध, जंग ७. परिवर्तन ८. काल-चक्र,  
दुनिया की मुसीबत ९. दुनिया के खेलों का रंग १०. सूर्य की भाति ।

४३. कुछ भी हासिल<sup>१</sup> वाकमालो<sup>२</sup>को नहीं है जुजु जवाल<sup>३</sup> ।  
मूरदे-नुकसान<sup>४</sup> हुआ जब माह<sup>५</sup> कामिल<sup>६</sup> हो गया ॥

—नासिख

४४. फूलक<sup>७</sup>ने चैन<sup>८</sup>से दो दिन भी कब रहने दिया मुझको ?  
इधर सरसे खिजाँ गुजरी उधर सरपर बहार आई ॥

—जिगर

४५. याद रख, देखके दुनियाके नशेब<sup>९</sup> और फराज<sup>१०</sup> ।  
अब बुलन्दी<sup>११</sup> है जहाँ, फिर वही पस्ती<sup>१२</sup> होगी ॥

३६. यो नहीं रहने का, बदलेगा जहाँका इन्तिज़ाम<sup>१३</sup> ।  
कल वोही मजबूर<sup>१४</sup> होंगे, आज जो मुख्तार<sup>१५</sup> हैं ॥

—रिन्द

४७. एक वज्र<sup>१६</sup>पर नहीं है जमानेका तीर<sup>१७</sup> आह !  
मालूम हो गया मुझे लैल-ओ-निहार<sup>१८</sup> से ॥

४८. दौरे-सागर<sup>१९</sup> था अभी या है अभी चश्मे-पुर-आब<sup>२०</sup> ।  
देख 'सौदा' गर्दिशे-अफलाक<sup>२१</sup>से क्या-क्या हुआ ?

—सौदा

४९. नहीं सबात<sup>२२</sup> बुलन्दए-इज्जो-शा<sup>२३</sup>के लिए ।  
कि साथ ओज<sup>२४</sup>के पस्ती है आसमाँके लिए ॥

—जीक

१. प्राप्त २. पूर्ण पुरुषो को ३. दुःख के अतिरिक्त ४. हसोन्मुख ५. चन्द्रमा ६. पूर्ण ७. आकाश ने ८. सुख से ९-१०. उतार और चढ़ाव ११ ऊँचाई १२ नीचाई १३ व्यवस्था १४. विवश १५. सत्ताधारी, सत्ता-प्राप्त १६. स्तरपर १७ ढंग-ढर्रा १८. दिन=रात से १९. शराब का दौर २० आँसू-भरी आँख, रोना २१ आस्मानी मुसीबत से २२. स्थायित्व २३. ऊँची शान और इज्जत वाले के २४. ऊँचाई के ।

५०. देखा न एकरंग जहाने-दोरंग<sup>१</sup>मे ।  
अच्छा किसीका है तो किसीका बुरा नसीब<sup>२</sup> ॥

—अमीर मोनाई

५१. करे है गर्दिशे-दौरां तरह हिंडोलेकी ।  
हर-एक शख्सको यां गाह<sup>३</sup> पस्त<sup>४</sup> गाह बुलन्द<sup>५</sup> ॥

—सोदा

५२. तनज्जूल<sup>६</sup>मे तरक्की<sup>७</sup> है तरक्कीमे तनज्जूल है ।  
तमाशा देख गाफिल ! माहे-नीका<sup>८</sup> माहे-कामिल<sup>९</sup>का ॥

५३. अजीब दुनियाका हाल देखा, कमाल<sup>१०</sup> ही को ज़वाल<sup>११</sup> देखा ।  
उन्हीको अब पुरमलाल<sup>१२</sup> देखा, जो लुत्फे-राहत<sup>१३</sup> उठा चुके है ॥

५४. बदल लेता है करवट एक हालतपर नही रहता ।  
कभी यह गौबदागर<sup>१४</sup> एक सूरत<sup>१५</sup>पर नही रहता ॥

५५. प्यादा-पा<sup>१६</sup> जो चमनमे बहारको देखा ।  
हवाके घोडेके ऊपर खिजां सवार आई ॥

५६. हसीनो<sup>१७</sup>से कहो नार्जा<sup>१८</sup> न हो हुस्ने-दुरोजा<sup>१९</sup>पर ।  
खिजांमे बैठकर रोया करेंगे इन बहारोको ॥

५७. मिलाया खाकमे उसको जिसे चमका हुआ देखा ।  
फलक इन रफअतो<sup>२०</sup>पर देखना क्या पस्त हिम्मत है ?

५८. खात्मा<sup>२१</sup> ऐशका<sup>२२</sup> हसरत<sup>२३</sup> हीप होते देखा ।  
रोके ही उट्ठे है इस बज़्म<sup>२४</sup>से गाने वाले ॥

१. दुर्गो दुनिया मे २ भाग्य ३ कभी ४. नीचा ५. ऊँचा ६. हास मे  
७. विकास ८ नये चन्द्रमा का ९. पूर्ण चन्द्र का १०. पूर्ण ११. सकट १२.  
दुःखी १३. सुख का मजा १४. जादूगर १५. ढग पर १६. पैदल  
१७. सुन्दर रूप-रंग वालो से १८ मगरूर, अहकारी, गर्विले १९. क्षणिक  
सौन्दर्य पर २०. ऊँचाइयो पर २१ समाप्ति, अन्त २२. सुख का २३.  
अतृप्त कामना २४. सभा से ।

५६. नैरगिये-जमाने<sup>१</sup>से खातिर<sup>२</sup> न जमा<sup>३</sup> रख ।  
 सौ रग बदले जाते हैं यां एक आन<sup>४</sup>मे ॥
६०. हुई यह रात-भरमे खन्दाहाए-ऐशकी<sup>५</sup> सूरत ?  
 चमनका गुँचा-गुँचा<sup>६</sup> सुबहको इक चश्म-गिरियाँ<sup>७</sup> था ॥
६१. एक बनता है बिगड़ जाता है फौरन<sup>८</sup> दूसरा ।  
 देख ओ नादाँ ! तमाशा गर्दिशे-अय्याम<sup>९</sup>का ?

—आबाव

६२. इक रगे-मुस्तकिल<sup>१०</sup>पे कहाँ दहरको कयाम<sup>११</sup> ?  
 हँगामे हर जमूद<sup>१२</sup>मे है इन्तशार<sup>१३</sup>के ॥
६३. कहाँ है, तगय्युर<sup>१४</sup> जमानेका देखे ।  
 खुदाईका सामान कर जाने वाले ॥
६४. नही करार<sup>१५</sup> जमानेको एक हालतपर ।  
 जो दोपहर हूँ मैं नाला<sup>१६</sup> तो दोपहर खामोश<sup>१७</sup> ॥

—आतिश

६५. कोई रह सकता जमानेमे नही इक तौरपर ।  
 कुछ-से-कुछ कर डालता है ऐ 'जफर' दम-भरमे चर्ख<sup>१८</sup> ॥

—जफर

६६. दिन एक-से नही हैं चमने-रोजगार<sup>१९</sup>के ।  
 दो दिन खिजा<sup>२०</sup>के होते है दो दिन बहारके ॥

१. काल के घोखे से २ विश्वास ३ जरा, विलकुल ४ क्षण मे ५. हसाने वाले  
 सुख की ६ प्रत्येक कली ७. रोने वाला ८ तुरन्त ९ समय के फेर का १०.  
 स्थायी रग पर ११. स्थिति, ठहराव १२. सयोग मे १३ वियोग के १४.  
 परिवर्तन १५ ठहराव १६. रोता हुआ १७ चुप, शान्त १८. आकाश १९.  
 उद्यान की दशा के २०. पतझड़ के ।



६७ गाह<sup>१</sup> गर्मी गाह सदी गाह दिन है गाह रात ।  
ऐ 'जफर' रहता नही, दायम<sup>२</sup> जमाना एक-सा ॥

—जफर

६८. किसीकी एक तरह पर बसर हुई न 'अनीस'<sup>३</sup> ।  
उरूजे-महर<sup>४</sup> भी देखा तो दोपहर देखा ॥

—अनीस

६९. किसीको पस्त करे है फलक<sup>५</sup> किसीको बुलन्द<sup>६</sup> !  
कि इस हिंडोलेमे है हर जमाँ<sup>७</sup> नशेब-ओ-फराज<sup>८</sup> ॥

७० नही रहती हमेशा एक-सी रंगत जमानेकी ।  
कुछ इसके रगमे रगे-हिना<sup>९</sup> का कारखाना है ॥

—जफर

७१. रखता है चख<sup>१०</sup> ओज<sup>११</sup> किसीका कब एक दिन ?  
होता है दोपहरमे जवाल<sup>१२</sup> आफताव<sup>१३</sup> का ॥

७२ दो रोज एक वज्र<sup>१४</sup> रगे-जहाँ<sup>१५</sup> नही ।  
वह कौन-सा चमन<sup>१६</sup> है कि जिसको खिजाँ<sup>१७</sup> नही ?

—नासिख

७३. जमीने-चमन गुल खिलाती है क्या-क्या ?  
वदलता है रंग आसमाँ कैसे-कैसे ?

—आतिश

७४ होता न क्योंकि ऐ महे-कामिल<sup>१८</sup> तुझे जवाल<sup>१९</sup> ?  
वाइस<sup>२०</sup> तेरे जवालका तेरा कमाल<sup>२१</sup> था ॥

—जफर

१. कभी २. नियत, निश्चित ३. सूर्य का चढ़ाव ४. आकाश  
५. ऊँचा ६. समय, जमाना ७. उतार-चढ़ाव ८. मेहन्दी का रंग ९.  
उच्चता १०. पतन, गिराव, अवनति, ह्रास ११ सूर्य का १२. स्तर, ढग  
१३ संसार का रंग १४ उद्यान १५ पतझड़ १६. पूर्ण चन्द्र १७. पतन,  
ह्रास १८. कारण, सबब १९. पूर्णता ।

७५. मुसीबतसे न घबरा, कर गुजर जैसे वने वैसे ।  
ये दिन भी जाएँगे एक दिन, वे दिन भी आएँगे एक दिन ॥
७६. सभी हँसते हुए मिलते हैं जब तक चार पैसे हैं ?  
न पूछेगा गरीबीमे कोई भी आप कैसे है ?

—भक्तवर

७७. घर कौन-सा बसा कि जो वीरां न हो गया ?  
गुल कौन-सा हँसा कि जो परेशां न हो गया ?
७८. यह माना कि जिन्दगी मे गम बहुत हैं ।  
हँसे भी जिन्दगी मे हम बहुत है ॥

—मैकश भक्तवराबादी

## हर हालमें खुश रहना !



१. हर हाल में खुश रहना, खुश रहके अलम<sup>१</sup> सहना ।  
इक चीज जमानेमें 'फरहत'<sup>२</sup>की भी हस्ती है ॥ फरहत
२. हर हुक्ममें हूँ राजी, हर हालमें हूँ खुश ।  
कुछ है अगर तो यह है, दुनियाँमें शादमानी<sup>३</sup> ॥ हाली
३. आदमी दुनियाँमें खुश हरदम नहीं तो कुछ नहीं ।  
दमके है सब दमदमे, जब दम नहीं तो कुछ नहीं ॥ हथ
४. आजादगीमें<sup>४</sup> खुश रहो, जजालमें<sup>५</sup> भी शाद<sup>६</sup> हो ।  
इस हालमें भी शाद हो, उस हालमें भी शाद हो ॥ नजीर
५. किस्मत बुरी सही, पर तबीअत बुरी नहीं ।  
है शुक्र<sup>७</sup> की जगह कि शिकायत नहीं मुझे ॥ ग़ालिब
६. हर आन हँसी हर आन<sup>८</sup> खुशी, हर वक़्त अमीरी है बाबा ।  
जब आलम मस्त फ़कीर हुए, फिर क्या दिलगीरी<sup>९</sup> है बाबा ॥ जफ़र
७. जो होना है वह होता है, जो होना है वही होगा !  
घटाएँ क्यो खुशी अपनी, बढ़ाएँ क्यो मिहन<sup>१०</sup> अपना ? ताहिर
८. डर मौतका, जीनेकी तमन्ना नहीं रखते !  
हम दिलमें किसी तरहका खटका<sup>११</sup> नहीं रखते ! शाकिर

---

१ दुःख, वेदना २ हर्ष, खुशी, कवि का उपनाम ३ खुशी ४ स्वतन्त्रता मे, ५. कैद मे, बन्धन मे ६. प्रसन्न ७ कृतज्ञता की, आभार-प्रदर्शन की ८. प्रतिक्षण ९. दुःख, उदासी, घबराहट १०. दुःख, शोक, रज ११ भय ।

६. हर एक मौसम में कष्ट-आजू<sup>१</sup> सरसब्ज<sup>२</sup> रहती है ।  
तरदुद<sup>३</sup> गैर को<sup>४</sup> होगा, यहाँ तो चैन करते हैं ॥ जोहर
१०. मूसीबत हो कि राहत<sup>५</sup> हो, नहीं लाजिम<sup>६</sup> गिला<sup>७</sup> करना ।  
वशर का<sup>८</sup> फज<sup>९</sup> है, हर हाल में शुक्र-खुदा<sup>१०</sup> करना ॥ ताहिर
- ११ न वस्ल<sup>११</sup> में राहत<sup>१२</sup>, न जुदाई में<sup>१३</sup> अलम<sup>१४</sup> है ।  
आये की न शादी<sup>१५</sup> न गये का मुझे गम<sup>१६</sup> है ॥ अमीर
१२. वन्दा वोह, जो दम न मारे ।  
प्यासा खड़ा हो दरिया-किनारे ॥ यगना
- १३ उस जुल्म पे कुर्बा<sup>१७</sup> लाख करम<sup>१८</sup>,  
उस लुत्फ पे सद्के<sup>१९</sup> लाख सितम ।  
उस दर्द के काबिल हम ठहरे,  
जिम दर्द के काबिल कोई नहीं ॥ वासित भोपाली
- १४ आदमी खुशखू<sup>२०</sup> नहीं तो कुछ नहीं ।  
फूल में गर बू<sup>२१</sup> नहीं तो कुछ नहीं ॥
- १५ नहीं इसके बराबर नेमतों में<sup>२२</sup> कोई नेमत है ।  
कोई दिल से मेरे पूछे, जो गुम खाने में लज्जत<sup>२३</sup> है ॥ अब्दोब

१ कामना की खेती २. हरी-भरी ३ चिन्ता, आतुरता, परेशानी  
४. अन्य को, दूसरे को ५ सुख, चैन ६ आवश्यक ७ शिकवा-शिकायत  
८ मनुष्य का ९ कर्तव्य १० प्रभु का आभार मानना ११ मिलन, सयोग  
१२ सुख, खुशी १३ वियोग में १४ दुःख, व्यथा १५ हर्ष, प्रसन्नता  
१६ दुःख, वेदना १७ निष्ठावर १८ दया, बलिहारी १९ प्रसन्न-  
प्रकृति, हँसमुख २० सुगन्ध २१ ईश्वर-प्रदत्त उत्तम वस्तुओं में २२ स्वाद,  
मजा ।

१६. राजी है हम उसी मे, जिसमे तेरी रजा<sup>१</sup> है ।  
या यूँ भी बाहवा है और वूँ भी बाहवा है ॥
१७. राजी रहे बशर जो गरीबी के हाल मे ।  
पाये मजा पुलाव का अरहर की दाल मे ॥
१८. बहुत खुश हूँ, खुदा याद आ रहा है इस मुसीबत मे ।  
मेरी किस्ती को ऐ तूफाँ ! यूँही जेरो-जबर<sup>२</sup> रखना ॥
१९. हमे जो-कुछ मुयस्सर<sup>३</sup> आए है वो बेशो-कम<sup>४</sup> अच्छा ।  
खुशी हो तो खुशी अच्छी, अगर गम हो तो ग़म अच्छा ॥
२०. ग़म एक इम्तिहान<sup>५</sup> था इन्सा के वास्ते ।  
जो लोग अहले-जूक<sup>६</sup> थे, वो मुस्करा दिए ॥
२१. कस्रते-गम मे<sup>७</sup> भी चेहरे पर बहाली<sup>८</sup> चाहिए ।  
सामने नजरो के तस्वीरे-खयाली<sup>९</sup> चाहिए ॥
२२. मुझे गम से इस वास्ते प्यार है ।  
कि मेरे बुरे वक्त का यार है ॥
२३. शादमानी मे<sup>१०</sup> गुजरते अपने आपे से नही ।  
गम मे रहते है शगुप्ता<sup>११</sup> शादमानो<sup>१२</sup> की तरह ॥

हफीज



१ इच्छा, मर्जी २ तले-ऊपर, उथल-पुथल ३ उपलब्ध होना ४ अधिक और न्यून ५ परीक्षा ६ शौकीन ७ दुःखाधिक्य मे, अत्यन्त दुःख की स्थिति मे ८ प्रसन्नता, उल्लास, रीनक ९ विचारो का चित्र १० खुशी मे ११. प्रसन्न-वदन, खिले हुए १२. प्रसन्न, मस्त व्यक्तियों की भाति ।

## यह कहाँ की दोस्ती है ?



- १ यह कहाँ की दोस्ती है कि बने है दोस्त नासह<sup>१</sup> ?  
कोई चारासाज<sup>२</sup> होता, कोई गमगुसार<sup>३</sup> होता ॥
२. दोस्ती और किसी गरजके लिए ?  
यह तिजारत<sup>४</sup> है दोस्ती ही नहीं ॥
३. बहुत तहकीक<sup>५</sup> पर मैंने अगर पाया तो यह पाया ।  
वजूदे-दोस्ती<sup>६</sup> गर है तो यारो की जबाँ तक है ॥ रंजूर
४. नहीं 'अहसान' अब वह मजलिसे-अहबाब<sup>७</sup> पहली-सी ?  
मैं अब इन्सा से पहले जर्फे-इन्सा<sup>८</sup> देख लेता हूँ ॥ अहसान
५. तुम हो कि मुद्दतो मे भी मेरे न हो सके ।  
मैं हूँ कि एक बातमे दीवाना हो गया ॥
- ६ दोस्तो से और वफा की आजूँ ऐ बेखबर !  
तेरी उम्मीदो के पीछे कारवाने-यास<sup>९</sup> हैं ॥ दानिश
- ७ बहुत आशना हैं जमानेमे, लेकिन—  
कोई दोस्त दर्द-आशना<sup>१०</sup> चाहता हूँ ॥ आजाद
- ८ जब दोस्त भी जहाँ मे निभाये न दोस्ती ।  
दुश्मनसे फिर हमे गिलए-इन्तिकाम<sup>११</sup> क्या ? मुनक्वर

१. उपदेशक २. चिकित्सक, उपचारक ३. सहानुभूति करने वाला, हमदर्द ४ व्यापार ५ जाच-पडताल पर ६ मित्रता का अस्तित्व ७ मित्र-सभा ८ मनुष्य की पात्रता ९ निराशा का काफिला १० दुःख का साथी ११ प्रत्युपकार की शिकायत ।

६. अहवाबने की आकर फौरन मेरी दिलजोई !<sup>१</sup>  
मैं दूर मुसीबत से जिस वक्त गुजर आया !! अर्श
१०. यह दोस्तो का रवैया, यह दुश्मनो का सुलूक !<sup>२</sup>  
जो मुझसे पूछो तो दोनों मे कोई फर्क नहीं !!
११. कुछ मुहब्बत की आग होती है, कुछ रकाबत<sup>३</sup> के खार होते हैं !  
दोस्तो की मिजाज-पुरसीके<sup>४</sup> जाविए<sup>५</sup> बेशुमार<sup>६</sup> होते हैं !!  
अदम
१२. ऐ मेरे पुर-खलूस हमदर्दों !<sup>७</sup> अब ज़ियादा करम न फर्माओ !<sup>८</sup>  
रहम खा-खाके मेरी हालत पर, डर रहा हूँ मुझे न खा जाओ !!  
शाद
१३. दोस्तोसे हमने वह सदमे<sup>९</sup> उठाए जान पर !  
दिलसे दुश्मन की अदावत का<sup>१०</sup> गिला जाता रहा !! आत्सी
१४. उम्र हो जायगी 'एहसाँ', एक दिन यूँ ही तमाम !  
दोस्त बनते जाइए, दुश्मन बनाते जाइए !! एहसान
१५. दुश्मनोने क्या बुराई की, जो कीनी दुश्मनी ?  
दोस्तोने दोस्तीमे दिल के दुकड़े कर दिये !
१६. दहरमे हम वफाशिआरो<sup>११</sup> को, दोस्तो के भरमने मार दिया !  
दुश्मनो से तो बच निकले लेकिन-दोस्तोके करमने<sup>१२</sup> मारदिया !!  
शाद
१७. यगाने<sup>१३</sup> तो अपने नहीं बन सकेंगे !  
तू शूरो को अपना बनाता चला जा !! अर्श

१ सहानुभूति २ व्यवहार ३. ईर्ष्या-द्वेष ४. मिलने और सात्वना देने के ५ दृष्टिकोण, ढंग ६ अनगिनत, असंख्य, ७ प्रेमी, हितपियो । ८ कृपा न करो ९ दुख, संकट १० शत्रुता का ११ प्रेमियो, वफादारो को १२ कृपाने १३ अपने ।

- १८ हाँ हमारे फँसलोमे फँसला इक यह भी है !  
दोस्त बनते जाइए दुश्मन बनाते जाइए ॥ आजाद
१९. हुआ मालूम मिलकर हमको यारो से ऐ 'बिस्मिल' !  
कि दुनियामे अगर है दोस्ती, तो वह है मतलब की !! बिस्मिल
२०. न जाने क्यों मेरी आँखो मे आ गए आँसू ?  
किसीने हाथ बढ़ाया जो दोस्ती के लिए ॥
- २१ जिन्दगीमे पास से दम-भर न होते थे जुदा !  
कब्र मे तनहा<sup>१</sup> मुझे यारो ने कशो कर रख दिया ? शालिब
२२. रो रहा हूँ दोस्तो की सर्द-महरी<sup>२</sup> देखकर !  
जिस कदर गाढी छनी थी, उस कदर पानी हुई ॥ राज
२३. न हो दोस्तका दोस्त को गर खयाल !  
नही दोस्त वह जानका है बवाल<sup>३</sup> ॥
- २४ ऐशके यार तो अगयार<sup>४</sup> भी बन जाते है !  
दोस्त वह है, जो बुरे वक्त मे काम आते है !! हाली
- २५ अजब नाआश्ना<sup>५</sup> हैं आश्ना इस बहरे-हस्तीके<sup>६</sup> !  
डुबो देते है उसको, हाथ ये जिसका पकडते हैं ॥
२६. आश्ना जितने है, हैं अपनी गरजके आश्ना !  
खूब देख हमने अपना आश्ना कोई नही ॥ जफर
- २७ यक-रंग<sup>७</sup> आश्ना नही, हमने परख लिया !  
मुँहपर खरे हैं आप, मगर दिल मे खोट है ॥

---

१ अकेला २. गैर वफादारी ३. दुख, विपत्ति, सकट ४ पराये, दूसरे  
५ अपरिचित, अनभिज्ञ, अनाडी ६. जीवन-सागर के ७. एक रंग में रंगा  
हुआ, पक्का ।



२८. दोस्ती के जो किया करते हैं दावे अहवाव<sup>१</sup> !  
वक्त पड़ता है तो फिर आंख चुरा लेते हैं !!
- २९ है ये दुश्मन, जो तुम्हारे दोस्त है ।  
मैं दिखाऊंगा जो दम मे दम रहा ॥ आशिक टोकी
- ३० मैं हैरा<sup>२</sup> हूँ कि क्यों उससे हुई थी दोस्ती अपनी ?  
मुझे कैसे ग़ारा<sup>३</sup> हो गई थी दुश्मनी अपनी ? दानिश
३१. दिलो के दीलतकदे<sup>४</sup> है खाली,  
वफा के जौहर<sup>५</sup> नहीं किसी मे ।  
दुहाई ऐ दुश्मनो । दुहाई,  
फरेब, खुर्दा<sup>६</sup> हैं दोस्ती का ॥ असर
- ३२ निगाहे ढूँढती हैं दोस्तो को और नहीं पाती ।  
नज़र उठती है अब जिस दोस्त पर पड़ती है दुश्मन पर । फानी
- ३३ परेशा<sup>७</sup> हुआ दोस्ती करके मैं ।  
बहुत मुझको अरमान था चाह का ॥ सीर
३४. हुआ हासिल यह हमको दोस्तो की बेवफाई से ।  
कि हमने उम्र-भरकी तौवा करली आश्नाई से ॥
- ३५ दें गैर दुश्मनी का हमारी खयाल छोड़ ।  
यां दुश्मनी के वास्ते काफी हैं यार वस ॥ हाली
३६. अहवाव की जफाएँ तो जल्मी न कर सकी !  
अहवाव के खुलूस<sup>८</sup> का मारा हुआ हूँ मैं ॥
- ३७ कौन कहता है कि मिलना दोस्तो से है बुरा ।  
लेकिन इतना क्यों मिलो, उकताएँ जिससे आश्ना ?

---

१. मित्र-गण, दोस्त २. आश्चर्य-चकित ३. सह्य, बरदास्त ४. भवन  
५. गुण, खूबियाँ ६. धोखा खाया हुआ ७. दुःखी, तंग ८. वतवि-व्यवहार का ।

३८. आडे<sup>१</sup> आया न कोई मुश्किल मे !  
मशवरे<sup>२</sup> देके हट गये अहवाब ! ! जोश
- ३९ 'अहसान' कोई अपना बुरे वक्त मे नही !  
अहवाब बेवफा है, खुदा बेनियाज<sup>३</sup> है ! ! अहसान
- ४० अपने मतलब के लिए, हर एक बन जाता है दोस्त !  
तू<sup>४</sup> कोई वहरे-जहाँ मे,<sup>५</sup> आशना होता नही ! ! सहर
- ४१ हमे भी प्रा पड़ा है दोस्तो से काम कुछ यानी<sup>६</sup> !  
हमारे दोस्तो के बेवफा होने का वक्त आया ! ! फैज
४२. दिल अभी पूरी तरह टूटा नही !  
दोस्तो की महरबानी चाहिए ! !
४३. देखलो कोई किसी का दोस्त दुनिया मे नही !  
जान<sup>७</sup> फ़र्क<sup>८</sup> त<sup>९</sup> मे गई, दिल को न मुतलक<sup>८</sup> गम हुआ ! ! आबाद
४४. कोई पक्का दोस्त है तो कोई कच्चा दोस्त है !  
हाँ मुसीबत मे जो काम आए, वो सच्चा दोस्त है ! !
४५. बेगरज<sup>९</sup> दोस्तो की हमदर्दी<sup>१०</sup>, किस कदर<sup>११</sup> .खुलूसो-सादा<sup>१२</sup> है !  
यह वह कमयाब<sup>१३</sup> फूल हैं, जिनमे रंग कम है महक ज्यादा है ! ! अदम



१ आगे, सामने, समीप २ सलाह, राय ३ नि स्पृह, बेपर्वाह ४. ससार-सागर में ५ अर्थात्, मतलब यह है कि ६. प्राण ७ वियोग मे ८ जरा भी ९. नि स्वार्थ १० सहानुभूति ११ किस प्रकार, कैसी १२. निश्चल, निष्कपट १३. दुष्प्राप्य, जो बहुत कम मिल सकें ।

## अपने ऐवो पे नज़र कर ?



१. अपने ऐवो<sup>१</sup> पे नज़र कर, अपने दिलको साफ़ कर !  
क्या हुआ गर खल्क<sup>२</sup>मे तू पारसा<sup>३</sup> मशहूर है ?
२. इतनी ही दुश्वार<sup>४</sup> अपने ऐवकी पहचान है !  
जिस कदर करनी मलामत<sup>५</sup> और को आसान है ॥ हाली
३. औरोपे मोतरिज<sup>६</sup> थे, लेकिन जो आँख खोली !  
अपने ही दिलमे हमने गंजे-अयूब<sup>७</sup> देखा ॥ अकबर
४. जो भले है, वह बुरो को भी भला कहते हैं !  
न बुरा मुनते हैं अच्छे, न बुरा कहते हैं ॥
५. फिलहकीकत<sup>८</sup> वे बुरे हैं, जो समझते हैं बुरा !  
ऐ 'ज़फर' उसकी तरफसे जो हुआ अच्छा हुआ ॥
६. न थी हालकी जब हम अपने खबर,  
रहे देखते औरोके ऐवो-हुनर !  
पढी अपनी बुराइयोपे जो नज़र,  
तो निगाहमे कोई बुरा न रहा ॥ हाली
७. ऐ 'ज़ीक' किसको नज़रे-हिकारत<sup>९</sup>से देखिए ?  
सब हमसे हैं ज़ियादा, कोई हमसे कम नहीं ॥ ज़ीक

---

१ दोषो, अवगुणो २ संसार मे ३ मंयमी, इन्द्रिय-निग्रही ४ कठिन, दुष्कर ५. भत्संना, डाट-डपट, निन्दा ६ आपत्ति-कर्ता, ऐतराज़ करने वाले ७, दोषी-अवगुणों का सजाना ८. वास्तव मे, दरअसल ९. घृणा-दृष्टि से ।

८. मैं बता दूँ आपको, अच्छो की क्या पहचान है ?  
वोह है खुद अच्छे, जो औरोको नही कहते बुरा ॥ जोक
९. हम किसीको क्यों कहे, मुँह से बुरा अपने 'जफर' ।  
हम ही सबसे है बुरे, हमसे बुरा कोई नही ॥ जफर
१०. नज़र आते है हमको ऐब अपने ख बियाँ<sup>१</sup> बनकर ।  
हम अपने जहल<sup>२</sup>को भी, यह सभते है कि इफा<sup>३</sup> है ॥
११. देखता है ऐबो-हुनर औरका है सब कोई ।  
अपना मालूम 'जफर' ऐबो-हुनर किसको है ? जफर
१२. औरोकी ऐबजोई,<sup>४</sup> अपना हुनर<sup>५</sup> नही है ।  
अपनी ही ऐबजोई, है यह हुनर हमारा ॥ जोशिश
१३. औरोपे जब ऐतिराज<sup>६</sup> करता हूँ,  
मौत आये न आये, मैं तो मर जाता हूँ ।  
दुनियाके गुनाहपे<sup>७</sup> कौन उठाये उँगली ?  
अपने ही गुनाहोंसे डर जाता हूँ ॥ फहंत
१४. अगर हूँढोतो 'अकबर' मे भी पाओगे हुनर कोई !  
अगर चाहो, निकालो ऐब तुम अच्छे-से-अच्छे मे ॥ अकबर
१५. देखते हैं जो हुनर, ऐबको कब देखते है ?  
ऐबके देखने वाले तो हुनर देख चुके ? फरेब
१६. ऐबबी<sup>८</sup> को क्या हो अपने ऐबे-मरुफी<sup>९</sup> पर नज़र ?  
देख सकती हैं भला आंखे कहाँ बालाए-सर<sup>१०</sup> ?



१ गुण २ अज्ञान, अविवेक, मूर्खता को ३ ज्ञान, विवेक, ब्रह्मज्ञान ४. दोष-दर्शिता, पराये दोष देखने की आदत ५. गुण, विशेषता, कला ६ आपत्ति ७. पाप-दोषपर ८. दोषदर्शी को ९. गुप्त दोषपर १०. सिर के ऊपर ।

## जो रखता है क़ाबू में दानिश जवां को !

१. जो रखता है क़ाबू<sup>१</sup> में 'दानिश' ज़वा को !  
वना लेगा अपना वह सारे जहाँ को ॥ दानिश
२. जहाँ काम होता है मीठी ज़वां से !  
नहीं इसमें लगती है दौलत जियादा<sup>२</sup> ॥ हाली
३. ख़मोशी<sup>३</sup> में अमन है, रास्ती<sup>४</sup> है सफ़ाई है !  
यह वह दारू<sup>५</sup> है जो कितने ही मर्जों<sup>६</sup> की दवाई है ॥
४. बात का ज़ख़म है तलवार के ज़ख़मों से सिवा<sup>७</sup> !  
कीजिए क़त्ल, मगर मुँह से कुछ दर्शादि<sup>८</sup> न हो ॥ दाग़
५. कहे एक जव सुनले इन्सान दो !  
कि हक ने ज़वां एक दी कान दो ॥ जोक़
६. फ़ितरत<sup>९</sup> को नापसन्द है सख़ती जवान में !  
पैदा हुई न इसलिए हड्डी जवान में ॥ हवीब
७. दुश्मन से भी रवा<sup>१०</sup> हैं तुमको जवाने-गीरी<sup>११</sup> !  
जब दिल को रंज पहुँचा, क्या लुत्फ<sup>१२</sup> गुफ्तगू का<sup>१३</sup> ?
८. बहुत ना-जुक जमाना है, ज़वां को वन्द कर रखो !  
मसल मग़हूर है ; दीवार के भी कान होते हे ॥

१. नियंत्रण २ अधिक ३ मौन, चुप्पी ४ सत्यता, यथार्थता ५. औषधि ६ रोगों की ७. अतिरिक्त, अधिक गहरा ८ आज्ञा, हिदायत ९. प्रकृति को १० उचित ११. मधुर वचन १२ आनन्द, मजा १३. बातचीतका ।

९. ज़वां वही है कि हिलने मे जिसके हो कुछ फँज<sup>१</sup> ।  
वर्न<sup>२</sup> यूँ हरकत मे जवान है सब की ॥
१०. है जमीनो-आस्माँका फर्क<sup>३</sup> कौलो-फ़ेल<sup>३</sup> मे ।  
'अहमदी' जो मुँह से कहते हो, वह करना चाहिए ॥ अहमदी
११. होंट अपना हिला न समझे बिन ।  
यानी<sup>४</sup> जब खोले तो जबा टुक<sup>५</sup> सोच ॥ मीर
१२. लाख नेमत के बराबर है जवाने-शीरी<sup>६</sup> ।  
जायका<sup>७</sup> बस है जवां का मेरे दन्दा<sup>८</sup> के तले ॥
१३. तलखगोई<sup>९</sup> से बचो, शीरीजबा<sup>१०</sup> बनकर रहो ।  
अपने-बैगाने के दिल पर हुक्मरा<sup>११</sup> बनकर रहो ॥
१४. अक्लमन्द इन्सां हमेगा बोलता है तोलकर ।  
बेव क्लफ इन्सा हमेशा तोलता है बोलकर ॥
१५. लाल उगल मुँह से, अगर तुझमे हिम्मते-मर्दाना<sup>१२</sup> है ।  
आग उगलने को मुँह मिस्ले-रफ़ल<sup>१३</sup> पाया तो क्या ?
१६. छुरी का, तीर का, तलवार का तो घाव भरा ।  
लगा जो ज़ुलम ज़बाका, रहा हमेशा हरा ॥  
ज़बाँ अपनी हृद मे है बेशक<sup>१४</sup> ज़बा ।  
बड़े एक नुक्ता<sup>१५</sup> तो है यह जियाँ<sup>१६</sup> ॥  
समझ-सोच करके जो खोले ज़बा ।  
तो प्यारा बने उसका सारा जहा ॥

---

१ लाम, फायदा, उपकार २ अन्यथा, नहीं तो ३ कथनी और करनी मे  
४ अर्थात्, कहने का तात्पर्य यह है कि ५. जरा ६. मीठी बोली ७. स्वाद  
८. दाँतो के नीचे ९ कटुभाषिता, कड़वी बोली से १०. मधुर-भाषी ११.  
शासक १२. पुरुषोचित साहस १३. बन्दूक के समान १४. निस्सन्देह १५.  
बिन्दु १६. हानि, क्षति ।

## खरे-खोटे की कसौटी है, मुसीबत क्या है ?



१. अपने-बेगानों<sup>१</sup>की खुलती है हकीकत<sup>२</sup> इससे ।  
खरे-खोटे की कसौटी है, मुसीबत<sup>३</sup> क्या है ?
  २. सुख<sup>४</sup> होता है इन्सा, आफते<sup>५</sup> आने के बाद !  
रंग लाती है हिना<sup>६</sup> पत्थरपे घिस जाने के बाद ॥
  ३. सब<sup>७</sup>से बढकर मुसीबतमे कोई हामी<sup>८</sup> नहीं ।  
यह सफत<sup>९</sup> पैदा हो जिसमे, उसमे कुछ खामी<sup>१०</sup> नहीं ॥
  ४. जवाले-मालो-दौलतमे,<sup>११</sup> बस इतनी बात अच्छी है ।  
कि दुनियाको बखूबी<sup>१२</sup> आदमी पहचान जाता है ॥
  ५. तसकीन<sup>१३</sup>मुसीबतमे देनेको, यूँतो जमाना आता है !  
ऐसा भी कोई आता है जिसे विगडी को बनाना आता है ॥
- अलम
६. होते हैं बडे किस्मतके धनी, जो यह सदमे<sup>१४</sup> सह जाते हैं !  
तूफाने-हवादस<sup>१५</sup>मे वन<sup>१६</sup> अच्छे-अच्छे वह जाते हैं ॥
  ७. जबाब ज़ुल्मे-जिगर दे रहा है हँस-हँसकर !  
“वही तो दिल है कि जो ख़ुश रहे मुसीबत मे ॥
- साकिब

---

१ अपने-परायो की २. वास्तविकता, असलियत ३ विपत्ति, संकट-काल  
४. सम्मानित, सफल ५. आपत्तियाँ, दुख ६ मेंहदी ७. घैयं, धीरज ८ सहायक  
मित्र ९ गुण १० कच्चापन, कमी ११. धन-वैभव के पतन के समय मे,  
१२ भली-भाँति १३. धीरज, तसल्ली १४ दुख, संकट १५ विपत्तियों के  
तूफान में १६. अन्यथा ।

खरे-खोटे की बसौटी है, मुसीबत क्या है ?

२६६

८. शऊरे-आदमी<sup>१</sup> वेदार<sup>२</sup> होता है मुसीबत में !  
वो खुशकिस्मत<sup>३</sup> है, जिनपे गर्दिशे-अय्याम<sup>४</sup> आती है । फ़ानी

९. मुसीबत का हरइकसे अहवाल<sup>५</sup> कहना ।  
मुसीबतसे है यह मुसीबत जियादा ॥ हाली

१०. अय 'रिन्द' वक्त<sup>६</sup>-बद<sup>६</sup> में किसीने दिया न साथ ।  
आंखे चुराये अपने-पराये चले गए ॥ रिन्द

११. जब पड़ा है वक्त कोई, हो गए हैं सब अलग ।  
दोस्त भी अपना नहीं, वेगाना तो वेगाना है ॥

१२. मुसीबत के दिनों से ऐशके दिन जब मेरे बदले !  
'खयाल' अगयार<sup>७</sup> का तो जिक्र क्या है, दोस्त सब बदले ॥

खयाल

१३. कोई शरीके-हाल<sup>८</sup> बुरे वक्त का नहीं ।  
आती नहीं है मौत भी बीमार देखकर ॥ रग

१४. सियहबख्ती<sup>९</sup> में कब कोई किसी का साथ देता है !  
कि तारीकी<sup>१०</sup> में साया<sup>११</sup> भी जुदा<sup>१२</sup> होता है इन्सा से ॥ नासिख

१५. भरी दुनियामे कोई भी नज़र आता नहीं अपना ।  
'अदीब' इक दौर<sup>१३</sup> ऐसा भी गुजर जाता है इन्सापर ॥ अदीब

१६. बागवा ने<sup>१४</sup> आग दी, जब आशियाने को मेरे ।  
जिनपे तकिया था, वही पत्ते हवा देने लगे ॥ साकिब

---

१ मनुष्य की दक्षता २ जाग्रत ३ भाग्यशाली ४ समय का चक्र, दिनों का उलट-फेर ५ हाल, समाचार ६ सकट-काल में ७ दूसरो का ८ साथी, सगी ९ विपत्ति-काल में १० अँधेरे में ११ छाया १२ अलग १३ युग, समय, चक्कर १४ माली ने ।



१७. यार-ओ-ग़मख़्वार<sup>१</sup> है दुनिया मे बनी के साथी !  
जब बिगडती है तो सब आंख चुरा जाते हैं ॥ बेखुद
१८. किस्मत की शिकायत किससे करे ?  
वह बज्म मिली है हमको जहां ।  
राहतके हजारो साथी है,  
दुख-दर्द का साथी कोई नहीं ॥ नज़ीर बनारसी
१९. यह खूब जाचा, यह खूब वरता,  
यह खूब जाना, यह खूब देखा ।  
कि वक्त-नाजुक<sup>२</sup> पे इस जहा मे  
नहीं है साथी कोई किसी का ॥ तूह
२०. मुसीबतमे न घबरा, कर गुज़र जैसे बने वैसे ।  
यह दिन भी जाएंगे इकदिन, वह दिन भी आएंगे इक दिन ॥
२१. आराम के थे साथी क्या-क्या, जब वक्त पड़ा तब कोई नहीं ।  
सब दोस्त है अपने मतलबके, दुनियामे हमारा कोई ॥ आज़ू



तदबीर के हाथो से गोया तकदीर का पर्दा उठता है !



१. तदबीर के हाथो से गोया<sup>१</sup> तकदीर का पर्दा उठता है ।  
या कुछ भी नहीं या सब-कुछ है, या मिट्टी है या सोना है !!
२. न रखो कातिवे-तकदीर<sup>२</sup> पर इल्जाम<sup>३</sup> किस्मत का ।  
तुम्हारे हाथ मे ऐ दोस्तो ! किस्मत तुम्हारी है !!
३. खुदी को कर बुलन्द<sup>४</sup> इतना कि हर तकदीर से पहले ।  
खुदा वन्दे से खुद पूछे वता तेरी रजा<sup>५</sup> क्या है ?  
इकबाल
४. शिकायत की जो किस्मत की, तो दिल कहने लगा चुप रह ।  
मुकद्दर आप अपना हम बनाते है मिटाते हैं !!
५. हा-हा मगर ऐ दोस्त ! तू तदबीर किये जा ।  
यह भी तेरी तकदीर के दफ्तर मे लिखा है !!
६. अच्छा-बुरा बनना मौक़फ़<sup>६</sup> अक्ल पर है ।  
तकदीर के महल का मैमार<sup>७</sup> खुद बशर है !!
७. नहीं कानूने-फ़िर्त है, जिसे तकदीर कहते है ।  
जिसे किस्मत समझते हैं, वह तदबीरो का हासिल<sup>८</sup> है !! अकबर
८. छिपा रखा है जिसने आज किस्मत के सितारे को ।  
उसी बदली से होगे एक दिन शम्सो-कमर<sup>९</sup> पैदा !! फानी

१ मानो २ भाग्य-लेखक पर ३ दोष ४ उच्च ५ इच्छा ६ निर्भर ७ निर्माता, कारीगर ८ फल, परिणाम ९ सूरज और चाँद ।

६. मुकददरका लिखा मिटता नही आंसू बहाने से ।  
यह वह होनी है जो होकर रहेगी हर बहाने से ॥ साहिर
- १० हमारी अक्ले-बेतदबीर<sup>१</sup> पर तदबीर हँसती है ।  
अगर तदबीर हम करते हैं तो तकदीर हँसती है ॥ हातिम
- ११ नतीजा एक ही निकला कि थी किस्मत मे नाकामी<sup>२</sup> !  
कभी कुछ कहके पछताये, कभी चुप रहके पछताये ॥ आर्जून
- १२ इन्सान समझना है कि तदबीर है सब-कुछ ।  
मजबूरियाँ कहती है कि तकदीर भी कुछ है ॥
- १३ फिकरे-राहत<sup>३</sup> छोड़ बैठे हम को राहत मिल गई ।  
हमने किस्मतसे लिया जो काम था तदबीर का ॥
- १४ अक्लसे क्या पूछता, आफतको सरपे देखकर ।  
वह तो खुद चकरा गई, किस्मत का चक्कर देखकर ॥ अर्श
१५. मुसीबतमे बशरके जौहरे-मर्दाना<sup>४</sup> खुलते हैं ।  
मुबारक वुजदिलो<sup>५</sup>को गर्दिगे-किस्मत<sup>६</sup> से मर जाना ॥ चकबस्त
- १६ तेरी हिम्मत ही तेरी किस्मत है; हुक्मे-तकदीर<sup>७</sup> क्या कजा<sup>८</sup> हैं ।  
और जो होना है कुछ तो होने दे, रोने-घोनेसे यूँ हुआ क्या है ?  
बशीर
१७. अहले-हिम्मत<sup>९</sup> मजिले-मकसूद<sup>१०</sup> तक आही गए ।  
बन्दए-तकदीर<sup>११</sup> किस्मतका गिला करते रहे ॥ चकबस्त
१८. मैं कहता था इन्सानकी गर तकदीर नही तो कुछ भी नही !  
हिम्मत बढ़कर बोल उठी, तदबीर नही तो कुछ भी नही ॥

---

१. पुरुषार्थहीन बौद्धिक ज्ञानपर २ असफलता ३. सुख की चिन्ता ४. पुरुषोचित गुण ५ कायरो को ६ भाग्य-चक्रसे ७. दैव की आज्ञा ८. बला, मृत्यु ९. साहसी, पुरुषार्थी १० लक्ष्य-बिन्दु ११ भाग्यवादी ।

१६. पस्त-हिम्मत<sup>१</sup> रोते रहते हैं सदा तकदीर को ।  
साहिब-हिम्मत<sup>२</sup> हमेशा करते हैं तदबीर को ॥
२०. अगर तकदीर भी अच्छी हो, तब तदबीर बनती है ।  
बुरा गर हो क़लम कब ठीक फिर तस्वीर बनती है ?
२१. गर्दिश जो हो तकदीरमे, कुछ सई<sup>३</sup> काम आती नहीं ।  
मंजिल कुछ आगे बढ़ गई, पहुँचा जो मैं मंजिल के पास ॥ अमीर
२२. तदबीर सदा रास्त<sup>४</sup> जो आती नहीं 'अकबर' ।  
इन्सान की ताकत के सिवा भी है कोई चीज ॥ अकबर
२३. तदबीर न कर, फायदा तदबीरमे क्या है ?  
कुछ यह भी खबर है तेरी तकदीर मे क्या है ? जोक
२४. काम सब तकदीर पर है, है मगर तदबीर शर्त ।  
कुछ सबब<sup>५</sup> भी चाहिए इस आलमे-असबाब<sup>६</sup>मे ॥ जफर
२५. उस वक्त, मुसाफिर बेचारा अपनी किस्मतको रोता है ।  
जब डूबने लगती है किस्ती नजदीक किनारा होता है ॥
२६. तदबीर ही तेरी नाकिस<sup>७</sup> थी, तकदीरको तू इल्जाम<sup>८</sup> न दे ।  
कर सब<sup>९</sup> ज़रा कारे-मुश्किल<sup>१०</sup> सब वक्त पे आसा<sup>११</sup> होते हैं ॥  
खलम
२७. जो मुकद्दर है वह टल सकता नहीं 'गालिब' कभी ।  
तेरी किस्मतका तुझे मिलता है छप्पर फाड़के ॥ गालिब



१ साहस-हीन, अपुरुषार्थी २ साहसी ३ कोशिश ४ फलदायी, कारगर  
५ कारण ६ कार्यकारणरूप ससारमे ७ अपूर्ण, दूषित, मिथ्या ८ दोष  
९ धैर्य, धीरज १० कठिन कार्य ११ सरल ।

## मौत क्या है, जिन्दगी की दूसरी तस्वीर है !



१. मौत क्या है, जिन्दगी की दूसरी तस्वीर है।  
जिसने इस रत्न<sup>१</sup> से इसे देखा वही कामिल<sup>२</sup> हुआ ॥
२. जिन्दगी खुद क्या है 'फानी', यह तो क्या कहिए, मगर ।  
मौत कहते हैं जिसे, वह जिन्दगी का होश है ॥ फानी
३. जिन्दगी वैठी थी अपने हुस्न<sup>३</sup> पर भूली हुई ।  
मौत ने आते ही सारा रंग फीका कर दिया ॥ अस्तर
४. कौन ऐसा है नहीं है मौत की जिसको खबर ।  
फिर जो गफलत है तो यह दुनिया का इक दस्तूर<sup>४</sup> है ॥
५. मौत को देखा तो दुनिया से तबीअत<sup>५</sup> फिर गई ।  
उठ गया दिल दहर से दौलत नजर से गिर गई ॥
६. जीने-मरने की हकीकत, जब से हम पर खुल गई ।  
जिन्दगी और मौत दोनों का मजा जाता रहा ॥
७. मौत जब तक नजर नहीं आती ।  
जिन्दगी राह पर नहीं आती ॥
८. जिन्दगी की आँख से देखा है नक्शा<sup>६</sup> मौत का ।  
मौत के मुँह से सुनूँगा दास्ताने-जिन्दगी<sup>७</sup> ॥ अकबर हैदरो

---

१. पहलू २ सम्पूर्ण, सर्वाङ्गपूर्ण ३. सौन्दर्य ४. रिवाज, परम्परा  
५. जो, रुचि ६. चित्र ७. जीवन की कहानी ।

मौत क्या है, जिन्दगी की दूसरी तस्वीर है !

२७५

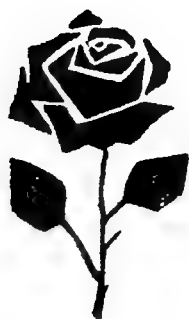
- ६ कुछ हवा भर दी गई है खाक की तामीरमें<sup>१</sup> ।  
मौत हँसती है मेरी हस्ती का सामा<sup>२</sup> देखकर ॥ जिगर
१०. जा व बेजा<sup>३</sup> के हवादस<sup>४</sup> से बचाती है तुझे ।  
मौत कहते हैं जिसे, है पासवाने-जिन्दगी<sup>५</sup> ॥ अकबर
११. मौत का भटका लगा ऐसा कि आँखें खुल गई ।  
खबरू<sup>६</sup> मंजर<sup>७</sup> है खाबे-जीस्त<sup>८</sup> की तामीरका<sup>९</sup> ॥ रीझन
१२. मौत आती नहीं करीने<sup>१०</sup> की ।  
यह सजा मिल रहा है जीने की ॥ आतिश
१३. जिन्दगी ने सैकड़ों सामा किये ।  
मौत ने आकर पशेमा<sup>११</sup> कर दिया ॥ जोश
- १४ जिन्दगी पाकर हुआ सारा जमाना बेखबर<sup>१२</sup> ।  
मौत भी आयेगी इक दिन, इसका किसको होश है ?
- १५ गाये जा मस्ती के तराने, ठंडी आढ़े भरना क्या ?  
मौन आये तो मर भी लेंगे, मौत से पहले मरना क्या ? जोश
- १६ जीने तक है होश के जल्वे, आगे होश की मस्ती है ।  
मौत से डरना क्या मानी, मौत भी जज्वे-हस्ती<sup>१३</sup> है ॥ फिराक
१७. सब जीते जी के भगडे हैं, सच पूछो तो क्या खाक हुए ?  
जब मौत से आकर काम पड़ा, सब किस्से-कज़िये पाक हुए ॥
- १८ तमाशा इसको समझे, खेल समझे, दिल्लगी समझे ।  
बस उसकी जिन्दगी है, मौत को जो जिन्दगी समझे ॥

---

१ रचना अथवा आकृति में २ उपकरण, सामग्री ३ उचित तथा अनुचितके ४ विपत्तियों-सकटोंसे ५ जीवन-प्रहरी ६ सामने ७ दृश्य ८ जीवन-स्वप्नकी ९ इमारत या रचना का १० ढग की ११ लज्जित, पछिताने वाला १२ असावधान, लापरवाह १३ जीवन का आकर्षण ।

१९. मौत यह मेरी नहीं, मेरी कजा<sup>१</sup> की मौत है ।  
क्यो डरूँ इससे कि फिर मरकर नहीं मरना मुझे ॥ अकबर
२०. हंसके दुनिया मे मरा कोई, कोई रो के मरा ।  
जिन्दगी पाई मगर उसने, जो कुछ होके मरा ॥
२१. जी उठा मरने से वह, जिसकी खुदा पर थी नज़र ।  
जिसने दुनिया ही को पाया था, वह सब खो के मरा ॥ अकबर
२२. लाई हयात,<sup>२</sup> आये, कजा ले चली, चले ।  
अपनी खुशी न आए, न अपनी खुशी चले ॥ जोक
२३. मौत एक गीत गाती थी ।  
जिन्दगी भूम-भूम जाती थी ॥
२४. दारे-फानी<sup>३</sup> मे हो गाफिल मौत से इक पल नहीं ।  
क्या भरोसा जिन्दगी का, आज है और कल नहीं ॥ जोरू
२५. ऐसे जीने पे 'रिन्द' खाक पडे ।  
मौत इस जिन्दगी पे हँसती है ॥ रिन्द
२६. अजल<sup>४</sup> के हाथ मे इन्मान इक खिलीना है ।  
जिसे किसी-न-किसी दिन तबाह<sup>५</sup> होना है ॥ अस्तुर





नाम

\* से

\* जब

\* फूल

\* खिलेंगे !





५५२



५५२

नग्मे से जब फूल खिलेंगे,

चुनने वाले चुन लेंगे !

सुनने वाले सुन लेंगे,

तू अपनी धुन में गाता जा !!

—हफीज़ जालन्धरी

५५३



५५३

## नरमेसे जब फूल खिलेंगे !

०

- १ नरमे<sup>१</sup>से जब फूल खिलेंगे, चुननेवाले चुन लेंगे ।  
सुननेवाले सुनलेंगे, तू अपनी वुनमे गाता जा ॥ हफीज
२. तुझे पा के मैं खूद को पाऊँगा,  
कि तुझी मे खोया हुआ हूँ मैं ।  
यह तेरी तलाश है इसलिए,  
कि मुझे है अपनी ही जुस्तजू<sup>३</sup> ॥ फिराक
३. जबतक हो दिल बगल<sup>३</sup>मे हरदम हो याद तेरी ।  
जब तक जबा हो मुँहमे, जारी हो नाम तेरा ॥ दाग
४. महवे-तसबीह<sup>४</sup> तो सब है, मगर इदराक<sup>५</sup> कहाँ ?  
जिन्दगी खूद ही इबादत<sup>६</sup> है, मगर होश नहीं ॥ जिगर
५. किनारा गो<sup>७</sup> किनारेको ही कहना चाहिए, ताहम<sup>८</sup> ।  
कुछ ऐसे जिन्दादिल<sup>९</sup>भी है, जो तूफानोको कहते हैं ॥
- ६ शमएँ<sup>१०</sup> रौशन है, मगर माहौल<sup>१०</sup> फिरभी सदं है ।  
वोह कहाँ गुम हो गए हैं, जिनको पर्वाना कहे ?
७. यह काटा जो माली तुझे चुभ गया है ।  
यह काटा भी गुलशनका लख्ते-जिगर<sup>११</sup> है ॥ अदम

१ सुरीली आवाज, गीत से २ तलाश ३ पहलू मे ४ माला, जपमें लीन  
५. ज्ञान, विवेक ६ उपासना ७ यद्यपि ८ तथापि, फिर भी ९ विनोद-  
रसिक, प्रसन्नचित्त १० वातावरण ११ जिगर का टुकड़ा ।

८. दिल खूश हुआ है मस्जिदे-वीरान<sup>१</sup> देखकर ।  
मेरी तरह खूदा का भी खाना<sup>२</sup> खराब है ॥
- ९ मैं क्या था, किसलिए भेजा गया इस दौरे-हस्ती<sup>३</sup> मे ?  
न अब तक खुदको पहचाना, न कुछ राजे-सफर<sup>४</sup> समझा ॥
१०. बेचैनियाँ<sup>५</sup> समेटकर सारे जहान की ।  
जब कुछ न बन सका तो मेरा दिल बना दिया ॥
११. वह नग्मा बुलबुले-रंगीनवा<sup>६</sup> । इक बार हो जाए ।  
कलीकी आँख खुल जाए, चमन बेदार<sup>७</sup> हो जाए ॥ असगर
१२. मुझे एहसास<sup>८</sup> कम था, वर्न<sup>९</sup> दौरे-जिन्दगानी मे ।  
मेरी हर सासके हमराह<sup>१०</sup> मुझ मे इन्क़लाब<sup>११</sup> आया ॥ आसी
- १३ जिस कामको जहाँमे तू आया था ऐ 'नज़ीर', ।  
खानाखराब<sup>१२</sup> । तुझसे वही काम रह गया ॥ नज़ीर
१४. खुशीदवार<sup>१३</sup> देखते है सबको एक आँख ।  
रौशनजमीर<sup>१४</sup> मिलते हर नेको-बदसे<sup>१५</sup> है ॥ जोक़
१५. है कामयाब<sup>१६</sup> वही, इस जहाने-फानी<sup>१७</sup> में ।  
जो बेनियाजे-तमन्ना<sup>१८</sup> है जिन्दगानीमे ॥ अलम
१६. फना<sup>१९</sup> कैसी, बका<sup>२०</sup> कैसी, जब उसके आहना ठहरे ।  
कभी इस घर मे आ निकले, कभी उस घर मे जा निकले ॥ अमीर

१ उजाड़ मस्जिद २ घर ३. ससारचक्र में ४. यात्रा का रहस्य  
५. व्याकुलता, परेशानियाँ ६ सुन्दर गाने वाली बुलबुल ७ जाग्रत, प्रफुल्ल  
८ अनुभव, ध्यान ९ अन्यथा, नहीं तो १० साथ ११. परिवर्तन १२. भाग्य-  
हीन, बदनसीब १३. सूर्य की भाँति १४ प्रकाशित हृदय, उज्ज्वल मन वाले  
१५. भले-बुरे-से १६. सफल, कृतकृत्य १७. क्षणभंगुर ससार मे १८ नि स्पृह,  
निरीह १९ मृत्यु, नश्वरता २०, नित्यता, स्थिरता ।

- १७ ऐ 'दाग' अपनी वज्र<sup>१</sup> हमेशा यही रही ।  
कोई खिंचा, खिंचे, कोई हमसे मिला, मिले ॥ दाग
१८. कुछ वह खिंचे-खिंचे रहे, कुछ हम खिंचे-खिंचे ।  
इस कशमकश<sup>२</sup> मे टूट गया रिश्ता<sup>३</sup> चाहका ॥ दाग
१९. हो कितनी ही तारीक<sup>४</sup> शब-जीस्त<sup>५</sup> की राहे ।  
इक तूर-सा<sup>६</sup> रहता है झलकता मेरे दिलमे ॥ जोश
२०. छिपाओ आपको जिस ढंग या जिस भेसमे ।  
मगर चश्मे-हकीकतवी से<sup>७</sup> पर्दा हो नहीं सकता ॥ साकिब
२१. तकल्लुफ<sup>८</sup> अलामत<sup>९</sup> है बेगानगी<sup>१०</sup> की ॥  
न डालो तकल्लुफ<sup>८</sup> की आदत ज़ियादा ॥ हाली
२२. बुढापे मे जवानीसे ज़ियादा शौक होता है ।  
भडकता है चिरागे-सहर<sup>११</sup> जब खामोश<sup>१२</sup> होता है ॥
२३. फूल बननेकी खुशीमे मुस्कराती थी कली ।  
क्या खबर थी यह तगय्युर<sup>१३</sup> मौतका पैगाम<sup>१४</sup> है ? सिराज
२४. कब्रोंके मनाज़िर<sup>१५</sup> ने करवट न कभी बदली ।  
अन्दर वही आबादी, बाहर वही वीराना<sup>१६</sup> ॥ नूह
२५. फूल वही, चमन वही, फक<sup>१७</sup> नज़र-नजर का है ।  
अह्द-बहार मे था क्या, दौरे-खिजां मे क्या नहीं ? जिंगर

१. पद्धति, ढंग २. खीचातानी, आपाधापीमे ३. सम्बन्ध, नाता ४. अन्ध-कार पूर्ण ५. जीवन-रात्रिकी ६ प्रकाश-सा ७ वास्तविकता को देखनेवाली आंखसे ८. बनावट-दिखावट ९. निशानी १०. परायेपन की ११. प्रातःकालीन दीपक १२ बुझनेवाला १३ परिवर्तन १४. सन्देश १५. हृदयने १६ सप्ताह, सुनापन ।

२६. नौकरी पर क्या गुजरती है मुझे मालूम है ।  
बस करम<sup>१</sup> कीजे, मुझे बेकार रहने दीजिए ॥ अकबर
२७. जिसने कुछ अहसा<sup>२</sup> किया, इक बोझ सरपे रख दिया ।  
सरसे तिनका क्या उतारा, सरपे छप्पर रख दिया ॥
२८. बादे-फना<sup>३</sup> फिज़ूल है नामो-निशा की फिक्र ।  
जब हम नहीं रहे तो रहेगा मज़ार<sup>४</sup> क्या ? चकबस्त
२९. गुज़रा हुआ ज़माना खारिज<sup>५</sup> है जिन्दगी से ।  
क्यों याद कर रहा है गुज़रा हुआ ज़माना ? असर
३०. जिन्दगी है अपने बस मे न अपने बस मे मौत ।  
आदमी मजबूर है और किस कदर मजबूर है ॥
३१. 'यगाना' फिक्रो-हासिल<sup>६</sup> क्या, तुम अपना हक<sup>७</sup> अदा कर दो ।  
बला से तलख<sup>८</sup> गुजरे जिन्दगानी रायगा<sup>९</sup> क्यों हो ?  
यगाना
३२. मालूम है हमे सब, बुलबुल । तेरी हकीकत ।  
इक मुश्त इस्तख्वा<sup>१०</sup> है, दो पर लगे हुए है ॥
३३. फूल चुनना भी अबस,<sup>११</sup> सैरे-बहारां भी फिज़ूल ।  
दिल का दामन ही जो काटो से बचाया न गया ॥ ज.उबो
३४. ऐश से क्यों खुश हुए, क्यों गम से घबराया किए ?  
जिन्दगी क्या जाने क्या थी और क्या समझा किए ? ज.उबो
३५. जिसको खबर नहीं, उसे जोशो-खरोश है ।  
जो पा गया है राज, वह गुम<sup>१२</sup> है, खमोश<sup>१३</sup> है ॥

---

१ दया, कृपा २ उपकार ३. मरनेके बाद ४ कब्र ५ कटा हुआ ६ फल की चिन्ता ७ कर्तव्य ८ कड़वी ९ व्यर्थ, बेकार १०. हड्डी ११. व्यर्थ १२. आत्म-विस्मृत, आत्म-लौन १३ चुप ।

- ३६ मेरी यह जिन्दगी है कि मरना पड़ा मुझे ।  
इक और जिन्दगी की तमन्ना लिये हुए ॥ हफीज
३७. न सूरत कही शादमानी<sup>१</sup> की देखी ।  
बहुत सँर दुनियाए-फ़ानी<sup>२</sup> की देखी ॥ हसूरत
३८. तुम को है फिक्र तन-आसानी<sup>३</sup> की 'असर' ।  
जिन्दगी कुर्वानियो का नाम है ॥ असर
३९. आजू<sup>४</sup> इक जुर्म<sup>५</sup> है, जिसकी सज़ा है जिन्दगी ।  
जिन्दगी-भर आजूओ को पशेमा<sup>६</sup> कीजिए ॥ एहसान
४०. बुलबुल ! गज़लसराई<sup>७</sup> आगे हमारे मत कर !  
सब हमसे सीखते हैं अन्दाज<sup>८</sup> गुप्तगू<sup>९</sup> के ॥ इक़बाल
४१. सूँघकर मसल डाले तो यह है गुल की जीस्त<sup>१०</sup> ।  
मौत उसके वास्ते डालीपे कुम्हलाने मे है ॥ मुल्ला
४२. जो बेकस है उनको हो ज़ालिम जमाना ।  
बनाता है तीरे-सितम<sup>११</sup> का निशाना ॥
४३. सुबारक जिन्दगी उनकी है, कद्रे-वक्त उनको है ।  
जो रटते हैं तुम्हारा नाम, तुमको याद करते हैं ॥
४४. तेरी हस्ती<sup>१२</sup> से मुन्किर<sup>१३</sup> होते जाते हैं जहा वाले ।  
समाल अपनी खुदाई को, भरे ओ आस्मावाले ! मुल्ला
४५. ग़ज़ब है मश्वरे<sup>१४</sup> यह हो रहे हैं बाग़बानो<sup>१५</sup> मे ।  
हमे बर्बादि<sup>१६</sup> कर डालें हमारे आशियानो मे ॥

१. खुशी की २. नश्वर ससार की ३. शरीर का आराम ४. कामना, इच्छा ५. अपराध ६. लज्जित ७. गज़ल पढ़ना ८. ढग, तौर-तरीके ९. बात-चीत के १०. जिन्दगी ११. अत्याचार के बाण का १२. अस्तित्व से १३. इन्कार करनेवाले १४. परामर्श, मंत्रणाएँ १५. उद्यानपालों, मालियों में १६. नष्ट ।

४६. जईफी<sup>१</sup> जिन्दगी मे वक्त की बेजा खानी है ।  
अगर जिन्दादिली है तो बुढापा भी खानी है ॥
४७. बेकस की तबाही के सामान हज़ारो है ।  
दीपक तो अकेला है, तूफ़ान हज़ारो है ॥
४८. यह दुःख तेरा है न मेरा ।  
हम सबकी जागीर है प्यारे ॥ फँज
- ४९ जिस गुलो-बेरंगो-बूको<sup>२</sup> गुलसितां समझा है तू ।  
ऐ दिले-नादा । कफस<sup>३</sup> को आशियाँ समझा है तू ॥
५०. सन्तरी जब चोर हो, तो कौन रखवाली करे ?  
उस बाग़ का क्या हाल, जहाँ माली ही पामाली<sup>४</sup> करे ?
५१. कभी मौजे-दरिया<sup>५</sup> ने मुड़कर न देखा ।  
सफीना<sup>६</sup> लगा कौन थककर किनारे ? मुल्ला
५२. खुदाई<sup>७</sup> अपने मतलब की, जमाना अपने मतलब का ।  
किसीका साथ देता है, जमानेमे कहाँ कोई ?
५३. जहाँ जाओ, जहाँ पहुँचो, फ़साना है खुशामदका ।  
खुदाई है खुशामद की, जमाना है खुशामदका ॥
५४. हकशनासीकी<sup>८</sup> हकीकतको उन्होंने जाना ।  
ऐ 'अमीर' अपनी हकीकत<sup>९</sup>को जो पहचान गये ॥ अमीर
५५. याद करते हैं खुदाको तो मुसीबतवाले ।  
ऐस उसको नहीं कहते, जो खुदा याद रहे ॥

---

१ वृद्धावस्था, बुढापा २. विना सुगन्ध और विना रंग के फूल को ३. पिंजरे को ४. बर्बादी, पाव-तले मसलना ५ नदी की तरंग ने ६. नाव, किश्ती ७. दुनिया ८. सत्य अथवा ईश्वर को पहचानने की ९. वास्तविकता को ।

५६. दीन जाता है तो जाए, सेठजी को गम नहीं ।  
मालोजर अच्छी तरह दुनिया में पैदा कर लिया ॥
५७. सेठजी को फिक्र थी, इक-इकके दस-दस कीजिए ।  
मीत आ पहुँची कि हज़रत ! जान वापस दीजिए ॥ अकबर
५८. आसान नहीं इस दुनिया में ख्वाबोंके सहारे जी सकना ।  
संगीन हकीकत है दुनिया, यह कोई सुनहरा ख्वाब नहीं ॥ अबम
५९. गुजरे हुए जमानेका अब तज़क़िरा<sup>२</sup> ही क्या ?  
अच्छा गुज़र गया, बहुत अच्छा गुज़र गया ॥ हफीज़
६०. यह माना, जिन्दगी है चार दिनकी ।  
बहुत होते हैं यारो ! चार दिन भी ॥ फिराक़
६१. दुनियाकी सैर करनेको ठहरे नहीं है हम ।  
दम ले लिया है मंजिले-दुश्वार<sup>३</sup> देखकर ॥ अस्त, र
६२. अरे ओ जलनेवाले ! काश, जलना ही तुझे आता ।  
यह जलना कोई जलना है कि रह जाए धुँआ होकर ॥ यगाना
६३. रफीको<sup>४</sup>से रकीब<sup>५</sup> अच्छे, जो जलकर नाम लेते हैं ।  
गुलो से खार बेहतर है, जो दामन थाम लेते हैं ॥
६४. ऐ फ़लक ! दे हमको पूरा गम तो खाने के लिए ।  
वह भी हिस्सा कर दिया सारे जमाने के लिए ॥ दाश
६५. अब कहाँ मैं ढूँढने जाऊँ सुकू<sup>६</sup>को ऐ ख़ुदा !  
इन जमीनों में नहीं, इन आस्मानोंमें नहीं ॥ जज़बी

१ कठोर सत्य २. चर्चा ३ कठिनमार्ग ४ मित्रों से ५. प्रतिस्पर्धी, विरोधी ६ सुख-चैन को ।



६६. चलो, एक मुश्किल तो आसा<sup>१</sup> हुई ।  
सुना है कि रस्ता बड़ा पुरखतर<sup>२</sup> है ॥ अदम
६७. लो शमा हुई रौशन, वह आ गए पवनि ।  
आगाज<sup>३</sup> तो अच्छा है, अजाम<sup>४</sup> खूदा जाने ॥
६८. गुल से पूछिए न किसी गुलची<sup>५</sup> से पूछिए ।  
सदमा चमनके लुटने का बुलबुलसे पूछिए ॥ तालिब
६९. कभी यूँ भी गुजरती है, कभी ऐसा भी होता है ।  
कि होटो पर हसी होती है, दिल सीनेमे रोता है ॥ हफीज़
७०. यह करता हूँ, यह कर लिया, यह कल करूँगा मैं ।  
इसी फिक्रो-इन्तज़ार<sup>६</sup>मे शामी-सहर<sup>७</sup> गई ॥
७१. यह चमन यूँ ही रहेगा और हजारो बुलबुले ।  
अपनी-अपनी बोलियाँ सब बोलकर उड़ जाएँगी ॥ चकबस्त
७२. बेगाने जो शुरूसे हैं, उनका जिक्र क्या ?  
अपने भी गैर हो गए, इसका मलाल<sup>८</sup> है ॥ अमन
७३. दो दिन ऐसे है कि जिनकी फ़िक्र मैं करता नही ।  
एक जो आया नही है, दूसरा जो हो चुका ॥
७४. यह दुनिया रजो-राहत<sup>९</sup>का ग़लत अन्दाज़ा करती है ।  
खूदा ही खूब वाकिफ़<sup>१०</sup> है, किसी पर क्या गुजरती है ?
७५. जब मिले, जिससे मिले, दिल खोलकर मिले ।  
इससे बढकर और खूबी कोई इन्सामे नही ॥

---

१. सरल २. भयंकर आपत्तियों तथा विघ्नो से भरा हुआ ३. प्रारम्भ  
४. परिणाम, अन्त ५. माली, फूल चुनने वालो से ६. विन्ता तथा प्रतीक्षा मे  
७. साय-प्रात ८. दुख, रज, अफसोस ९. दुख-सुख का १०. अभिज्ञ, परिचित ।

७६. मर्द खुशखू<sup>१</sup> नही तो कुछ नही ।  
फूलमे बू नही तो फिर क्या है ?
- ७७ जिसे हम नाग समझे थे गला अपना सजानेको ।  
वह काला नाग बन बैठा हमारे काट खानेको ॥
७८. न वह अगला तराना है, न वह अगला फसाना है ।  
जमानेमे हमारा अब गया-गुजरा जमाना है ॥
७९. जो कोई दर्दका मारा कभी आंसू बहाता है ।  
यह दुनिया हँस देती है, जमाना मुस्कराता है ॥
८०. भँवरसे बच निकलना तो कोई मुश्किल नही, लेकिन ।  
सफीने<sup>२</sup> ऐनदरिया के किनारे डूब जाते है ॥ कातिल
८१. इरादे बाँधता हूँ, सोचता हूँ, तोड़ देता हूँ ।  
कही ऐसा न हो जाए, कही वैसा न होजाए ॥ हफीज
८२. मल्लाहोने साहिल-साहिल, मौजोकी तौहीन तो कर दी ।  
लेकिन फिर भी कोई भँवर तक जाने को तैयार नही ॥ कतील
- ८३ जब तमन्ना थी तो साहिल का पता मिलता न था ।  
डूबना चाहा तो हर तूफान साहिल हो गया ॥ कतील
- ८४ रगे-दुनिया देखकर घबरा गया अपना तो जी ।  
भाई को भाईसे भी इस दौर मे उल्फत नही ॥
- ८५ सुनते है काटेसे गुल तक है राहमे लाखो वीराने ।  
कहता है मगर यह अजमे-जुनू<sup>३</sup>, सहरा<sup>४</sup>से गुलिस्ता दूर नही ॥ मजरूह

१. सत्प्रकृति, सुशील, अच्छे स्वभाव वाला २. नाव ३. दृढ निश्चय, वज्र-सकल्प ४. जंगल से ।

८६. मरनेवाले मरते है लेकिन फ़ना<sup>१</sup> होते नही ।  
वह हकीकत<sup>२</sup>मे कभी हमसे जुदा होते नही ॥ इकबाल
८७. तिशनी<sup>३</sup>को कतरए-शवनम<sup>४</sup> बुझा सकता नही ।  
सिर्फ इकरारे-जवानी काम आ सकता नही ॥
८८. मैं अकेला ही चला था जानिवे-मजिल<sup>५</sup> मगर ।  
लोग साथ आते गए और कारवाँ<sup>६</sup> बनता गया ॥
- ८९ हम नादान ही अच्छे थे, जो कुछ फ़िक्र न थी ।  
बड़ी उलझनमे पड़े है जवसे समझ आई है ॥
- ९० न रास<sup>७</sup> आ सके तो इसमे क्या है कसूर मेरा ।  
वहार लाया था मैं तेरे गुलसिताके लिए ॥ फ़ानी
- ९१ हर एक मुकामसे आगे मुकाम है तेरा ।  
हयात जौकए-सफरके सिवा कुछ भी नही ॥ इकबाल
- ९२ 'अमीर' इस वागमे रहकर करें क्या दिल उलझता है ।  
न नखवत<sup>८</sup> छोडते हैं गुल, न काटे खू<sup>९</sup> बदलते हैं ॥ अमीर
९३. 'सच पूछिए तो मिलना मुमकिन नही जहाँमे ।  
दाना<sup>१०</sup> भी आदमी-सा, नादान<sup>११</sup> भी बशर-सा ॥ बेदिल
९४. पहुँचे है जो अपनी मजिलपर, उनको तो नही कुछ नाजे-सफर<sup>१२</sup> ।  
चलनेका जिन्हे मकदूर<sup>१३</sup> नही, रफतार की बाते करते हैं ॥ शकील
९५. क्या चला मैं जो रहे-शौक<sup>१४</sup>मे रुक-रुकके चला ।  
लुत्फ चलनेका तो जब है कि हवा बन जाऊँ ॥ नूह

१. नष्ट २ वस्तुतः ३. प्यास को ४ ओस की वृद्धि ५ गन्तव्य को ओर  
६ यात्री-दल ७ अनुकूल ८ अहकार, गर्व ९. प्रकृति, स्वभाव १०. बुद्धिमान,  
कुशल, समझदार ११. अज्ञानी, नासमझ १२ यात्रा का गर्व १३. शक्ति,  
सामर्थ्य १४. प्रेम-पथ में, अभिलाषा के मार्ग में ।

६६. आनेवाले किसी तूफानका रोना रोक ।  
नाखूदा<sup>१</sup>ने मुझे साहिल पे डुबोना चाहा ॥ हफीज
६७. बदलकर रखदिया नाकामियों<sup>२</sup>ने इस कदर मुझको ।  
कि पहचानी हुई सूरत भी पहचानी नहीं जाती ॥
६८. दुनियामे रहकर हर इन्सा, दरिया से रवादारी<sup>३</sup> सीखे ।  
लहरें भी उठ्ठा करती है किस्ती भी चलती रहती है ॥ मुनव्वर
६९. न चमनकी याद, न शौक-चमन जाता है साथ ।  
वादशाहोके भी बस दो गज कफन जाता है साथ ॥
१००. वह आखि, आख नहीं, वह दिल नहीं है दिल ।  
जिसे किसी की मुसीबत नजर नहीं आती ॥ मुनव्वर
१०१. नगमए-पुरदर्द<sup>४</sup> छेडा मैंने इस अन्दाज<sup>५</sup>से ।  
खुद-ब-खुद<sup>६</sup> पडने लगी मुझपर नजर सैयाद<sup>७</sup> की ॥
१०२. इस तरफ मौजें परेशा<sup>८</sup>, उस तरफ साहिल उदास ।  
डूबनेवाला किधर जाए बंडी मुश्किलमे है ? कतील
१०३. एक शहंशाह ने दौलतका सहारा लेकर ।  
हम गरीबोकी मुहब्बतका उड़ाया है मजाक ॥ साहिर
१०४. आजाद-जमीर<sup>९</sup> है फकीरी यह है ।  
दिल बे-पर्वा है अमीरी यह है ॥ रवा

१ मल्लाह २. असफलताओं ने ३. उदारता, सहृदयता, ४. दर्द-भरा  
गीत ५. ढग से ६ स्वयमेव ७ शिकारी की ८. व्याकुल, बेचैन ९  
स्वतन्त्रचेता, मुक्त मन वाला ।

- १०५ हर मुसाफिरको बाखबर<sup>१</sup> कर दो,  
 यह मेरे तजरुबे<sup>२</sup> का जीहर<sup>३</sup> है ।  
 रहबरो<sup>४</sup> की फरेबकारी<sup>५</sup> से,  
 रहजनोका<sup>६</sup> खुलूस<sup>७</sup> बेहतर<sup>८</sup> है ॥ अदम
- १०६ अब तक न समझ पाये जो खुदको भी ऐ 'रहबर' ।  
 हैरत<sup>९</sup> है कि वह हमको समझाने चले आए ॥ रहबर
- १०७ देखनेवाले होशमे रहना, सब धोका-ही-धोका है ।  
 जिस्म बड़े बदसूरत<sup>१०</sup> हैं, मलबूस<sup>११</sup> बड़े भड़कीले हैं ॥ अदम
- १०८ सदाकृत<sup>१२</sup> हो तो दिल सीनेसे खिंचने लगते हैं ऐ वाइज<sup>१३</sup> !  
 हकीकत<sup>१४</sup> खुदको मनवा लेती है, मानी नहीं जाती ॥ जिंगर
- १०९ सबव<sup>१५</sup> हर एक मुझसे पूछता है मेरे रोनेका ।  
 इलाही ! सारी दुनियाको मैं कैसे राजदा<sup>१६</sup> करलू ? ताजवर
- ११० हुजूरे-अहले-हिम्मत<sup>१७</sup> आवरू खोना नहीं आता ।  
 गमे-हस्तीपे हँसनेके सिवा रोना नहीं आता ॥ जोश
- १११ तेरे और उसके दरमियाँ<sup>१८</sup>, तेरी खुदी ही हिजाब<sup>१९</sup> है ।  
 अपना निशान खोये जा, उसका निशान पाये जा ॥ अहतर

१. सावधान, सतर्क २ अनुभव का ३ सार, निचोड़ ४. पथ-प्रदर्शको की  
 ५. मायाचारी, धोखेवाजी, चाली, धातो से ६. लुटेरो का ७. वर्तव-व्यवहार  
 ८. श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा ९. आश्चर्य १०. कदाकार, कुरूप, भद्दे ११.  
 परिधान, वस्त्र, पहनावे १२. सत्यता १३. उपदेशक १४. यथार्थता, सच्चाई  
 १५. कारण १६. रहस्यवेत्ता, मर्मज्ञ, भेदी १७ साहसी व्यक्तियों के सामने  
 १८ बीच में १९. पर्दा ।

११२. न आस्मा की न अर्शे-बरी<sup>१</sup> की बात करो ।  
जमीकी गोदके पालो । जमीकी बात करो ॥ सागर
- ११३ खोफ मत खाइए अंधेरोसे, जुलमतोमे<sup>२</sup> नूर होता है ।  
बाज औकात<sup>३</sup> राहे-हस्तीमे<sup>४</sup>, अपना सायाभी दूर होता है ॥ अदम
- ११४ गमे-हयात<sup>५</sup> से 'मख्मूर' लोग डरते हैं ।  
इसे तो अपनी तमन्ना बना लिया मैंने ॥ मख्मूर
- ११५ असीराने-कफस<sup>६</sup> की आप-बीती पूछते क्या हो ?  
यहां ऐ 'अम्न' कज्जाकोसे<sup>७</sup> बदतर पासबा<sup>८</sup> निकले ॥ अम्न
- ११६ तबाहियोंका खयाल क्यों है, चमन की रीनक बढ़ानेवालो ।  
जो बिजलियो न आजमाये, वह आशियाँ आशियाँ नहीं है ॥ कासिम
- ११७ मुझसे हरबार मसरत<sup>९</sup> ने छुड़ाया दामन !  
मुझको सौ-बार दिया गुमने सहारा ऐ दोस्त ! दुरमत
११८. चमनमे कौन है पुरसाने-हाल<sup>१०</sup> शबनमका ?  
गरीब रोई तो गुंचोको<sup>११</sup> भी हँसी आई ॥ अशं
- ११९ रात जिन्होंने महफिलको अन्दाज<sup>१२</sup> सिखाये जीने के ।  
खाकिस्तर<sup>१३</sup> को देखनेवाले ! हाँ यह वही पर्वाने है ॥ आजाद
१२०. खुशीमे अपनी खुशबस्ती<sup>१४</sup> कहाँ मालूम होती है ?  
कफसमे जाके कद्रे-आशियाँ मालूम होती है ॥ मुत्ला

१ स्वर्ग, जन्नत की २ अन्धेरो मे ३ कभी-कभी ४ जीवन-पथ मे  
५ जीवन के दुख से ६ पिजरे के वन्दियों की ७ लुटेरो मे ८ द्वारपाल,  
निरीक्षक, ड्योढीवान ९ खुशी ने १० हाल पूछनेवाला ११ कलियों को  
१२ ठग, तरीके १३ भस्म को, जले हुए परवानो की राख को, १४.  
सौभाग्य, खुशकिस्मती ।

१२१. चमनको कौन यूँ बर्बाद होते देख सकता है ?  
ठहर इतना कि बन्द आँखे हम ऐ दौरे-खिजा करले ॥ नैयर
१२२. हमको इन्सानोमे गिनती नही क्यो दुनिया ?  
हमतो हिन्दू भी नही, हमतो मुसल्मा भी नही ॥ जमील
१२३. एक पर्दा है ग़मोका जिसे कहते है खुशी ।  
हम तबस्सुम<sup>१</sup>म निहा<sup>२</sup> अश्के-रवाँ<sup>३</sup> देखते है ॥ अ.स्तर
१२४. दो घड़ी मिल बैठनेको भी गनीमत जानिए ।  
उम्र फानी ही सही, यह उम्रे-फानी फिर कहाँ ? अ.स्तर
१२५. जहामे मर्द वही है, जो यह शिआर<sup>४</sup> करे ।  
छुपाये ग़मको, मसरतको आश्कार<sup>५</sup> करे ॥ मुल्ला
१२६. आज यही दुनिया है जहन्नुम<sup>६</sup> ।  
कल यही दुनिया जन्नत<sup>७</sup> होगी ॥ फिराक
१२७. खबर नही कि है क्या वजहे-पारसाई-ए शेख<sup>८</sup> ?  
गुनाह<sup>९</sup> हो न सका या गुनाह कर न सके ॥ मुल्ला
१२८. 'अदम' न मल्लाहका करम<sup>१०</sup> है,  
न दस्ते-कुदरतकी कारसाजी<sup>११</sup> ।  
कि इक थपेड़ेने बेइरादा<sup>१२</sup>  
लगा दिया नाव को किनारे ॥ अदम
१२९. किसी मगरूर<sup>१३</sup>के आगे हमारा सर नही झुकता ।  
फकीरीमे भी 'अस्तर' ग़ैरते-शाहाना<sup>१४</sup> रखते है ॥ अ.स्तर

---

१. हँसी में, मुस्कान मे २ छिपे हुए ३ बहते हुए आसू ४ आचरण, स्वभाव, नियम ५ प्रकट ६ नरक ७ स्वर्ग ८ शेख के सयमी होने के कारण ९ पाप १० कृपा ११ ईश्वर के वरदहस्त की दया १२. सहसा, यो ही, विना सकल्प के १३ अहकारी, अभिमानी १४. बादशाहो जैसी शान ।

१३० आंख वह है जो हर मसरत<sup>१</sup>मे, दाम<sup>२</sup>से होशियार रहती है ।  
तीतली फूलसे लिपटकर भी, मुजतरो-बेकरार<sup>३</sup> रहती है ॥

अवम

१३१ तुम्ही तो सैयाद हो कि अपनोका रूप भरकर चमनमे आये ।  
करो न अब मेरी अशकशोई<sup>४</sup> उजाडकर मेरा आशियाना ॥

आजाद

१३२ कहा फूलने “देख मेरा तबस्सुम<sup>५</sup> !  
मेरी जिन्दगी किस कदर मुख्तसर<sup>६</sup> है ॥”

आजाद

१३३ सच पूछो तो इस दुनियामे हरकत<sup>७</sup>से ही बरकत है ।  
जिसने कुछ ढूँढा होगा तो उसने कुछ पाया होगा ॥ अफसर

१३४. मौत है वह राज<sup>८</sup> जो आखिर खुलेगा एकदिन ।  
जिन्दगी है वह मुअम्मा<sup>९</sup> कोई जिसका हल नही ॥ अफसर

१३५ तिश्ना-लब<sup>१०</sup>रखा सदफ<sup>११</sup>को, बूँद पानी की न दी ।  
ऐ समन्दर ! देखली हमने तेरी दरियादिली<sup>१२</sup> ॥

१३६. चलो दुश्वार<sup>१३</sup> ही क्या है, ठिकाना चार तिनको का ?  
निगाहे-बागबां देखी, मिजाजे-बागबां देखा ॥ निहाल

१३७. उन्हे क्यों कोसता है, जो तुम्हे कहते है कम-हिम्मत ।  
बुरा क्या है, हकीकत<sup>१४</sup>का अगर इजहार<sup>१५</sup> हो जाए ? अशं

१३८ तुम्हे न माने कोई, तुम्हको इससे क्या ‘मजरूह’ ।  
चल अपनी राह, भटकने दे नुक्ताचीनोको<sup>१६</sup> ॥ मजरूह

१ खुशी मे २ जाल से, धोखे से ३ आकुल-व्याकुल, तडपती बेचैन  
४ आंसू पोछना ५ मुस्कान ६ सक्षिप्त, थोड़ी-सी ७ स्पन्दन से, हाथ-पैर  
हिलाने से ८ रहस्य ९ गुत्थी, समस्या, पहेली १० प्यासा ११ मोती को  
१२ उदारता १३ कठिन १४ सच्चाई का १५ प्रकटीकरण १६  
छिद्रान्वेषियो को, आलोचको को ।



- १३६ लाख बहारे लाख खिजाएँ, वात है मौसम-मौसम की ।  
फूलोंका सुख पानेवाले, काटोके दुख-दर्द भी भेल ॥ कतील
- १४० देखा तो खुशीके फूल खिले, सोचा तो गमो की धूल उड़ी ।  
कहते हैं वहारा<sup>१</sup> लोग जिसे, वह इक साया पतझडका है ॥  
कतील
- १४१ जन्मे-कुदरत<sup>२</sup>ने आदमीके लिए,  
कैसा दिल-आवेज<sup>३</sup> रोग छांटा है ।  
दिलकी तस्कीन<sup>४</sup> ढूँढनेवाले,  
जिन्दगी एक हसीन<sup>५</sup> काटा है ॥ अबस
१४२. कदम इन्सानका राहे-दहरमे धर्रा ही जाता है ।  
चले कितना ही कोई बचके ठोकर खा ही जाता है ॥  
नजर हो ख्वाह<sup>६</sup> कितनी ही हकाइक आश्ना<sup>७</sup>, फिर भी—  
हजूम-कश-म-कश<sup>८</sup>मे आदमी धबरा ही जाता है ॥  
जोश
- १४३ है हुस्न<sup>९</sup> भी इक आफत, बागे-जहाँमे ऐ गुल !  
किस-किससे तू बचेगा गुलची<sup>१०</sup> है, बाग वा<sup>११</sup> है ॥ मुल्ला
- १४४ मेरे दिल की वसीयत<sup>१२</sup> दुनिया मे,  
दर्द अपना भी है पराया भी ।  
“मैं” को जब “हम” बना दिया मैंने,  
खुद को खोया भी खुद को पाया भी ॥ फर्ख

---

१ वसन्त ऋतु, मौसम बहार २. प्रकृति की शक्ति ने ३ सुन्दर, खूबसूरत  
४ मन की शान्ति ५ सुन्दर ६ चाहे ७. सत्य को देखने-परखने वाली ८.  
सघर्षों में ९ सौन्दर्य, खूबसूरती १०. फूल चुनने वाला ११. माली १२.  
विस्तृत, विशाल ।

- १४५ कुछ ऐसे सोने वाले, सो रहे हैं पाँव फँलाये ।  
कि अपनी कब्र को ही आखिरी मजिल समझते हैं ॥
१४६. मरके टूटा है कही सिलसिलए-हयात<sup>१</sup> ।  
सिर्फ इतना है कि ज़ जीर बदल जाती है ॥ फानी
- १४७ दरिया को अपनी मौज की तुगयानियो<sup>२</sup> से काम ।  
किश्ती किसी की पार हो, या दरमिया रहे ॥ हाली
- १४८ गुहर<sup>३</sup> को जौहरी, सराफ़ जर को देखते हैं ।  
वशर को देखने वाले बगर को देखते हैं ॥ जौक
१४९. रहेंगे न मल्लाह ! यह दिन सदा ।  
कोई दिन मे गंगा उतर जाएगी ॥ हाली
१५०. मजिले-हस्ती मे दुश्मन को भी अपना दोस्त कर ।  
रात हो जाए तो दिखलाये तुम्हे दुश्मन चिराग ॥ आतिश
- १५१ जहाँ वाले हमे सिर्फ़ इसनिए दीवाना कहते हैं,  
कि हम जो बात भी कहते हैं बे-बाकाना कहते हैं ॥
- १५२ खुदा या ना खुदा अब जिमको चाहो बख़्श दो इज्जत ।  
हकीकत<sup>४</sup> मे तो किश्ती इत्तिफाकन<sup>५</sup> बच गई मेरी ॥ गोपाल मित्तल
- १५३ खुदी का राजदा<sup>६</sup> होकर, खुदी का दास्ता<sup>७</sup> हो जा ।  
जहाँ से क्या गरज़ तुम्हको, तू आप अपना जहाँ हो जा ॥ अर्श
१५४. किसको दुनिया मे हुई राहत नसीब ?  
कौन दुनिया मे असीरे-गम<sup>८</sup> नही ? अर्श

१ जीवन का क्रम २ बाढो से ३ मोती को ४ आस्तव मे ५ यहच्छया,  
दैववशात् ६ सोऽह का अमिप्राय समझकर ७ आत्मा से परमात्मा बनने का  
प्रयास कर ८ दुःख का बन्दा, दुःख-ग्रस्त ।

१५५ तरानए-गम<sup>१</sup> न छेड बुलबुल । यहाँ कोई हमनफस<sup>२</sup> नहीं है ।  
यहाँ तो वेगानगी<sup>३</sup> है इतनी कि हर कली मुस्करा रही है ॥

गोपाल

१५६. गम के ठहोके<sup>४</sup> कुछ हो बला से आगे जगा तो जाते हैं ।  
नीद के हम इकमाने<sup>५</sup> हैं जो जागते ही सो जाते हैं ॥

फानी

१५७. अकल से ही इन्सान इन्सान है ।

अकल न हो तो इन्सान हैवान है ॥

हाली

१५८ क्या तवंगर<sup>६</sup> क्या गनी<sup>७</sup> क्या पीर<sup>८</sup> क्या बालका ।

सब के दिल को फिक्र है दिन-रात रोटी दाल का ॥

१५९. जो किसी से अदावत<sup>९</sup> न दगा<sup>१०</sup> करते हैं ।

वही आराम से दुनियाँ में रहा करते हैं ॥

हाली

१६० कौन हमदर्द<sup>११</sup> किसीका है जहाँ में 'अकबर' ।

एक उभरता है यहाँ, एक के मिट जाने से ॥

अकबर

१६१. निगानी चाहिए कुछ आने वाले जाने वाले की ।

यह माना है बशर फानी इधर आना उधर जाना ॥

१६२. जिस कदर दुनिया दबाये, उस कदर बेदार<sup>१२</sup> हो ।

अपनी दुनिया खुद बनाने के लिए तैयार हो ॥

अस्तर

१६३. काटो की जबाने-तिश्ना<sup>१३</sup> से, गुलशन की हकीकत को पूछो ।

याराने-चमन<sup>१४</sup> इन फूलों को तो हंसना-हंसाना आता है ॥

अलम

---

१. दुख का संगीत २ मित्र, साथी ३ परायापन ४. भोके. भटके  
५. मतवाले ६. दरिद्र, कगाल ७ घनी ८ वृद्ध ९. शत्रुता, वैर-विरोध १०.  
छल, मायाचार ११ संगी-साथी १२ जाग्रत, सचेत १३ प्यासी जिह्वा से  
१४. उद्यान के मित्र ।

१६४. सीरत<sup>१</sup> नहीं है जिसमे, वह सेहत फि.जूल है ।  
जिस गुल मे वू नहीं है, वह कागज का फूल है ॥
१६५. मिहर<sup>२</sup> वह है खाक के जर्रे को करदे जरनिगार<sup>३</sup> ।  
ऊँची-ऊँची चोटियो पर तूर<sup>४</sup> बरसाने से क्या ? मुल्ला
१६६. मुफलिसो की जिन्दगी का जिक्र क्या ?  
मुफलिसी की मौत भी अच्छी नहीं ॥ रियाज
१६७. जीस्त<sup>५</sup> बेअक्लो को हो जाये वसर करनी मुहाल<sup>६</sup> ।  
इतनी भी ऐ आकिलो<sup>७</sup> ! अच्छी नहीं हुशयारियां ॥ हाली
१६८. पन्दे-वाइज<sup>८</sup> सुनते-सुनते कान अपने भर गए ।  
क्या इबादत को हमी है, सब फरिश्ते मर गए ? दाग
१६९. अपनी सेहतकी जिसे पर्वाह न हो ।  
वह मसीहा से भी कभी अच्छा न हो ॥
१७०. याद रख इस गुरको तू आठों पहर चौसठ घड़ी ।  
खार<sup>९</sup> चुभता है जिसे बस, फूल पाता है वही ॥
१७१. हम नशी<sup>१०</sup> कहता है कुछ पर्वा नहीं ईमा गया ।  
मै यह कहता हूँ कि भाई ! वह गया तो सब गया ॥ अकबर
१७२. हयात<sup>११</sup> इक मुस्तकिल<sup>१२</sup> गमके सिवा कुछ भी नहीं ।  
खुशी भी याद आती है तो आँसू बनके आती है ॥ साहिर
१७३. लेन्देके अपने पास फकत<sup>१३</sup> इक नज़र तो है ।  
क्यों देखें जिन्दगीको किसीकी नज़रसे हम ॥ साहिर

---

१ सौजन्य, चारित्र्य २. सूर्य ३ प्रकाशमान ४. प्रकाश ५. जिन्दगी  
६. कठिन, दुष्कर, असम्भव ७. बुद्धिमानो ८ घमोपदेशकका, सदुपदेश ९.काटा  
१०. मित्र, साथी ११. जीवन १२. स्थायी १३. केवल, सिर्फ ।

१७४. जमानेका गिकवा न कर रोनेवाले ।  
जमाना नहीं साथ देता किसी का ॥ लतीफ
१७५. बड़ी मुश्किलसे आना है मुयस्सर जिन्दगी-भरमे ।  
वह डक लमहा<sup>१</sup> जिसे इन्सा गुजारे गादमाँ<sup>२</sup> होकर ॥ शफक
१७६. आजकी इश्रत<sup>३</sup>को छोड़ूँ, कलकी इश्रतके लिए ।  
मेरे मौला<sup>४</sup> ! मुझसे यह मुमकिन नहीं, मुमकिन नहीं !  
अख्तर
१७७. इसी दुनियाकी अक्सर<sup>५</sup> तलखियो<sup>६</sup>ने मुझको समझाया ।  
कि हिम्मत हो तो फिर है जहर भी एक चीज खानेकी ॥  
नैयर
१७८. कुछ ऐसा डूबनेका न होता मुझे मलाल ।  
मुश्किल यह आ पड़ी थी कि साहिल करीब<sup>७</sup> था ॥ नैयर
१७९. हवा का एक-एक भोका तुझको जब चाहे बुझा डाले !  
यह क्या जीना है दुनियामे, चरागे-रहगुजर<sup>८</sup> होकर ! अर्श
१८०. न फ़रिदो<sup>९</sup>से जजीरो<sup>१०</sup>की कड़ियाँ दूट सकती है ।  
न अश्कोसे निजामे-वक्त<sup>११</sup>के तेवर<sup>१२</sup> बदलते हैं ॥ प्रेम
१८१. ठोकर किसी पत्थरसे अगर खाई है मैंने ।  
मंजिलका निशा भी उसी पत्थरसे मिला है ॥ विस्मिल हाशमी
१८२. मैं गिर चला था बड़ी बेदिली<sup>१३</sup>से रस्तेमे ।  
बड़े खलूस<sup>१४</sup>से उम्मीदने सभाला है ॥ अदम

---

१ क्षण २ प्रसन्न ३ सुख को ४ ईश्वर, मालिक ५. प्राय. ६. कटुताओं  
ने ७ समीप, निकट ८. पथ-दीपक ९ आतंतादो से, दुहाइयो से १०  
शृङ्खलाओं की ११. काल-व्यवस्था १२ ढङ्ग १३. खिन्नता तथा उदासी से  
१४ प्रेम से, निश्चलता से ।

१८३. हवादस<sup>१</sup>से उलझकर मुस्कराना मेरी फितरत<sup>२</sup> है ।  
 मुझे दुश्वारियो<sup>३</sup>पर अशक<sup>४</sup> बरसाना नहीं आता ।  
 नजर जिसकी जमी रहती है मुस्तक़बिल<sup>५</sup>के चेहरे पर,  
 उसे माजीकी सफ़ा<sup>६</sup>की को दुहराना नहीं आता ॥

दानिश

१८४. दूर सुनहरे गुम्बद चमके, लेकिन गर्दन कौन झुकाये ?  
 मैं तो जन्नत खोकर आजाद मनुष इन्सान रहा हूँ ॥ कतील

१८५. 'कतील' अपना मुकद्दर गमसे बेगानी<sup>७</sup> अगर होता ।  
 तो फिर अपने-पराये हमसे पहचाने कहाँ जाते ? कतील

१८६. जवानीको सजाए-लज्जते-एहसास<sup>८</sup> दे देना ।  
 मैं इस हृदपर खुदाको आदमी महसूस<sup>९</sup> करता हूँ ॥ कतील

१८७. बदसुलूकी<sup>१०</sup>मे मजा<sup>११</sup> क्या है, मजा है इसमे ।  
 कि हमारा हो तुम्हे पास<sup>१२</sup>, हमारा तुमको ॥ दास

१८८. क्या मिला आखिर खरी कहकर कोई बतलाये तो ?  
 बस यही न, सुननेवालोंको हुआ जीना बवाल<sup>१३</sup> ?

१८९. आलमे-फानी<sup>१४</sup>मे यारो ! चाल देखी है अजब ।  
 इस जहासे जो गया, वैसा न आया फिर कोई ॥

१९०. ऐ शमअ ! सुबह होती है, रोती है किसलिए ?  
 थोड़ी-सी रह गई है, इसे भी गुजार दे ॥

१९१. मुस्कराके जिनको गमका घूँटपीना आ गया ।  
 यह हकीकत<sup>१५</sup> है जहाँमे उनको जीना आ गया ॥

१ मुसोबतों से २ प्रकृति, स्वभाव ३ कठिनाइयों पर ४ आंसू ५ भविष्य के ६ भूतकालीन अत्याचारों को ७ अपरिचित, रहित ८ अनुभूति के आनन्द का डर ९ अनुभव १० दुर्व्यवहार में, बुरेबर्ताव में ११ आनन्द १२, लिहाज, १३ विपत्ति, दुःख १४, नश्वर ससार में १५ वास्तविकता ।

- १६२ तलागे-यारमे जो ठोकरें खाया नही करते ।  
वह अपनी मजिले-मकसूद<sup>१</sup> को पाया नही करते ॥
१६३. मंजरे-तस्वीर<sup>२</sup> दर्दे-दिल मिटा सकता नही ।  
आईना<sup>३</sup> पानी तो रखता है, पिला सकता नही ॥
१६४. मैं फूल चुनने आया था बागे-हयात<sup>४</sup> मे ।  
दामन को खारे-जार<sup>५</sup> मे उलभाके रह गया ॥
- १६५ न मुंह छिपाके जिये, न सर भुकाके जिये ;  
सितमगरो<sup>६</sup> की नजर-से-नजर मिलाके जिये ।  
अब एक रात अगर कम जिये तो हैरत<sup>७</sup> क्यों ?  
यही क्या कम हैकि हम मशालें जलाके जिये ?
- १६६ बुरेको जब न हो एहसास<sup>८</sup> अपनी ही बुराईका ।  
ठिकाना फिर नही रहता कही उसकी ढिठाईका ॥
१६७. दुनियामे किसका राहे-फना<sup>९</sup> मे दिया है साथ ?  
तुम भी चले चलो यूँही जब तक चली चले ॥ जीक
१६८. पहली-सी नेकियाँ सब मफकूद<sup>१०</sup> हो गई हैं ।  
फँले हुए है चर्चे हरचारसू<sup>११</sup> बदी के ॥
- १६९ इस ऐशे-जाहिरी<sup>१२</sup> को छोड़ ऐ खुदाके बन्दे !  
रग-रगमे चुभ रहे है जब लाख-लाख काटे ॥
२००. तुझे देखा तो अब कुछ देखनेको जी नही चाहता ।  
किये हैं बन्द आँखें तेरी सूरत देखनेवाले ॥ हनीक

---

१. लक्ष्य, बिन्दु को २ चित्र का दृश्य ३ दर्पण ४. जीवन-उद्यान में ५ कांटो में ६ भ्रष्टाचारियो की ७ आश्चर्य ८ ध्यान, अनुभव, खयाल ९. मरण-मार्ग में १० अन्तर्धान, अप्राप्य, लुप्त, गायब ११ चारो ओर १२ बाह्य अथवा भौतिक सुख को ।

२०१. ऐ 'अमीर' अब्बल तो वह आशना मिलता नहीं ।  
मिल गया जिसको कही, उसका पता मिलता नहीं ॥ अमीर
२०२. सब सन्त्रते<sup>१</sup> जहाँकी 'आजाद' हमको आई<sup>२</sup> ।  
पर जिमसे यार मिलता, ऐसा हुनर न आया ॥ आजाद
२०३. दिल अगर है साफ़ कुछ मुश्किल नहीं दीदारे-यार<sup>३</sup> ।  
देखलो आईना<sup>४</sup> सूरत-आशना<sup>५</sup> क्योकर हुआ ? अमीर
२०४. ऐ हुस्नके माइल<sup>६</sup> । यह नसीहत मेरी सुनले ।  
सीरत<sup>७</sup> पे नजर चाहिए सूरतसे जियादा ॥ अकबर
२०५. छोड़ सबकी दोस्ती, कर दोस्तदारी एककी ।  
एकका हो यार, निभ जाएगी यारी एककी ॥ जफर
२०६. खुदी जब तक रहे इन्सानमे, उसको नहीं पाता ।  
यह पर्दा उठ गया दिलसे तो वह पर्दानशी<sup>८</sup> पाया ॥ सादिक
२०७. जिन्दगी हर मोड़पर मुझको यह देती है सदा<sup>९</sup> ।  
फिक्रे-फर्दा<sup>१०</sup> छोड़िए, तामीरे-फर्दा<sup>१०</sup> कीजिए ॥ दानिश
२०८. इस जमीपर इक नया आलम<sup>११</sup> बसाया जायगा ।  
जिसमे हर इन्सान होगा आप अपना पासबा<sup>१२</sup> ॥ रविश
२०९. जहामे 'हाली' किसीपे अपने सिवा भरोसा न कीजिएगा ।  
यह भेद है अपनी जिन्दगीका बस इसका चर्चा न कीजिएगा ॥

---

१. शिल्प, कला, कारीगरी २. परमात्म-दर्शन ३. दर्पण ४. प्रतिबिम्बित  
५. सौन्दर्य के पुजारी, रूप पर आसक्त ६. स्वभाव-सौजन्य, चारित्र्य पर ७.  
परदे में रहनेवाला ८. आवाज ९. भविष्य की चिन्ता १०. भविष्य निर्माण का  
कार्य ११. ससार १२. रक्षक ।



कहे अगर तुझसे कोई वाइजू<sup>१</sup> !

कि कहते कुछ और करते हो कुछ॥

जमानेकी खू<sup>२</sup> है नुक्ताचीनी<sup>३</sup>,

कुछ इसकी पर्वा न कीजिएगा ॥

हाली

२१० लरजू<sup>४</sup> जाते हैं उस दम यह जमीनो-आस्मा 'साहिर' ।

किसी बेक्तसके दिलका आसरा जब छूट जाता है ॥

साहिर भोपाली

२११ डूबनेका खीफ<sup>५</sup> हमको होतो फिर क्या खाक हो ?

हम तेरे, किशनी तेरी, साहिल तेरा, दरिया तेरा ॥

२१२. मौतसे लडनेवाले तो बेखीफ<sup>६</sup> भँवरमे कूद पडे ।

साहिल-माहिल चलनेवाले क्या जाने मैंभधारोको ? मिसनजमा

२१३ किसे कहते हैं दरिया, यह खसो-खाशाक<sup>७</sup> क्या जानें ?

हकीकत<sup>८</sup> का पता शायद मिले कुछ तहनशीनो<sup>९</sup>से ॥

अफसर

जो नफस<sup>१०</sup> तेरी यादमे गुजरे ।

वन्दगी<sup>११</sup>मे गुमार<sup>१२</sup> होता है ॥

अवम



१ घमोंपदेयक २ स्वभाव, आदत ३ आलोचना करना, छिद्रान्वेषण करना ४ कापना ५ भय ६ निडर, बेचढ़क ७ तिनके ८ वास्तविकता का ९ दरिया की तह में जाने वालों में १० श्वाभ, क्षण, पल, दम ११ उपासना, भक्ति में १२ गिननी ।



खोकर .खुबी को पाया,  
खोये हुए को हमने ।  
सब-कुछ अयाँ हुआ है,  
जो था निहाँ नज़र से ॥





